अपना राजस्थान

卐

लेखक :
प्रकाशनारायण नाटाणी
एम० ए० (हिन्दी, राजनीति, इतिहास,
लोक प्रशासन, समाजशास्त्र)
एम० एड०, एल० एल० बी०

卐

1984

पिंकसिटी पब्लिशर्स
चौड़ा रास्ता, जयपुर

प्रकाशक :
यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स
जयपुर–302003

प्रथम संस्करण 7 अक्टूबर, 1983.
द्वितीय संशोधित संस्करण 4 नवम्बर, 1983.

मूल्य : साधारण संस्करण 30.00
पुस्तकालय संस्करण 40.00 (सजिल्द)

मुद्रक :
पार्वती प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
चन्द्रोदय प्रिन्टर्स

प्रस्तुत पुस्तक के बारे में :—

अभी हालही में राजस्थान लोकसेवा आयोग ने राजस्थान राज्य की राज्य एवं अधीनस्थ सेवा संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा की विज्ञप्ति प्रसारित कर इस परीक्षा के लिए आशार्थियों से आवेदन पत्र आमन्त्रित किये हैं। इस परीक्षा के पाठ्यक्रम में आयोग ने पहली बार "सामान्य ज्ञान एवं दैनिक विज्ञान" के 200 अंकों के प्रश्न-पत्र में आधे से अधिक पाठ्यक्रम राजस्थान के विभिन्न पक्षों पर जानकारी का रखा है तथा भविष्य में आयोग की अन्य परीक्षाओं में भी हो सकता है वर्तमान में बाजार में राजस्थान की जानकारी के लिए पुस्तकों का तो अभाव नहीं है तथा नये-नये और अलग-अलग शीर्षकों से बाजार में पुस्तकें मिलती भी हैं परन्तु ठीक पाठ्यक्रम के अनुरूप मेरी जानकारी के अनुसार एक भी पुस्तक नही है।

प्रस्तुत पुस्तक इसी क्रम में एक प्रयास है। इस पुस्तक का वैसे अपना भी एक इतिहास है। पिछले दिनों हमारी प्रधानमन्त्री के निर्देशों के अनुरूप भारत के विभिन्न राज्यों के लिए अपने-अपने राज्य का सरकारी स्तर पर जन-सम्पर्क निदेशालयों द्वारा सांस्कृतिक इतिहास लिखवाना था। राजस्थान में भी तत्कालीन जन-सम्पर्क राज्य मंत्री श्री श्रीरामजी गोटेवालों के सद्-प्रयत्नों एवं पहल से इस ओर क्रियान्विति की योजना बनी और इस आशय की निर्देशालय जन सम्पर्क द्वारा विज्ञप्ति भी प्रसारित की गई । प्रस्तुत पुस्तक में उसी सन्दर्भ में एकत्रित की गई सामग्री का बहुत कुछ अंश है। वैसे सन् 1971 से ही मेरा राजस्थान पर पुस्तकों व लेखों के रूप मे कुछ लिखने व संग्रह करने का प्रयास रहा है। उन सबको ठीक प्रकार से संजों कर सम्पूर्ण पुस्तक को बिल्कुल उक्त परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप प्रस्तुत करने का युक्ति युक्त प्रयास किया गया है। आशा है पुस्तक अपने उद्देश्यों के अनुरूप सिद्ध हो सकेगी।

इस पुस्तक के लेखन में पूर्व वर्णन के अनुरूप आदरणीय राज्य मन्त्री श्री श्रीरामजी गोटेवालों की प्रेरणा कार्यरत थी। अतः यह पुस्तक उन्हें समर्पित करते हुए, मेरे आत्मज कमलेश कुमार एवं आत्मजा कुमारी सन्तोष एवं सुमन नाटाणी तथा मेरे अनुज रूप श्रीरामावतार गुप्ता को उनके अथक प्रयास के लिए हार्दिक साधुवाद देना है क्योंकि इन सबके समग्र सहयोग के बिना इतनी अल्प अवधि मे इस पुस्तक की पाण्डुलिपि का तैयार होना सम्भव नहीं था।

मैसर्स पिंकसिटी पब्लिशर्स ने इतनी शीघ्रता से पुस्तक को प्रतियोगियों के सामने प्रस्तुत करने में जो तत्परता दिखाई है उसके लिए मैं उनका भी बहुत आभारी हूँ। वे वस्तुतः धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं यह कहने का पुनः साहस कर रहा हूँ कि पुस्तक पूर्णतः पाठ्यक्रम के अनुरूप है तथा राजस्थान के स्कूलों एवं कॉलेजों के पुस्तकालयों तथा राजस्थान की जानकारी चाहने वाले सामान्य लोगों के लिए भी इसमें पूरी सामग्री है।

आशा है पुस्तक प्रतियोगी परीक्षार्थियों, साक्षात्कार देने वालों एवं सामान्य पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

7 अक्टूबर, 1983.

(प्रकाश नारायण नाटाणी)
लेखक

पाठकों के बहुमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत किया जायेगा।

आपकी सफलता के लिए हमारी शुभ कामनाएं। प्रकाशक

द्वितीय संस्करण के बारे में :

"अपना राजस्थान" प्रथम संस्करण का छात्रों एवं पाठकों ने जो भव्य एवं अपार स्वागत किया उससे प्रेरित होकर मैं पुस्तक का संशोधित एवं परिमार्जित द्वितीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष अनुभव कर रहा हूँ।

मात्र बीस दिन में इस पुस्तक का प्रथम संस्करण समाप्त होना इस बात को सिद्ध करता है कि यह पुस्तक अपने विषय का प्रमाणिक ग्रन्थ बन सकी है। इसने हमारे उत्तरदायित्व को और भी गम्भीर बना दिया है।

अतः द्वितीय संस्करण पूर्ण रूप से संशोधित एवं परिवर्तित किया गया है। तथा इसमें महत्वपूर्ण घटनाओं व कार्य कलापों का वर्णन किया गया है। पुस्तक की भाषा सरल व उच्च श्रेणी की है।

सभी अध्यायों मे नवीनतम एव प्रमाणिक तथ्य एवं आंकड़े दिये गये हैं।

पुस्तक के इस संस्करण को सभी तरह से सुव्यवस्थित व सुन्दर तथा अल्पावधि में लाने के लिये प्रकाशक पिंकसिटी पब्लिशर्स का प्रयत्न सराहनीय है। वे वस्तुतः बधाई के पात्र है।

हमें आशा है कि पुस्तक का यह नवीन आंकड़ों एवं तथ्यों युक्त संस्करण विद्यार्थियों एवं सामान्य पाठको के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

पुन. सभी विद्वान प्राध्यापकों, जिज्ञासु छात्रों तथा प्रबुद्ध पाठको से अनुरोध है कि वे अपने अमूल्य सुझाव देकर पुस्तक के आगामी सस्करणों को अधिक उपयोगी बनाने में लेखक का सहयोग कर अनुग्रहित करें।

4 नवम्बर, 1983, शुभ दीपावली. प्रकाशनारायण नाटाणी

आपकी सफलता के लिए हमारी शुभकामनायें। प्रकाशक

अपना राजस्थान

(अ) भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन

Geography & Natural Resources

1. राजस्थान की भौतिक स्थिति, जलवायु, वनस्पति एवं भूमि क्षेत्र — 1
   (Physiographic, Climate, Vegetation and soil regions of Rajasthan.)
2. राजस्थान के मुख्य प्राकृतिक विभाग — 14
   (Broad physical divisions of Rajasthan.)
3. राजस्थान के मानवीय संसाधन, जनसंख्या समस्या, बेरोजगारी, गरीबी, सूखा और अकाल। — 20
   (Human resources, problem of population, unemployment, poverty, drought & famine in Rajasthan.)
4. राजस्थान के प्राकृतिक संसाधन, खान एवं खनिज तथा वन सम्पदा। — 29
   (Natural resources of Rajasthan, Mines, Mineral & Forest.)
5. राजस्थान में पशुधन संसाधन एवं भूमि तथा सिंचाई — 41
   (Land & Irrigation, Animal resources of Rajasthan.)
6. वन्य जीव एवं संरक्षण-पशु, ऊँट, भेड़, बकरी तथा उनकी मुख्य नस्लें। — 48
   (Wild life & their preservation, cattle, Camel, Sheep, Goat and their important breeds.)

(7) ऊर्जा की समस्या, ऊर्जा का रूप तथा अपरम्परागत ऊर्जा के, संसाधन । पृ-५८-५८ 54

(Energy problem, form power and non-conventional energy resources.)

(ब) कृषि एवं आर्थिक विकास
Agriculture & Economic development

(1) फसलें-मुख्य एव गौण 1

(Major & minor crops.)

(2) कृषि आधारित उद्योग, 3

(Agricultural based industries.)

(3) मुख्य सिंचाई एवं नदी घाटी योजनायें, 12

(Major Irrigation & river vally projects.)

(4) रेगिस्तानी भूमि एवं राजस्थान नहर परियोजना 15

(Desert land & Rajasthan Canal Project.)

(5) उद्योगों की स्थिति एव विस्तार, उद्योगों का कच्चा माल एवं खनिज आधारित उद्योग 21

(Growth & location of Industries, Industrial raw materials & mineral based industries.)

(6) लघु एवं कुटीर उद्योग 25

(Small scale & cottage Industies.)

(7) निर्यात की वस्तुयें एव हस्तशिल्प शिल्प 31

(Export items & Rajasthan Handicrafts)

(8) वन जातियाँ एवं जानजाति अर्थ तन्त्र 35

(Tribes & tribal economy.)

(9) ग्रामीण विकास के विविध कार्यक्रम 51
(Various economic programmes for rural development.)

(10) सहकारी आन्दोलन 64
(Cooperative Movement.)

(11) पंचायती राज संगठन तथा विकास में इसकी भूमिका 69
(Panchayati Raj-its set up & its role in rural development.)

(स) इतिहास एवं संस्कृति
History & Culture

(1) राजस्थान के मुख्य धर्म एवं सम्प्रदाय 1
(Main religions and cults of Rajasthan)

(2) राजस्थान की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनायें एवं स्मारक 5
(Important historical events and monuments of Rajasthan.)

(3) राजस्थानी कला, साहित्य एवं संस्कृति 49
(Rajasthani Art, literature & culture.)

(4) राजस्थान के लोक नृत्य एवं गान, मेले, उत्सव एवं त्यौहार, रीति रिवाज एवं प्रथायें। 78
(Folk songs & dances, fair, festivals, customs & costumes of Rajasthan.)

(5) राजस्थानी बोलियाँ एवं उनके क्षेत्र 99
(Rajasthani dialects & their regions.)

(6) राजस्थान की कला, साहित्य एवं संस्कृति में विभिन्न जातियों एवं जनजातियों का योगदान 100
(Contribution of various castes & tribes of Rajasthan in the promotion of art, literature & culture.)

(7) ऊर्जा की समस्या, ऊर्जा का रूप तथा अपरम्परागत ऊर्जा के संसाधन । 54

(Energy problem, form power and non-conventional energy resources.)

(ब) कृषि एवं आर्थिक विकास
Agriculture & Economic development

(1) फसलें–मुख्य एव गौण 1
(Major & minor crops.)

(2) कृषि आधारित उद्योग, 5
(Agricultural based industries.)

(3) मुख्य सिंचाई एवं नदी घाटी योजनायें, 12
(Major Irrigation & river vally projects.)

(4) रेगिस्तानी भूमि एवं राजस्थान नहर परियोजना 15
(Desert land & Rajasthan Canal Project.)

(5) उद्योगों की स्थिति एव विस्तार, उद्योगों का कच्चा माल एवं खनिज आधारित उद्योग 21
(Growth & location of Industries, Industrial raw materials & mineral based industries.)

(6) लघु एवं कुटीर उद्योग 25
(Small scale & cottage Industies.)

(7) निर्यात की वस्तुयें एवं हस्तशिल्प शिल्प 31
(Export items & Rajasthan Handicrafts.)

(8) जन जातियाँ एवं जानजाति अर्थ तन्त्र 35
(Tribes & tribal economy.)

(9) ग्रामीण विकास के विविध कार्यक्रम 51
(Various economic programmes for rural development.)

(10) सहकारी आन्दोलन 64
(Cooperative Movement.)

(11) पंचायती राज संगठन तथा विकास में इसकी भूमिका 69
(Panchayati Raj-its set up & its role in rural development.)

(स) इतिहास एवं संस्कृति
History & Culture

(1) राजस्थान के मुख्य धर्म एवं सम्प्रदाय 1
(Main religions and cults of Rajasthan)

(2) राजस्थान की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनायें एवं स्मारक 5
(Important historical events and monuments of Rajasthan.)

(3) राजस्थानी कला, साहित्य एवं संस्कृति 49
(Rajasthani Art, literature & culture.)

(4) राजस्थान के लोक नृत्य एवं गान, मेले, उत्सव एवं त्यौहार, रीति रिवाज एवं प्रथायें। 78
(Folk songs & dances, fair, festivals, customs & costumes of Rajasthan.)

(5) राजस्थानी बोलियाँ एवं उनके क्षेत्र 99
(Rajasthani dialects & their regions.)

(6) राजस्थान की कला, साहित्य एवं संस्कृति में विभिन्न जातियों एवं जनजातियों का योगदान 100
(Contribution of various castes & tribes of Rajasthan in the promotion of art, literature & culture.)

(द) राजस्थान का प्रशासन एवं विकास मान अधुनातन प्रवृत्तिय

Administration & Contemporary deve-lopmental Trends of Rajasthan

1. राजस्थान का शासन एवं विकासमान अधुनातन प्रवृत्तियाँ — 1
Administration & contemporary development trends of Rajasthan.

2. राजस्थान में नया बीस सूत्री कार्यक्रम — 4
Twenty point programme in Rajasthan.

3. पंचवर्षीय योजनाओं में राजस्थान की प्रगति — 11
Progress of Rajasthan in five year plans.

4. राजस्थान में राज्य स्तरीय खेलकूद — 17
State level Games & Sports in Rajasthan.

5. राजस्थान तब और अब — 34
Rajasthan then & now

6. राजस्थान व्यक्ति परिचय — 48
Rajasthan whos & Who

7. राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों की प्रगति की एक समग्र झाकी। — 51
A Total Eyeview of the Progress in all Fields of *Rajasthan.*

भाग "अ"
भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन
(Geography and Natural Resources)

(1) राजस्थान की स्थिति, जलवायु, वनस्पति एवं भूमि क्षेत्र :—

राजस्थान भारत संघ के बाईस राज्यों में से एक राज्य है जो क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्य प्रदेश के बाद सबसे बड़ा है। राजस्थान का इतिहास वीरता एवं गौरव का इतिहास है। यह पहले राजपूताना के नाम से जाना जाता था। राजस्थान राज्य का निर्माण 17 मार्च, 1948 से एक नवम्बर, 1956 तक की अवधि में विभिन्न अवस्थाओं में से गुजरते हुए हुआ है। वर्तमान राजस्थान एक नवम्बर, 1956 को पुनर्गठित राज्य के रूप मे भारतीय गणराज्य का एक अभिन्न अंग बना।

स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान भारत के उत्तर पश्चिम में गंगा सिन्धु के मैदान के एक भाग के रूप मे 23°3' उत्तरी अक्षांश से30°12' उत्तरी अक्षांश रेखाओं तथा 69°30' पूर्वी देशान्तर से लेकर 78°17' पूर्वी देशान्तर रेखाओं के मध्य स्थित हैं। राजस्थान का क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या 3.41 करोड़ है। जनसंख्या का घनत्व 100 तथा शिक्षा का प्रतिशत 24.05 है। राजस्थान की आकृति एक असमान चतुर्भुज के समान है। इसके पूर्व से पश्चिम कर्ण की लम्बाई 869 किलोमीटर तथा उत्तर-दक्षिण कर्ण की लम्बाई 821से822 किलोमीटर है।

राजस्थान की सीमा 5,933 किलोमीटर लम्बी हैं, जिसमें से 1,070 किलोमीटर लम्बी सीमा पाकिस्तान के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाती है। राजस्थान तथा पाकिस्तान के मध्य प्राकृतिक सीमा रेखा का अभाव है, परिणामस्वरुप पाकिस्तानी घुसपैठ का सदैव डर बना रहता हैं। इसलिये राजस्थान की सीमा रेखा सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। राजस्थान के गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर तथा बाड़मेर जिले भारत–पाक सीमा पर स्थित है। अरावली पर्वत शृंखलायें जो दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व में स्थित है, राजस्थान को लगभग दो बराबर के पूर्वी एवं पश्चिमी भागों में बाटती है। अरावली का पश्चिमी भाग शुष्क मरुस्थली है जबकि पूर्वी भाग के उत्तरी भाग उपजाऊ एवं मैदानी तथा दक्षिणी भाग पठारी

है। अरावली पर्वत शृंखलायें रेगिस्तान को पूर्व की ओर बढ़ने से भी रोके हुये हैं। राजस्थान के उत्तर में पंजाब एवं हरियाणा राज्य, पूर्व में उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश दक्षिण में गुजरात एवं मध्य प्रदेश राज्य है तथा पश्चिम में पाकिस्तान है।

प्रशासनिक विभाग

राजस्थान को प्रशासनिक दृष्टिकोण से 5 संभागों, 27 जिलों एवं 202 तहसीलों में बाँटा गया है। दौसा तथा बारा को भी जिला बनाने की योजना है। पंचायती राज्य एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रमों के हेतु राजस्थान में 236 पंचायत समितियाँ बनाई गई है। राज्य की प्रशासनिक इकाइयों का संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया गया है—

(1) अजमेर संभाग—

अजमेर संभाग में नौ जिले तथा 70 तहसीलें हैं। जिलों के नाम क्रमशः अजमेर, अलवर, भरतपुर, जयपुर, झुन्झुनू, सवाईमाधोपुर, सीकर, टोंक, तथा धौलपुर हैं।

(2) बीकानेर संभाग—

बीकानेर संभाग मे 3 जिले एवं 23 तहसीलें है। जिले क्रमशः बीकानेर, चूरू एवं श्री गंगानगर हैं।

(3) जोधपुर संभाग—

जोधपुर संभाग मे 7 जिले एवं 38 तहसीलें हैं जिलें क्रमशः बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर, जोधपुर, नागौर, पाली तथा सिरोही है।

(4) कोटा संभाग—

कोटा संभाग में 3 जिले एवं 22 तहसीलें हैं। जिले क्रमश बूंदी, झालावाड़ तथा कोटा हैं।

(5) उदयपुर संभाग—

उदयपुर संभाग में 5 जिल एवं 49 तहसीलें है। जिले क्रमशः बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर तथा उदयपुर हैं।

प्रत्येक जिले में प्रशासन का सबसे बड़ा अधिकारी जिलाधीश होता है जो जिले के प्रशासन के लिए उत्तरदायी होता है। तहसील प्रशासनिक कार्य का भार तहसीलदार पर होता है। पंचायत समिति का कार्य विकास अधिकारी द्वारा किया जाता है।

प्राकृतिक बनावट

किसी स्थान की प्राकृतिक दशाओं में वहाँ के प्राकृतिक विभाग, मिट्टी ायु तथा प्राकृतिक वनस्पति को सम्मिलित किया जाता है।

(अ) प्राकृतिक विभाग

धरातल की बनावट की दृष्टि से राजस्थान को चार प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) उत्तरी-पश्चिमी मरूस्थली भाग,
(2) मध्य का पहाड़ी भाग,
(3) उत्तर पूर्वी मैदानी भाग तथा
(4) दक्षिणी पूर्वी पठारी भाग।

(1) उत्तरी पश्चिमी मरूस्थलीय भाग—

यह मरूस्थली भाग अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के पश्चिम तथा उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तानी सीमा तक लगभग 1,88,206 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 55 प्रतिशत है। इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या केवल 86 लाख है जो कुल जनसख्या का केवल 1/3 है। यह एक वृहद मरूस्थल के रूप में फैला हुआ है। अरावली के पश्चिम के पास वाले क्षेत्र अर्द्ध मरूस्थली है, जोधपुर एवं बीकानेर संभागों के अधिकांश क्षेत्र इसमे आते हैं। *बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, बीकानेर, चूरू, झुन्झुनू जिले मरूस्थली भाग मे* तथा जालोर, पाली, सीकर, सिरोही एवं जयपुर तथा अजमेर (पश्चिमी क्षेत्र) अर्द्ध मरूस्थली भाग में स्थित हैं। इस भाग मे स्थान स्थान पर बालू रेत के टीले ही टीले हैं जो वायु के साथ-साथ स्थान परिवर्तन करते रहते है। बालू की ये पहाड़िया "धोरे" कहलाती हैं।

यहां गर्मी बहुत अधिक पड़ती हैं। गर्मी-सर्दी एवं दिन रात के तापमानों में काफी अन्तर रहता है। गर्मियों में धूल भरी आँधियों का जोर रहता है। वर्षा का औसत 12 से 15 से. मी. रहता है। ज्यों ज्यों उत्तर पश्चिम की ओर चले जाते हैं, वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। कही-कही तो औसत वर्षा 12 से. मी. से भी कम होती है। दूर-दूर तक पानी के दर्शन नही है। कुएं बहुत कम है। कुओं में पानी 100 से 200 मीटर की गहराई पर मिलता है। इस कारण इस भाग मे प्राकृतिक वनस्पति नाम मात्र की छोटी-छोटी कांटेदार झाड़ियों के रूप से मिलती है खेती केवल अर्द्धमरूस्थली क्षेत्रों में ही खरीफ के मौसम मे वर्षा होने पर की जाती है। ऊंट महत्वपूर्ण पशु है। जीवन की विषमताओं के कारण इस भाग में जनसंख्या बहुत कम है। यह मरूस्थलीय भाग दक्षिण में गुजरात के मैदान तक पूर्व में अरावली तक उत्तर-पश्चिम में सतलज के मैदान तक तथा पश्चिम मे सिंधु नदी की घाटी तक फैला हुआ है। यह वनस्पति हीन एवं जन-विहीन सा है।

1962 में भू-सर्वेक्षण द्वारा वैज्ञानिकों एवं भूगोलवेत्ताओं ने बताया कि यह मरू क्षेत्र उत्तर के गंगासिंधु के बड़े मैदान का ही एक भाग है। इस क्षेत्र की प्रमुख नदियों-घग्घर एवं सरस्वती के विलीन हो जाने से यह मरूस्थल हो गया है। वेद

भाग पठारी है। नदियों की घाटियों मे काली, काली लाल के मिश्रण तथा लाल-भूरी के मिश्रण वाली मिट्टियाँ मिलती है। अतः इन घाटियों में चावल, गेहूं, तिलहन गन्ना आदि मूल्यवान फसलें उगाई जाती हैं। मक्का ज्वार तथा मूंगफली की कृषि पर्याप्त मात्रा मे की जाती है। इस समस्त क्षेत्र में अनेक मूल्यवान खनिज मिलते है। लोहा, अभ्रक, टंगस्टन, अणु खनिज मेगनीज, जस्ता, चूना पत्थर भवन निर्माण का पत्थर आदि खनिज पर्याप्त मात्रा मे मिलते हैं। विविध प्रकार की वनस्पदा भी यहां भरी पड़ी है।

(ब) मिट्टियाँ—

राजस्थान मे अनेक प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती है। प्रमुख मिट्टियों का संक्षिप्त विवरण यहां दिया गया है।

1. रेतीली या बलुई मिट्टी—यह मिट्टी राजस्थान के अधिकाश भागो मे पाई जाती है। अरावली पर्वत शृंखलाओं का उत्तरी पश्चिमी भाग पूर्णरूप से इसी मिट्टी का बना हुआ है यह मिट्टी पानी शीघ्र सोख लेती है। इसमे नमी अधिक समय तक नही ठहर पाती है। इस मिट्टी के कण मोटे होने के कारण पानी नीचे चला जाता है व उड़ जाता है। इस मिट्टी में नमक का अंश अधिक होने से बहुत कम उपजाऊ है यह मिट्टी जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर, झुंझुनू व चूरू जिलों मे पायी जाती हैं। सिचाई सुविधाओ द्वारा इस मिट्टी को उपजाऊ बनाया जा सकता है।

2 भूरी रेतीली मिट्टी—यह मिट्टी बालू मिट्टी जैसी ही होती है इसका रंग भूरा होने से इसे भूरी रेतीली मिट्टी कहते हैं। यह बालू मिट्टी से अधिक उपजाऊ होती है। यह मिट्टी झुंझुनू. पाली, सिरोही तथा सीकर जिलो मे पाई जाती है।

3 लाल मिट्टी—यह मिट्टी उदयपुर जिले के मध्यवर्ती व दक्षिण भागों, बासवाड़ा तथा डूंगरपुर, जिलों में पाई जाती है। इस मिट्टी मे लोहे की अधिकता होती है। इसमे चूना, पोटाश एवं फासफोरस कम मात्रा मे होती है। इस मिट्टी में नाइट्रोजन का अभाव होता है। इस मिट्टी मे मक्का की फसल अच्छी होती है।

4. लाल और पीली मिट्टी का मिश्रण—

उदयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर एव सिरोही जिले मे लाल व पीली मिट्टी का मिश्रण पाया जाता है। इस मिट्टी में नमी बनाये रखने की क्षमता अधिक होती है। इसमे केल्सियम कार्बोनेट की कमी होती है। इस मिट्टी मे मूंगफली कपास तथा फल पैदा किये जाते है।

5. काली मिट्टी—कोटा, बूंदी तथा झालावाड़ जिलो के पठारी प्रदेशों में यह मिट्टी बहुतायत से मिलती है। काली मिट्टी की अधिक मोटी परत नहीं होती है। इस मिट्टी मे सिचाई द्वारा कपास तथा फसले पैदा की जाती है।

6. लाल व काली मिट्टी का मिश्रण—उदयपुर, डूंगरपुर, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा तथा चित्तौडगढ़ जिलों में लाल व काली मिट्टी का मिश्रण पाया जाता है। है यह मिट्टी सभी फसलों के लिए उपयुक्त होती है।

7. कछारी मिट्टी—अलवर, भरतपुर, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक जयपुर तथा गंगानगर जिलों के कुछ भागों में कछारी मिट्टी पाई जाती है। यह मिट्टी उपजाऊ होती है इस मिट्टी में स्थान स्थान पर लाल मिट्टी का मिश्रण भी मिलता है।

(स) जलवायु—

राजस्थान की जलवायु शुष्क मरुस्थलीय है। यहां गर्मियों में अत्यधिक गर्मी तथा सर्दियों में अधिक ठंड पड़ती है। सर्दी में तापमान अनेक स्थानों पर शून्य तक पहुँच जाता है। जबकि गर्मियों में स्थान स्थान पर तापक्रम 40° से 50° से ग्रे, या इससे भी अधिक होता है। गर्मियों में राज्य के अधिकांश भागों में धूल भरी आंधियां चलती है तथा सर्दियों मे कोहरा छाया रहता है।

राजस्थान की ऋतुएं—राजस्थान में तीन ऋतुएं होती है, जो क्रमशः ग्रीष्म, वर्षा एवं शीत के नाम से जानी जाती है।

ग्रीष्म ऋतु—राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु मार्च के महीने से प्रारम्भ होकर जून तक रहती है। मई एव जून के महीनों मे सबसे ज्यादा गर्मी पड़ती है। उत्तरी पश्चिमी राजस्थान के अधिकांश स्थानों का तापक्रम 45° से.ग्रे. तक पहुँच जाता है। ग्रीष्म ऋतु में धूलभरी तेज आंधियां एवं लू चलती है। दिन में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है। तथा वायु में नमी का अंश शून्य हो जाता है। रात को बालू रेत ठण्डी होने से तापक्रम गिर जाता है तथा 15°–16° से. ग्रे तक चला जाता है।

वर्षा ऋतु—राजस्थान मे वर्षा ऋतु जून के अन्तिम या जुलाई के प्रथम सप्ताह में आरम्भ होती है। राजस्थान में वर्षा को रोकने के लिए ऊंची एव हवाओं के विरुद्ध दिशा में स्थित पहाड़ियों व वनों का अभाव है। अत. अरब सागर की हवाएं राजस्थान मे वर्षा किये बगैर आगे बढ़ जाती हैं। जब बगाल की खाडी का मानसून असम, बगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि पूर्वी राज्यों में वर्षा करती हुई राजस्थान तक पहुंचती है तो उनमें जल की मात्रा समाप्त हो चुकी होती है। परिणामस्वरूप राजस्थान मे ये बहुत कम वर्षा करती है। राजस्थान के पश्चिमी भागों मे वर्षा बहुत कम तथा पूर्वी भागों मे अपेक्षाकृत अधिक होती है। सिरोही तथा झालावाड़ जिलों में औसत 100 से मी. कोटा में 88.5 से. मी, बांसवाड़ा मे 92 2 से. मी चित्तौड़गढ़ में 85 सेन्टीमीटर वर्षा होती है जबकि जैसलमेर मे 16.4 से.मी. बीकानेर में 26.4 से.मी., बाड़मेर मे 26.8 से. मी, गंगानगर मे 25.4 से. मी. तथा जोधपुर में 31.0 व जयपुर 54.82 सेन्टी मीटर वर्षा होती है।

शीत ऋतु—राजस्थान मे सितम्बर में वर्षा समाप्त हो जाती हैं, तथा. अक्टूबर नवम्बर से शरद ऋतु प्रारम्भ हो जाती हैं। वर्षा ऋतु की समाप्ति तथा शीत

ऋतु के प्रारम्भ के समय का खास सफ्टूबर का महीना राजस्थान में बहुत सुहावना होता है। शीत ऋतु में राजस्थान के अधिकांश भागों में कड़ाके की सर्दी पड़ती है। राजस्थान में कभी कभी सर्दी के मौसम मे प्रतिचक्रवातों से वर्षा हो जाती है जो रबी की फसल के लिए बहुत लाभदायक होती है।

राजस्थान में वर्षा का वितरण—राजस्थान में 90 से 95 प्रतिशत वर्षा जुलाई से सितम्बर तक होती है शीत ऋतु में बहुत कम वर्षा होती है अधिकांश वर्षा मूसलाधार वर्षा के रूप मे कुछ ही दिनो मे होती है। राजस्थान के विभिन्न भागों में वर्षा का वितरण बहुत अधिक असमान है। वर्षा की मात्रा दक्षिण पूर्व से उत्तर पश्चिम की ओर कम हो जाती है। अर्थात दक्षिणी पूर्वी भागों मे वर्षा सर्वाधिक होती है। उत्तरी पश्चिमी राजस्थान के थार के मरुस्थल मे वर्षा सबसे कम होती है। दक्षिणी पूर्वी भागों में वर्षा 100 सेन्टीमीटर के आसपास होती है, जबकि थार के रेगिस्तान मे 23 सेन्टीमीटर से भी कम होती है।

(द) प्राकृतिक वनस्पति—

किसी भी स्थान पर प्राकृतिक रूप से जो झाड़ियां एव पेड़ पौधे पाये जाते हैं वे वनस्पति के रूप मे पाये जाते हैं। प्रत्येक स्थान की वनस्पति जलवायु एव मिट्टी की बनावट पर निर्भर करती है। राजस्थान की शुष्क मरुस्थलीय जलवायु एव बालू मिट्टी के कारण यहाँ की वनस्पति भी मरुस्थलीय है। राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के केवल 10.6 प्रतिशत अर्थात 36,164 किलोमीटर क्षेत्र मे प्राकृतिक वनस्पति या वन पाये जाते हैं। राजस्थान की वनस्पति को चार भागों में बाटा जा सकता है।

1 शुष्क वनस्पति क्षेत्र—इस क्षेत्र में *गगानगर*, चूरू, बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर एवं बाड़मेर जिले आते है इन भागो मे औसत वर्षा 20-30 से मी होती हैं। यहां ऐसी वनस्पति पायी जाती है जो नमी को अधिक समय तक बनाये रख सकती हैं। तथा बहुत अधिक गर्मी को सहन कर सकती है। इस वनस्पति के पत्ते बहुत छोटे होते है, जड़े गहरी होती है, तथा पेडो पर काटे होते हैं। इस वनस्पति क्षेत्र मे ऊँट, भेड़, बकरिया आदि पशु पाये जाते हैं।

2. अर्द्ध शुष्क वनस्पति क्षेत्र—इसमे सिरोही, पाली, सीकर, झून्झनू तथा बाडमेर जिले के कुछ भाग आते है। इस क्षेत्र में *अरावली की ढालू पहाड़िया* हैं तथा भूमि चौरस है। औसत वर्षा 30 से 35 से.मी. तक होती है इस क्षेत्र मे कांटेदार झाडिया, आडू, इमली आदि किस्म के पेड़ पौधे मिलते है। इन वनस्पति क्षेत्रों मे अनेक वन्य पशु मिलते हैं। जैसे लोमडी, खरगोश, भेड़िया, जरख, गीदड़ आदि। इन क्षेत्रों में भी पशुपालन का काम अधिक होता है।

3. उपजाऊ क्षेत्र—इस क्षेत्र में राज्य के उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौडगढ, झालावाड़, कोटा तथा बूंदी जिले आते है। ये सभी उपजाऊ भाग है तथा इनमे अच्छी कृषि की जाती है। इस क्षेत्रो में *औसत वर्षा 95 से 100 से.मी.*

तक होती यहां वनस्पति पहले के दो क्षेत्रों की तुलना में अधिक घनी होती है। इन क्षेत्रों में गाय, बैल, बकरियां, भैंस, घोड़े आदि अधिक पाले जाते हैं।

4. शुष्क व तर क्षेत्र—इस क्षेत्र में अलवर, भरतपुर, टोंक तथा कोटा जिले के कुछ भाग आते है। इस क्षेत्र में वर्षा अधिक होती है व वनस्पति अधिक पाई जाती है। अनेक प्रकार के पशु पक्षी इन क्षेत्रों मे पाये जाते हैं। भरतपुर का घना अभयारण्य पक्षियों के आश्रम के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

राजस्थान के जल स्रोत

किसी स्थान के जल स्त्रोतों को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। (1) भूमि की ऊपरी सतह का जल तथा (2) भूमि के नीचे का जल या भूमिगत जल दोनों प्रकार के जल स्त्रोत मुख्य रूप से उस क्षेत्र की वर्षा पर निर्भर करते हैं। वर्षा का जल ही नदी नालों से बहता है। तथा तालाब एवं बांधों में एकत्रित होता है। वर्षा का यह पानी भूमि सोख लेती है, जो नीचे जाकर कठोर चट्टानों में एकत्रित हो जाता है, यह भूमिगत जल होता है। राजस्थान में वर्षा की कमी के कारण सतत बहने वाली नदियों का अभाव है। राजस्थान में झीलें एवं तालाब भी कम है। हम यहाँ पर दोनों प्रकार के जल स्रोतों का वर्णन कर रहें हैं।

धरातलीय स्रोत

धरातलीय जल के अन्तर्गत राजस्थान की कुछ प्रमुख नदियों एवं झीलों का वर्णन यहां किया गया है

राजस्थान की प्रमुख नदियां—

(1) चम्बल नदी—यह नदी मध्य प्रदेश में इन्दोर के पास मऊ छावनी के पास विन्ध्याचल की चोटियों से निकल कर उत्तर की ओर बहती है। मध्य प्रदेश में लगभग 313 किलोमीटर बहने के पश्चात् चोरासीगढ के पास राजस्थान में प्रवेश करती है। इसमें बामनी पारवती व काली सिन्धु नदियां मिलती है। राजस्थान में यह कोटा, बूंदी एवं सवाईमाधोपुर जिलों मे बहती है। राजस्थान में बहने के बाद यह उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर जाती है तथा इटावा नगर से लगभग 45 किलो मीटर दूर यमुना नदी में दाहिने किनारे पर मिल जाती है। इसकी कुल लम्बाई 1,045 किलोमीटर है।

(2) बनास नदी—

वन की आशा बनास उदयपुर जिले में कुम्भलगढ़ दुर्ग से 5 कि मी. पूर्व में कांकरोली नाथद्वारा के बीच अरावली की पहाड़ियों से निकलती है। महत्व की दृष्टि से चम्बल नदी के बाद इसी का नाम आता है। गोगुन्दा के पठार तक दक्षिण की ओर बहने के उपरान्त फिर एकदम उत्तर पूर्व में बहने लगती है। उदयपुर, चित्तौड़, भीलवाड़ा, अजमेर तथा टोंक जिलों में बहती हुई सवाई माधोपुर

जिले में रामेश्वर के पास चम्बल नदी में बाये किनारे पर मिल जाती है। मार्ग में यह बेड़च, कोठारी, ढोंढ, खारी, मासी तथा मोरल नदियों का पानी लेती हुई बहती है। इसकी लम्बाई 483 किलोमीटर है।

(3) लूनी नदी—

लूनी नदी अजमेर के आना सागर के पास नाग पहाड़ियों से निकलकर 320 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में जोधपुर, बाड़मेर, जालोर के सूखा ग्रस्त जिलों में बहती है। इसका प्रवाह क्षेत्र लगभग 34866 वर्ग किलोमीटर है। यह पूर्णतः बरसाती नदी है।

(4) माही नदी—

माही नदी मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में विन्ध्यांचल पर्वतो से निकलकर राजस्थान के बांसवाडा जिले में प्रवेश करती है। पहले उत्तर की ओर बहती है और बाद मे दक्षिण पूर्व दिशा में बहकर गुजरात राज्य को पार करती हुई खम्भात की खाड़ी में गिर जाती है। इसकी कुल लम्बाई 579 किलोमीटर है।

(5) घग्घर नदी—

यह नदी हिमालय प्रदेश से शिमला के पास हिमालय से निकलती है। यह राजस्थान के गंगानगर जिले में भूमि में विलीन हो जाती है। इसके जल से हनुमानगढ क्षेत्रों मे नहरों द्वारा सिंचाई की जाती है। ये क्षेत्र भारत के कम वर्षा वाले क्षेत्रो में है।

(6) बेडच नदी—

बनास नदी की सहायक बेडच नदी उदयपुर के उत्तर पश्चिम मे अरावली की पहाड़ियों से निकलती है। आयड नदी के रूप में जानी जाकर उदयसागर झील मे गिर जाती है। उदयसागर झील से निकलने के पश्चात बेडच नदी के नाम से जानी जाती है और उत्तर पूर्व में 193 किलोमीटर बहने के उपरान्त चित्तौड़ जिले में बिगोद के पास बनास नदी में मिल जाती है।

(7) बाण गंगा—

महाभारत कालीन बाण गंगा का जन्म धनुर्धारी अर्जुन के बाण से हुआ बताते हैं। यह राजस्थान के जयपुर व सीकर जिलो की सीमा के पास बैराठ की पहाड़ी से निकलकर पूरब की ओर भरतपुर जिले मे होती हुई 378 कि मी. बहने के उपरान्त, आगरा जिले की फतेहाबाद तहसील मे यमुना नदी के दाहिने किनार पर मिल जाती है।

(8) अन्य नदियां—

चम्बल नदी की सहायक पार्वती तथा काली सिंध नदियां मध्य प्रदेश में उत्तर विन्ध्यांचल पर्वत से निकलकर राजस्थान के झालावाड तथा कोटा जिलों में बहती हुई चम्बल नदी के दाहिने किनारे पर मिल जाती है।

साबरमती नदी का उद्गम स्थान उदयपुर जिले की अरावली की 1,165 मीटर ऊंची दक्षिणी पूर्वी पहाड़ियां है। यह राजस्थान राज्य में बहुत थोड़ी दूर बहती है। इसका अधिकांश भाग गुजरात में है। यह खम्भात की खाड़ी में गिर जाती है। विश्व बन्धु बापू के चरण छूकर यह धन्य हो गयी है।

राजस्थान की झीलें व तालाब—

राजस्थान में वर्षा का अभाव रहता है और पानी की कमी वर्ष भर बनी रहती है। अतः वर्षा के पानी को सिंचाई तथा पीने के पानी के लिए स्थान-स्थान पर तालाबों तथा झीलों में एकत्रित कर लिया जाता है। यह पानी अधिकतर पहाड़ी तथा पठारी क्षेत्रों में जहाँ पानी सोखने की सम्भावना कम रहती है एवं झील व तालाब निर्माण के लिए पर्याप्त होती है, रोक कर इकट्ठा किया जाता है। राजस्थान की अधिकांश झीलें मीठे पानी की है, परन्तु रेगिस्तानी भागों की कुछ झीलें खारे पानी की है।

(अ) राजस्थान की खारे पानी की झीलें

(1) सांभर झील—सांभर झील 26.9 उत्तरी अक्षांश से लेकर 27.2 उत्तरी अक्षांश तक तथा 74 9 पूर्वी देशान्तर से 75·3 पूर्वी देशान्तर तक फैली हुई है। यह जयपुर जोधपुर रेल मार्ग पर प. रे. के फुलेरा जक्शन से 8 कि.मी. उत्तर पश्चिम मे स्थित है। यह भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। इसकी लम्बाई पूर्व पश्चिम में लगभग 32 कि. मी. तथा उत्तर दक्षिण फैलाव 3 35 से 11.25 किलोमीटर तक है। इसका फैलाव लगभग 234 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है। यह झील 50 से मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र मे स्थित है। इसमें मेड खारी, रूप नगर तथा खण्डेला नदियां आकर गिरती है। इस झील में पानी की गहराई 4 मी. तक रहती है गर्मियों में इसका फैलाव कम हो जाता है। इस झील का पानी नमक बनाने के काम आता है। प्रतिवर्ष इस झील से भारत के नमक के कुल उत्पादन का 8·7 प्रतिशत भाग प्राप्त होता है। ऐसा अनुमान है कि इसमें 650 लाख टन नमक भरा पड़ा है।

(2) डीडवाना झील—यह सांभर झील से 50 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में नागौर जिले के डीडवाना कस्बे के पास स्थित है। इसका फैलाव 10 वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में है। यह पश्चिम में अरावली की एक पहाड़ी तथा अन्य तीनों ओर रेतीले टीलों से घिरी हुई है। इसके तल में नमकीन चिपचिपी काली मिट्टी है। इस क्षेत्र में वर्षा कम होती है। अतः नमक निकालने का कार्य वर्ष भर चलता रहता है।

(3) लूनकरनसर झील—बीकानेर जिले में उत्तरी रेलवे के बीकानेर

कस्बे के पास यह झील स्थित है। यह खारे पानी की छोटी झील है। इससे नमक निकाल कर स्थानीय मांग को पूरा किया जाता है।

(4) पंचभद्रा झील—यह बाड़मेर जिले में बाड़मेर से लगभग 77 कि. मी. पूरब में बाड़मेर जोधपुर रेल मार्ग पर स्थित है। यहां पर मैगनेशियम लवण निकाला जाता है। इस झील में 1040 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पानी इकट्ठा होता है। वर्षा की कमी के कारण इस झील से नमक निकालने के काम में बाधा होती है।

(ब) राजस्थान में मीठे पानी की झीलें

(1) जयसमन्द झील—इसको ढेबर झील भी कहते हैं। यह उदयपुर नगर से 45 किलोमीटर द. पू में स्थित है और समुद्र तल से 580 मीटर ऊंचाई पर है। इसका निर्माण महाराजा जयसिंह ने सन् 1628 ई. में गोमती नदी पर बांध बनाकर कराया था। बांध 381 61 मीटर लम्बा तथा 35.36 मी ऊंचा है। झील में लगभग 1,800 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का पानी इकट्ठा होता है इस झील की परिधि 145 किमी है।

राजस्थान के निर्माण के पश्चात् सिचाई के लिए इस झील से दो नहरें श्यामपुर नहर तथा भटा नहर निकाली गई हैं। मुख्य नहरों की लम्बाई 162.50 किलोमीटर तथा शाखाओं की लम्बाई 124 किलोमीटर हैं। इस झील में मछली पालन भी होता है।

(2) राजसमन्द झील—उदयपुर, अजमेर राजमार्ग पर कांकरोली कस्बे के पास उदयपुर नगर के 59 कि.मी. उत्तर में यह झील स्थित है। इसकी लम्बाई 6.44 कि मी. व चौड़ाई 2 50 कि मी. से 3 कि मी. तक है। इसमें लगभग 513 वर्ग कि.मी. का पानी आकर इकट्ठा होता है। इस झील का निर्माण महाराजा जयसिंह ने मेवाड़ के वि.सं. 1662 (सन् 1605) के भीषण अकाल के समय राहत कार्यों के अन्तर्गत कराया था। इसका जल सिचाई के काम आता है। सिचाई क्षमता बढ़ाने के लिए बनास की सहायक खारी नदी का पानी भी इसमें डाल दिया गया है।

(3) पिछोला झील—इसका निर्माण महाराजा लाखा के राज्यकाल में एक बनजारे ने करवाया था। महाराणा उदयसिंह ने इसके किनारों को ऊंचा उठवाया। इसका फैलाव 7 कि.मी. लम्बाई व 2 कि मी. चौड़ाई में है। पिछोला ग्राम के निकट होने के कारण इसका नाम पिछोला झील पड़ा है।

(4) फतहसागर झील—पिछोला झील के उत्तर में पिछोला झील से एक नहर द्वारा यह झील जुड़ी हुई है, यह लगभग 2.50 कि.मी लम्बे व 1.16 कि मी. चौड़े क्षेत्र में फैली हुई है।

5 आनासागर झील—अजमेर नगर के दक्षिण में अरावली की पहाड़ियों से घिरी आनासागर झील बड़ा रमणीक दृश्य उपस्थित करती है। इस झील का निर्माण इतिहास प्रसिद्ध सम्राट पृथ्वीराज चौहान के पितामह अरणोराज अथवा आनाजी ने सन् 1135 में करवाया था। यह लगभग 13 कि मी. की परिधि में

फैली हुई है। इस झील के पूर्वी कोने पर बजरंगगढ़ की पहाड़ी पर हनुमानजी का प्रसिद्ध मन्दिर है।

(6) अन्य झीलें—अलवर जयपुर मार्ग पर अलवर नगर से 12 किलोमीटर दूर सीलीसेड झील पहाड़ियों के मध्य रमणीक प्राकृतिक दृश्य उपस्थित करती है। इसके जल से आसपास की भूमि सींची जाती है। बूंदी की नवलखा झील, बीकानेर से 50 किलोमीटर द. प. में कपिल मुनि के आश्रम के पास कोलायत झील तथा डूंगरपुर के पास गैव सागर झील सिंचाई तथा पीने के पानी के काम आती है। गैव सागर झील के मध्य में महारानी पद्मनी के अंगरक्षक गोरा बादल का महल बना हुआ है।

चित्तौड़ दुर्ग पर बनी भीमतल तथा अन्य तालाब, डीग का पहाड़ ताल जोधपुर के बालसमन्द और सरदारमन्द तालाब भी उल्लेखनीय हैं। राजस्थान में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित माउन्ट आबू में "नक्की" झील का उल्लेख किये बिना वह वर्णन अधूरा ही रहेगा। नक्की झील पर्यटकों का मन मोह लेती है। सम्भवतः यह झील ज्वालामुखी के मुख में स्थित है।

पातालीय भूमिगत जलस्रोत

राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग में भू-गर्भिक जल के उसी प्रकार पर्याप्त स्रोत हैं जिस प्रकार उत्तर के बड़े मैदानी क्षेत्रों में है, क्योंकि राज्य के द. पू. भाग मैदानी हैं तथा नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी के बने हैं। मिट्टी का अधिकांश क्षेत्र दोमट एवं चिकनी का है। कहीं-कहीं काली व लाल मिट्टी का मिश्रण भी मिलता है। और कहीं पर निचले क्षेत्रों में लाल मिट्टी के रूप में भी मिलती है। इस कारण सभी क्षेत्रों में पानी की सतह ऊंची रहती है। साधारणतः 15–20 मीटर की गहराई पर पानी मिल जाता है। इन क्षेत्रों में सिंचाई के लिए कुओं से पानी चरस, रहट तथा नलकूपों द्वारा निकाला जाता है। इन क्षेत्रों में वर्षा भी पर्याप्त मात्रा में हो जाती है। इस कारण सिंचाई के लिए नहरों का अभाव खटकता नहीं है। राजस्थान के उत्तरी पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्रों में स्थित जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर आदि जिलों में भूमि के नीचे अथाह जल राशि के विद्यमान होने का अनुमान लगाया गया है। जैसलमेर में इस दिशा में सफलता भी मिली है। पाकिस्तान स्थित सिन्ध प्रांत में कारेज प्रणाली की नहरों द्वारा भूमि के नीचे के पानी से सिंचाई की जाती है। इस प्रकार भारत में राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में भू-गर्भिक पानी द्वारा सिंचाई सम्भव है। राज्य के सिंचाई विभाग द्वारा किये गये सर्वेक्षणों के अनुसार भू-गर्भिक पानी के अनुमानतः 149 लाख एकड़ फीट के भण्डार है। केन्द्रीय खाद्य एवं कृषि मन्त्रालय के नलकूप निर्माण संगठन विभाग के अनुसार जैसलमेर जिले के लाठी क्षेत्र में भू-गर्भिक पानी के अथाह भण्डार स्थित हैं। इस प्रकार इन सभी स्रोतों का पता लगने पर राजस्थान के इन क्षेत्रों में पानी की समस्या काफी हद तक दूर हो जावेगी।

(2) राजस्थान के मुख्य प्राकृतिक विभाग
Broad physical divisions of Rajasthan

(i) दक्षिणी राजस्थान

प्राकृतिक दशा—इस भाग के दक्षिण पूर्व मे समतल भूमि है शेष सारी भूमि पथरीली है, जिसमे माही और बनास नदियां बहती हैं।

जलवायु—यहां साधारण गर्मी और सर्दी पड़ती है। वर्षा अच्छी हो जाती है।

उपज—रबी और खरीफ दोनों फसलें होती हैं। गेहूं, चना, अफीम, बाजरा, ज्वार, मक्का, गन्ना, कपास और दालें होती हैं। इमारती पत्थर राजसमन्द तथा चित्तौड़ जिले में होता है। तांबा उदयपुर में देवारी और भीलवाड़ा में मिलता है। उदयपुर जिले में लोहे, सीसे और जस्ते की खानें है।

जिले—उदयपुर चित्तौड़, भीलवाड़ा, डूंगरपुर, बांसवाड़ा।

नगर—उदयपुर—यहां कांच, रंग, लकड़ी और जड़ाई का काम बढ़िया होता है। झील जलमहल, सज्जन निवास बाग, चिड़िया घर, अजायबघर, जगदीशजी का मन्दिर, अनेकों उद्यान और सुन्दर भवन नगर की शोभा बढ़ाते हैं। सहेलियों की बाड़ी के फव्वारे बड़े सुन्दर है। फतेह सागर झील और प्रताप मेमोरियल भी दर्शनीय हैं। रेल्वे ट्रेनिंग स्कूल भी देखने योग्य हैं।

चित्तौड़गढ़—यहां का प्रसिद्ध ऐतिहासिक गढ़, राणा कुम्भा का महल, मीरा का मन्दिर और विजयस्तम्भ देखने योग्य है। 37 मीटर ऊंचा यह 7 मंजिला स्तम्भ खुदाई के सुन्दर काम से सजा हुआ है। चित्तौड़गढ़ की छपी हुई चद्दरें और जाजमें प्रसिद्ध हैं।

नाथद्वारा, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, एकलिंगजी (कैलासपुरी) और ऋषभदेव जी अन्य मुख्य स्थान है। नाथद्वारा प्रमुख तीर्थ स्थान हैं। ऋषभदेव जी जैनियों का बड़ा तीर्थ स्थान है।

शिक्षण संस्थाएं—उदयपुर में विश्वविद्यालय, मेडिकल कालेज, कृषि कालेज, शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, होम साइन्स कालेज, मीरा गर्ल्स कालेज, आयुर्वेद कालेज, श्रमजीवी कालेज, आदि हैं। इस भाग के बड़े नगरों, तहसीलों के हैडक्वार्टरों और बड़े गांवों मे अन्य माध्यमिक विद्यालय हैं।

(ii) दक्षिणी पूर्वी राजस्थान

प्राकृतिक दशा—इस भाग के उत्तर पूर्व में मैदान है। शेष सारा भाग पठार अर्थात उच्च भूमि है, जिसके ऊपर नमक उपजाऊ मिट्टी है और नीचे कठोर पथरीली चट्टान है। ऊपर माल अर्थात ऊंचाई पर स्थित उत्तम भूमि को कहते हैं।

नदियां—यहां चम्बल और उसकी सहायक नदियां (काली सिन्ध, परवन, ..) आदि बहती है।

जलवायु—गर्मी-सर्दी साधारण पडती हैं। पर्याप्त वर्षा

उपज—रबी और खरीफ दोनो फसलें अच्छी होती हैं। ...
(जिससे अफीम बनती है); बाजरा, मूंग, मोठ, ज्वार, मक्का, कपास और गन्ना मुख्य उपज है। कोटा के निकट इमारती पत्थर मिलता है। वन बहुत हैं जिनसे इमारती लकडी, ईधन, चारा, जडी बूंटिया, शहद, लाख, गोंद, चिरौंजी, फर्नीचर और खिलौने बनाने की लकडी और दवाईयां प्राप्त होती है।

पशु—गाय, बैल और भैंसें पाली जाती हैं। वनों में सिंह और बाघ होते है। पशु पालन का धन्धा भी यहां होता है।

सड़कें—अजमेर से बूंदी, कोटा, झालावाड होती हुई सड़क भोपाल को जाती है। कोटा से एक सड़क बारा होती हुई झासी का जाती है।

जिले— कोटा, बूंदी, झालावाड।

रेलें—दिल्ली और आगरा से आने वाली पश्चिम रेल्वे कोटा होती हुई बम्बई को जाती हैं। कोटा के मध्य रेलवे बीना को जाती है। ये दोनो बड़ी पटरी की लाइनें हैं। सभी स्टेशन मण्डिया हैं।

नगर-कोटा— चम्बल नदी के किनारे औद्योगिक नगर और जिला केन्द्र हैं। यहां नये-नये उद्योग खुलने से जनसख्या तेजी से बढ़ रही हैं। नगर की वर्तमान आबादी साढे तीन लाख से अधिक हैं यहां कपडा बुनने तथा रगाई छपाई का काम अच्छा होता है। यहां अमर निवास, अजायबघर तथा नदी के तीर पर अधर शिला प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य है।

बूंदी—जिला बूंदी का प्रधान नगर हैं। अति सुन्दर स्थान है। यहां कटोरे अच्छे बनते है।

लाखेरी—यहां सीमेंट बनाने का कारखाना है।

शिक्षण संस्थाएं—कोटा में राजकीय कालेज, जे. डी. बी. गर्ल्स कालेज, जवाहर लाल नेहरू शिक्षण प्रशिक्षण विद्यालय, सरस्वती विद्यापीठ, विठ्ठलनाथ संस्कृत विद्यालय आदि हैं। इनके अतिरिक्त बूंदी, बारां, झालावाड में डिग्री कालेज है।

कोटा बैरेज—चम्बल नदी पर कोटा नगर के पास एक बड़ा बांध बनाया गया है। यह गांधी सागर बांध से निकले पानी को नहरों के रूप मे वितरित कर देता है। गांधी सागर बांध चम्बल नदी पर मध्य प्रदेश में स्थित है। राणा प्रताप सागर बांध चम्बल के चुलिया झरने पर बनाया गया है। चम्बल नदी की नहरों के पानी से बहुत सी भूमि की सिंचाई होने लगी हैं। चम्बल योजना से बहुत सी बिजली भी उत्पन्न की जाती है। वर्षा ऋतु मे बाढ़ से नदी जो भारी हानि पहुंचाती थी, उसे यह बांध रोकता हैं।

(iii) पूर्वी राजस्थान

प्राकृतिक दशा—इस खण्ड के उत्तर-पश्चिम मे रेतीला प्रदेश है। उत्तरी, पूर्वी तथा दक्षिणी भाग पहाड़ी हैं। दक्षिण-पश्चिम में अरावली पर्वत है। शेष भाग मैदान है। जिसमें बाणगंगा, बनास और चम्बल नदियां बहती हैं। पश्चिम में सांभर नाम की नमक की झील है। इसके पानी को सुखा कर नमक प्राप्त किया जाता है।

जलवायु—उत्तर पश्चिमी भाग में गर्मियों में बहुत गर्मी पड़ती है और सर्दियों में बहुत सर्दी। वर्षा कम होती है। शेष भाग में कड़ी गर्मी व साधारण सर्दी पड़ती है तथा वर्षा अच्छी होती है।

उपज—यहां रबी (उन्हालू) और खरीफ (स्यालू) दोनों फसलें बहुत अच्छी होती है। गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंग, मोठ, तिलहन, कपास और गन्ना उपजते हैं। वन भी बहुत हैं। मैदानी वनों के पेड़ों को अक्सर पशु खा जाते हैं, अतः वे पास-पास नही होते, परन्तु घने बहुत होते हैं। मैदानी भाग में मिट्टी सुलभ होने के कारण खेतों की बाड़ें मिट्टी की बनाते हैं। भरतपुर का किला भी मिट्टी का बना हुआ है। गाँवों में घर भी मिट्टी के बनाते हैं।

खनिज पदार्थ—पत्थर-जयपुर, भरतपुर, सगंमरमर मकराना, स्लेट पत्थर अलवर, लोहा-जयपुर, अलवर, अजमेर, अभ्रक (मोडल) जयपुर, अलवर, अजमेर। गेरू-अलवर, नमक-सांभर, तांबा-सिघाना, खेतड़ी (झूंझनू) अलवर।

पशु—गाय, बैल, झूनझूनू, जयपुर, भरतपुर। भैसे (टोंक) भेड़ बकरियां— जयपुर सीकर, झूनझूनू :

जिला—जयपुर, अजमेर, सीकर, झूनझूनू, अलवर, भरतपुर, धोलपुर, सवाई माधोपुर, टोंक।

जयपुर—जयपुर राजस्थान की राजधानी है। यहां हमारे राज्य के मुख्य दफ्तर हैं। हमारे राज्यपाल भी यहीं रहते हैं। यह पहाड़ियों के बीच एक सुन्दर नगर है। इसकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक है। यह नगर महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने नक्शे के अनुसार 1727 ई० में बसाया। महाराजा जयसिंह ने यहां ज्योतिष का बहुत बड़ा यन्त्रालय (जन्तर-मन्तर) बनवाया।

जयपुर के रंग तथा छपे हुए कपड़े, खुदाई वाली पीतल की वस्तुएं, लाख की चूड़ियां पत्थर की मूर्तियां, नीले तथा सफेद बरतन तथा मीनाकारी वाले आभूषण भारत भर मे प्रसिद्ध हैं। आमेर के फव्वारे और महल, हवा महल, महाराजा म्यूजियम, अजायबघर चिड़िया घर आदि अनेक देखने योग्य स्थान हैं।

अजमेर—अरावली पर्वत पर स्थित प्रसिद्ध नगर और स्वास्थ्य वर्धक स्थान है। अजमेर शरीफ में ख्वाजा साहिब की दरगाह मुसलमानों का सुप्रसिद्ध तीर्थ है।

यहां हर साल बड़ा भारी उर्स मनाया जाता है। जनसंख्या पौने चार लाख है। यहां मशीनी यन्त्र फैक्टरी चालू की गई है।

अलवर के अजायबघर में अस्त्र-शस्त्र और छोटे चित्रों का अद्वितीय संग्रह है। किशनगढ़ में कपड़े की मिल है। भरतपुर में चंवर, पंखे आदि अच्छे बनते हैं। यहां मिट्टी का गढ़, महल और शिकारगाह देखने योग्य है यहां दूध के पाउडर की फैक्टरी चालू की गई है। यहां से थोड़ी दूर डीग के भवन और घना पक्षी अभयारण्य देखने योग्य हैं।

शिक्षण संस्थाएं—जयपुर में राजस्थान विश्वविद्यालय, सवाई-मानसिंह मेडिकल कालेज, मालवीय कालेज, कालेज ऑफ नर्सिंह, महाराजा संस्कृत कालेज, दिगम्बर जैन संस्कृत कालेज, दादू महाविद्यालय, महाराजा कालेज, महारानी कालेज कानोडिया कालेज, अग्रवाल कालेज, जैन सुबोध कालेज, पारीक कालेज, संस्कृत कालेज प्रमुख हैं।

अजमेर में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का कार्यालय है। यहां राजकीय मेडिकल कालेज, दयानन्द कालेज, रिजनल कालेज ऑफ एजुकेशन, जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, संस्कृत कालेज, गवर्नमेंन्ट कालेज, सावित्री कालेज, सोफिया कालेज, संगीत कालेज, आदि प्रमुख हैं।

पिलानी में तकनीकी शिक्षा संस्थान और जोबनेर में कृषि कालेज हैं।

(iv) उत्तरी राजस्थान

प्राकृतिक दशा—उत्तर में घग्घर का मैदान तथा शेखावाटी क्षेत्र उपजाऊ है। शेष भाग मरुस्थली है।

नहरें—गंगनहर पंजाब में सतलज नदी (फिरोजपुर) से निकल कर आती है। भाखड़ा नांगल की बहुत बड़ी नहर पंजाब से सतलज नदी में से नंगल के निकट निकाली गई है। यह हरियाणा में से होती हुई राजस्थान में प्रवेश करती है। इसकी अनेक शाखाएं गंगानगर और बीकानेर के जिले को पानी देती है। राजस्थान नहर पंजाब में सतलज नदी में से निकाली गई है। यह इस खण्ड के पश्चिमी भाग को पानी देती है।

जलवायु—गर्मियों में कड़ी गर्मी और सर्दियों में कड़ी सर्दी पड़ती है। वर्षा 50 सैन्टीमीटर से कम होती है।

उपज—उत्तरी भारत में दोनों फसलें होती हैं। दक्षिणी भाग रेतीला है। वहां खरीफ की फसलें कुछ हो जाती है। खरीफ की फसल में ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, मक्का, गन्ना तथा कपास की कृषि की जाती है तथा रबी की फसल में गेहूं

तथा गन्ने की खेती होती है भूमि से मुलतानी मिट्टी तथा कुछ कोयला मिलता है। रेगिस्तान में तेल की खोज की जा रही है।

पशु—गाय, भेड़, बकरियां, ऊंट होते है और पशुपालन भी खेती की तरह एक धन्धा है।

रेलें—यहां छोटी पटरी की रेले है, जो उत्तर रेलवें की शाखाएं हैं। एक लाईन बठिण्डा से आती है तथा हनुमानगढ़, सूरतगढ होती हुई बीकानेर को जाती है। एक लाईन अनूपगढ़ जाती है। हनुमानगढ़ से एक लाईन नोहर, तहसील मादरा, सादुलपुर, लोहारु और दिल्ली को जाती है। एक लाईन बीकानेर से रतनगढ, चूरू और सादुलपुर होती हुई एक ओर हिसार और दूसरी ओर लोहारू, रेवाड़ी और आगे दिल्ली को जाती है रतनगढ़ से शाखा सरदार शहर को और दूसरी सुजानगढ़ जसवन्तगढ होती हुई डेगाना को जाती है। बीकानेर से एक लाईन नागौर और एक थी कोलायत जी को जाती है।

जिले—बीकानेर, गंगानगर, चूरू

मुख्य नगर—बीकानेर—प्रसिद्ध नगर है, इसकी जनसंख्या लगभग तीन लाख है। यहां की मिश्री, रसगुल्ले, भजिया, पापड़ तथा ऊनी कम्बल प्रसिद्ध है। यहां का किला बाग और अजायबघर देखने योग्य है। निकट ही देशनोक में करणी माता का मन्दिर हैं। बीकानेर जिले में कोलायत तीर्थ भी है।

गंगानगर—गंगनहर की कृपा से बसा हुआ एक अच्छा व्यापारिक तथा जिले का केन्द्र है।

राजगढ, रतनगढ, सरदारशहर, सुजानगढ़, हनुमानगढ़, नोहरा और मादरा अन्य मुख्य कस्बे हैं।

शिक्षण संस्थाएं—बीकानेर मेडिकल कालेज, पशु चिकित्सा कालेज, जैन कामर्स कालेज, शिक्षण प्रशिक्षण कालेज, सादुल पब्लिक स्कूल, सादुल संस्कृत विद्यापीठ, डूंगर कालेज, महारानी सुदर्शना गर्ल्स कालेज आदि प्रमुख शिक्षासंस्थाएं हैं। अन्य बड़े नगरों में भी कालेज हैं। कालेज के अतिरिक्त उच्च माध्यमिक विद्यालय लगभग सब नगरों, कस्बों व बड़े गांवों में है। गंगानगर में कई कालेज हैं।

(४) पश्चिमी राजस्थान

प्राकृतिक दशा—दक्षिण पूर्वी भाग पहाड़ी है, शेष भाग रेतीला और उत्तर महा मरुस्थल है।

पर्वत—अरावली पर्वत इस भाग की दक्षिण पूर्वी सीमा के पास है।

नदियां—लूनी नदी अजमेर के निकट अरावली पर्वत से निकलकर पश्चिम और दक्षिण को बहती हुई कच्छ की रण में जा गिरती है। इसमें जोजरी, खारी सूकड़ी आदि नदियां भी आ मिलती है।

झीलें—झील सांभर, डीडवाना व पचपदरा खारी झीलें है जिनसे नमक प्राप्त होता है।

जलवायु—गर्मियों में कड़ी गर्मी और सर्दियों में कड़ी सर्दी। दिन की धूप में रेत बहुत तप जाती है, आंधी, तूफान चलते है और दिन के समय यात्रा करना अति कठिन होता है, अत; लोग प्रायः रात की ठण्डक में यात्रा करते हैं। वर्षा बहुत कम होती है।

उपज—अरावली की तलहटी और लूनी नदी के प्रवेश में रबी और खरीफ दो फसलें होती है। रबी में गेहूँ, चना और खरीफ में बाजरा, मूंग, मोठ, ज्वार मक्की, कपास, गन्ना उपजता हैं। जैसलमेर मरुस्थली अथवा रेतीली भूमि का प्रदेश है, जहां बबूल आदि कांटेदार वृक्ष, झाड़ियां तथा खजूर के पेड़ होते हैं। रेगिस्तान में तालाबों के निकट खीरे और मतीरे (तरबूज) की खेती होती है। बाड़मेर फलोदी और नागौर के प्रदेश में केवल खरीफ की फसल होती है।

खनिज पदार्थ—पत्थर-जैसलमेर में, लोहा-जोधपुर में, गेरू-जैसलमेर में, नमक झील सांभर, डीडवाना और पचपदरा में, खड़िया-नागौर और जोधपुर में मुलतानी मिट्टी जैसलमेर में पेट्रोलियम की तलाश की जा रही है। इस खोज में प्राकृतिक गैस मिल गई है।

सड़कें—जोधपुर से नागौर, जोधपुर से ईंचू, फलोदी, पोकरन और जैसलमेर, बाडमेर से जैसलमेर, बालोतरा से ईंचू, जोधपुर से लूनी और पाली तथा वहां से एक ओर ब्यावर और अजमेर को तथा दूसरी ओर सिरोही होती हुई अहमदाबाद को।

पशु—ऊंट, भेड़, बकरिया, गांय, बैल, घोड़े, गधे।

रेलें 1. उत्तर रेलवे—फुलेरा (जयपुर) से जोधपुर, जोधपुर से फलोदी, पोकरन होते हुए जैसलमेर को, जोधपुर से लूनी, लूनी से पाली और मारवाड़ जंक्शन, लूनी से बालोतरा और बाड़मेर होती हुई सिन्ध पाकिस्तान को बालोतरा से पचपदरा को मेडता रोड से नागौर होती हुई बीकानेर को, डेगाना, डीडवाना होती हुई चूरू जिले में रतनगढ़ जक्शन को।

2. पश्चिम रेलवे—आगरा तथा दिल्ली से चलकर अजमेर के मार्ग से मारवाड़ जंक्शन होती हुई सिरोही, आबू रोड़ से होकर अहमदाबाद के रास्ते बम्बई को जाती है।

जिले—जोधपुर, नागौर, पाली, जालौर, बाडमेर, जैसलमेर, सिरोही।

मुख्य नगर—जोधपुर-प्रसिद्ध नगर है। इसकी जनसंख्या लगभग पांच लाख है। (यहां हाथी दांत की चूड़िया बनाने और कपड़ों की रंगाई छपाई का काम बढ़िया होता है। यहां का मड़मण्डोर, उम्मेद भवन छीतर पेलेस), जसवन्त थड़ा व अजायबघर देखने योग्य है।

नागौर—जिले का केन्द्र है। यहाँ के बैल प्रसिद्ध हैं। फलौदी—यहाँ ऊंट के बालों के गद्दे अच्छे बनते हैं। सोजत, पाली, सिरोही, जैसलमेर और बाड़मेर अन्य मुख्य नगर है।

शिक्षण संस्थाएं—जोधपुर में विश्वविद्यालय, मेडिकल कालेज, तकनीकी शिक्षा का कार्यालय, शारीरिक शिक्षा कालेज, महेश प्रशिक्षण महाविद्यालय, गर्ल्स कालेज आदि है।

(3) राजस्थान में मानवीय संसाधन-जनसंख्या समस्या, बेरोजगारी, गरीबी सूखा और अकाल।

Human resources-Problems of population unemployment, poverty. droughts & famines in Rajasthan.

(क) राजस्थान में जनसंख्या—किसी भी देश की उन्नति वहाँ के उपलब्ध प्राकृतिक साधनो तथा कुशल जनसंख्या के ऊपर निर्भर करती है। डी० सी० ह्विविल के शब्दों में **"किसी राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति न उसकी भूमियों और नदियों में, न उसके बनों अथवा खानों में, न उसके पशुओं और उसकी शुद्ध सम्पत्ति में निहित है, वरन् उसके स्वस्थ, सुखी और प्रसन्न स्त्री, पुरुष व बच्चों में निहित है"** प्राकृतिक साधन तो निष्क्रिय होते हैं तथा आर्थिक विकास की सुविधा प्रदान करते हैं किन्तु मनुष्य का कार्य उनसे अधिकतम सम्पत्ति का उत्पादन कर सकता है।

राजस्थान में जनगणना—क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में राजस्थान दूसरा स्थान है। यहाँ निरन्तर राजनीतिक अस्थिरता एवं रियासतों में आपसी समन्वय के अभाव में जनगणना की ओर से न किसी राजा ने आवश्यकता समझी और न इस ओर गम्भीरता से ध्यान ही दिया गया। अंग्रेजी शासन में राजपूताना के लिए सन् 1901 में जनगणना विभाग की स्थापना की गई, अतः तब से ही व्यवस्थित रूप से जनगणना की जा रही है। यहाँ यह उल्लेखनीय हैं कि भारत में सन् 1891 से नियमित जनगणना की जा रही है। हमारे देश में प्रति दस वर्ष के बाद जनगणना होती है। पिछली जनगणना सन् 1981 में की गई थी।

राजस्थान की जनसंख्या—राजस्थान का जनसंख्या की दृष्टि से भारत में नवां स्थान है जबकि क्षेत्रफल में यह दूसरे स्थान पर है अतः स्पष्ट है कि क्षेत्रफल के अनुपात में यहाँ संख्या कम है। राजस्थान का क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलो मीटर है तथा सन् 1981 के अनुसार यहा की जनसंख्या 3,41,08,292 है।

राजस्थान की पिछले विभिन्न दशकों की जनसंख्या निम्न प्रकार है—

1881–1·01 करोड़
1891–1·22
1901–1,02,94,090
1911–1,09,83,509
1921–1,02,92,648
1931–1,17,47,974
1941–1,38,63,859
1951–1,59,70,774
1961–2,01,55,602
1971–2,57,65,806
1981–3,41,02,912

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सन् 1881 से 1981 तक राजस्थान की जन संख्या में कमी व वृद्धि होती रही है, किन्तु सन् 1921 के पश्चात् यहाँ जन संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही है। राजस्थान में सन् 1961 की जन-संख्या में 27·73 प्रतिशत तथा सन् 1971 की जनसंख्या में 32·36 प्रतिशत हुई है। जबकि देश की जन संख्या सन् 1971 की जनसख्या में 24·75 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

राजस्थान का भारत में स्थान—भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 10·26 प्रतिशत भाग राजस्थान घेरे हुए हैं। किन्तु सन 1981 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जन संख्या का 4·99 प्रतिशत भाग राजस्थान मे बसता है तथा जनसंख्या क्रम में देश में राजस्थान का नवाँ स्थान है जबकि 1971 की जनगणना के अनुसार दसवां स्थान था। पिछले एक दशक में राजस्थान जन संख्या में वृद्धि 83 लाख हुई है जो पिछले किसी भी दशक में हुई बढ़ोत्तरी से अधिक है।

राज्यानुसार जन जन संख्या में राजस्थान की स्थिति निम्न प्रकार है—

(1) उत्तर प्रदेश	11,08,58,019
(2) बिहार	6,98,23,151
(3) महाराष्ट्र	6,26,93,898
(4) पश्चिमी बंगाल	5,44,85,560
(5) आन्ध्र प्रदेश	5,34,03,619
(6) मध्य प्रदेश	5,21,31,717
(7) तमिलनाडू	4,82,97,456
(8) कर्नाटक	3,70,43,451
(9) राजस्थान	3,41,08,292

इस उपरोक्त तालिका में सन् 1971 की जनगणना अनुसार गुजरात नवें स्थान पर था, जिसका स्थान अब राजस्थान ने ले लिया है।

सन् 1981 की जनगणना से यह तथ्य सामने आया है कि राजस्थान के सीमावर्ती जिलों— बीकानेर (46.57 प्रतिशत) गंगानगर (44.51 प्रतिशत) बाड़मेर 43.76 प्रतिशत), और जैसलमेर (42.49 प्रतिशत) तथा जोधपुर (43.35 प्रतिशत) में जन संख्या वृद्धि का प्रतिशत अधिक है। जनसंख्या के दृष्टिकोण से जयपुर जिले की जनसंख्या 24 लाख से बढ़कर 34 लाख तक पहुँच गई है जो सभी जिलों में सबसे अधिक है।

प्रति किलो मीटर जन संख्या का घनत्व—राजस्थान में जन संख्या का घनत्व निम्न प्रकार है—

राजस्थान पूरे में—	100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर यह सन् 1971 की जनसंख्या में 75 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था।
जयपुर जिला—(अधिकतम)	242 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
जैसलमेर जिला—(न्यूनतम)	6 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर सन् 1971 की जनगणना में यहाँ का घनत्व 4 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर था।

राजस्थान की जिलेवार जन संख्या—सन् 1981 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की जिलेवार जनसंख्या निम्न प्रकार है—

नाम जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि० मी०)	मुख्यालय	जनसंख्या
(1) अजमेर	8,481	अजमेर	14,31,609
(2) अलवर	8,380	अलवर	17,59,057
(3) बांसवाड़ा	5,037	बांसवाड़ा	8,85,701
(4) बाड़मेर	28,387	बाड़मेर	11,13,823
(5) भरतपुर	5,150	भरतपुर	12,95,390
(6) भीलवाड़ा	10,455	भीलवाड़ा	13,08,500
(7) बीकानेर	27,244	बीकानेर	8,40,059
(8) बुंदी	5,550	बुंदी	5,86,596
(9) चित्तौड़गढ़	10,856	चित्तौड़गढ़	12,30,628
(10) चूरू	16,830	चूरू	11,76,170

(11) डूंगरपुर	3,770	डूंगरपुर	6,80,865
(12) गंगानगर	20,634	गंगानगर	20,14,471
(13) जयपुर	14,068	जयपुर	34,06,104
(14) जैसलमेर	38,401	जैसलमेर	2,38,137
(15) जालोर	10,640	जालोर	9,02,649
(16) झालावाड़ा	6,219	झालावाड़	7,84,982
(17) झुंझुनू	5,928	झुंझुनू	11,93,146
(18) जोधपुर	22,850	जोधपुर	16,50,933
(19) कोटा	12,436	कोटा	15,46,937
(20) नागोर	17,718	नागोर	16,24,351
(21) पाली	12,387	पाली	12,71,835
(22) सवाईमाधोपुर	10,527	सवाईमाधोपुर	15,32,652
(23) सीकर	7,732	सीकर	13,73,066
(24) सिरोही	5,136	सिरोही	5,40,520
(25) टोंक	7,194	टोंक	7,83,796
(26) उदयपुर	17,279	उदयपुर	2,35,639
(27) धोलपुर	3,950	धोलपुर	5,83,176

राजस्थान में साक्षरता—राजस्थान की जन संख्या के अनुपात में साक्षरता का प्रतिशत निम्न प्रकार है—

स्त्री 11·32%
पुरुष 35·78%
सम्मिलित 14·05%

1981 की जनसंख्या में कुल साक्षर—

स्त्री 18,50,670
पुरुष 63,50,945

भारत में कुल जन संख्या का साक्षरता प्रतिशत (1981)

पुरुष 46·74%
स्त्री 24·88%
सम्मिलित 36·17%

इस प्रकार राजस्थान की साक्षरता प्रतिशत भारत की साक्षरता प्रतिशत में एक कोटि नीचे है।

1981 की जनगणनानुसार राजस्थान के 1 लाख की जनसंख्या से अधिक के नगर—1981 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में चार और नगर एक लाख की जनसंख्या से अधिक के हो गये हैं। उन्हें मिलाकर अब राज्य में 11 नगर एक लाख से अधिक की आबादी के हो गये हैं।

एक लाख से अधिक की जनसंख्या वाले चार नये नगर-गंगानगर, भीलवाड़ा, भरतपुर और सीकर हैं। एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहर राजस्थान के निम्न हैं—

शहर	जनसंख्या	पुरुष	स्त्रियां
(1) जयपुर	1,00,4669	5,38,118	4,66,551
(2) जोधपुर	4,93,609	2,79,863	2,13,846
(3) अजमेर	3,74,350	1,19,063	1,77,287
(4) कोटा	3,41,584	1,83,556	1,57,992
(5) बीकानेर	2,80,366	1,48,670	1,31,696
(6) उदयपुर	2,29,762	1,23,143	1,06,619
(7) अलवर	1,39,973	75,524	64,449
(8) भीलवाड़ा	1,22,338	64,749	57,589
(9) गंगानगर	1,21,516	67,438	54,178
(10) भरतपुर	1,05,239	57,385	47,854
(11) सीकर	1,02,946	53,773	49,173

राजस्थान में लिंग अनुपात—राजस्थान की जनसंख्या में 1000 (हजार) पुरुषों के साथ 921 स्त्रियों का अनुपात है। पुरुषों की संख्या एक करोड़ 77 लाख 55 हजार एक सो दो तथा स्त्रियों की संख्या 1 करोड़ 63 लाख 53 हजार 190 है।

(ख) बेरोजगारी एवं गरीबी—राजस्थान में बेरोजगारी की समस्या भी विकराल है। ग्रामीण किसान, शिक्षित बेरोजगार तथा तकनीकी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी बेरोजगार देखे जा सकते हैं। राज्य सरकार इस ओर पूरी जागरूक है और उन्होंने रोजगार के विभिन्न कार्यक्रम चला रखे हैं। सरकार का इस दिशा में यही प्रयत्न है कि अधिक से अधिक गरीबों की रेखा से नीचे के लोगों को राहत मिले।

ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम—ग्रामीण आंचलों में स्थायी सम्पदा निर्माण तथा रोजगार के अवसर सुलभ कराने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम अक्टूबर 1980 मे प्रारम्भ किया गया था। वर्ष 1981–82 में 15·75 करोड़ रु. व्यय कर 105·95 लाख मानव दिवस कार्य जुटाया गया। स्कूल भवन, कुएं, तालाब, डिस्पेंसरियाँ आदि सुविधाओं के रूप में 6 हजार 780 निर्माण कार्य हुए। वर्ष 1982–83 में करीब 8·54 लाख रु. खर्च हुए तथा 48·16 लाख मानव दिवस कार्य जुटाये गये और 2 हजार 953 निर्माण कार्यों के रूप में स्थायी सम्पदा बनी।

वर्ष 1982–83 में इस कार्यक्रम की विशेष उपलब्धि विभिन्न पौधशालाओं में 1·90 करोड़ पौधों का उगाना रहा है। जिन्हें फार्म फारेस्ट्री योजना के अन्तर्गत देहाती क्षेत्रों में वितरित किया जा रहा है। इसी प्रकार विभिन्न पंचायतों की 500

हेक्टेयर भूमि में पौधे उगाने का कार्य हाथ में लिया गया है। वर्ष 1983-84 में 9·36 करोड़. रुपये का प्रावधान रखा गया है, जिससे 4364 कार्य पूरे करवाये जावेंगे। आशा है कि सत्र 1983-84 में 62·40 लाख मानव दिवस कार्य जुटा लिया जा सकेगा।

इसके अतिरिक्त प्रधान मंत्री की 15 अगस्त 1983 की घोषणा के अन्तर्गत नई-नई योजनाओं और कार्यक्रमों से सभी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

(ग) सूखा और अकाल—राजस्थान का एक बहुत बड़ा भाग रेगिस्तान तथा यहां सूखा और अकाल की समस्या सामान्यतया बनी रहती है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार इस दिशा में विशेष प्रयत्नशील है तथा विभिन्न योजनाओं द्वारा इस समस्या से छुटकारा पाने की ओर प्रयत्नशील है। राजस्थान नहर, सूखा सम्भावित क्षेत्र कार्यक्रम एवं अकाल राहत कार्य इसी दिशा के महत्वपूर्ण कार्य एवं कार्यक्रम हैं।

सूखा सम्भावित क्षेत्र कार्यक्रम

सूखा सम्भावित क्षेत्र कार्यक्रम 1974-75 से प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम के अधीन उन जिलों व पंचायत समितियों को लिया गया है। जिनमें वर्षा कम होती है और जो बार-बार अकालग्रस्त होते रहते हैं।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दस जिले जोधपुर, नागौर, पाली, जालोर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, चूरु, डूंगरपुर और बांसवाड़ा तथा 3 जिलों की 6 तहसीलें, जिनमें उदयपुर की भीम, देवगढ़ एवं खेरवाड़ा, झुंझनू की झुंझनू एवं चिड़ावा तथा अजमेर की ब्यावर तहसीलें हैं, ली गई हैं। इस प्रकार राज्य की कुल 79 पंचायत समितियों में यह कार्यक्रम चल रहा है।

इसके अन्तर्गत जिन विकास कार्यक्रमों को अपनाया गया है। उनमें मुख्य कृषि, भू-जल संरक्षण, लघु सिंचाई, पशु-धन, डेयरी, भेड़ एवं चरागाह विकास, वन-विकास, विद्युतीकरण एवं व्यक्तिगत लाभकारी योजनाएं हैं 1974-75 से 1979-80 तक करीब 49 करोड़ रुपया व्यय किया गया और 1980-81 में करीब 11·40 करोड़ रुपये व्यय किया गया था।

संक्षेप में इन कार्यक्रम की विभिन्न उपलब्धियां इस प्रकार है—

1. भू-संरक्षण कार्यक्रम — 14472 हेक्टेयर
2. भू-जल — 4366 कुओं का निर्माण
3. सिंचाई — 248 सिंचाई कार्य
4. सिंचाई क्षेत्र में वृद्धि का अनुमान 42900 हेक्टेयर
5. डेयरी — 768 सहकारी समितियों का गठन।

	10,000 से 30,000 लिटर प्रतिदिन क्षमता के 6 दुग्ध प्रवशीतन संयंत्र व 1 से 1·50 लाख लिटर दूध प्रतिदिन की क्षमता वाली 2 डेयरी का निर्माण।
6. भेड़-कार्यक्रम	132 भू-खण्ड 100 हैक्टेयर साईज के बनाये और उनका विकास किया।
7. व्यक्तिगत चरागाह का विकास	858 हैक्टेयर
8. वन विकास	49033 हैक्टेयर मे वृक्षारोपण
9. शेल्टर बेल्ट प्लांटेशन	30 कि. मी. की लम्बाई में वृक्षारोपण।
10. कुण्डे (फार्म पोण्ड) का निर्माण	2871
11. दुधारू मवेशी बैल व गाड़ियों की खरीद (काश्तकारो द्वारा)	15482 व्यक्ति लाभान्वित
12. कुऐं (निजी काश्तकारो द्वारा)	2558
13. पम्प सेट्स	3743
14. विद्युतीकरण	जोधपुर, नागौर लाईन, रतनगढ, नागौर लाईन व चुरू में 132 के. वी. ग्रिड सब स्टेशन का निर्माण।
15. ग्रामीण जलदाय योजना	बाड़मेर, बीकानेर तथा चुरू जिलों में 13 परियोजनाओं का कार्यारम्भ। इनसे 82 गांवों में 50,000 जनसंख्या को पीने के पानी की राहत। अब तक 44 गांवों में पेयजल व्यवस्था उपलब्ध।

अब तक के 60 करोड़ के व्यय में से अधिकतम खर्च 10 करोड़ रुपया सिंचाई पर किया गया है। उसके बाद भू-जल सर्वेक्षण में 7·88 करोड़, डेयरी विकास में 7·75 करोड़, विद्युतीकरण में 8·37 करोड़ और भू-संरक्षण में 6·30 करोड का व्यय 1980-81 के अन्त तक हुआ था। उस वित्तीय वर्ष में 11·40 करोड़ में से 28 फरवरी तक 7 करोड़ 31 लाख खर्च हो चुका था। शेष रकम 31 मार्च तक समाप्त हुई।

1981-82 में 1080 लाख रुपये खर्च किए गये। इनमें से 897·80 लाख रुपये प्रतिबद्ध (कम्यूटेड) राशि एवं 182·20 लाख रुपये नवीन

(न्यू) राशि के लिए निर्धारित थे। 1981–82 के लिए मुख्यतः कृषि के लिए 196·91 लाख, भू-जल 116·31 लाख, सिंचाई 159·02 लाख, भेड़ एवं चारागाह 62 51, लाख, पशु एवं डेयरी 77·59 लाख, वन विकास 123·08 लाख, विद्युतीकरण 83·31, लाख, दुग्ध मार्ग 174·02 लाख, सहकारिता 14 56 लाख, भू-अभिलेख 7·78 लाख, लाठी सीरीज 17·31 लाख, सेरीकल्चर 1·00 लाख, जिला विकास अभिकरण 39·72 एवं परियोजना प्रकोष्ठ के लिए 6·78 लाख रु० खर्च किये गये।

1981–82 में कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत 1334 हैक्टेयर क्षेत्र मे नवीन जल ग्राह्य योजना का क्रियान्वयन एवं एक नवीन नर्सरी, भू-जल कार्यक्रम मे 112 मध्यम क्षमता, 142 लघु क्षमता एवं लगभग 900 कुओं को गहरा करने का कार्य पूरा किया गया।

पशु एवं डेयरी कार्यक्रम के अन्तर्गत 250 लीटर प्रतिदिन दूध संकलन 70 नवीन दुग्ध सहकारी समितियां, 3000 टन संतुलित आहार का वितरण, भेड विकास में 15 नवीन 100 हैक्टेयर वाले प्लाट का विकास, वन विकास में 3150 हैक्टेयर नवीन क्षेत्र मे वृक्षारोपण एवं 6·50 लाख नवीन पौधों को लगवाया गया। विद्युतीकरण के अन्तर्गत अलाभकारी लाईन का निर्माण एवं रतनगढ़ नागौर लाईन का पूर्ण विद्युतीकरण, दुग्ध मार्ग के अन्तर्गत 87 किलोमीटर का निर्माण, ग्रामीण जल प्रदाय योजना के अन्तर्गत बचे हुए 38 ग्रामों को लाभान्वित करने एवं लाठी सीरीज के अन्तर्गत 2 नर्सरी, 350 फल वाले वृक्षों एवं 12 गायों की खरीद का लक्ष्य पूरा किया गया था। वर्ष 83–84 के अन्तर्गत इस कार्य के अन्तर्गत 13 80 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है, जिससे कृषि, सिंचाई चारागाह विकास आदि क्षेत्रों के अधूरे कार्य पूरे करवाये जा रहे हैं।

मरु विकास

सूखा सम्भावित क्षेत्र परियोजना के समानान्तर दूसरी केन्द्रीय प्रवर्तित योजना मरु विकास कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा 1977–78 से प्रारम्भ की गई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मरुस्थल के प्रसार को रोकना, इस क्षेत्र का आर्थिक विकास तथा रोजगार की सुविधाएं उपलब्ध करना है।

यह कार्यक्रम 11 जिलों यथा : सीकर, गंगानगर, झुन्झुनू, पाली, नागौर, बीकानेर, बाड़मेर जालौर, जैसलमेर, जोधपुर व चूरु मे क्रियान्वित किया जा रहा है। इन जिलों की कुल 85 पंचायत समितियों मे यह कार्यक्रम चल रहा है।

जिन विकास कार्यक्रमों को अपनाया गया है उनमें मुख्यतः कृषि विकास, मरुस्थलीय वन विकास, भू-जल सर्वेक्षण डेयरी विकास लघु सिंचाई, पशु स्वास्थ्य, भेड एवं चारागाह विकास, विद्युतीकरण एवं व्यक्तिगत लाभकारी योजनाएं हैं।

1977–78 से वर्ष 1979–80 के अन्त तक इस कार्यक्रम पर करीब 17·31 करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके थे तथा 1980–81 में 9·89 करोड़ रुपये व्यय किये गये थे।

संक्षेप में इसकी विभिन्न उपलब्धियां ये हैं—

1. भू-संरक्षण कार्यक्रम (जल गृह निर्माण कार्य)	30400 हैक्टेयर
2. भू-जल विकास	3 कुओं का निर्माण
3. लघु सिंचाई	61 लघु सिंचाई कार्य
4. सिंचित क्षेत्र में वृद्धि का अनुमान	6357 हैक्टेयर
5. डेयरी विकास	12 सहकारी समितियों का गठन जोधपुर एवं बीकानेर डेयरियों की दुग्ध उत्पादन क्षमता में विस्तार।
6. भेड़ विकास कार्यक्रम	1221 भेड़ पालक को प्रशिक्षण।
7. वन विकास	19323 हैक्टेयर में वृक्षारोपण तथा 15–31 लाख पौधे फार्म फोरेस्ट्री के अन्तर्गत लगाये गये।
8. शेल्टर बेल्ट वृक्षारोपण	2980 रो.की.मी. लम्बाई मे वृक्षारोपण
9. पशु स्वास्थ्य	66 पशु स्वास्थ्य केन्द्र एवं 7 सर्रा नियन्त्रण इकाइया की स्थापना।
10. विद्युतीकरण	1210 कुओं का विद्युतीकरण किया गया तथा 371 गावों को बिजली प्रदान की गई। नीम का थाना, कोटपूतली व बाड़मेर बालोतरा 132 के. वी. लाइनों का निर्माण कार्य
11. दुधारु मवेशी, बैल व गाडियों की खरीद (काश्तकारों द्वारा)	6516 व्यक्ति लाभान्वित हुए।
12. कूए (निजी काश्तकारों द्वारा)	106
13. पम्प सेट्स	34

अब तक के 27·20 करोड़ रुपयों के व्यय में से अधिकतम व्यय 7·31 करोड़ रुपये मरुस्थलीय वन विकास कार्यों पर किया गया था। उसके विद्युतिकरण में 6·51 करोड़ रुपये, डेयरी विकास में 4·66 करोड़ रुपये, लघु सिंचाई कार्यों पर 2·23 करोड़ रुपये, कृषि विकास पर 2·22 करोड़ रुपये एवं पशु स्वास्थ्य ‹ 1·36 करोड़ रुपये का व्यय 1980–81 में किया गया था।

(4) राजस्थान के प्राकृतिक संसाधन खान एवं खनिज तथा वन संपदा ।
Natural resources of Rajasthan, Mines & Minerals Forests.

(क) राजस्थान में खनिज सम्पदा

अनेक विविधताओं से पूर्ण राजस्थान खनिज सम्पदा में सम्पन्न तथा खनिजों का "अजायबघर" है । यहाँ लगभग 45 प्रकार के खनिज पाये जातेहैं जि नमें से 33–34 प्रकार के खनिजों का विदोहन किया जा रहा है। राजस्थान को जस्ता, सीसा, चाँदी, संगमरमर, राकफास्फेट आदि खनिजों के उत्पादन में तो एकाधिकार प्राप्त है जबकि यहाँ भारत के कुल जिप्सम उत्पादन का 92 प्रतिशत सोप स्टोन का 90 प्रतिशत, चाँदी का 90 प्रतिशत फास्फेट का 75 प्रतिशत अभ्रक का 22 प्रतिशत तथा चूने के पत्थर का 13 प्रतिशत भाग उत्पादित होता है। यहाँ तावाँ, इमारती, पत्थर एस्वस्ट्स आदि खनिज का भी काफी उत्पादन होता है । खनिजों का वार्षिक उत्पादन मूल्य 65 से 70 करोड़ रु० है । तथा उनमें लगभग 32 हजार लोगों को रोजगार प्राप्त है ।

राजस्थान के प्रमुख खनिज

(1) लोहा अयस्क–यहाँ लोहा अयस्क का उत्पादन 1953 में प्रारम्भ हुआ । 1960 में उत्पादन 28·5 हजार टन था जो 1971 में घटकर 500 टन रह गया । 1975 में उत्पादन 1400 टन तथा 1979 में 16·6 हजार टन था जबकि अब उत्पादन 20 हजार टन के लगभग है । प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार है—

(1) मोरीजा बानोल क्षेत्र—जयपुर के निकट चौमू सामोद से 10 किलोमीटर दूर लोहे की कई खानें हैं जिनमें हेमेटाइट प्रकार का 68 से 69 प्रतिशत शुद्धता के लोहे के लगभग 25 लाख टन के भण्डार हैं ।

(2) डाबला क्षेत्र—खेतड़ी के पास मांवड़ा रेलवे स्टेशन से 13 किलोमीटर दूर इस क्षेत्र में लोहे के लगभग 7 टन भण्डार है ।

(3) नीमला क्षेत्र—दौसा (जयपुर) के लगभग 24 किलोमीटर उत्तर में स्थित इस क्षेत्र में 67 से 72 प्रतिशत शुद्धता के हेमेटाइट किस्म के लोहे के लगभग 10·5 लाख टन के भण्डार है । यहाँ से उत्पादित लोहे टाट लोहा ईस्पात कारखाने को भेजा जाता है ।

(4) नाथरा की पोल—उदयपुर से 61 किलोमीटर दूर इस क्षेत्र की खानो में 52 प्रतिशत शुद्धता के लगभग 80 लाख टन लोहे के भण्डार हैं जिनमें 20 लाख टन उत्तम श्रेणी का है ।

(5) दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र—अरावली पर्वत के दक्षिणी पूर्वी भाग में धनुषाकार पट्टी में लोहे की अनेक खानें हैं जिनमें लगभग 30 लाख टन अयस्क के भण्डार है । ये खाने बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा एवं भीलवाड़ा क्षेत्रों में है ।

(2) तांबा—तांबा उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। राज्य में तांबे के अनुमानित भण्डार 13 करोड़ टन से अधिक है। राजस्थान में खनिज तांबे का उत्पादन 1971 में 59 हजार टन था तथा 1979 में 11.24 लाख टन था वह बढकर 1980–81 में 15 लाख टन था। खेतड़ी में तांबा शोधक कारखाना खोला गया है जिसमें प्रतिवर्ष 31 हजार टन तांबा साफ किया जाता है। अब क्षमता को बढ़ाकर 45 हजार टन करने का लक्ष्य है प्रमुख तांबा उत्पादक क्षेत्र इस प्रकार है–

(1) खेतड़ी सिंघाना क्षेत्र—यह राज्य का प्रमुख तांबा उत्पादन क्षेत्र है जिसमें लगभग 9 करोड़ टन खनिज भण्डार है। प्रमुख उत्पादन क्षेत्र माधवेकुदन की पहाड़ियें, कोलिहान, आकवाली, सतकुई, धनोला बवाई तथा वरखेड़ा आदि हैं।

(2) खो-दरीबा क्षेत्र—अलवर के 48 किलोमीटर दक्षिणी पश्चिमी में दरीबा की पाहड़ियों व भगोनी क्षेत्र में तांबे के क्रमशः 50 लाख टन तथा 20 लाख टन भण्डार है।

(3) पुर दरीबा क्षेत्र—भीलवाड़ा के पुर दरीबा क्षेत्र में लगभग 20 लाख टन भण्डार है।

(4) अन्य क्षेत्र—तांबा के अन्य क्षेत्र उदयपुर जिले मे देवारी, सलूम्बर, रेलमगरा एवं भीम क्षेत्र चूरू में बिहासर क्षेत्र तथा डूंगरपुर के कुछ क्षेत्र आते हैं।

(3) मैंगनीज—यह एक महत्त्वपूर्ण खनिज है जिसका प्रयोग इस्पात बनाने, रंग-रोगन बनाने, बैटरी, रंगीन कांच, चीनी के बर्तन, उर्वरकों आदि में होता है।

मैंगनीज उत्पादक के प्रमुख क्षेत्र बांसवाड़, उदयपुर तथा जयपुर जिले हैं। बांसवाड़ा में सर्वाधिक मैंगनीज भण्डार है।

उत्पादन—मैंगनीज का उत्पादन बहुत कम है। जहाँ 1961 मे उत्पादन 3·9 हजार टन था वह 1966 में 7·9 हजार टन हो गया किन्तु अब उत्पादन एक हजार टन के लगभग है।

(4) <u>सीसा एवं जस्ता</u>—<u>मिश्रित रूप में मिलने वाले इस खनिज के उत्पादन मे राजस्थान को एकाधिकार प्राप्त है।</u> इसके लगभग 4 करोड़ टन के भण्डार हैं। मांग अधिक होने के कारण हमें विदेशों से आयात करना पडता है। जस्ता एवं सीसा के उत्पादन क्षेत्र इस प्रकार है—

(1) जावर क्षेत्र—उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर जावर की खानों में 300 टन जस्ता सीसा प्रतिदिन निकाला जाता है।

(2) राजपुर देवारी क्षेत्र—उदयपुर के पास इस क्षेत्र में 126 लाख टन जस्ता सीसा के भण्डार है। यहाँ जस्ता सीसा के साथ-साथ चाँदी, तांबा आदि खनिज भी प्राप्त होते हैं। देवारी में एक 36 हजार टन क्षमता का जस्ता शोधक कारखाना स्थापित किया गया है।

(3) आगूचा गुलाबपुरा क्षेत्र—भीलवाड़ा जिले के अगूचा एवं गुलाबपुरा क्षेत्र में जस्ते के अपार भण्डार मिले हैं। यहाँ भी एक जस्ता कारखाना लगाये जाने की योजना है।

(4) चौथ का बरवाड़ा क्षेत्र—सवाई माधोपुर जिले का यह क्षेत्र भी सीसा एवं जस्ता उत्पादन के लिए उपयुक्त क्षेत्र है।

(5) अन्य क्षेत्र—इनके अतिरिक्त डूंगरपुर जिले में घुंघरामांडो अलवर जिले में गुडाकिसोरी बांसवाड़ा जिले में बरडालिया तथा सिरोही जिले के जोपार एवं तुरगी क्षेत्र में भी जस्ते के भण्डार हैं।

उत्पादन—राजस्थान में जस्ता एवं सीसे का उत्पादन निरन्तर बढ रहा है। 1971 में जस्ता एवं सीसे का उत्पादन क्रमशः 16 हजार टन तथा 4·3 हजार था वह 1980–81 में बढ़कर क्रमशः 55 हजार तथा 16 टन का हो गया।

(5) अभ्रक—अभ्रक उत्पादन में राजस्थान का भारत में तीसरा स्थान है। यहाँ भारत के कुल अभ्रक उत्पादन का लगभग 15·18 प्रतिशत भाग प्राप्त होता है। पिछले कुछ वर्षों में अभ्रक के उत्पादन में तेजी से कमी हुई है। जहाँ 1961 में उत्पादन 7·7 हजार टन एवं 1964 में 5·6 हजार टन था वह 1980 में घटकर 867 टन हो गया 1982–83 में उत्पादन 1500 टन हुआ है।

अभ्रक की ईंटें बनाने का कारखाना भीलवाडा में स्थापित किया गया है। बाकी विहार भेजा जाता है। जहाँ उसे साफ कर निर्यात किया जाता है।

उत्पादन क्षेत्र—राजस्थान में अभ्रक, उत्पादन क्षेत्र भीलवाड़ा, उदयपुर, अजमेर, ब्यावर, टोंक, जयपुर एवं सीकर जिले हैं। भीलवाडा एवं उदयपूर जिलों में राज्य के कुल अभ्रक उत्पादन का 75 प्रतिशत भाग प्राप्त होता है। टोंक जिले की बरसा, मानखण्ड खाने तथा जयपुर जिले की बज्जारी एवं लक्ष्मी खाने प्रमुख हैं।

(6) एस्बेस्टोस—यह एक औद्योगिक महत्त्व का ताप अवरोधक एवं अघुलनशील खनीज है। इससे सीमेंट की चद्दरें तथा पाइप बनाये जाते हैं। देश का लगभग 96 प्रतिशत एस्बेस्टोस राजस्थान की खानों से प्राप्त होता है। इसके उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जहाँ 1971 में उत्पादन में 9·6 हजार टन था वह बढकर 1977 में 18·5 हजार टन 1981–82 में 30 हजार टन हो गया है। जबकि 1979 में उत्पादन 27·6 हजार टन था।

उत्पादन क्षेत्र—यह खनिज उदयपुर के खेरवाड़ा ऋषभदेव क्षेत्र में डूंगरपुर जिले के देवल, खेमास, पीपरदा एवं जाकोल की खानों में मिलता है। कुछ मात्रा में यह अजमेर एवं पाली जिलों में भी प्राप्त होता है।

(7) राक फास्फेट—यह रासायनिक खाद बनाने के काम आने वाला एक महत्वपूर्ण खनिज है। देश के रॉक फास्फेट के कुल उत्पादन का 96 प्रतिशत राजस्थान से प्राप्त होता है। राजस्थान में इस खनिज का उत्पादन निरन्तर बढ़ रहा है। जहाँ 1969 में कुल 64 हजार टन राक फास्फेट का उत्पादन हुआ वहीं 1973 में उत्पादन 3 लाख टन तथा 1979 में 5 लाख टन तथा 1981–82 में 6 लाख टन हुआ है।

उत्पादन क्षेत्र—राजस्थान में रॉक फास्फेट उत्पादन करने वाला प्रमुख क्षेत्र उदयपुर जिले का झामर कोटड़ा है जिसमे लगभग 5·5 करोड़ टन के भण्डार है और प्रतिदिन 600 टन से अधिक रॉक फास्फेट निकाला जाता है। उदयपुर जिले के अन्य क्षेत्र दक्कन, कोटरा, बीसाराम, नीमचमाता आदि है। जैसलमेर जिले के बिरामोनियाँ में भी रॉक फास्फेट की खानें हैं। अकेले उदयपुर जिले में 10 करोड टन के भण्डार हैं।

(8) जिप्सम—जिप्सम उत्पादन में राजस्थान का भारत में प्रथम स्थान है। यहाँ कुल उत्पादन का लगभग 60–70 प्रतिशत भाग होता है जबकि यहाँ कुल भण्डारों का 94 प्रतिशत है। इसका वार्षिक उत्पादन 1971 में 9·7 लाख टन था वह 1977 से 6·8 लाख टन और अब 8·5 लाख टन होने का अनुमान है। प्रमुख उत्पादन क्षेत्र ये है—

(1) नागौर क्षेत्र—इस क्षेत्र में जिप्सम के लगभग 95 करोड़ टन भण्डार है और यह भारत का सर्वाधिक जिप्सम उत्पादन वाला क्षेत्र है। इसकी प्रमुख खानें नागौर, मदाना, भादवासी तथा मालपू आदि हैं।

(2) बीकानेर चूरू क्षेत्र—बीकानेर जिले के जामसर, लूनकरणसर तथा चूरू जिले के तारानगर आदि क्षेत्रों में जिप्सम के लगभग 10 करोड़ टन भण्डार हैं।

(3) अन्य क्षेत्र—कुछ मात्रा में जिप्सम जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर तथा पाली जिलों में भी मिलता है।

(9) घीया पत्थर—देश में राजस्थान का घीया पत्थर उत्पादन में प्रथम स्थान है और यहां से कुल उत्पादन का 85 प्रतिशत भाग प्राप्त होता है। घीया पत्थर को पीसकर टेलकम पाउडर बनाया जाता है। और उनका प्रयोग सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री, साबुन कीटनाशक दवाओं, कागज, रबड के सामान, विद्युत उपकरण आदि क्षेत्रों में भी होता है। घीया पत्थर के क्षेत्र इस प्रकार है—

उत्पादन क्षेत्र—धीया पत्थर का प्रमुख उत्पादन क्षेत्र उदयपुर, भीलवाड़ा एवं जयपुर जिले में है। उदयपुर जिले में लखवाली, देवपुरा, लोहगढ़, तथा देवला आदि है। भीलवाड़ा जिले में घेवरिया, चाँदपुरा प्रमुख है। जबकि जयपुर जिले में गीजगढ, गढ़मोरा दौसा, आदि है। इसके अतिरिक्त सीकर में दरीबा, डूंगरपुर में आकोल एवं देवल आदि में भी धीया पत्थर मिलता है।

उत्पादन—देश मे औद्योगिक बढ़ती माग के कारण धीया पत्थर का उत्पादन भी बढ़ गया है। जहां 1956 में उत्पादन 37 हजार टन था वह 1971 में 1·7 लाख टन 1977–78 में 2·2 लाख टन तथा 1981–82 मे 3 लाख टन हो गया है।

(10) चूने का पत्थर—राजस्थान में चूने का पत्थर भी महत्वपूर्ण खनिज है। यहां देश के कुल चूने के पत्थर का लगभग 13 प्रतिशत भाग है और अनुमानतः राजस्थान में इसके 300 करोड़ टन के भण्डार हैं। चूने के पत्थर से सीमेंट बनाया जाता है। तथा चूने के अलावा अन्य रसायनों में प्रयुक्त होता है।

उत्पादन क्षेत्र—चूने का पत्थर मुख्यतः चित्तौड़गढ़, उदयपुर, सवाईमाधोपुर, बूंदी, कोटा आदि जिलों मे बहुतायत से मिलता है। अन्य क्षेत्र सिरोही, सीकर [illegible] तोड, निम्बा- [illegible] रहे हैं और [illegible] लगा है।

उत्पादन—राजस्थान में चूने के पत्थर का उत्पादन निरन्तर बढ़ रहा है। 1961 में चूने के पत्थर का उत्पादन 16·8 लाख टन था वह 1971 में 22 लाख टन तथा 1978 में 30 लाख टन हो गया अब यह बढ़कर 35 लाख टन से अधिक हो गया है।

(11) संगमरमर—संगमरमर के पत्थर के उत्पादन में राजस्थान का एकाधिकार है। संगमरमर का उपयोग मूर्ति निर्माण, भवन एवं मन्दिर मस्जिद निर्माण आदि मूल्यवान निर्माण कार्यों में होता है।

(1) उत्पादक क्षेत्र—नागौर जिले का मकराना क्षेत्र संगमरमर का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है यहां की 20 किलोमीटर लम्बी पट्टी मे उच्चकोटि का सफेद, धारीदार एवं गुलाबी रंग का संगमरमर मिलता है। इसके अतिरिक्त संगमरमर का उत्पादन भैंसलाना (जयपुर) खो (अलवर) मोरयल एवं आबू रोड़ (सिरोही) राजनगर (उदयपुर) बर-झाड़ियाँ एवं जादूरी (पाली) तथा दौलतपुरा कायमपुरा (अजमेर) आदि खानों में भी होता है।

उत्पादन—पिछले 10–20 वर्षों में संगमरमर का उत्पादन बढ़ता जा रहा है। जहां 1966 मे उत्पादन 63 हजार टन था वह बढ़कर 1971 में 82 हजार टन तथा 1981 में 240 हजार टन हो गया है।

(12) टंगस्टन—यह सामरिक महत्त्व का खनिज है। इसका उपयोग बिजली के बल्ब बनाने, इस्पात को कड़ा करने आदि में होता है। राजस्थान में देश के कुल टंगस्टन उत्पादन का 75 प्रतिशत भाग प्राप्त होता है।

उत्पादन क्षेत्र—जोधपुर जिले के डेगाना क्षेत्र में टंगस्टन उत्पादन की प्रमुख खाने हैं।

उत्पादन—राजस्थान में प्रतिवर्ष 30 से 60 हजार रुपये का टंगस्टन उत्पादित होता है जहां 1974 में उत्पादन 17 हजार टन था अब यह बढ़कर 20 हजार टन होने का अनुमान है।

राजस्थान में पंचवर्षीय योजनाओं में खनिज विकास

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राजस्थान के खनिज विकास के कई प्रभावी प्रयास होने से खनिजों का उत्पादन बढ़ा है तथा खनिज आधारित उद्योगों का तेजी से विकास हुआ है जैसा कि इन तथ्यों से स्पष्ट है—

(1) **खनिजों का मूल्य**—जहां 1952 मे राजस्थान में सभी प्रकार के खनिजो का मूल्य 3 करोड़ रुपये था वह बढ़कर 1950–61 में 6·2 करोड़ रुपये 1970 में 15 करोड़ रुपये तथा 1977–78 मे 60 करोड़ रुपये हो गया। 1981–82 में खनिजों का मूल्य 70 करोड़ रुपये हुआ है।

(2) **खनिज आधारित उद्योगों का विकास**—जहां एक ओर खेतड़ी मे तांबा शोधक कारखाना तथा उदयपुर देवारी में हिन्दुस्तान जिंक स्मेल्टर स्थापित किया गया है वहां दूसरी ओर सीमेंट कारखाने सिरोही, नीम का थाना, मोडक (कोटा) ब्यावर में प्रगति पर है।

भीलवाड़ा, उदयपुर, दौसा आदि स्थानो पर घीया पत्थर का पाउडर बनाने के कई कारखाने स्थापित हो गये हैं। चिप्स बनाने, इमारती पत्थर घिसने, कटिंग करने आदि के लिए भी कई कारखाने चल रहे हैं।

(ख) वन सम्पदा

वन मनुष्य के चिरसगी है। आदिकाल से उनका और मनुष्य का साथ रहा है। किसी देश के लिए वन प्रकृति की ओर से बहुमूल्य उपहार है। सभ्यता के विकास के पूर्व भूपटल पर अधिकांश भाग वनो से ढका हुआ था। परन्तु सभ्यता के विस्तार एवं जनसंख्या मे निरन्तर वृद्धि ने वनो को क्रूरता के साथ नष्ट करने के लिए प्रेरित किया। अनेकानेक स्थानों पर नगर स्थापित हो गये, खेती के लिए मैदान बन गये, यातायात के लिए मार्गो का निर्माण हुआ और ईंधन के लिए वृक्ष काटने आरम्भ कर दिये गये। इस प्रकार वनों के क्षेत्र मे कमी हो गई और हमारी भूमि अपने हरित आवरण के अपहरण मे नग्न हो गई।

राजस्थान में वन क्षेत्र—राजस्थान में वनों की विशेष कमी है। भारत के अन्य राज्यों के वन क्षेत्रों से राजस्थान के वन क्षेत्र की तुलना करने पर ज्ञात होगा

कि हमारे राज्य का बहुत कम भाग वनों से आच्छादित है। सबसे अधिक वन क्षेत्र असम राज्य में 42 प्रतिशत है और सबसे कम वन क्षेत्र पंजाब राज्य में 2·5 प्रतिशत है। राजस्थान में कुल क्षेत्रफल का लगभग 3·3 प्रतिशत भाग ही वनों से ढका हुआ है। भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 23 प्रतिशत भाग वनों से ढका हुआ है। यह उल्लेखनीय है कि भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 10 प्रतिशत राजस्थान में है, जबकि भारत के कुल वन क्षेत्र का लगभग 1·8 प्रतिशत वन क्षेत्र राजस्थान में है। एक तथ्य से और स्पष्ट हो जावेगा कि राजस्थान में वनों का क्षेत्रफल कम है। भारत में प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र 0·2 हेक्टेयर है और हमारे राजस्थान में प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र 0·6 हेक्टेयर है।

राजस्थान में कुल वनों का लगभग 32 प्रतिशत भाग सुरक्षित वन है, 44 प्रतिशत रक्षित वन है और शेष 24 प्रतिशत अवर्गित है।

वन मनुष्यों को रोजगार प्रदान करने में सहायक होते हैं। वन पदार्थ एकत्रित करने एवं अन्य सम्बन्धित क्रियाओं से राजस्थान में लगभग 40 हजार व्यक्तियों को रोजगार मिल रहा है। इस प्रकार राजस्थान की कुल कार्यशील जनशक्ति का लगभग 0·4 प्रतिशत भाग इस स्रोत से रोजगार प्राप्त कर रहा है।

वनों का प्रादेशिक वितरण—राज्य के अधिकांश भाग में शुष्क जलवायु है जो वनों के विकास के लिए अनुकूल नहीं है। वनों के वितरण में जलवायु का ही प्रमुख महत्व होता है।

राजस्थान के वन क्षेत्र प्रधानतः 50 से.मी. की वर्षा रेखा के पूर्व में ही पाये जाते हैं। यहां वर्षा उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर जाती है, इस रेखा के पूर्व में अधिक वर्षा होने के कारण वन अपेक्षाकृत अधिक है, और पश्चिम में वर्षा कम है अतः वन भी कम हैं।

राजस्थान के वन क्षेत्र साधारणतया पूर्वी और दक्षिणी पूर्वी भागों में और अरावली पर्वत के पूर्वी ढालों पर पाये जाते हैं। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि अरावली पर्वत के उत्तर और पश्चिम के भाग, वर्षा की उचित मात्रा के अभाव में, रेगिस्तानी अथवा अर्द्ध रेगिस्तानी है। जोधपुर जिले में औसत वार्षिक वर्षा 25 सेमी. है अतः वहां के क्षेत्र के लगभग 1 प्रतिशत भाग में वन है, दूसरी ओर बांसवाड़ा में, जहां वार्षिक वर्षा लगभग 100 सेमी. है, 35 प्रतिशत क्षेत्र में वन है, जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, गंगानगर, जोधपुर, चूरू आदि जिलों में वर्षा कम होने के कारण वन क्षेत्र भी कम है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र बालू रेत के महासागर की भांति है। इस क्षेत्र में वनस्पति नगण्य है और काफी दूर-दूर है। केवल कुछ वृक्ष ही काफी दूर-दूर दिखाई पड़ते है इसके अतिरिक्त कंटीली झाड़ियाँ भी दूर-दूर देखने को मिलती हैं।

इसके विपरीत, अपेक्षाकृत घने वन उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा, भरतपुर, सवाई माधोपुर जिलों में पाये जाते हैं। जोधपुर, जयपुर,
भाग पर पाये ज
में घास के बीड पाये जाते है।

वनों के प्रकार

(1) सागवान व अन्य लकड़ी के वन—राजस्थान के दक्षिणी भाग में कीमती लकड़ी के वन पाये जाते हैं। इन वनों का क्षेत्रफल लगभग 5200 वर्ग किलोमीटर है। ये वन मुख्यतः बांसवाड़ा, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिलों में पाये जाते है। इन वनों मे सागवान के वृक्ष हैं, जिनकी लकड़ी मूल्यवान होती है। इसके साथ ही सफेद धोंक, आंवल, तेंदु, खेर, सालर आदि के वृक्ष भी काफी मात्रा में पाये जाते हैं। बांस व विभिन्न प्रकार की घासें भी मिलती हैं।

(2) धोंक व अन्य लकड़ी के वन—ये वन उदयपुर, कोटा, बूंदी, चित्तौड़गढ, झालावाड और सिरोही जिलों में है। धोंक के वृक्ष के साथ ही अन्य प्रकार के वन भी पाये जाते हैं। जिनमे खेर, गूलर, महुवा, बेहेड़ा व अन्य प्रकार के वृक्ष भी पाये जाते हैं। पहाड़ी नालों में घास बहुतायत से पाये जाते हैं। इन वनो में कोयला तैयार किया जाता है। ईंधन के लिए लकड़ी प्राप्त की जाती है।

(3) धोंक व सालर के वन—ये वन अलवर, जयपुर, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करौली, अजमेर व जोधपुर में विशेषतः अरावली की पर्वत श्रेणियों में पाये जाते हैं। इन वृक्षों के साथ ही सालर, खेर, बेहड़ा, सेमल, तेंदु व पलास आदि के वृक्ष भी पाये जाते हैं। कुछ भागों में बांस भी पाया जाता है।

(4) कांटेदार झाड़ियां—कांटेदार झाडियां व वृक्ष शुष्क भागो में पाये जाते हैं। इनकी पत्तियां अपेक्षाकृत मोटी व खुरदरी होती है। टहनियों पर कांटों की अधिकता होती है। कांटे होने के कारण इन झाड़ियों व वृक्षों की रक्षा दो प्रकार से होती है। प्रथम, वृक्षों की नमी सरलता से नही उड पाती है, और द्वितीय पशु इसको नहीं खा पाते हैं। इस प्रकार की वनस्पति राजस्थान के शुष्क भागो जैसे जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, बीकानेर, चूरू, नागौर, सीकर व झुंझुनू आदि जिलों में पाई जाती है।

राजस्थान में पाये जाने वाले वनों में उपरोक्त प्रमुख है। इनके अतिरिक्त विभिन्न भागों में स्थानीय तापमान व वर्षा से प्रभावित अलग-अलग प्रकार की घास के मैदान भी पाये जाते हैं।

वनों की उपज

राजस्थान के वन लगभग 40 हजार व्यक्तियों को रोजगार प्रदान कर रहे हैं। राज्य को वनों से अनेक पदार्थ प्राप्त होते हैं, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं—

(1) जलाने की लकड़ी व कोयला—

राजस्थान में वन निम्न श्रेणी के हैं और मुख्यतः जलाने योग्य लकड़ी के वन हैं। वन क्षेत्र के लगभग 60 प्रतिशत भाग में धोकरा के वृक्ष पाये जाते हैं। इन वृक्षों की लकड़ी जलाने व कोयला बनाने के काम आती है। कोयला मुख्यतः चित्तौड़गढ़ व उदयपुर जिलों के वनों में तैयार किया जाता है। राजस्थान में प्रतिवर्ष लगभग 2 लाख टन कोयला तैयार किया जाता है। ईंधन के लिए लकड़ी [illegible] आदि वृक्षों से प्राप्त की जाती है। [illegible] जाता है। कोयला वैज्ञानिक ढंग से तैयार नही किया जाता है, यदि वैज्ञानिक ढंग से तैयार किया जाय तो उत्पादन में 30 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है।

(2) इमारती लकड़ी—

राजस्थान के वन-क्षेत्र के लगभग 12 प्रतिशत क्षेत्र में सागवान के वृक्ष पाये जाते है, और 6 प्रतिशत क्षेत्र में सालर के वृक्ष पाये जाते हैं। सागवान, धोकरा, सालर व बबूल से इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। अनुमान है कि राजस्थान के वनों से प्रतिवर्ष लगभग 25 लाख घन फीट इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। इन वनों में पुराने व अवैज्ञानिक ढंग से लकड़ी काटी जाती है, अतः बहुत सी नष्ट हो जाती है। राजस्थान को चाहिये कि लकड़ी काटने के वैज्ञानिक यंत्र खरीदने के लिए संबद्ध व्यक्तियों को ऋण देने की व्यवस्था करे।

(3) बांस व घास—

बांसवाड़ा, उदयपुर, चित्तौडगढ़, सिरोही व भरतपुर जिलों में बास होता है। बास के अनेक उपयोग होते हैं जैसे टोकरी बनाने, चारपाई बनाने, झोपड़ी बनाने आदि के लिए। बांस से कागज भी बनाया जाता है किन्तु राजस्थान में बांस इतनी मात्रा में नही होता कि कागज बनाने का कारखाना स्थापित किया जा सके। इसके अतिरिक्त राज्य में अनेक प्रकार की घासें होती हैं। अधिकाश घास पशुओं के चारे के रूप में काम में आ जाती है। मूंज से रस्सियां, बाण व झाड़ू बनाई जाती है।

(4) कत्था—

कत्थे का उत्पादन उदयपुर, चित्तौडगढ, झालावाड़, बूंदी, भरतपुर व जयपुर जिलों में होता है। कत्थे का राजस्थान में वार्षिक उत्पादन लगभग 375 टन होता है। खैर के वृक्षों के तने के आन्तरिक भाग को काटकर छोटे-छोटे टुकड़े कर लिये जाते हैं। फिर उन्हें उबालकर कत्था तैयार किया जाता। राज्य में कत्थे को "हांडी प्रणाली" से तैयार किया जाता है। इस प्रणाली से कत्था कम प्राप्त होता है। यदि कारखाना प्रणाली से कत्था तैयार किया जावे तो उत्पादन में वृद्धि हो सकती है। किन्तु कत्था उत्पादकों की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण मशीनों का प्रयोग नही को पा रहा है। सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

(5) गोंद —

गोंद अनेक प्रकार के वृक्षों जैसे खेजड़ा, बबूल, ढाक, नीम, पीपल आदि से प्राप्त होता है। इन अनेक वृक्षों में से चिपचपा रस निकलता है जो वृक्ष के तने पर जम जाता है। सूख जाने पर यह गोंद का रूप ले लेता है। बहुत सा गोंद बम्बई भेज दिया जाता है।

(6) आवल —

आवल की छोटी-छोटी झाड़ियां होती है जिनकी पत्तियां सदैव हरी रहती है। इनमे पीले फल आते रहते है। इन झाड़ियों के पत्ते पशु नहीं चरते। आवल की झाड़ियां जोधपुर, पाली, सिरोही, उदयपुर और बांसवाड़ा जिलों में बहुतायत से पाई जाती है। इसकी छाल चमड़ा साफ करने के लिए बहुत उत्तम पदार्थ है। राजस्थान में चमड़ा उद्योग अविकसित होने के कारण, इस छाल का बहुत कम भाग उपयोग हो पाता है। अधिकांश छाल को कानपुर, मद्रास, बम्बई, अहमदाबाद आदि स्थानों को भेज दिया जाता है जहाँ चमड़ा साफ करने का उद्योग विकसित है।

(7) तेंदु की पत्तियां—

तेंदु की पत्तियों से बीडिया बनाई जाती हैं। तेंदु के वृक्ष मुख्यतः उदयपुर, चित्तौड़गढ, झालावाड़, बांसवाड़ा और बारां क्षेत्र में पाये जाते है। पत्तियों का लगभग आधा उत्पादन तो राजस्थान के बीड़ी निर्माण केन्द्रों जैसे जयपुर, अजमेर, ब्यावर, कोटा, नसीराबाद, भीलवाड़ा, पाली आदि में उपयोग कर लिया जाता है और शेष भाग अहमदाबाद को भेज दिया जाता है।

(8) खस—

खस एक प्रकार की घास है जिसकी जड़ों से सुगन्धित तेल पदार्थ निकाला जाता है। खस से इत्र व अन्य सुगन्धित पदार्थ तैयार किये जाते हैं। खस का उपयोग गर्मियों में कमरों को शीतल करने के लिए टाटे व परदे बनाने के लिए हाथ के पंखे बनाने के लिए, पान रखने की डिब्बिया बनाने में और शर्बत आदि बनाने मे किया जाता है। सवाईमाधोपुर, भरतपुर व टोंक जिले खस उत्पादन के प्रमुख जिले हैं।

(9) महुआ —

महुआ के वृक्ष से फल प्राप्त होते हैं, जिनका उपयोग खाने व देशी शराब बनाने में किया जाता है। यह वृक्ष मुख्यतः डूंगरपुर, उदयपुर, चित्तौडगढ, झालावाड़ और सिरोही जिलों में होता है। आदिवासी व भील इसकी शराब घरों में ही बना लेते हैं।

(10) शहद और मोम—

शहद की मक्खियां वृक्षों व झाड़ियों पर अपने छत्ते बना लेती हैं। इन छत्तों से शहद व मोम प्राप्त किया जाता है। अलवर, भरतपुर, सिरोही व जोधपुर

उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और बांसवाड़ा आदि जिलों में यह विशेष रूप से प्राप्त किया जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त लाख, शरीफे, वेर, सिंघाड़े व अन्य पदार्थ भी वनों से प्राप्त किये जाते हैं।

वन विकास के सरकारी प्रयत्न
अथवा
पंचवर्षीय योजनाओं में वन विकास

तत्कालीन राजपूताने की रियासतों मे वन विकास की ओर ध्यान नही दिया गया। राजस्थान के निर्माण के पश्चात् राज्य के वन विकास की ओर ध्यान दिया गया। राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के लगभग 3·3 प्रतिशत भाग में ही वन हैं, जब कि आर्थिक दृष्टि से राज्य के कम से कम 33 प्रतिशत भाग में वन होने चाहिये।

राजस्थान के नियोजित विकास के लिए पचवर्षीय योजनायें बनाई गई। राजस्थान की द्वितीय पंचवर्षीय योजना में राज्य सरकार ने अपनी वन-नीति घोषित की। जिसके अनुसार सरकार की वन नीति के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

(1) स्थानीय जनता की वन की उपज से सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

(2) वन उपज पर आधारित उद्योगों को पर्याप्त मात्रा मे कच्चा माल उपलब्ध करना।

(3) मिट्टी के कटाव को रोकना।

(4) वन क्षेत्र में वृद्धि करना।

(5) वन लगाकर सीमांत भूमियों का उपयोग और

(6) चरागाह भूमि का विकास।

प्रथम योजना में वन विकास—

राज्य की प्रथम पंचवर्षीय योजना में वन विकास के लिए 28·12 लाख रुपये का प्रावधान किया गया। इस राशि में से सन् 1956 तक 26·37 लाख रुपये व्यय किये जा सकें। इस योजना में वन अनुसंधान, ग्राम वनों का निर्माण वन सम्बन्धी शिक्षा, चरागाहों का विकास, वन क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण और शिकारगाह आदि से सम्बन्धित योजनाएं रखी गईं।

इस योजना काल में वनों से सम्बन्धित शिक्षा देने के लिए राज्य में फारेस्ट गार्ड्स स्कूल उदयपुर बांसवाड़ा व झालावाड़ में स्थापित किये गये। कोटा में वन अनुसंधान कार्यालय स्थापित किया गया। मरुस्थलीय क्षेत्र में वन लगाने के सम्बन्ध में अनुसंधान कार्य प्रारम्भ करने के लिए केन्द्रीय सरकार ने जोधपुर में एक अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया। रेगिस्तान के अनेक भागों में वनों की पट्टियां लगाई गई। पुरानी पौधशालाओं का विकास किया गया और 8 नई पौधशालाएं स्थापित की गई।

द्वितीय योजना में वन विकास—

इस योजना में वन साधनों के दीर्घकालीन विकास की व्यवस्था करके इमारती लकड़ी की बढ़ती हुई आवश्यकता की पूर्ति करने के सम्बन्ध में विशेष लक्ष्य रखें। प्रथम योजना के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कार्यक्रम बनाये गये। द्वितीय योजना में वन विकास के लिए 125·67 लाख रुपये व्यय करने का प्रावधान किया गया।

इस काल में 14 क्षेत्रों मे वन सम्पत्ति का परीक्षण किया गया व लगभग 1750 वर्ग मील मे वन लगाये गये। विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए दो अधिकारियों को संयुक्त राज्य अमेरिका भेजा गया। रस के उत्पादन का विकास किया गया। वनों मे अनेक प्रकार के वृक्षों को विशेषत: बबूल के वृक्षों का रोपण बढ़ाया गया। 40 नई पौधशालाएं स्थापित की गई। भू संरक्षण के कार्य में वृद्धि की गई।

तृतीय योजना में वन विकास—इस योजना में वन विकास के लिए लगभग 245 लाख रुपये व्यय करने का प्रावधान किया गया। इस योजना में आर्थिक महत्व के वृक्षों जैसे सागवान, बाग, दियासलाई की लकड़ी आदि के विकास पर ध्यान दिया। वन सम्बन्धी अनुसंधान, कर्मचारियों के प्रशिक्षण, मार्गों के निर्माण आदि पर भी ध्यान दिया है।

इस योजना काल मे 17 नई पौधशालाएं स्थापित की गई।

चतुर्थ योजना में वन विकास—राज्य में चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में भी नये क्षेत्रों में वन लगाने, पुराने वनो के विकास, पौधशालाओं की स्थापना व उनके विकास एवं प्रशिक्षण से सम्बन्धित विकास कार्यों के लिए कार्यक्रम बनाये गये।

पांचवी योजना में वन विकास—इस योजना में संजय गांधी के पांच सूत्रों में एक सूत्र वन विकास का होने के कारण तथा 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम लागू होने से वन विकास पर विशेष ध्यान दिया गया।

छठी योजना में वन विकास—छठी पंचवर्षीय योजना में वनों के विकास एवं संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस योजना में वृक्षारोपण, फार्म फोरेस्ट्री तथा अन्य कार्यक्रम राजस्थान में भी विशेष गति पर है। चार नए कार्यक्रम विशेष महत्व के हैं—

(1) प्रत्येक बच्चे के लिए एक पेड़ कार्यक्रम—स्कूली कार्यक्रम हैं।

(2) पर्यावरण विकास दल पहाड़ी प्रदेशों में वृक्षारोपण एवं भूमि संरक्षण करता है।

(3) पर्यावरण विकास कैम्प कार्यक्रम में विश्व विद्यालय एवं कालेजो के छात्र वृक्षारोपण करते हैं।

(4) अनुसन्धान कार्यक्रम के अन्तर्गत वन विभाग अनुसन्धान कार्य करता है।

राज्य सरकार द्वारा वन विकास के लिए वन विभाग को उदारतापूर्वक साधन एवं वित्तीय सुविधायें दी जा रही हैं तथा राजस्थान में वन विकास कार्य मे काफी गति है।

पिछले दो वर्षों में प्रयास—राज्य में पर्यावरण संतुलन तथा वन और वन्य जीवों की रक्षा के लिए पिछले दो वर्षों में विशेष प्रयास हुए हैं। राष्ट्रीय वन नीति के अनुकूल प्रदेश में वृक्षारोपण और वन संवर्धन कार्यक्रमों को तेजी से क्रियान्वित किया जा रहा है। प्रदेश में वनों का प्रतिशतांश केवल 9 है। अधिकांश क्षेत्र परिभाषित वन, बंजर भूमि तथा खुली पहाड़ियों के रूप मे हैं।

वृक्षारोपण कार्यक्रम को प्राथमिकता देते हुए राज्य में विभिन्न योजनायें क्रियान्वित की जा रही हैं, जिनमें पौध वितरण योजना, अनुसूचित जाति व जन- [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
शालायें कार्यरत हैं। वर्ष 1982 की वर्षा ऋतु मे विभाग द्वारा 1 करोड़ 10 लाख पौधे वितरित किये गये। गत वित्तीय वर्ष 1982–83 के समापन तक राज्य मे 4 करोड़ 32 लाख पौध लगाये जा चुके हैं। इस वर्ष 1983–84 में 4 करोड़ 50 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य है।

कृषि वानिकी हेतु राज्य में इस समय 600 पौध शालायें कार्यरत हैं। गत वर्ष राज्य मे 435 लाख पौधे रोपित किये गये थे। वर्ष 1983–84 म 500 लाख पौधे रोपित किये जाने का लक्ष्य है।

(5) राजस्थान में पशु संसाधन तथा भूमि एवं सिंचाई
(Land & Irrigation, Animal Resources of Rajasthan)

(क) राजस्थान में पशु संसाधन

राजस्थान में निम्नलिखित पशु पाये जाते हैं जिनका पालन विभिन्न उद्योगों के रूप में बढ़ाया जा रहा है।

ऊंट—ऊंट रेगिस्तान का जहाज कहलाता है क्योंकि अपनी विशिष्ट शारीरिक बनावट के कारण यह रेतीले भाग में दौड़ भी सकता है। राजस्थान मे ऊंट बोझा ढोने के काम आता है। कुछ लोग ऊंटनी का दूध भी पीते हैं।

ऊंटों की एक बटालियन भारतीय थल सेना में है जो रेगिस्तान में थल युद्ध के समय काम में लायी जाती है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा स्थापित बीकानेर ऊंट फार्म है जिसमें ऊंटों की नस्ल सुधारने का काम होता है।

भेड़—भेड़ों पर राजस्थान का ऊन उद्योग आधारित है जिससे बढ़िया वस्त्र, कम्बल, गलीचे, कालीन, शाल आदि बनाये जाते हैं जिनका निर्यात अन्य देशों को भी होता है। राजस्थान में विभिन्न नस्लों की भेड़ों के अलावा आस्ट्रेलिया से मंगाई

गई मैरिनो भेड़ें भी हैं। प्रति भेड़ से औसत 0·8 से 0·9 किलोग्राम तक ऊन प्रति वर्ष उतारी जाती है।

राजस्थान में भेड़ों के चार फार्म हैं :

1. फतेहपुर भेड़ प्रजनन फार्म—यह सीकर में है। यहाँ आस्ट्रेलिया तथा रूस की भेड़ों द्वारा भारतीय भेड़ों की नस्ल में सुधार किया जाता है।

2. मान्नपुरा भेड़ फार्म—यह बीकानेर में है। इस फार्म में रूसी भेड़ों द्वारा नस्ल में सुधार करना, भेड़ों की थान तैयार करना तथा ऊन तैयार करना, आदि कार्य होते हैं।

3. अविकानगर भेड़ फार्म—यह टोंक में है। यह भी अच्छी नस्ल प्राप्त करने और अच्छी उन्नत किस्म की ऊन तैयार करने में कार्यरत है।

4. शाहपुरा भेड़ प्रजनन अनुसन्धान केन्द्र—शाहपुरा में स्थित है। यहाँ डेढ़ लाख भेड़ हैं जिन पर अनुसन्धान कार्य हो रहा है।

बकरी—कोटा, सवाईमाधोपुर, सिरोही और अलवर की बकरियाँ दूध और मांस के लिए प्रसिद्ध हैं। बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, टोंक, सीकर, बीकानेर आदि जिलों में भी ये पाई जाती हैं। चूंकि बकरी घास और अन्य पौधों द्वारा ही अपना पेट भर लेती हैं। अतः शुष्क प्रदेशों में भी इन्हें पालना आसान होता है।

गाय भैंसें—पश्चिमी राजस्थान और उत्तर पूर्वी राजस्थान में गाय-भैंसें विशेषतः पायी जाती हैं। बीकानेर, जैसलमेर, जालौर और बाड़मेर में काफी मात्रा में दूध होता है। वहाँ दूध से घी भी बना लिया जाता है। राजस्थान में भूरी नस्ल की अधिक दूध देने वाली भैंसें हैं। दूध उत्पादन में राजस्थान का तीसरा स्थान है। प्रथम व द्वितीय क्रमशः पंजाब और हरियाणा है। नवीनतम उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में प्रतिव्यक्ति दूध का उत्पादन 265 ग्राम प्रति दिन है।

राजस्थान का राजस्थान सहकारी डेयरी-फेडरेशन दूध उत्पादन के लिए राजस्थान की मुख्य संस्था है।

बैल—नागौर में अच्छे किस्म के शक्तिशाली बैल पाये जाते हैं। बैलों की नस्ल सुधारने के लिए नागौर पशु प्रजनन केन्द्र तथा गायों की नस्ल में सुधार लाने के लिए सूरतगढ़ में एक केन्द्रीय पशु प्रजनन केन्द्र है। जिसकी स्थापना 1967 में हुई थी। बीकानेर में भी एक पशु पालन कालेज है, जहाँ जर्सी और हालस्टीन जैसे मान्य शीतोष्ण नस्ल के विदेशी सांडों द्वारा गायों की नस्ल सुधारने का कार्य किया जा रहा है।

सूअर—चर्बी, बाल व पौष्टिक मांस प्राप्त करने के लिए सूअरों का पालन भी राजस्थान में होता है तथा यहाँ पालन केन्द्र भी है।

मुर्गी पालन — राज्य सरकार के द्वारा अजमेर और जयपुर तथा अन्य स्थानों में मुर्गी पालन फार्म चलाये जाते हैं।

पशु पालन संवर्धन—

पशुधन से अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए सबसे पहली आवश्यकता पर्याप्त पशु चिकित्सा सहायता की व्यवस्था करने की है इसके लिए राजस्थान में पशु चिकित्सा के अस्पताल और औषधालयों की व्यवस्था की गयी है। पशु चिकित्सा का प्रशिक्षण देने के लिए बीकानेर में कालेज है जिसका सम्बन्ध उदयपुर विश्वविद्यालय से है।

पशुधन एव यहाँ प्राप्त अन्य संसाधनो का अधिक से अधिक उपयोग करके यहा के निवासियों की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए, ग्राम स्तर एव रोजगार के अवसरो की वृद्धि के लिए राजस्थान के ग्यारह जिलों—गगानगर, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर और पाली में मरुस्थल विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है। यह सूखे की सम्भावना वाले क्षेत्रो के कार्यक्रम और लघु कृषक विकास कार्यक्रम से सम्बन्धित अभिकरणो के माध्यम से चलाया जा रहा है।

1977 से 80 तक की अवधि में काम के बदले अनाज, कार्यक्रम के अन्तर्गत राजस्थान में 3,900 हैक्टेयर क्षेत्र का मृदा सरक्षण किया गया तथा सिंचाई की विभिन्न सिंचाई परियोजना के द्वारा 15,100 हैक्टेयर भूमि को सिंचित किया गया ताकि कृषि का अधिकाधिक विकास हो और प्रदेश में खुशहाली बढ़े।

पशुओं की संख्या की दृष्टि से राजस्थान का भारत में पाँचवा स्थान है। यहाँ पशुओ की विभिन्न नस्लें पाई जाती हैं जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं—

1. कन्करेज	दूध देने वाली गाय की नस्ल
2. माल्वी	जुताई के काम आने वाली बैल की नस्ल
3. नागौर	कम दूध देने वाली गाय की नस्ल
4. रथ	जुताई के काम आने वाले पशु
5. भूरा	अधिक दूध देने वाली भैंस की नस्ल
6. जमना	" " " "
7. पारी	दूध देने वाली बकरी की नस्लें जो कोटा और
8. बारबेरी	सवाईमाधोपुर में पायी जाती है।
9. चोकला	बढ़िया वस्त्र के ऊन के लिए प्रसिद्ध भेड़ की नस्ल, यह बीकानेर में पायी जाती है।
10. मागरा	कालीन के लिए सबसे अच्छा ऊन प्राप्ति के स्रोत की भेड़ो की नस्लें। यह बीकानेर मे पायी जाती है।
11. नाली	वस्त्र और कालीन दोनों के लिए प्राप्त हो

	गुकने वाले ऊन के लिए भेड़ की नस्ल। यह भी बीकानेर में पायी जाती है।
12. जैसलमेरी	भेड़ की ये दोनों नस्लें जोधपुर में पायी जाती हैं।
13. मारवाड़ी	,, ,, ,, ,,

(ख) राजस्थान में सिंचाई

राजस्थान कृषि प्रधान राज्य है। यहाँ की कृषि अधिकांशत वर्षा के जल पर निर्भर है। यहाँ 43·5 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य नहीं है, अतः अन्य प्रान्तों की तुलना में यह कृषि व सिंचाई के स्तर पर पिछड़ा हुआ है। यहा नदियां, कुए, ट्यूब वैल्स, नहरों आदि से सिंचाई होती है। सिंचाई की व्यवस्था मजबूत एव स्थायी हो सके, इसके लिए यहा अनेक नदी घाटी परियोजनायें भी सम्पन्न हुई हैं। 1980 में विश्व बैंक की सहायता से गांवों मे 9·40 करोड़ रुपये की लागत से हैण्ड पम्प लगाने की योजना भी स्वीकृत हुई है। 5204 गावों मे हैण्ड पम्प लगाने की एक अन्य योजना के लिए भी 35 करोड़ रु. की स्वीकृति हुई है।

राजस्थान मे सिंचाई के प्रमुख साधन निम्न हैं--

(i) कुएं--अजमेर, जयपुर, अलवर, भरतपुर, उदयपुर, आदि जिलों में कुओं की संख्या पर्याप्त मात्रा मे है। इन जिलों में अधिकाश स्थानों पर 20 से 40 फीट नीचे ही पानी निकल आता है। अतः इन क्षेत्रों में कुओं से भी सिंचाई होती है। जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर आदि रेतीले जिलों में पानी 210 फीट नीचे तक मिलता है अतः यहा कुओं से सिंचाई करना कठिन है। कुओं द्वारा करीब 2 हजार हैक्टेयर भूमि की सिंचाई की जाती है।

(ii) ट्यूब वैल्स--गत पचवर्षीय योजनाओं में कुछ क्षेत्रों में सिंचाई के साधन विकसित करने की दृष्टि से ट्यूब वैल्स की व्यवस्था भी की गई है। राजस्थान मे जैसलमेर, जोधपुर व बीकानेर जिलों में ऐसी व्यवस्था है। इसके लिए सरकार ने किसानों को ऋण दिये हैं।

(iii) जलाशय--राजस्थान मे लगभग 500 जलाशय हैं। ये जलाशय (तालाब) दक्षिणी व पूर्वी राजस्थान में अधिक है। किन्तु सिंचाई की दृष्टि से इनका विशेष महत्व नही है। करीब 300 हेक्टेयर भूमि में तालाबों से सिंचाई होती है।

(iv) नहरें--गग नहर एवं राजस्थान नहर दोनों ही सिंचाई की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। राजस्थान नहर तो विश्व की सबसे बड़ी नहर सिंचाई परियोजना है। इसका अन्यत्र विस्तृत वर्णन है। राजस्थान मे कुल सिंचित क्षेत्र करीब 42 लाख हेक्टेयर है।

राजस्थान की मुख्य सिंचाई एवं नदी घाटी योजनायें

राजस्थान की बड़ी और मध्यम बहुउद्देशीय परियोजनाएं--

भारत में वर्षा की अनिश्चितता के कारण खेती मे सिंचाई परियोजनाओं का

बहुत महत्व है। इसलिए सम्पूर्ण भारत को ध्यान में रखते हुए अनेक सिंचाई और विद्युत उत्पादन की बहुउद्देशीय परियोजनाएं लागू की गई है। इन परियोजनाओं के लागू होने से सिंचाई की क्षमता में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

1. चम्बल परियोजना—यह परियोजना मध्य प्रदेश और राजस्थान सरकार द्वारा संयुक्त रूप से प्रारम्भ की गयी। इस परियोजना के पहले चरण में गांधीसागर बाँध और उसके 115 मेगावाट शक्ति वाले बिजलीघर कोटा बैराज का निर्माण कार्य पूरा किया गया। इसके दूसरे चरण में राणा प्रताप सागर बांध पूरा किया गया। इसके साथ ही 172 मेगावाट की क्षमता वाला बिजली घर भी बनाया गया। इस परियोजना के तीसरे चरण में जवाहर सागर बांध और 99 मेगावाट की शक्ति वाला बिजली घर का निर्माण हुआ है। तीनों चरणों के पूर्ण हो जाने पर 386 मेगावाट बिजली तथा 4·92 लाख हैक्टेयर भूमि सिंचित की क्षमता प्राप्त हुई है। 1977-80 तक 4·86 लाख हैक्टेयर भूमि सिंचन की क्षमता प्राप्त की जा चुकी थी।

2. भाखड़ा नांगल परियोजना—इस परियोजना को संयुक्त रूप से पंजाब, हरियाणा और राजस्थान सरकारों द्वारा चलाया गया है। यह परियोजना अब तक की सबसे बड़ी बहुउद्देश्यीय नदी घाटी योजना है। इसको पूरा करने में 236 करोड़ रुपये व्यय हुए। इसके अन्तर्गत सतलज नदी पर 518 मीटर लम्बा और 226 मीटर ऊंचा भाखड़ा बांध, 29 मीटर ऊंचा नांगल बांध, 64 किलोमीटर लम्बी नांगल पन बिजली नहर, भाखड़ा बांध पर दो बिजली घर, गंगवाल और कोटला के स्थानों पर इसी नहर पर 1,204 मेगावाट की क्षमता वाले दो और बिजली घर तथा लगभग 1,100 किलोमीटर लम्बी नहरों और 3,400 किलोमीटर से अधिक लम्बी सहायक नहरों का निर्माण कार्य हुआ है। भाखड़ा बांध जलाशय की संग्रहण क्षमता 986·8 करोड़ घन मीटर है। इसकी नहरों से 14·6 लाख हैक्टेयर भूमि में सिंचाई हो रही है।

3. व्यास परियोजना—यह एक और संयुक्त परियोजना है जिसे राजस्थान, पंजाब और हरियाणा की सरकारें चला रही हैं। इसमें (1) व्यास सतलज लिंक (2) पोंग में व्यास बांध और (3) व्यास पारेषण व्यवस्थापक सम्मिलित है। व्यास पारेषण लाईन परियोजना को इसमें सम्मिलित करने से व्यास परियोजना की अनुमानित लागत 715 करोड़ रुपये है।

व्यास सतलज लिंक परियोजना एक बिजली परियोजना है जिसकी स्थापित क्षमता 660 मेगावाट है। इसमें दो विस्तार यूनिटें शामिल हैं जिनमें से प्रत्येक की क्षमता 165 मेगावाट होगी। निर्माण कार्य और संवाहक व्यवस्था, जिसमें पण्डों का मोड़ बांध भी शामिल है, लगभग पूरे हो गये हैं। चारों एकक चालू किये जा चुके हैं और विस्तार एकक का भी [illegible]

पोंग स्थित व्यास बांध मिट्टी और पत्थरों का बना बांध है। इसकी ऊंचाई 133 मीटर है। यह मुख्यतः सिंचाई परियोजना है। इसकी स्थापित क्षमता 240 मेगावाट है और 60-60 मेगावाट क्षमता वाले दो और एकक बढ़ाने की भी व्यवस्था है।

4. राजस्थान नहर परियोजना—इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य उत्तर पश्चिमी राजस्थान को सिंचाई की सुविधाएं देना है। इस परियोजना के लिए पोंग बांध से पानी लिया जायेगा। *इस परियोजना के दो भाग हैं। (1) 204 किलोमीटर* लम्बी राजस्थान सहायक नहर जिसका केवल अन्तिम 37 किलोमीटर भाग ही राजस्थान में है, पहला 167 किलोमीटर भाग पंजाब और हरियाणा में है और (2) 445 किलोमीटर लम्बी राजस्थान मुख्य नहर। इस परियोजना का पहला चरण पूरा हो चुका है। दूसरे चरण का कार्य भी तेज गति से प्रारम्भ हो चुका है। जो 1984-85 *तक पूरा हो जायेगा।* इस परियोजना के पूरा होने पर *लगभग 12·54 लाख* हैक्टेयर भूमि की सिंचाई हो सकेगी। इस परियोजना के पूरा हो जाने पर यह नहर विश्व की सबसे लम्बी नहर होगी। जिसकी कुल लम्बाई 649 किलोमीटर होगी।

5. जवाई परियोजना—लूनी नदी की एक सहायक नदी, जो पाली जिले में अरावली से निकलती है, पर एक बांध बनाया जायेगा जो 923 मीटर लम्बा और 35 मीटर ऊंचा होगा। इससे 22 किलोमीटर लम्बी नहर निकाली जायेगी जिससे पाली तथा सिरोही जिलों की सिंचाई होगी।

इस परियोजना के अन्तर्गत एक बिजली घर भी बनाया जायेगा जिसकी विद्युत क्षमता 4,000 किलोवाट होगी। सेई नदी पर देवला में एक बांध बनाया जायेगा। जिसका पानी पहाड़ी सुरंग द्वारा जवाई बांध को भेज दिया जायेगा।

6. माही परियोजना—माही नदी पर बांसवाड़ा जिले में एक बांध बनाने की योजना है। इस पर दो बिजलीघर बनाये जायेंगे। जिनसे 29 हजार किलोवाट बिजली उत्पन्न होगी। इस परियोजना के अन्तर्गत निकाली गयी नहर की लम्बाई 104 किलोमीटर होगी।

7. पार्वती परियोजना—धौलपुर के समीप पार्वती नदी पर एक जलाशय बनाने की योजना है, जिससे नहर निकाली जायेगी। जिससे 17·5 हैक्टेयर भूमि में सिंचाई की जायेगी।

8. ओरई परियोजना—चित्तौड़गढ़ जिले में ओरई नदी पर बांध बनाने की योजना है जिससे चित्तौडगढ और भीलवाड़ा जिलो मे सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हो सकेगी।

कुछ अन्य परियोजनाएं भी हैं जो निम्नलिखित हैं—

परियोजना का नाम	नदी का नाम	सहयोग	स्थान
1. कोटा बैराज परियोजना	चम्बल	मध्य प्रदेश के	कोटा
2. राणा प्रताप सागर परियोजना	चम्बल	मध्य प्रदेश के रावतभाटा	(कोटा से 5 कि.मी.दूर)
3. जवाहर सागर परियोजना	कालीसिल नदी	मध्यप्रदेश के	कोटा
4. कालीसिल परियोजना	कालीसिल नदी		करौली
5. सरेसी परियोजना	मासी नदी		सरेसी
6. गम्भीर परियोजना	गम्भीर नदी		चित्तौड़गढ़
7. मारेल परियोजना	मारेल नदी		लालसोट
8. नमानो परियोजना	बनास नदी		नाथद्वारा
9. बांकली परियोजना	सूकड नदी		जालौर
10. गुढा परियोजना	मेजा नदी		बूंदी
11. जुग्गर परियोजना	जुग्गर नदी		हिण्डौन

राजस्थान में विभिन्न बिजली परियोजनाओं की क्षमता

पन बिजली का नाम	स्थापित क्षमता (मेगावाट)	वर्तमान उत्पादन (मेगावाट)
कोटा बैराज	115.00	115.00 ,,
राणा प्रताप सागर	172.00	172.00 ,,
जवाहर सागर	99.00	99.00 ,,
परमाणु बिजली,		
राजस्थान परमाणु शक्ति केन्द्र	440.00	440.00 ,,

राजस्थान परमाणु शक्ति केन्द्र की दूसरी इकाई ने भी बिजली का उत्पादन शुरू कर दिया है राणा प्रताप सागर एटोमिक पावर प्लांट है जो रावतभाटा में स्थित है। यह देश के पंच आणविक ऊर्जा केन्द्रों में से एक हैं।

इस समय राजस्थान में बिजली की कुल स्थापित क्षमता 1036.9 मेगावाट है। सन् 1951 ई० में राजस्थान में केवल 43 गांवों में ही बिजली थी। अब यह संख्या बढ़ाकर 14,421 हो गई है। इसके अतिरिक्त सिंचाई के लिए 1,98,255 नलकूपों को भी बिजली दी जा रही है।

प्रमुख ताप विद्युत स्टेशन—रतनगढ़, रामगढ़, चूरू, सीकर, नवलगढ़, सुजानगढ़, सरदार शहर, केशरीसिंहपुर, राजगढ़, तारानगर, जसवन्तगढ़, झुंझुनूं, खेतड़ी, लक्ष्मणगढ़ आदि।

6. वन्य जीव एवं संरक्षण—पशु-भेड़, बकरी, ऊंट तथा उनकी मुख्य नस्लें।

Wild life and their preservation-cattle-sheep, Goat, Camel and their important breeds.

(क) वन्य जीव एवं संरक्षण

पशुओं को दो वर्गों में रखा जा सकता है। जंगली और पालतू। अब राजस्थान में जंगली पशु बहुत कम रह गये हैं, क्योंकि अनेक भागों के जंगल साफ कर दिये गये हैं तथा अनेक का अनियन्त्रित शिकार किया गया है। भूतपूर्व राजाओं के शिकार प्रेम के कारण भी जंगली पशुओं की बहुत कमी हुई है। अरावली पर्वत एवं उसकी तलहटियां तथा हाड़ौती के पठारी भाग में जंगली पशुओं की अब भी प्रचुरता है। राजस्थान में पाये जाने वाले प्रमुख जंगली पशु निम्नलिखित हैं—

(1) शेर—राजस्थान के अनेक पर्वतीय एवं वन प्रदेशों में शेर पाये जाते हैं। ये मुख्यतः डूंगरपुर, झालावाड, प्रतापगढ, सिरोही, कोटा, बूंदी, उदयपुर, चित्तौड़गढ, सवाई माधोपुर, करोली, भरतपुर, धौलपुर और अलवर के जंगलों में पाये जाते हैं।

(2) चीते—चीते मुख्यतः सवाई माधोपुर, किशनगढ़, करौली, भरतपुर, धौलपुर, अलवर, बूंदी, कोटा, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ, डूंगरपुर, व झालावाड़ में मुख्यतः पाये जाते हैं।

(3) रीछ—कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, जोधपुर, उदयपुर, डूंगरपुर, अलवर, भरतपुर, करौली व धौलपुर में मुख्यतः रीछ पाये जाते हैं, इनकी संख्या अब बहुत कम रह गई है।

(4) सूअर—सवाईमाधोपुर, टोंक, भरतपुर, धौलपुर, कोटा, अलवर, बीकानेर, जोधपुर और उदयपुर में मुख्यतः पाये जाते हैं।

(5) हिरण—प्रायः सर्वत्र पाये जाते है, किन्तु किशनगढ, टोंक, अलवर, बीकानेर, उदयपुर व कोटा विशेष उल्लेखीय हैं।

(6) नील गाय—किशनगढ़, करौली, भरतपुर, धौलपुर, कोटा व झालावाड़ उल्लेखनीय हैं।

(7) खरगोश—राजस्थान के अनेक भागों में खरगोश मिलते हैं। सवाई माधोपुर, कोटा, बूंदी, उदयपुर, अलवर, भरतपुर व करौली उल्लेखनीय हैं।

अभय वन

सवाई माधोपुर जिले के वन्यपशुओं की सुरक्षा के लिए राजस्थान सरकार के वन विभाग ने प्रख्यात रणथम्भौर के चारों ओर सवाई माधोपुर स्टेशन से 7 मील दूर घने जंगलों के बीच एक अभय वन बना रखा है।

राज्य के दक्षिण पूर्व भाग में अरावली के पूर्वी ढाल पर बसा यह जिला

समशीतोष्ण जलवायु एवं 125 से 150 सेमी. वर्षा की औसत के कारण जानवरों तथा चिड़ियाओं के रहने के लिए उपयुक्त हैं। इस क्षेत्र में घनी तथा सदा ठण्डी रहने वाली घाटियां है और पशुओं के खाने के लिए अनेक प्रकार की झाड़ियाँ तथा घास यहां प्रचुरता से उत्पन्न होती है। वन विभाग द्वारा जंगल के हर भाग में जाने के लिए सड़कें भी बनाई गई हैं।

जिले के 4060 वर्गमील क्षेत्र में से 540 वर्गमील का क्षेत्र वन्य प्रदेश है। अरावली की पहाड़ियां यहां कहीं कहीं पर 1800 फीट ऊंची है तथा नदियों की कन्दराओं में और पहाड़ों की तलहटियों में घने वन हैं जहां जंगली जानवर प्रचुर मात्रा मे मिलते हैं। इनमें शेर, सुअर, रीछ, तेन्दुआ आदि पशु मिलते हैं। इन पशुओं के अतिरिक्त सांभर, चीतल, नील गाय और चिन्कारा भी पाए जाते हैं।

वन में मुख्यतया धोंक, कदम, छालर, मेर आदि के घने वन हैं। सीताफल, जामुन आदि के वृक्ष व बेर की झाड़ियां भी बहुतायत से उगती हैं।

राजस्थान के प्रमुख वन्य पशु अभयारण्य तथा पक्षी विहार

राजस्थान में अनेक पशु व पक्षी पाये जाते हैं। अतः यहां वन्य पशु अभयारण्य तथा पक्षी विहार भी पाये जाते हैं। इन स्थानो पर यहां के राजा महाराजा शिकार व विहार के लिए आते थे। अब यहां पर प्रतिवर्ष अनेकों पर्यटक आते हैं। इन अभ्यारण्यों में शेर, चीता, भालू, जंगली सुअर, हिरन, तेंदुआ, वनमानुष आदि देखने को मिल जाते हैं। पक्षी विहार में विश्व की अनेक प्रकार की चिड़ियाएं दिखाई देती हैं।

(1) सवाई माधोपुर वन्य जीव अभ्यारण्य—यहां वन्य पशु तथा पक्षी दोनों ही पाये जाते हैं। यहां के मुख्य पशु बाघ, सांभर, चीता, हिरण, साड, भालू आदि हैं। पक्षियों में मोर, कबूतर, बतख, चिड़ियां आदि हैं। यह जयपुर के राजा का आखेट वन था।

(2) सरिस्का वन्य जीव अभ्यारण्य—यह अलवर से 35 मील दूर स्थित है। यहा पर वन्य पशु व पक्षी दोनों ही पाये जाते हैं। यहां के मुख्य पशु सांभर, हिरन, बारहसिंगा, सूअर, सांड, चीता, लकड़बग्घा आदि है। पक्षियो में मुख्य पक्षी मोर, हरे कबूतर आदि हैं। यहा शिकारी चीते का शिकार करने आते हैं। मचानों से इन सबको देखा जा सकता है।

(3) दरा वन्य जीव अभ्यारण्य—यह कोटा के निकट दिल्ली-बम्बई रेलवे लाइन पर स्थित है। यहा भी वन्य पशु तथा पक्षी दिखाई देते हैं। चीते, बाघ, सूअर, हिरन, सांड आदि यहा के मुख्य पशु है। पक्षियो में तीतर, मुर्गे, रंग-बिरंगी चिड़ियां आदि पक्षी दर्शनीय है।

(4) जयसमन्द वन्य जीव अभ्यारण्य—यह उदयपुर से 53 कि. मी. दूर जयसमन्द झील के समीप स्थित है। यहां हिरन, सांभर, जंगली सूअर, चीता, आदि मिलते हैं। पक्षियों में तीतर, मुर्गे, बुलबुल आदि पाये जाते हैं।

(5) तालछापर वन्य अभ्यारण्य—यह सुजानगढ़ से 12 कि. मी. दूर है। और बीकानेर-जयपुर मार्ग पर स्थित है। यहां पर काले हिरण तथा रंग-बिरंगी चिड़ियां देखने योग्य है। यहां पहिले बीकानेर के शासक आखेट के लिये आते थे।

(6) राम सागर वन्य विहार तथा अभ्यारण्य—यह धोलपुर से 20 कि. मी. दूर है और आगरा बम्बई मार्ग पर स्थित है। यहां अनेकों वन्य जीव है, और एक झील के किनारे अनेको पक्षी पाये जाते हैं। यहां धोलपुर के शासक आखेट के लिए आते थे।

(7) आबू वन्य पशु अभ्यारण्य—यह आबू पर्वत पर स्थित है। यहां पशु व पक्षी दोनों ही देखने को मिलते हैं।

(8) गजनेर वन्य जीव अभ्यारण्य—यह भी पशु पक्षी के लिए दर्शनीय अभ्यारण्य है।

(9) घना पक्षी विहार—यह भरतपुर के निकट स्थित है। यहां 250 प्रकार के पक्षी पाये जाते हैं यहा 100 के करीब विदेशी पक्षी भी है। यहां साइबेरिया तक के पक्षी शीतकाल में आ जाते हैं। यहां पाये जाने वाले पक्षियों में सारस, स्टार्क हेरोन्स, एग्रेट्स, सर्प पक्षी, जलमुर्गी, जेमस, फीजेन्टस, अहावहंस आदि प्रमुख हैं। यह पक्षी यहां की झील में तैरते हैं, और यहां की मछलियां खाते हैं। कभी वे पेड़ों पर भी बैठ जाते है। इसके पास लगे जंगल में सांभर, हिरन, सूअर, लोमड़ी, सियार लकड़बग्घा, नीले सांड आदि पाये जाते हैं।

राजस्थान में भेड़ व ऊन

भारत के भेड़ व ऊन उत्पादक राज्यों में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय ऊन उद्योग में राजस्थान की महत्ता का प्रतिपादन करने के लिए एक ही तथ्य पर्याप्त है कि देश में ऊन का कुल मिलाकर प्रतिवर्ष जितना उत्पादन होता है, उसका लगभग 48 प्रतिशत भाग इस राज्य में ही होता है। राजस्थान में इस समय लगभग 88 लाख भेड़ें है। इस प्रकार भारत की कुल भेड़ों का लगभग 20 प्रतिशत भाग राजस्थान मे ही है। राजस्थान में आजकल लगभग 300 लाख पौंड का उत्पादन प्रतिवर्ष हो रहा है।

अर्थव्यवस्था में महत्व—अनुमान है कि राजस्थान से प्रतिवर्ष 4–6 करोड़ रुपये के मूल्य की ऊन विदेशों को निर्यात की जाती है। जिसमें से एक बड़ा भाग दुर्लभ मुद्रा क्षेत्र को जाता है। इस प्रकार विदेशी मुद्रा अर्जन में ऊन का भी महत्वपूर्ण योग है। कुछ ऊन भारत के ऊनी उद्योग केन्द्रों को भेज दी जाती है और शेष राजस्थान में उपयोग कर ली जाती है।

भेड़ों से ऊन के अतिरिक्त अन्य कई पदार्थ भी प्राप्त होते हैं। राजस्थान को प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख भेड़ों की खालें प्राप्त होती है। भेड़ों को मांस के लिये भी उपयोग में लिया जाता है। ग्रामीण शुष्क प्रदेशों में भेड़ों का हजारों लीटर दूध प्रतिवर्ष उपयोग में लिया जाता है। लाखों भेडे प्रतिवर्ष उत्तर प्रदेश, देहली, पंजाब, हरियाणा, अहमदाबाद, बम्बई आदि को मांस के लिए भेज देते हैं। अनुमान है कि राजस्थान मे ही प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख भेडे मांस के लिये मारी जाती है।

राजस्थान एवं भारत में अनेक कुटीर उद्योगों, लघु उद्योगों एवं संगठित उद्योगों के लिये ऊन कच्चे माल के रूप में उपयोग में लाया जाता है।

भेड़ों से अन्य लाभप्रद पदार्थ भी मिलते है। इनकी मींगनियां व मूत्र श्रेष्ठ खाद होती है। इस कारण भेड़े चर चुकने के पश्चात् रात में किसान इन्हें अपने खेतो मे बिठा लेते हैं। भेड़ों की आंतों से वल्ले, स्नायु से सरेश व चर्बी से बूट पालिस तथा ग्रीस आदि बनाते हैं। भेड़ की हड्डियों से श्रेष्ठ खाद भी बनाई जाती है।

राजस्थान के रेतीले एवं पहाड़ी भाग में जहां खेती की दशा अत्यन्त अनिश्चित है, वहां भेड़ें चराकर भूमि का उपयोग कर लेते हैं। इसके अतिरिक्त इन भागों में भेड़े पालकर लोग अपना निर्वाह कर लेते हैं। कृषि वाले क्षेत्रो में भी कृषक भेड़े पालते हैं और इस प्रकार यह एक सहायक उद्योग का रूप ले लेता है। राजस्थान के सम्पूर्ण जोधपुर व बीकानेर डिवीजन तथा जयपुर विभाग के अनेक भागों मे मुख्य व्यवसाय भेड़ पालना ही है। इस कारण भेड़ सम्बन्धी अन्य व्यवसाय जैसे ऊन कटाई, सफाई, कताई, बुनाई तथा अन्य कुटीर उद्योग यहां के अंग बन गये है। व्यापारिक क्षेत्र में भी ऊन का व्यापार इन भागों में मुख्य है। अनुमान है कि राजस्थान में लगभग 15 लाख व्यक्तियों का निर्वाह प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से भेड़ पालन व सम्बन्धित कार्यों से होता है। अतः स्पष्ट है कि राजस्थान की अर्थव्यवस्था में इनका बहुत महत्व है।

राजस्थान का भेड़ क्षेत्र

भारत में सबसे अधिक भेड़ें राजस्थान राज्य में ही है। यदि राजस्थान के उत्तर पूर्व से लेकर दक्षिण पश्चिम तक एक रेखा खींची जाय अर्थात् झूंझूनू जिले के उत्तरी भाग से जालौर की पश्चिमी सीमा तक तो ज्ञात होगा कि (इस रेखा पर) यह चूरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर व जालौर के क्षेत्रों में होती हुई जावेगी तथा निकटवर्ती भागों में ही राजस्थान की भेड़ों का मुख्य क्षेत्र है। इस भाग में वार्षिक वर्षा का औसत 35 सेमी. से 75 सेमी. तक है। यहा प्रति वर्ग मील के क्षेत्रों में भेड़ों की संख्या 56 से 102 तक पाई जाती है।

इस क्षेत्र (अथवा इस रेखा) के उत्तरी भाग में वर्षा की कमी के कारण भेड़ों की संख्या भी कम है। इन क्षेत्रों का अधिकांश भाग मरुस्थली है और औसत वार्षिक वर्षा भी 25 से. मी. से कम है। इस क्षेत्र में प्रति वर्ग मील में 15 से 30 भेड़ें ही मिलती है।

राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र में 60 सेमी. से 100 सेमी. तक वर्षा होती है अतः यहाँ के निवासी कृषि व्यवसाय पर विशेष ध्यान देते हैं। इसके फलस्वरूप भे पालन की ओर अधिक ध्यान नही दिया जाता। इस क्षेत्र में प्रति वर्ग मील भेड़ की संख्या 15 से 50 तक पाई जाती है।

प्रति सौ व्यक्तियों के पीछे भेड़ो को आबादी विभिन्न भागों में अलग-अल है। इस दृष्टि से न्यूनतम आबादी कोटा डिवीजन मे है। राजस्थान के इस पूर्व भाग में प्रत्येक 100 व्यक्तियों के पीछे भेड़ों की संख्या 6 से 16 तक ही है। अधि कतम आबादी राजस्थान के पश्चिमी भाग जोधपुर मे मिलती है। इस भाग में प्रत्येक 100 व्यक्तियों के पीछे 55 से 200 भेड़ें मिल जाती है।

राजस्थान की भेड़ों की मुख्य नस्लें

राजस्थान की भेड़ो की शारीरिक बनावट, मुखाकृति एवं ऊन के आधार पर उन्हें नौ प्रकार की नस्लों मे विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है—

(1) नाली—इस जाती की भेड़ें मुख्यत. बीकानेर के उत्तरी भाग, गंगानगर जिले एवं बीकानेर व पंजाब की सीमा पर पाई जाती है। इन भेड़ो का चहरा हल्के भूरे रंग का, लम्बे कान तथा औसत वजन 67 पौण्ड होता है। इनकी ऊन लम्बे रेशे की प्रायः 5 ईन्च से साढ़े पाच ईन्च तक की होती है। प्रति भेड़ प्रतिवर्ष 6–7 पौण्ड ऊन देती है। वर्ष मे दो बार इनकी ऊन काटी जाती है। अनुमान है कि राजस्थान में इस जाती की लगभग 2–3 लाख भेड़े है।

(2) मगारा—ये भेड़ें जैसलमेर, नागौर तथा बीकानेर जिलों मे पाई जाती हैं। इनकी शारीरिक बनावट सुन्दर व मजबूत होती है। इस जात की भेड़ का वजन लगभग 80 पौण्ड होता है। इनकी आंखों मे चारो और हल्के भूरे रंग के दाग होते हैं। एक वर्ष में तीन बार ऊन काटी जाती है। यह ऊन कालीन बनाने के लिये बहुत अच्छी होती है। ऊन मध्यम श्रेणी की व 4 ईन्च से 5 ईन्च तक लम्बी होती है। प्रत्येक भेड़ें से 3 से 4 पौण्ड ऊन प्रतिवर्ष प्राप्त होती है। अनुमान है, कि इस जाति की राजस्थान मे 3–4 लाख भेड़े है।

(3) चोकला या शेखावाटी—इस जाति की भेड़े बीकानेर के चूरू व जयपुर के झुन्झुनू सीकर जिलों मे पाई जाती है। इन भेड़ो के कान छोटे तथा चेहरे पर गहरे भूरे तथा काले दाग होते है। प्रत्येक भेड़ से वर्ष में 2 से 4 पौण्ड तक ऊन प्राप्त होती है। यह ऊन अच्छे किस्म की होती है। राजस्थान मे इस जाति की लगभग 15 लाख भेड़ें हैं।

(4) मारवाड़ी—इस जाति की भेड़ें जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, पाली, जयपुर, सीकर व झुंझुनू जिलों मे पाई जाती है। इन भेड़ो के कान लम्बे, मुँह का

व स्वस्थ्य शरीर होते हैं। इस जाति की भेड़ों में मुख्य विशेषता यह है कि लम्बी यात्रा करने की शक्ति होती है तथा शीघ्र ही किसी रोग से ग्रसित नहीं होत इनसे प्राप्त ऊन मध्यम व साधारण किस्म की होती है। प्रत्येक भेड़ वर्ष में 2 4 पौंड तक ऊन देती है।

(5) जैसलमेरी—इस जाति की भेड़े सम्पूर्ण जैसलमेर जिले में तथा जोध के पश्चिमी सीमान्त भागों में मुख्यत: पाई जाती है। इस जाति में दो शाखाएं है- प्रथम, गहरे भूरे रग के मुँह वाली, और दूसरी, काले चेहरे वाली। इनके का लम्बे तथा शरीर पुष्ट होता है। शारीरिक तोल लगभग 90 पौंड होता है। भेड़ों की ऊन मध्यम श्रेणी की होती है। व रेशा 4 इंच से 5 इंच तक लम्बा हो है। प्रति भेड़ प्रतिवर्ष 4 पौंड से 7 पौंड तक ऊन देती है। यह जाति राजस्थान पाई जाने वाली समस्त जातियों मे सबसे अधिक ऊन देती है। अनुमान है कि जाति की भेड़ो की संख्या राज्य में लगभग 4 लाख है।

(6) मालपुरी—ये भेडे जयपुर, टोंक तथा सवाई माधोपुर में पाई जाती है कान छोटे मुँह बहुत ही हल्के भूरे रंग के होते हैं। जो दूर से प्राय: स ही दिखाई देते हैं। इस जाति की भेड़ का औसत 60 पौंड़ भार होता है। यह कम ऊन देती है। प्रतिवर्ष प्रति भेड से दो पौंड ऊन प्राप्त होती है। इनकी रा स्थान में संख्या लगभग 15 लाख है।

(7) सोनाड़ी अथवा चनोथर—इस जाति की भेडें समस्त उदयपुर-डिवी मे पाई जाती है। इस जाति की भेड़ों के कान लम्बे प्राय: 8 इंच से 10 इंच त होते हैं तथा चरते समय पृथ्वी से छूते रहते है। इनकी पूंछ अपेक्षाकृत लम्बी चेहरे से लेकर गर्दन तक भूरा रंग होता। इस जाति की भेड़ों का वजन जातियों की भेड़ों की अपेक्षा अधिक होता है। इनका औसत वजन 120 पौंड हो है। ऊन छोटे रेशे वाली प्राय: ढाई इंच लम्बी प्राप्त होती है। प्रति भेड़ प्रति ढेड पौंड से 2 पौंड तक ऊन देती है। इस जाति की राज्य मे लगभग 9 ल भेडें हैं।

(8) पूगल—बीकानेर विभाग में पूगल तहसील है। यह भारत व पाकिस्त की सीमा के निकट स्थित है पूगल जाति की भेडें मुख्यत: राजस्थान के उत्त पश्चिमी भाग में पाई जाती है। ये भेडे बीकानेर व जैसलमेर जिलों में एवं नाग तथा जोधपुर जिलों के कुछ भागों में पाई जाती है। प्रति भेड प्रतिवर्ष 3 से 4 प तक ऊन प्राप्त होती है। इनकी ऊन माध्यम किस्म की होती है।

(9) बागड़ी—ये भेडें अलवर मे पाई जाती है। इनमें अधिकांश (लग 75 प्रतिशत) काले मुँह की होती है। और शेष सफेद मुँह वाली। इनके क छोटे व ऊन भी छोटे रेशे वाली होती है। इस जाति की लगभग 3 लाख भेड़ें है

ऊन की किस्में

ग 88 लाख भेड़ें हैं। दूसरे शब्दों मे सम्पूर्ण भारत की
ा राजस्थान मे ही है। हमारा राज्य प्रतिवर्ष लगभग 3
न करता है, जो कि सम्पूर्ण भारत के कुल ऊन उत्पादन
का लगभग .. ाग है। राजस्थान से प्रतिवर्ष लगभग 2 करोड पौंड ऊन इंगलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस आदि देशों को विभिन्न नामों—जैसे बीकानेरी, जैसलमेरी, जोरिया राजपूताना, ब्यावर मारवाड़ी आदि से निर्यात की जाती है। लगभग 2 लाख पौंड ऊन का उपयोग नये नम्दे, कालीन, कम्बल, लोई बनाने में होता है।

राजस्थान मे प्राप्त होने वाली ऊन को स्थूलरूप से चार श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं:—

1. उत्तम श्रेणी की ऊन:—

यह ऊन झुंझूनू, जयपुर, चूरू, तथा नागौर जिलों से प्राप्त होती है। प्रतिवर्ष 50 लाख पौंड से अधिक ऐसी ऊन प्राप्त होती है।

2. मध्यम श्रेणी की ऊन:—

यहाँ ऊन बीकानेर, गंगानगर, जोधपुर, जैसलमेर, अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर तथा जयपुर के कुछ भागो से प्राप्त होती है। ऐसी ऊन प्रतिवर्ष 140 लाख पौंड से अधिक होती हैं।

3. मोटी ऊन:—

कोटा डिवीजन, टोंक तथा जयपुर जिले के कुछ भागों से प्राप्त होती है।

4. निम्न श्रेणी की ऊन:—

यह उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौडगढ, बांसवाड़ा, आदि जिलो से प्राप्त की जाती है।

(7) ऊर्जा की समस्या, उर्जा का रूप तथा अपरम्परागत ऊर्जा के संसाधन

(Energy Problem Form Power and non Conventional Energy Resources)

ऊर्जा की समस्या—राजस्थान में ऊर्जा के संसाधनों की समस्या विकट है आये दिन उद्योगों में बिजली की कटौती तथा किसानों की बिजली आपूर्ति के अभाव में सुखती खेती से प्रत्येक राजस्थानी परिचित हैं। यहाँ हम ऊर्जा के संसाधनों के विषय में ही जानकारी करेंगे।

ऊर्जा के विभिन्न ससाधन—ऊर्जा के विभिन्न संसाधनों को निम्न चार्ट से अच्छी तरह जाना जा सकता है—

ऊर्जा के संसाधन

वाणिज्यिक	गैस वाणिज्यिक	नवीन
—कोयला	—लकड़ी	—सौर ऊर्जा
—खनिज तेल	—गोबर	—भूतापीय ऊर्जा
—जल विद्युत	—वनस्पति अवशिष्ट	—प्राकृतिक गैस
—अणु शक्ति		—ज्वार भाटा ऊर्जा
		—वायु शक्ति
		—गोबर गैस

अब हम यहाँ राजस्थान के अपरम्परागत संसाधनों की जानकारी करेंगे।

(क) विद्युत

राजस्थान में विद्युत विस्तार

राजस्थान में विद्युत क्षमता के बढ़ाने के भरसक प्रयत्न किये जा रहे हैं तथा राज्य में विद्युत वितरण कार्यक्रम में हरिजन बस्तियों के विद्युतीकरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

वित्तीय वर्ष 1980-81 में लगभग 25,000 कुओं का विद्युतीकरण किया गया जिससे राज्य में विद्युतीकृत कुओं की संख्या 2 लाख से अधिक पहुंच गई है। इस अवधि में राज्य में 1284 बस्तियों में बिजली पहुंचाई गई। इसके फलस्वरूप विद्युतीकृत बस्तियों की संख्या 15,115 हो चुकी थी जो कि राज्य के कुल गाँवों का 47·37 प्रतिशत था।

कुओं के विद्युतीकरण में अनुसूचित जाति व जनजाति के लोगों को प्राथमिकता दी जा रही है। इन तबकों के आवेदनकर्ताओं को विशेष रियायतें भी प्रदान की गई हैं। अब तक अनुसूचित जाति व जनजाति की लगभग 600 बस्तियों को विद्युतीकृत कर जगमगा दिया गया है।

कोटा तापीय विद्युत परियोजना—

राज्य में बढ़ती हुई विद्युत की मांग को पूरा करने के लिए कोटा में विद्युत परियोजना के कार्य को तत्परता से पूरा किया जा रहा है। इस संयन्त्र की 110 मेगावाट क्षमता की प्रथम इकाई के मार्च, 1982 तथा 110 मेगावाट क्षमता की ही दूसरी इकाई ने सितम्बर, 1982 में कार्य आरम्भ कर दिया है। परियोजना की 132 करोड़ रुपये की संशोधित लागत के मुकाबले इस पर अब तक 75 करोड़ रुपये के लगभग खर्च किया जा चुका है।

माहीपन विद्युत परियोजना—

राज्य में निर्माणाधीन विद्युत परियोजनाओं में एक अन्य महत्वपूर्ण माहीपन विद्युत परियोजना है जिसमें प्रति इकाई 45 मेगावाट की दो तथा 25 मेगावाट

की अन्य दो कुल चार इकाइयां कार्य करेंगी। इनमें से दो इकाइयों को वर्ष 1983 में ही प्रारम्भ हो जाने की सम्भावनायें हैं।

इस परियोजना पर वर्ष 1977 में निर्माण कार्य शुरू किया गया था। वित्तीय वर्ष 1980-81 के परियोजना पर 728 लाख रुपये का व्यय किया गया तथा वर्ष 1981–82 में 1200 लाख रुपये की राशि व्यय हुई है।

नये विद्युत संयंत्र—

बीकानेर के निकट स्थित पलाना तापीय परियोजना के लिए तकनीकी आर्थिक स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

लिगनाइट खनिज भण्डारों पर आधारित इस परियोजना में प्रति इकाई 60 मेगावाट क्षमता की दो इकाइयां होंगी। परन्तु योजना के निर्माण पर वित्तीय व्यय की स्वीकृति अभी तक योजना आयोग से प्राप्त नहीं हुई है। इस परियोजना के लिए जर्मन जनवादी गणतन्त्र का सहयोग प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

परियोजना के निर्माण कार्य के लिए 1750 बीघा भूमि की अवाप्ति कर ली गई है तथा इसके लिए एक अलग निगम स्थापित करने का प्रस्ताव भी राज्य सरकार के विचाराधीन है।

परियोजना की 103·31 करोड़ रुपये की कुल स्वीकृति राशि में से 67·38 करोड़ रुपये पावर हाउस 35·93 करोड़ रुपये लिगनाइट खनिज के उत्पादन के लिए निर्धारित किये गये हैं।

राजस्थान नहर पर अनुपगढ में 651 लाख की अनुमानित लागत के दो पन विद्युत गृह स्थापित करने के लिए तकनीकी आर्थिक स्वीकृति भी प्राप्त हो चुकी है जिनकी विद्युत उत्पादन क्षमता 3×1·5 मेगावाट होगी। योजना आयोग ने इस परियोजना की व्यय की स्वीकृति जून 1981 में दे दी तथा वित्तीय वर्ष 1981-82 में इसके लिए 30 लाख रुपये का प्रावधान रखा गया था।

उपरोक्त परियोजनाओं के अतिरिक्त चम्बल नदी की ऊपरी धारा पर स्टोरेज स्कीम, माउण्ट आबू पन विद्युत परियोजना, मांगरोल के निकट राईट केनाल पन विद्युत योजना, सूरतगढ लघुपन विद्युत योजना, राजस्थान नहर के द्वितीय चरण पर बीघा तथा चारण वाली वितरण शाखाओं में जल प्रपातों पर प्रस्तावित लघु पन विद्युत परियोजनाओं, जाखण विद्युत योजना, अनास और बनास नदियों पर विद्युत परियोजनाएं तथा कोटा के तापीय विद्युत परियोजना के तृतीय चरण में 210 मेगावाट क्षमता वाली एक अतिरिक्त इकाई स्थापित किये जाने की इन योजनाओं के निर्माण, अनुसन्धान तथा तैयारी का कार्यक्रम प्रगति पर है।

वित्तीय वर्ष 1983-84 की स्थिति

उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप विद्युत क्षमता एवं माग के बीच अन्तर को समाप्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा सतत् प्रयास किया जा रहा है। एक ओर कोटा ताप विद्युत परियोजना की स्टेज-I की दोनों इकाइयों को एवं माही पन-विद्युत परियोजना के अन्तर्गत प्रथम पावर हाउस को छठी पंचवर्षीय योजना अवधि तक पूर्ण किये जाने का प्रयास जारी है, तो दूसरी ओर बिजली की पूर्ति के लिए अन्य राज्यों तथा केन्द्रीय इकाइयों से बिजली प्राप्त करने का प्रयत्न भी जारी है कोटा ताप परियोजना स्टेज-I की प्रथम इकाई को चालू किया जा चुका है एवं दूसरी इकाई भी शीघ्र ही उत्पादन शुरू कर देगी। आशा है इस परियोजना की दोनों ही इकाइयों से इसी वर्ष व्यावसायिक उत्पादन प्रारम्भ हो सकेगा। कोटा ताप परियोजना स्टेज-II पर भी कार्य तीव्र गति से किया जा रहा है। माही बजाज सागर परियोजना के अन्तर्गत प्रथम पावर हाउस की पहली 25 मेगावाट इकाई से भी वर्ष 1984 के अन्त तक बिजली उत्पादन प्रारम्भ होने की सम्भावना है।

राज्य सरकार अन्य स्रोतों से भी विद्युत प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है। हिमाचल प्रदेश की संजय विद्युत परियोजना तथा कोल परियोजना में हिस्सेदारी करके बिजली प्राप्त करने का एक अनुबन्ध सितम्बर, 1982 में किया गया था। बीकानेर जिले के पलाना क्षेत्र में लिग्नाइट के भण्डारों पर आधारित 60-60 मेगावाट के दो विद्युत संयन्त्र लगाये जाने के लिए सरकार प्रयत्न कर रही है। इस सन्दर्भ में प्राथमिक व्यवस्थायें पूर्ण कर ली गई हैं। केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण द्वारा भी परियोजना का अनुमोदन कर दिया गया है लेकिन योजना आयोग से वित्तीय स्वीकृति प्राप्त होना शेष है।

राज्य के बाड़मेर व नागौर जिलों में लिग्नाइट के विशाल भण्डारों का पता चला है। राज्य सरकार के भू-सर्वेक्षण विभाग, मिनरल कारपोरेशन ऑफ इण्डिया तथा कोल इण्डिया से द्रुत सर्वेक्षण सहयोग प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं। वार्षिक योजना 1983-84 के अन्तर्गत प्रारम्भिक कार्य करने हेतु 1 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया जिससे लिग्नाइट के विशाल भण्डारों के दोहन के विषय में विस्तृत विवरण प्राप्त हो सके। इसके आधार पर राजस्थान में एक सुपर थर्मल प्लांट लगाने की सम्भावना बढ़ेगी।

राज्य सरकार कुछ छोटी पन बिजली परियोजनायें स्थापित करने की दिशा में भी प्रयत्नशील है। अनूपगढ हाईडल परियोजना पर कार्य प्रगति पर है और आशा की जाती है कि छठी पंचवर्षीय योजना अवधि के अन्त तक इसकी पहली इकाई से 1·5 मेगावाट बिजली प्राप्त हो सकेगी। चम्बल के दाईं ओर मुख्य नहर एवं राजस्थान नहर पर सूरतगढ हाईडल की परियोजनाओं की केन्द्रीय विद्युत

प्राधिकरण से तकनीकी एवं आर्थिक स्वीकृति प्रदान करायी जा चुकी है व इनकी विनियोजन स्वीकृति योजना आयोग से प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

छठी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक विद्युत उत्पादन क्षमता 1785·5 मेगावाट हो सकेगी। यह उल्लेखनीय है कि छठी पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में जहां कोटा ताप बिजली घर की प्रथम इकाई को विशेष प्रयासों के फलस्वरूप चालू करना सम्भव हो सका है, वहीं 3,904 गांवों को विद्युतीकृत एवं 61,781 कुओं को ऊर्जीकृत करना सम्भव हो पाया है। वर्ष 1983-84 के लिए 1,100 गांवों को विद्युतीकृत एवं 11,000 कुओं को ऊर्जीकृत करने का लक्ष्य रखा गया है।

राज्य में गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष अधिक बिजली सुलभ होने की आशा है। इस वर्ष के पहले कुछ महीने बेहतर गुजरे हैं · प्रथम तिमाही मे विद्युत कटौतियां भी कम की गई है। गत वर्ष अप्रैल मे 329 40 मिलियन यूनिट बिजली सुलभ हुई जबकि गत वर्ष मई मे 329 70 मिलियन यूनिट बिजली की अपेक्षा इस वर्ष मई में 389·27 मिलियन यूनिट सुलभ हो गयी।

राज्य सरकार बिजली के मामले मे आत्म निर्भरता के लिए सतत प्रयत्नशील है फिर भी राज्य की भावी विद्युत आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए यह आवश्यक है कि राज्य में स्वयं के विद्युत उत्पादन स्रोतों का शीघ्रातिशीघ्र विकास किया जाये। इसके लिए केन्द्र सरकार द्वारा उदारता पूर्वक अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध कराने पर ही यह सम्भव हो सकता है। इसके अतिरिक्त दूसरे राज्यों से अधिक मूल्य पर विद्युत प्राप्त कर सस्ती दरों पर उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराने तथा बिजली लाने के लिए विद्युत लाइनों के निर्माण पर होने वाले अधिक व्यय भार और "ट्रांसमीशन लोसेज" को घटाकर राज्य विद्युत मण्डल के वित्तीय संसाधनों को भी सुदृढ करने की आवश्यकता है जिसके लिए अधिक धनराशि उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है।

(ख) गोबर गैस — ऊर्जा में वैकल्पिक स्रोत के रूप में राज्य मे गोबर गैस संयन्त्र विकसित किये जा रहे हैं। इन संयन्त्रों की स्थापना से न केवल जलाने के काम आने वाले परम्परागत साधनों की ही बचत होती है बल्कि इनसे खाद भी पैदा होती है और पर्यावरण भी शुद्ध बनता है। राज्य में 1981–82 में 1 हजार 222 गोबर गैस संयन्त्र स्थापित किये गये जबकि वर्ष 1982-83 में 2 हजार 783 संयन्त्र लगाये गये। इस वर्ष 5000 संयन्त्र स्थापित करने के लिए 17 लाख रुपये राज्य योजना से प्रावधान किया गया है (1983-84)

इन संयन्त्रों से अधिकाधिक लोगों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से सामुदायिक गोबर गैस संयन्त्र लगाने के भी प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य मे ऐसे तीन सामुदायिक गोबर गैस संयन्त्र निर्माणाधीन है। अन्य वैकल्पित ऊर्जा स्रोतों पर आधारित

परियोजनाएं भी बनाई जा रही है। अभी हाल ही में जयपुर जिले की झोटवाड़ा पंचायत समिति में सामुदायिक गोबर गैस संयन्त्र का शुभारम्भ किया जा चुका है।

(ग) अणुशक्ति—राजस्थान में चम्बल नदी पर राणा प्रताप सागर बांध के पास रावत भाटा नामक स्थान पर कनाडा के सहयोग से यह अणुशक्ति गृह बनाया गया है। इसकी पहली इकाई 1973 में और दूसरी इकाई 1978 में तैयार हो गई है। प्रत्येक इकाई की उत्पादन क्षमता 200-200 मेघावाट है।

(घ) सौर ऊर्जा—सूर्य की रोशनी के ताप से विद्युत उत्पादन का स्वप्न साकार होने पर यह विश्व का कभी समाप्त न होने वाला ऊर्जा का स्रोत होगा। राजस्थान में भी इस दिशा में प्रयत्न हो रहे हैं। राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड भी इस दिशा में सराहनीय प्रयास कर रहा है तथा उसने सौर चूल्हे का निर्माण भी किया है। राजस्थान सार्वजनिक निर्माण विभाग के मुख्य अभियन्ता तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष रहे श्री हरिदत्त गुप्ता ने भी एक सौर चूल्हे का निर्माण किया है।

(ङ) वायुशक्ति चालित ऊर्जा—वैसे वायु ऊर्जा का परम्परागत साधन है किन्तु सौर ऊर्जा की भांति वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा इसे भी नवीन रूप में ऊर्जा के श्रोत के रूप में काम लेने के अनुसंधान जारी हैं। गर्मी एवं मानसून के समय राजस्थान के फलोदी-जैसलमेर क्षेत्र मे वायुगति 20 किलोमीटर प्रति घन्टे से अधिक पहुंच जाती है। ऐसे समय उससे ऊर्जा तैयार करने के लिए शोध जारी है।

(च) भूगर्भीय ताप ऊर्जा—भूमि के गर्भ में छिपी अथाह ताप शक्ति का प्रयोग ऊर्जा के रूप में किये जाने के प्रयास तेज होते जा रहे हैं। भू-गर्भीय ताप मे उत्पादित वर्तमान ऊर्जा क्षमता विश्व में 1 हजार मेगावाट आंकी गई है जो सन् 2000 तक बढ़कर 300 लाख किलोवाट होने का अनुमान है।

राजस्थान में जैसलमेर के क्षेत्र में इस ऊर्जा के श्रोतों की सम्भावनाओं का पता लगाया जा रहा है।

(छ) ज्वार भाटा ऊर्जा—राजस्थान के किसी भी ओर समुद्र न होने के कारण ऊर्जा के इस श्रोत की यहां सम्भावनाएं नही के बराबर है।

(ज) प्राकृतिक गैस—प्राकृतिक गैस के क्षेत्र भी राजस्थान के जैसलमेर जिले व पश्चिमी क्षेत्र में ही है जहा सम्भावनाओ का पता लगाया जा रहा है।

[illegible]

भाग "ब"

कृषि एवं आर्थिक विकास

(Agriculture & Economic development)

(1) राजस्थान में फसलें-मुख्य एवं गौण

(Major & Minor Crops)

राजस्थान में कृषि योग्य भूमि का अभाव है क्योंकि इसका एक बड़ा भू-भाग थार के रेगिस्तान से घिरा है, इसलिए इस भाग में रेतीली मिट्टी होती है जो अपने अन्दर पानी को सोख नहीं पाती। अतः यह कृषि के उपयुक्त नहीं होती। जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, नागौर, जालौर, जोधपुर, चूरू, झुन्झूनू, सीकर, आदि ऐसे ही जिले हैं। इसके अतिरिक्त राजस्थान में पानी का भी अभाव है क्योंकि यहां वर्षा भी कम होती है। फिर भी राजस्थान का दक्षिणी पूर्वी पठारी भाग और पूर्वी मैदानी भाग में वर्षा उचित मात्रा मे होने से यहां खेती योग्य भूमि पाई जाती है। राजस्थान की तीन चौथाई जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर करती है। सरकार द्वारा सिंचाई के लिए विभिन्न परियोजनाए चलायी जाने से तथा बिजली के उत्पादन होने से कृषि के क्षेत्रों में विकास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त उन्नत बीज व रासायनिक खाद भी किसानों को उपलब्ध कराये जा रहे है।

खरीफ की फसल—ये वर्षा ऋतु के आरम्भ में बोई जाती है और शीत ऋतु आरम्भ होने से पूर्व ही काट ली जाती है। इसमें ज्वार, बाजरा, मक्का, कपास, गन्ना, तिलहन, मूंगफली, मूंग, मोठ आदि हैं। मक्का और बाजरा इनमें अधिक उत्पन्न होता है। भारत का 30 प्रतिशत बाजरा राजस्थान ही पैदा करता है।

रबी की फसल—ये शीतकालीन फसल है जिसे मार्च या अप्रैल में तैयार होने पर काट लिया जाता है। इसमें गेहूं, चना, जौ, अलसी, सरसों, जीरा आदि उत्पन्न किये जाते हैं।

आम, आंवला, तरबूजा, खरबूजा, अनार, केवडा आदि फल भी राजस्थान में उगाये जाते हैं। कृषि के अतिरिक्त राजस्थान मे पशुपालन भी जीवन यापन का आधार है। यहां की अर्थ व्यवस्था में पशु पालन का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

राज्य की कुल आय का लगभग 1 प्रतिशत इसी स्रोत से प्राप्त होता है। रेगिस्तान के शुष्क प्रदेश की ग्रामीण जनता का यह प्रमुख व्यवसाय है। यह राज्य इस बात मे भाग्यशाली है कि यहाँ दुधारु पशु और जुताई के काम आने वाले अच्छी नस्ल के पशु अधिक संख्या मे पाये जाते हैं।

राजस्थान की मुख्य उपजें

बाजरा--बाजरे के उत्पादन में राजस्थान प्रमुख स्थान रखता है। भारत मे उत्पन्न होने वाले कुल बाजरे का 30 प्रतिशत अकेला राजस्थान ही उत्पादित करता है क्योंकि बाजरे को कम पानी की आवश्यकता होती है तथा यह रेतीली भूमि मे उत्पन्न किया जा सकता है। जोधपुर डिविजन और बीकानेर, चूरू, झुन्झुनु व सीकर जिलों मे इसका उत्पादन होता है।

ज्वार—यह जून और जुलाई मे बोया जाता है। काफी कम पानी और कम समय मे ही इसका उत्पादन हो जाता है। इसमे प्रोटीन की काफी मात्रा होती है। यह लोगों के खाने के काम भी आती है और पशुओं के चारे के रूप मे भी। अजमेर, उदयपुर, झालावाड़, प्रतापगढ और टोंक जिलों मे उत्पादन होता है।

मक्का—अरावली के पूर्वी भाग मे या दक्षिणी पठारी भाग मे इसका उत्पादन किया जाता है क्योंकि इसे भी कम पानी की आवश्यकता होती है, यह यहां के गरीब लोगो का भोजन है।

गेहूं—राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों को छोड़कर शेष राजस्थान में यह उगाया जाता है। यह यहा के धनी लोगों का भोजन है। गेहू उत्पादन मे राजस्थान का पांचवा स्थान है। श्रीगंगानगर, कोटा, बूंदी, झालावाड तथा भरतपुर जिलो में इसका उत्पादन होता है। श्रीगंगानगर मे सिंचाई गंग नहर के द्वारा की जाती है। लूनी नदी की घाटी मे भी गेहूं का उत्पादन सिंचाई सुविधाओं के कारण होता है। इसे अक्टूबर-नवम्बर मे बोया जाता है।

जौ—यह रबी की फसल है। यह फसल भोजन के काम आती है तथा पशुओं के लिए भी काम आती है। इससे शराब भी बनाई जाती है। इसकी खेती अजमेर, जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, पाली, भीलवाड़ा, भरतपुर, उदयपुर जिलों में होती है।

चना—इसे श्रीगंगानगर, चूरू, झुंझुनू, अलवर, जयपुर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, टोंक, अजमेर जिलों मे उगाया जाता है क्योंकि इसे कम वर्षा की आवश्यकता है।

दालें—अरहर, मूंग, उडद, मोठ यहा खूब उत्पन्न होती हैं। राजस्थान मे शायद ही कोई जिला हो जो दालों का उत्पादन न करता हो।

तिलहन—यह राजस्थान की मुख्य पैदावार है। भारत का 10 प्रतिशत तिलहन, राजस्थान मे ही उत्पन्न होता है। जालोर, पाली, अलवर, सिरोही, भरतपुर, श्रीगंगानगर इसके उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र हैं।

गन्ना—इसे अच्छी मिट्टी तथा पानी की जरूरत होती है। अतः यह गंगानगर, भरतपुर, सवाई माधोपुर और टोंक जिलों मे तथा कोटा और उदयपुर डिविजन में सिचाई की सुविधाओं के कारण उत्पन्न किया जाता है। अधिकतर गन्ने का प्रयोग गुड़ बनाने में किया जाता है।

कपास—यह प्रमुख व्यावसायिक उपज है। नगदी फसल के रूप मे इसका उत्पादन धीरे-धीरे बढ़ाया जा रहा है। चित्तौड़, उदयपुर, झालावाड़, गंगानगर बूंदी, पाली, अजमेर जिलों मे इसका उत्पादन होता है।

धान—यहां घटिया किस्म का अनाज बोया जाता है। इसका उत्पादन क्षेत्र उदयपुर, डूंगरपुर बांसवाड़ा, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर जिले हैं। जहां पर्याप्त मात्रा में वर्षा होती है। धान की उत्पादन मात्रा राजस्थान मे बहुत कम है।

फल और सब्जी— शहरों के आस-पास फल और सब्जी का खूब उत्पादन किया जाता है। गोभी और भिण्डी को अजमेर और जयपुर जिलों में उगाकर राज्य से बाहर भी भेजा जाता है। आम की एक खास किस्म उदयपुर, कोटा और जयपुर डिविजन मे उगाई जाती है। अन्य फल जैसे –पपीता, चीकू, फालसा, बेर, नीबू भी उगाये जाते हैं। अब राज्य में अंगूर की फसल भी होने लगी है। फल सब्जी के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से प्रयास किया जा रहा है।

(2) कृषि आधारित उद्योग

(Agriculture based industries)

राजस्थान के बड़े पैमाने के उद्योग

राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा राज्य रहा है। शक्ति के अभाव, संकुचित बाजार तथा यातायात के साधनों की कमी से स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय बड़े उद्योगों के नाम पर केवल 7 सूती कपड़ा मिलें, दो सीमेन्ट फैक्ट्रियां तथा दो चीनी मिलें थी। पंजीकृत फैक्ट्रियों की कुल संख्या 240 थी तथा उनमें 9 करोड़ रु. की पूंजी व 18 हजार श्रमिक काम पर लगे थे। राजस्थान का भारत के कुल औद्योगिक उत्पादन में 0·5 प्रतिशत भाग था। योजनाबद्ध विकास के पिछले 32 वर्षों मे राजस्थान में बड़े उद्योगों का तेजी से विकास होने से राजस्थान में बड़े

उद्योगों का एक सुदृढ़ आधार तैयार हो चुका है। राजस्थान के कतिपय बड़े उद्योगों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

1. सूती वस्त्र उद्योग

यह राजस्थान का पुराना एवं बड़ा संगठित उद्योग है। राजस्थान में सबसे पहली सूती वस्त्र मिल 1889 में ब्यावर में स्थापित हुई। इसके बाद यहीं दो और मिलें क्रमशः 1908 और 1925 में स्थापित हुई। 1938 में एक सूती मिल भीलवाड़ा में तथा 1942 में एक सूती मिल पाली में स्थापित हुई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राज्य में कुल 7 सूती मिलें स्थापित हो चुकी थी। योजनाओं के अन्तर्गत और सूती मिलों की स्थापना से अब राज्य में 21 सूती कपड़ा मिलें तथा उसमें 7 करोड़ मीटर कपड़ा तथा लगभग 35 लाख किलोग्राम सूत का उत्पादन होता है।

(1) **सूती मिलों की संख्या**—राजस्थान में अब 21 सूती कपड़ा मिलें हैं जिनमें 17 निजी क्षेत्र, 3 सरकारी क्षेत्र तथा एक (गुलाबपुरा) सहकारी क्षेत्र में है 10 सूती मिलों के लिए लाइसेन्स जारी किये गये थे उनका कार्य प्रगति पर है इन सूती मिलों में लगभग 10–15 करोड़ रु० की पूंजी लगी हुई है और 2! हजार के लगभग श्रमिक कार्यरत है।

(2) **भौगोलिक वितरण**—सूती कपड़ा मिलों का वितरण राज्य के कपास उत्पादक क्षेत्रों में है। ब्यावर में तीन, भीलवाड़ा में तीन, जयपुर में दो, किशनगढ़ में दो, पाली, कोटा, विजयनगर, भवानीमण्डी, बीकानेर, उदयपुर, बांसवाड़ा, गुलाबपुरा आदि में एक-एक मिलें है।

(3) **उत्पादन**—1951 में सूती वस्त्र उत्पादन 301 लाख मीटर था वह अब बढ़कर 700 लाख मीटर से अधिक हो गया है। इसी प्रकार सूती धागा उत्पादन में भी तेजी से वृद्धि हुई है। सूती वस्त्र उद्योग के उत्पादन में वृद्धि की झलक निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है—

राजस्थान में सूत तथा सूती कपड़ों का उत्पादन

वर्ष	1950–51	1970–71	1977–78	1981–82
सूत (लाख किलोग्राम)	19	32	33	45
सूती कपड़ा (लाख मीटर)	301	629	690	700

(4) **भावी विकास की सम्भावनायें**—राजस्थान में 10 सूती मिलों की स्थापना के लाइसेन्स जारी किये जा चुके हैं जिससे सब इकाइयों में तकुओं की संख्या 5 लाख हो जायगी।

सूती वस्त्र उद्योग की समस्यायें एवं समाधान

भारत के सूती उद्योग के समान ही राजस्थान के सूती वस्त्र उद्योग की कई समस्यायें हैं—

(1) दोषपूर्ण प्रबंध—निजी सूती कपड़ा मिलों में कुप्रबन्ध की समस्या रही है अतः उनके प्रबन्ध में सुधार की आवश्यकता है।

(2) उपयुक्त जलवायु का अभाव—सूती वस्त्र उद्योग के लिए नम जलवायु की आवश्यकता पड़ती है किन्तु राजस्थान का उष्ण जलवायु होने से कृत्रिम नमी पर व्यय करना पड़ता है।

(3) छोटा आकार एवं पुरानी मशीनें—इससे उत्पादन लागत अधिक बैठती है। अतः मशीनों के नवीनीकरण एवं आधुनिकीकरण की आवश्यकता है।

(4) कच्चे माल की कमी—राजस्थान में लम्बे रेशे की उत्तम कपास का अभाव है अतः बढ़िया कपास का आयात करना पड़ता है। अब राज्य के सिंचित क्षेत्र में बढ़िया किस्म की रुई का उत्पादन बढ़ाना चाहिए।

(5) विद्युत शक्ति की कमी—बार-बार विद्युत की कटौतियां तथा अपर्याप्त विद्युत पूर्ति के कारण उद्योग को भारी समस्या का सामना करना पड़ता है विद्युत की पर्याप्त पूर्ति से उद्योग की समस्या का हल सम्भव है।

(6) उत्पादकता का नीचा स्तर—राज्य में श्रमिकों की उत्पादकता दूसरे राज्यों एवं दूसरे देशों के मुकाबले बहुत कम है। अतः श्रमिकों की उत्पादकता अधिक की जानी चाहिए।

2. चीनी उद्योग

राजस्थान में चीनी उत्पादन की पहली चीनी मिल 1932 में भूपालसागर (चित्तौड़) में स्थापित हुई तथा 1946 में श्रीगंगानगर चीनी मिल ने उत्पादन प्रारम्भ किया। इस प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राज्य में दो चीनी मिलें थी। योजनाकाल में 2 चीनी मिलों की स्थापना हुई है।

(1) चीनी मिलों की संख्या एवं भौगोलिक वितरण—राजस्थान में 4 चीनी मिलें है जो क्रमशः भूपालसागर (चित्तौड़), श्रीगंगानगर, केशोरायपाटन तथा उदयपुर के पास स्थित है। भूपालसागर तथा उदयपुर की चीनी मिलें निजी क्षेत्र में, श्रीगंगानगर की चीनी मिल सरकारी क्षेत्र में तथा केशोरायपाटन की सहकारी क्षेत्र में है।

(2) उत्पादन—राज्य में चीनी के उत्पादन में पिछले 32 वर्षों में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। जहां 1951 में चीनी का उत्पादन केवल 1·5 हजार टन था वह 1977–78 मे 35 हजार टन तक पहुँच गया। 1980–81 मे चीनी का उत्पादन 25–26 हजार टन था जबकि 1981–82 मे 32 हजार टन हुआ है। जैसा निम्न तालिका से स्पष्ट है :

वर्ष	1951	1968–69	1977–78	198–82
उत्पादन (हजार टन)	1·5	11·8	35	32

(3) पूंजी तथा श्रम रोजगार—राजस्थान के चीनी उद्योग मे लगभग 3 5 करोड़ रु. की पूंजी लगी हुई है तथा 2000 से अधिक लोगों को मौसमी रोजगार प्राप्त होता है।

(4) चीनी उद्योग पर आधारित शराब उद्योग--चीनी मिलों से प्राप्त शीरे से शराब बनाने के लिए चार कारखाने क्रमशः अटरू, अजमेर, जोधपुर एवं प्रतापगढ मे हैं।

चीनी उद्योग की समस्यायें एवं समाधान के सुझाव

चीनी उद्योग कई समस्याओं से ग्रस्त है, उनमे निम्न मुख्य हैं। उनका समुचित समाधान उद्योग के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है।

(1) नियन्त्रण की समस्या--भारत में चीनी उद्योग पर शुरू से सरकार का नियन्त्रण रहने से उद्योग पर्याप्त प्रगति नही कर सका। अतः एक उपयुक्त नीति की आवश्यकता है।

(2) प्रतिस्पर्द्धा—चीनी उद्योग को गुड एव खण्डसारी उद्योग से गन्ने की खरीद तथा नियन्त्रित मूल्यों पर चीनी की बिक्री में प्रतिस्पर्द्धा करनी पडती है अतः दोनो मे परस्पर समन्वय की आवश्यकता है।

(3) गन्ने की पूर्ति का अभाव—राज्य में वर्षा की अनिश्चितता के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी चीनी उद्योग के लिए कच्चे माल का अभाव उत्पन्न कर देती है, इसके अलावा गुड़ एवं खण्डसारी उद्योग की गन्ना खरीद मे प्रतिस्पर्द्धा होने से चीनी मिलों को पर्याप्त गन्ना नही मिल पाता अतः गन्ने के उत्पादन में वृद्धि से समस्या का हल सम्भव है।

(4) गौण पदार्थ के उपयोग की समस्या—चीनी मिलों के शीरे तथा खोई

छिलकों के प्रयोग की उचित व्यवस्था नही हो पायी है। शीरे से शराब बनाने तथा खोई से कागज, गत्ता एवं खाद बनाने में उपयोग बढ़ाना चाहिए।

भावी विकास की सम्भावनाएं--

भारत में सिंचाई सुविधा के विस्तार से गन्ने के उत्पादन में वृद्धि हो रही है। पिछले दो वर्षों में चीनी के ऊंचे मूल्यों के कारण तथा पूर्ति में वृद्धि के कारण चीनी उद्योग के विकास की सम्भावनायें बढ गई हैं-।--भरतपुर, हनुमानगढ, भीलवाडा, चित्तौड़गढ क्षेत्र में और चीनी मिलें स्थापित की जा सकती हैं।

(1) राजस्थान में सीमेन्ट उद्योग

राजस्थान में पर्याप्त मात्रा में चूने का पत्थर एव जिप्सम उपलब्ध होने से सीमेन्ट उद्योग की स्थापना की सुविधाएं है। सबसे पहला सीमेन्ट कारखाना 1915 मे लाखेरी (बून्दी) में स्थापित हुआ उसके बाद दूसरा कारखाना सवाई माधोपुर मे बना। इस प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में दो सीमेन्ट कारखाने थे। योजनाबद्ध विकास के अन्तर्गत 3 कारखाने स्थापित किये गये तथा कुछ निर्माणाधीन हैं। वर्ष 1982-83 मे 11 नये सीमेन्ट कारखानों को लाइसेन्स दिये गये है।

(1) **सीमेंट कारखानों की संख्या एव भौगोलिक वितरण**--राजस्थान में अब पांच सीमेंट कारखाने उत्पादन में रत हैं जो क्रमशः उदयपुर, चित्तौड़गढ, निम्बाहेडा, लाखेरी एवं सवाई माधोपुर मे है। कोटा में मोडक सीमेन्ट कारखाना भी 1982-83 में उत्पादन प्रारम्भ कर चुका है।

(2) **उत्पादन**--राजस्थान में सीमेंट उत्पादन में तेजी से वृद्धि हो रही है। जहां 1950-51 मे उत्पादन 2.6 लाख टन था वह 1960 में बढ़कर 9.5 लाख टन तथा 1977-78 मे 21 लाख टन हो गया। 1981-82 में उत्पादन में 20-22 लाख टन तथा 1982-83 मे 25 लाख टन हुआ है।

(3) **पूंजी एवं रोजगार**--सीमेंट उद्योग में लगभग 50 करोड रुपये की पूंजी लगी हुई है तथा लगभग 2500 श्रमिको को रोजगार प्राप्त है।

(4) **भावी विकास की प्रबल सम्भावनाएं**--राजस्थान मे सीमेंट उद्योग विकास की प्रबल सम्भावनाएं है क्योंकि यहा चूने का पत्थर, जिप्सम तथा सस्ता श्रम पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध है। सीमेंट की माग एव मूल्य निरन्तर बढ रहे है। अतः अगले कुछ ही वर्षों में सीमेंट के तीन बडे तथा पाच छोटे कारखाने स्थापित होने की सम्भावना है मोडक (कोटा) का कारखाना प्रगति पर है भिवाड़ी एव आबू रोड का कारखाना भी शीघ्र चालू होगा। पाच मिनी सीमेंट प्लाट क्रमशः नीम-

का थाना, पाली, सिरोही, जोधपुर तथा सीकर में स्थापित होंगे । 11 नये मिनी सीमेंट कारखानों के लाइसेंस जारी किये गये हैं ।

सीमेंट उद्योग की समस्यायें एवं समाधान

(1) **शक्ति का अभाव**—राजस्थान में सीमेंट उद्योग के सामने कोयले तथा विद्युत शक्ति के अभाव की समस्या है अतः सरकार को सीमेंट उद्योग के लिए पर्याप्त कोयले तथा विद्युत की पूर्ति करनी चाहिए ।

(2) **दोषपूर्ण नीति**—सीमेन्ट उद्योग में मूल्यों एवं वितरण पर सरकार का कठोर नियन्त्रण है । उसके कारण उद्योग का समुचित विकास नहीं हो रहा है । अतः सरकार को उपयुक्त नीति का अनुसरण करना चाहिए ।

(3) **पूंजी का अभाव**—नये उद्योगों की स्थापना में बड़ी मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है जबकि नियंत्रण अधिक है अतः पूंजीपति उद्योग में पूंजी लगाने को आकर्षित नहीं होते । सरकार को प्रलोभनों एवं नियमणों में ढील देकर उद्योग के विकास का प्रयास करना चाहिए ।

(4) **नवीनीकरण एवं प्रबन्ध में सुधार की समस्या**—लाखेरी एवं सवाई माधोपुर की मशीनों का आधुनिकीकरण करना चाहिए ।

(4) वनस्पति घी उद्योग

राजस्थान में वनस्पति घी का पहला कारखाना 1964 में भीलवाड़ा में स्थापित हुआ । उसके बाद जयपुर, भरतपुर, अलवर, उदयपुर, कोटा, चित्तौड़, गंगानगर आदि में भी तेल एवं घी उद्योग की कई इकाइयां स्थापित हो चुकी है । वर्तमान स्थिति इस प्रकार है—

(1) **कारखानों की संख्या एवं भौगोलिक वितरण**—इस समय राजस्थान में 9 वनस्पति घी के कारखाने उत्पादनरत हैं । जिनमें 5 कारखाने जयपुर में, एक-एक कारखाना भीलवाड़ा, चित्तौड़, उदयपुर तथा गंगानगर में है । इसके अतिरिक्त तेल उत्पादन के कई कारखाने भरतपुर, अलवर, कोटा आदि स्थानों पर स्थित हैं ।

वनस्पति घी उद्योग की समस्यायें एवं समाधान

(1) इस उद्योग में कच्चे माल का अभाव है वह मूंगफली तथा-सोयाबीन के उत्पादन से दूर किया जा सकता है । (2) रासायनिक पदार्थों का अभाव है अतः उनका विकास किया जाना चाहिए । (3) पूंजी का अभाव है अतः राज्य में उद्योग का तेजी से विकास नहीं हो पा रहा है ।

राजस्थान में अन्य बड़े उद्योग

1. ऊनी मिलें—राजस्थान में प्रतिवर्ष 99 लाख भेड़ों से 4 करोड़ पौंड ऊन प्राप्त होती है उसके लिए योजनाओं के अन्तर्गत दो मिलें बीकानेर तथा एक मिल जोधपुर में स्थापित की गई हैं। ग्रामीण उद्योग परियोजना के अन्तर्गत लाडनू एवं चूरू में भी सार्वजनिक क्षेत्र मे दो ऊनी मिलें स्थापित की गई है।

2. इन्जीनियरिंग उद्योग—राजस्थान में इंजीनियरिंग उद्योग का भी तेजी से विकास हुआ है। जिनमें अग्रांकित उल्लेखनीय हैं—

(1) **जयपुर मेटल्स**–बिजली के मीटर बनाता है।

(2) **मान इन्डस्ट्रियल कारपोरेशन, जयपुर**–लोहे की खिड़कियां, दरवाजे तथा इमारती सामान बनाता है।

(3) **कैप्स्टन मीटर कम्पनी**–पानी के मीटर बनाती है।

(4) **इन्स्ट्रूमेंटेशन लि., कोटा**–मशीनों एवं यंत्रों का निर्माण करता है।

(5) **केबल कारखाने**–क्रमशः कोटा एवं पिपलिया मे स्थापित हुए हैं।

(6) **बाल बियरिंग कारखाना, जयपुर**–विभिन्न प्रकारों के बालबियरिंगों का निर्माण करता है। भरतपुर

(7) **भारत का रेल्वे वैगन कारखाना भी महत्वपूर्ण है।**

3. रासायनिक उद्योग–राजस्थान में योजनाओं के अन्तर्गत रसायनिक उद्योगों का तेजी से विकास हुआ है। मुख्य उद्योग इस प्रकार हैं–

(1) डीडवाना में सोडियम सल्फेट का कारखाना स्थापित किया गया है।

(2) रसायनिक उर्वरकों का उत्पादन करने के लिए कोटा में श्रीराम फर्टीलाइजर फैक्ट्री की स्थापना हुई है तथा देबारी स्थित जिंक स्मेल्टर में भी खाद का उत्पादन होता है।

(3) श्रीराम रैयन्स कायर कार्ड कारखाना कोटा तथा दूसरा जे. के. टायर कार्ड कारखाना कांकरोली में स्थापित किया गया है।

(4) कांच के दो कारखाने धौलपुर मे हैं जो लैबोरेटरी में काम आने वाला कांच का सामान बनाते हैं।

4. अन्य खनिज आधारित उद्योग

(1) हिन्दुस्तान जिंक स्मेल्टर–जस्ता गलाने का यह बड़ा कारखाना उदयपुर के पास देबारी में स्थापित किया गया है। इसकी वार्षिक क्षमता 36 हजार टन है। एक और चित्तौड़ में स्थापित किये जाने की सम्भावना है।

(2) हिन्दुस्तान तांबा शोधक कारखाना खेतड़ी में स्थापित किया गया है जिसकी वार्षिक क्षमता 31 हजार टन है।

(3) घीया पत्थर पीसने के कारखाने दौसा, भीलवाड़ा तथा उदयपुर में स्थापित किये गये हैं।

(4) चमड़े का कारखाना-टोंक में स्थापित किया गया है।

राजस्थान के औद्योगीकरण की धीमी प्रगति के कारण तथा औद्योगिक विकास की बाधाएं

राजस्थान मे जन्मे उद्योगपतियों ने जहा भारत के औद्योगीकरण में महत्व-पूर्ण भूमिका निभाई है वही अपनी जन्मभूमि राजस्थान में अनेक बाधाओं के कारण औद्योगिक विकास को गति प्रदान नही कर सके। यद्यपि योजनाबद्ध विकास के पिछले 32 वर्षो मे राजस्थान के औद्योगीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ है फिर भी तुलनात्मक दृष्टि से राजस्थान औद्योगिक विकास की दृष्टि से काफी पिछड़ा हुआ है। उसकी औद्योगीकरण की धीमी गति के मुख्य कारण अग्र प्रकार हैं—

1. **शक्ति के साधनों का अभाव**—राजस्थान में खनिज तेल तथा कोयले का नितान्त अभाव है तथा जल विद्युत की भी कमी है अतः औद्योगीकरण मे बाधा आती है अतः विद्युत उत्पादन में वृद्धि की जाने की आवश्यकता है।

2. **पेयजल की कमी**—औद्योगिक केन्द्रो को पीने के पानी की पर्याप्त पूर्ति एक अनिवार्य आवश्यकता है किन्तु राजस्थान के अधिकाश भागो में वर्षा की कमी तथा पेयजल का अभाव औद्योगीकरण की प्रमुख बाधा रही है। अब विभिन्न बड़े बाधों के कारण जलपूर्ति मे वृद्धि हुई है।

3. **परिवहन साधनो का अभाव**—राजस्थान मे रेल एव सड़क यातायात का पर्याप्त विकास नही हो पाया है। जिससे परिवहन मे लागत ऊंची और समय अधिक लगता है। अतः परिवहन के साधनों मे और अधिक तेजी से विकास किया जाना चाहिए।

4. **कच्चे माल की कमी**—राजस्थान मे कृषि के पिछड़ेपन के कारण कृषि जन्य कच्चा माल कम है, रसायनिक कच्चे माल तथा लोहे आदि की भी बहुत कमी है, अतः उद्योगों के विकास मे बाधा रही है।

5. **संकुचित बाजार**—राजस्थान की गरीब जनता के नीचे जीवन स्तर से उसकी माग कम है और उद्योग के माल की स्थानीय खपत बहुत कम है।

6. **पूंजी तथा साहस का अभाव**—राज्य मे पूंजी के अभाव तथा साह-सियो की रुचि मे कमी से उद्योगों की पहल नही की जा सकी। अब धीरे-धीरे प्रवासी राजस्थानी पुनः राजस्थान में लौटकर पूंजी विनियोग बढ़ा रहे हैं।

7. **सरकारी नीति**—पहले राजस्थान रियासतों एवं ठिकानों में बंटा हुआ था अतः राजा महाराजाओं ने औद्योगीकरण पर ध्यान नही दिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी सरकार ने साधनों की कमी के कारण उद्योग एवं खनिज विकास पर बहुत कम व्यय किया है। अब व्यय बढ़ रहा है।

8. **तकनीकी एवं प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव**--राजस्थान में योजनाबद्ध विकास के पूर्व तथा प्रारम्भ में तकनीकी एवं प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव रहा है, किन्तु अब उनकी पूर्ति काफी बढ गई है। अब यह समस्या उतनी नहीं है।

राजस्थान में भावी औद्योगिक विकास की विपुल सम्भावनाएं

यद्यपि राजस्थान में औद्योगीकरण में अनेक बाधाए रही है किन्तु अब यातायात के साधनों के विकास, विद्युत उत्पादन में वृद्धि, कृषि विकास, प्रवासी राजस्थानियों द्वारा बड़ी मात्रा में पूंजी विनियोग, सरकार की प्रोत्साहन पूर्ण नीति एवं तकनीकी कर्मचारियों की वृद्धि से भावी औद्योगिक विकास की विपुल सम्भावनाए विद्यमान हैं।

1. खनिज पर आधारित उद्योगों का विकास--राजस्थान में जस्ता, तांबा, चूने का पत्थर, जिप्सम, घीया पत्थर, रॉक फास्फेट आदि के विपुल भण्डार हैं। अतः इन खनिजो पर आधारित सीमेंट, पाउडर, जस्ता तथा तांबा शोधक कारखाने स्थापित करने के साथ-साथ अन्य सम्बद्ध उद्योगों की स्थापना की प्रबल सम्भावनाएं हैं।

2. पशु आधारित उद्योग--पशु धन की दृष्टि से राजस्थान धनी है। यहां 75 लाख भेड़ों से प्राप्त ऊन के उद्योग, पशु दूध पर आधारित डेयरी उद्योग, चमड़ा व हड्डी पर आधारित चमड़ा उद्योग विकसित किये जाने की संभावनाएं हैं।

3 कृषि आधारित उद्योग--सिंचाई के साधनों के विस्तार एवं वृद्धि तथा आधुनिक व्यावसायिक कृषि से गन्ना, कपास, तिलहन एवं खाद्यान्नों का उत्पादन बढ रहा है। उन पर आधारित सूती वस्त्र, चीनी उद्योग, वनस्पति घी, तेल उद्योग तथा कृषि के काम में आने वाली वस्तुओं के उत्पादन के लिए उद्योगों की स्थापना में तेजी लानी चाहिए।

4. वन सम्पदा पर आधारित उद्योगों के विकास की सम्भावनाएं हैं जो आदिवासी क्षेत्रों में स्थापित किये जा सकते हैं।

5. **सरकार की सहयोगपूर्ण और अनुकूल नीति**--राज्य सरकार उद्योगों की स्थापना में कई प्रकार की सुविधायें प्रदान कर रही है तथा प्रलोभनों द्वारा अधिकाधिक औद्योगीकरण के लिए कृत संकल्प है।

अतः राजस्थान के औद्योगीकरण का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है और विकास की सम्भावनाएँ विपुल है।

(3) मुख्य सिंचाई व नदी घाटी योजनाएं
(Major Irrigation and River Valley Projects)

राजस्थान की नदी घाटी परियोजनाएं—शस्य श्यामला भारत भूमि में जहाँ गंगा-यमुना सी वरदायिनी नदियाँ बहती हैं यहां राजस्थान की प्यासी एवं शुष्क भूमि बूंद-बूंद पानी के लिए तरसती है। बिना जल के यहां की कृषि प्रधान अर्थ-व्यवस्था अनिश्चित, अनियमित तथा अपर्याप्त मानसून की कृपा पर आश्रित है। योजनाबद्ध विकास के अन्तर्गत राज्य की बड़ी नदियों के जल-स्रोतों का विदोहन एवं विकास करने की दृष्टि से कई नदी घाटी योजनाओं को हाथ में लिया गया, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(1) **चम्बल नदी घाटी परियोजना**—चम्बल नदी के विशाल जल स्रोतों को विनाश से विकास की ओर मोड़ने के उद्देश्य से प्रेरित यह योजना मध्यप्रदेश एवं राजस्थान का एक संयुक्त प्रयास है। बाढ़ों तथा भूमि कटाव के लिए कुख्यात इस नदी पर कई बाँध बनाकर विद्युत उत्पादन, बाढ़-नियन्त्रण, सिंचाई आदि से राजस्थान की अर्थ व्यवस्था का कायापलट कर दिया गया है।

योजना के उद्देश्य—चम्बल नदी घाटी परियोजना एक बहुउद्देशीय योजना है अतः यह निम्न कई उद्देश्यों से प्रेरित रही है—

(1) बाढ नियंत्रण से जन-धन की हानि को रोकना,
(2) जल-विद्युत उत्पन्न करना,
(3) पेयजल की व्यवस्था करना,
(4) भूमि कटाव को रोकना,
(5) बाध से नहरें निकाल कर सिंचाई की व्यवस्था करना,
(6) मछली पालन,
(7) मलेरिया नियन्त्रण, तथा
(8) वृक्षारोपण आदि-आदि।

(1) **प्रथम चरण**—(i) गाँधी सागर बाँध का निर्माण।
(ii) गाँधी सागर विद्युत-गृह का निर्माण।
(iii) कोटा सिंचाई बाँध का निर्माण।
(iv) कोटा सिंचाई बाँध के दायीं-बायीं तरफ नहरी व्यवस्था।

(2) **द्वितीय चरण**—(i) राणा प्रताप सागर बाध का निर्माण।
(ii) राणा प्रताप सागर विद्युत-गृह का निर्माण।
(iii) बाँध की भूमिगत टनेल का निर्माण।

(3) **तृतीय चरण**—(i) जवाहर सागर बाँध का निर्माण।

(ii) जवाहर सागर विद्युत-गृह का निर्माण।

गांधी सागर बांध एवं विद्युत गृह—मध्यप्रदेश के मन्दसौर जिले में रामपुरा भानपुरा पठारों के बीच चंबल नदी पर 513.5 मीटर लम्बा तथा 62 मीटर ऊँचा यह बांध 1959 में पूरा हुआ। इस बांध पर विद्युत उत्पादन हेतु 23-23 हजार किलोवाट विद्युत क्षमता की पांच इकाइयां स्थापित की गई जिनकी कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 115 हजार किलोवाट है।

कोटा सिंचाई बांध—कोटा नगर के गढ़ के पास चंबल नदी पर यह बांध 438 मीटर लम्बा तथा 42 मीटर ऊँचा है। यह 1960 में बनकर तैयार हुआ।

सिंचाई नहरों की व्यवस्था—कोटा सिंचाई बांध के दोनों ओर से दायी नहर तथा बायी नहर निकाली गई है। ये दोनों नहरें राजस्थान एवं मध्यप्रदेश की लगभग 4.5 लाख हेक्टर भूमि में सिंचाई करती है। बायीं नहर 65 किलोमीटर लम्बी बहती हुई अन्त में बून्दी की मेजा नदी में जा मिलती है। इससे कोटा एवं बून्दी जिलों में लगभग 1·7 लाख हेक्टर भूमि की सिंचाई होती है जबकि दायी नहर कुल मिलाकर 425 किलोमीटर लम्बी है। यह 120 किलोमीटर राजस्थान में तथा शेष 305 किलोमीटर मध्यप्रदेश में है। यह दोनों राज्यों की लगभग 2·8 लाख हेक्टर भूमि में सिंचाई करती है।

राणा प्रताप सागर बांध एवं विद्युत-गृह—यह बांध चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा नामक स्थान पर चम्बल नदी पर बनाया गया है। यह बांध 1100 मीटर लम्बा तथा 42 मीटर ऊँचा है। इस बांध के नीचे की ओर एक विद्युत उत्पादन गृह बनाया गया है जिसमें 43-43 हजार किलोवाट विद्युत क्षमता की चार विद्युत इकाइयां है। इन सब इकाइयों की कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 172 हजार किलोवाट है।

जवाहर सागर बांध एवं विद्युत गृह—चम्बल परियोजना के तृतीय चरण में कोटा सिंचाई बांध से 16 किलोमीटर दक्षिण में बोराबास के पास चम्बल नदी पर यह बांध 440 मीटर लम्बा तथा 45 मीटर ऊँचा है। इस बांध के नीचे की ओर निर्मित विद्युत गृह में 33-33 हजार किलोवाट विद्युत क्षमता की तीन विद्युत इकाइयां हैं जिनकी कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 99 हजार किलोवाट है।

चम्बल नदी घाटी परियोजना के लाभ—चम्बल नदी घाटी परियोजना राजस्थान के लिए वरदान सिद्ध हुई है। इससे जहाँ एक ओर औद्योगीकरण एवं विद्युतीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ वहीं दूसरी ओर सिंचाई में वृद्धि, भूमि कटाव पर नियन्त्रण तथा बाढ़ की भयंकर विनाश लीला से मुक्ति मिली है। इस परियोजना के लाभ इस प्रकार है—

(1) विद्युत उत्पादन—चम्बल परियोजना से 3·86 लाख किलोवाट विद्युत उत्पादन क्षमता का निर्माण हुआ है जो औद्योगीकरण एवं विद्युतीकरण के

लिए वरदान सिद्ध हुई है। तीनों बांधों पर निर्मित विद्युत गृहों की क्षमता इस प्रकार है--

(i) गांधी सागर बांध--5 विद्युत इकाइयां	1,15,000	किलोवाट
(ii) राणा प्रताप सागर बांध--4 इकाइयां	1,72,000	"
(iii) जवाहर सागर बांध-3 विद्युत इकाइयां	99,000	"
कुल	—3,88,000	किलोवाट

इसके अतिरिक्त राणा प्रताप सागर बांध पर बने अणु-शक्ति परियोजना मे 200-200 मेगावाट विद्युत क्षमता के दो संयन्त्र हैं।

(2) सिचाई सुविधा मे वृद्धि--चम्बल परियोजना मे कोटा बेराज से निकाली गई दायीं-बायीं नहरों से राजस्थान और मध्यप्रदेश की 4·5 लाख हैक्टर भूमि मे सिचाई सुविधा मे वृद्धि हुई है जिससे कृषि उत्पादन मे वृद्धि हुई है।

(3) बाढ़ों से मुक्ति--चम्बल परियोजना के कारण बाढ़ो से होने वाली विनाश-लीला एवं जन-धन की क्षति से मुक्ति मिली है।

(4) मिट्टी के कटाव पर रोक--चम्बल क्षेत्र में चम्बल की बाढ़ों से होने वाले अत्यधिक नालोदार कटाव पर रोक लग गई है।

(5) औद्योगीकरण सभव हुआ है--चम्बल परियोजना से प्राप्त विद्युत शक्ति पेयजल तथा कृषिजन्य पदार्थों की पूर्ति में वृद्धि आदि से कोटा एक औद्योगिक केन्द्र बन पाया है तथा राज्य के अन्य क्षेत्रों के औद्योगीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

(6) वृक्षारोपण एव चरागाहो का विकास सभव हुआ है।

(7) कृषि विकास की गति तेजी से हुई है तथा कृषि उपज की मण्डियों का विकास संभव हुआ है। खाद्यान्नो का उत्पादन 2·2 लाख टन से बढ़कर 13 लाख टन हो गया है।

(8) मछली पालन से प्रति वर्ष 8 से 10 करोड़ रुपये की आय होती है तथा कई लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है।

(2) जवाई बांध परियोजना--मारवाड़ की लूनी नदी की सहायक जवाई नदी पर सुमेरपुर के पास यह बाध बनाया गया है। इस बांध पर 3 करोड़ रुपये व्यय हुए है। इससे 45-50 हजार हैक्टर भूमि में सिचाई की सुविधा प्राप्त है तथा पेयजल उपलब्ध किया जाता है।

(3) माही परियोजना--सदियों से उपेक्षित आदिवासी जनता के अभ्युदय तथा आर्थिक विकास हेतु बांसवाड़ा से लगभग 16 किलोमीटर दूर बोरखेड़ा ग्राम के पास माही नदी पर यह बांध बनाया गया है जो माही बजाज सागर बाध के नाम से जाना जाता है। इस परियोजना पर लगभग 100 करोड़ रुपये [illegible] होंगे।

निर्माण कार्य--इस परियोजना के प्रमुख निर्माण कार्य निम्न हैं---

(i) माही नदी पर बांध निर्माण ।

(ii) माही विद्युत गृह का कार्य जिसमें 10-10 मेगावाट के तीन विद्युत उत्पादन संयत्रों का निर्माण ।

(iii) हेगपुरा ग्राम के नजदीक 25-25 मेगावाट के तीन विद्युत उत्पादन संयंत्र ।

(iv) 104 किलोमीटर लम्बी नहर का निर्माण ।

विद्युत उत्पादन एवं सिंचाई क्षमता--इस परियोजना से लगभग 105 हजार किलोवाट विद्युत उत्पादन क्षमता होगी तथा 89 हजार हैक्टर क्षेत्र में सिंचाई की क्षमता प्राप्त होगी ।

(4) जाखम परियोजना- [illegible] में जाखम नदी पर बाँध बनाकर [illegible] । योजना पर लगभग 12 करोड़ से 15 करोड़ के बीच व्यय का अनुमान है । इसके द्वारा लगभग 21 हजार हैक्टर में सिंचाई हो सकेगी ।

राजस्थान में सिंचित क्षेत्र का तुलनात्मक विवरण

वर्ष	सिंचित हैक्टेयर क्षेत्र (लाखों में)
1950-51	11.7
1960-61	17.5
1968-69	23.5
1973-74	26.4
1979-80	39.3
1982-83	42.0

(5) रेगिस्तानी भूमि एव राजस्थान नहर परियोजना (Desert lands & Rajasthan Canal Project)--राजस्थान का एक बहुत बड़ा भाग थार के रेगिस्तान का भाग है । यहा पर रेत की आधियां चलती हैं जो इतनी तेज चलती हैं कि रेत के एक टीले को एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाती रहती हैं । इस रेगिस्तानी क्षेत्र में जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, नागौर, जालौर, पाली तथा बीकानेर, गंगानगर और चूरू जिले आते हैं । झुन्झुनू और सीकर जिले का कुछ हिस्सा भी इस रेगिस्तानी क्षेत्र में आता है ।

थार के इस रेगिस्तानी क्षेत्र मे आबादी का घनत्व बहुत कम है तथा कृषि उपज भी कम होती है । लोगों को पीने के लिए पानी और पशुओं के लिए चारा

भी आसानी से सुलभ नही होता। ऐसे राजस्थान के मरु क्षेत्र के लिए विश्व की सबसे बड़ी नहर परियोजना-राजस्थान नहर परियोजना की एक महत्त्वाकांक्षी परियोजना पूर्ण होने के अन्तिम चरण में है तथा जो राजस्थान के लिए वरदान और मरुस्थल की गंगा सिद्ध हो सकेगी। यहां हम इसी महत्त्वाकांक्षी परियोजना का विस्तृत लेखा-जोखा दे रहे है—

राजस्थान नहर परियोजना

राजस्थान नहर परियोजना विश्व की सबसे बडी नहर प्रणाली है जिसमे सदियों से वीरान पड़े रेगिस्तान के एक बहुत बड़े भू-भाग को हरे-भरे लहलहाते खेतों मे परिवर्तित करने का स्वप्न सजोया गया है। बूंद-बूंद के लिए तरसती प्यासी रेगिस्तानी भूमि को राजस्थान नहर के जल से सिंचित करने का यह अति साहसिक मानव प्रयास है। 1951 के बाद कई सर्वेक्षणों के बाद 1958 में इस नहर का कार्य प्रारम्भ हुआ।

योजना के उद्देश्य—इस योजना के प्रमुख दो उद्देश्य हैं—

(i) रेगिस्तान के बहुत बड़े भू-भाग में सिंचाई की सुविधा प्रदान करके कृषि विकास करना।

(ii) लोगों तथा मवेशियों के पीने के पानी की व्यवस्था, इसके अतिरिक्त कृषि एवं उद्योगों का विकास, वृक्षारोपण आदि गौण उद्देश्य हैं।

राजस्थान नहर परियोजना के प्रमुख निर्माण कार्य

राजस्थान नहर परियोजना के प्रमुख निर्माण कार्यों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) राजस्थान फीडर का निर्माण (204 किलोमीटर)

(ii) राजस्थान मुख्य नहर का निर्माण (445 किलोमीटर)

(iii) राजस्थान नहर की 9 शाखाओं, 21 उप-शाखाओं तथा वितरक नहरों का निर्माण।

(iv) लिफ्ट नहरों के निर्माण की व्यवस्था।

(i) राजस्थान फीडर—पंजाब में व्यास तथा सतलज नदियों के संगम स्थल पर बने हरिके बांध से राजस्थान नहर को पानी देने के लिए यह 204 किलोमीटर लम्बी राजस्थान फीडर एक पक्की सीमेन्ट प्लास्टरयुक्त नहर है जो

167 किलोमीटर पंजाब व हरियाणा में पड़ती है तथा शेष 37 किलोमीटर राजस्थान सीमा में है। इस राजस्थान फीडर का निर्माण कार्य प्रथम चरण में पूरा हो चुका है।

(ii) राजस्थान मुख्य नहर— राजस्थान फीडर से जुड़ी यह मुख्य नहर 445 किलोमीटर लम्बी है। तल में 38 मीटर तथा ऊपर 67 मीटर चौड़ी तथा

वही सभी नहरों, नालियां आदि को मिलाकर कुल लम्बाई 6‍4 हजार किलोमीटर होने की आशा है।

(iv) लिफ्ट नहरें— ऊंचे एवं सुदूर भू-भागों में नहर को पानी पहुंचाने के लिए लिफ्ट व्यवस्था इस परियोजना का प्रमुख अंग है जिसमें 5 लिफ्ट सिंचाई नहरों का निर्माण कार्य शामिल है। प्रथम चरण में बीकानेर-लूनकरणसर लिफ्ट व्यवस्था तथा शेष पांच लिफ्ट व्यवस्थाएं— नोहर-सहावा, बीकानेर-गजनेर-कोलायत लिफ्ट सिस्टम, फलोदी लिफ्ट सिस्टम, पोकरण लिफ्ट सिस्टम द्वितीय चरण में हाथ में ली गई है।

राजस्थान नहर परियोजना का परिव्यय एवं सिंचाई क्षमता

इस परियोजना पर पांचवीं योजना के अन्त तक लगभग 198 करोड़ रुपये व्यय किया और अब तक 300 करोड़ रु. व्यय हो चुका है। छठी योजना में 162 करोड़ रु. व्यय का प्रावधान है। इस प्रकार छठी योजना के अन्त तक लगभग 450 करोड़ से अधिक व्यय हो चुकेगा फिर भी यह योजना पूरी नहीं होगी। वित्त साधनों के अभाव में यह परियोजना काफी विलम्ब में पड़ गई है। इस परियोजना से अभी लगभग 6 लाख हेक्टर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा प्राप्त हो गई है। अन्ततः इस योजना के पूरा होने पर राजस्थान के लगभग 12.6 लाख हेक्टर रेगिस्तानी क्षेत्र की सिंचाई को सुविधा मिल सकेगी।

राजस्थान नहर के सम्भावित लाभ

राजस्थान नहर परियोजना के पूरा होने पर राज्य के रेगिस्तानी भू-भाग में सिंचाई से कृषि विकास का मार्ग प्रशस्त होगा और अन्ततः औद्योगीकरण, परिवहन साधनों का विकास आदि से लोगों की आय एवं रोजगार में आर्थिक समृद्धि की ओर अग्रसर होने में सहायता मिलेगी। मुख्य लाभ निम्न हैं—

(1) सिंचाई सुविधा—इस परियोजना से पश्चिमी रेगिस्तान की लगभग 12.6 लाख हेक्टर में सिंचाई सुविधा प्राप्त होगी। अभी केवल 6 लाख हेक्टर क्षेत्र में ही यह सुविधा मिलने लगी है।

(2) कृषि विकास—सिंचाई के कारण यह सूखा प्रदेश लहलहाते खेतों में बदलने से कृषि विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। लगभग 100 से 150 करोड़ रु मूल्य का अतिरिक्त कृषि उत्पादन प्राप्त हो सकेगा।

(3) रोजगार में वृद्धि- इस परियोजना के निर्माण कार्यों में बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्राप्त है तथा योजना के पूरा होने पर विभिन्न विकास कार्यों से भी कई अतिरिक्त लोगों को रोजगार उपलब्ध होगा।

(4) सीमा सुरक्षा सुदृढ़ होगी—इस क्षेत्र में 30 लाख से अधिक लोगों को बसाने से प्रतिरक्षा की दृष्टि से यह क्षेत्र सुदृढ़ बन जाएगा।

(5) पेय जल की पूर्ति एवं अकालों से मुक्ति—राजस्थान नहर से प्राप्त जल से न केवल सिंचाई की सुविधा होगी वरन् जनता तथा पशुओं के लिए पीने के लिए पर्याप्त पानी की व्यवस्था हो जायेगी जिससे भीषण अकाल से मुक्ति मिलेगी।

(6) सरकार को आय—जहां एक ओर सरकार भूमि को बेचकर आय अर्जित कर रही है वहां दूसरी ओर सिंचाई, कृषि उपज आदि से वसूलियां द्वारा काफी आय अर्जित करेगी।

(7) औद्योगीकरण—परियोजना से कृषि विकास होने पर कृषि आधारित उद्योगों का विकास होगा।

(8) परिवहन साधनों का विकास—वीरान पड़े रेगिस्तानी भागों के विकास से परिवहन साधनों का विकास होगा।

राजस्थान नहर परियोजना पर नवीनतम जानकारी

राजस्थान नहर परियोजना मरु क्षेत्र में गंगा

विश्व की महानतम सिंचाई योजना, राजस्थान के विशाल मरु क्षेत्र को हरा भरा बनाने का साहसिक मानवीय प्रयास।

2. रावी-व्यास नदियों के पानी को उपयोग में लेने की महत्वपूर्ण परियोजना का द्रुतगति से निर्माण।

3. प्रथम चरण में 220 करोड़ रुपये की लागत से 204 कि. मी. लम्बी राजस्थान फीडर, 189 कि. मी. मुख्य नहर तथा 2900 कि. मी. वितरिकाओं का निर्माण कार्य समाप्ति पर।

4. द्वितीय चरण मे 600 करोड़ रुपये की लागत से 256 कि. मी. मुख्य नहर तथा 5600 कि. मी. वितरक प्रणाली का कार्य प्रगति पर।

5. जून, 1983 तक 204 कि. मी. लम्बी राजस्थान फीडर और 355 कि. मी. लम्बी मुख्य नहर तथा 3100 कि. मी. लम्बी वितरक-प्रणाली का निर्माण कार्य पूर्ण।

उत्पादन होगा।

8. 2.90 लाख हैक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई सुविधा प्रदान करने के लिए लगभग 200 करोड़ रुपये की लागत से पांच लिफ्ट योजनाओं-नोहर-साहवा (चूरू जिला), गजनेर व कोलायत (बीकानेर जिला), फलोदी (जोधपुर जिला), पोकरण (जैसलमेर जिला) को चालू करने का निर्णय।

8. 50 करोड़ रुपये की लागत से राजस्थान नगर को बाड़मेर जिले में गडरा रोड तक लगभग 125 कि. मी. आगे पहुंचा कर एक लाख हैक्टेयर अतिरिक्त खाली क्षेत्र मे सिंचाई सुविधा पहुचाने का निर्णय।

9. राजस्थान नहर व पांचों लिफ्ट योजनाओ के दोनों ओर वृक्षारोपण करके, आंधियो की रेत से नहरों को बचाने की योजना।

10. राजस्थान नहर के पानी से पेयजल व औद्योगिक उपयोग के लिए निर्धारित 500 क्युसेक से बढ़ाकर 1200 क्युसेक करके श्रीगंगानगर, चूरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, बाड़मेर और जैसलमेर जिलों में सुविधा प्रदान की जाएगी।

11. 20 सूत्री कार्यक्रम के तहत 1982-83 मे 46 हजार हैक्टर में अतिरिक्त सिंचाई क्षमता अर्जित पर कुल 6.06 लाख हैक्टर सिंचाई क्षमता प्राप्त की गई। 1983-84 मे एक लाख हैक्टर में अतिरिक्त सिंचाई क्षमता अर्जित करने का लक्ष्य।

12. 2 अक्टूबर, 1983 को जैसलमेर जिले मे पहली बार लगभग

13. श्रमिकों को निःशुल्क आवास, पेयजल एवं आधी कीमत पर खाद्य सामग्री, गेहूँ, दाल, तेल व सुखा दूध सुलभ।

14. सुख समृद्धि के इस महा अभियान में पूर्ण रूप से भागीदार बनने का आह्वान।

31 अक्टूबर, 1983 को राजस्थान मुख्य नहर की 570 किलोमीटर लम्बाई पूर्ण होने पर श्री राजीव गांधी द्वारा जैसलमेर जिले की सदियों से प्यासी धरती में प्रथम बार सिंचाई जल प्रवाह का शुभारम्भ किया गया तथा देश की सबसे बड़ी ग्रामीण पेयजल गन्धेली, साहवा योजना की क्रियान्विति हुई। इस अवसर पर राज्य सरकार द्वारा राजस्थान नहर परियोजना के प्रसारित नवीनतम तथ्य।

1. पंजाब में हरिके से बाड़मेर जिले में गडरा रोड तक नहर प्रणाली की कुल लम्बाई—9425 किलोमीटर—लागत 900 करोड़ रुपये।

2 नहरों के निर्माण पर मिट्टी का कार्य—1380 करोड़ घन फुट—संसार के सबसे ऊँचे एवरेस्ट पर्वत की ऊँचाई और 1200 फुट × 1200 आधार के पिरामिड के आयतन के बराबर।

3 नहरों को पक्का (लाइनिंग) करने के लिये टाइलों की आवश्यकता—340 करोड़ टाइलें—पृथ्वी की परिधि पर 8 मीटर चौड़ी पट्टी बनाने के लिये पर्याप्त।

4. मानव शक्ति की आवश्यकता—30 करोड़ मानव दिन के बराबर—राजस्थान की समस्त काम करने योग्य आयु की जनसंख्या के लिये 30 दिन से भी अधिक का कार्य।

5. 15.20 लाख हैक्टर सिंचित क्षेत्र, खाद्यान्न का वार्षिक उत्पादन: 37 लाख टन, मूल्य 750 करोड़ रुपये, भूमि के मूल्य में वृद्धि—5000 करोड़ रुपये।

6. पीने व उद्योगों के लिये पानी—1200 घन फुट प्रति सैकिण्ड, जल आरक्षण द्वारा सातों मरुस्थलीय जिलों—गंगानगर, चूरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर व बाड़मेर में भरपूर पानी की आपूर्ति।

7. वृक्षारोपण—नहरों व सड़कों पर 10,000 किलोमीटर लम्बाई में।

8. रोजगार के अवसर व सुविधाएं—निर्माण कार्य की गतिविधियों पर 40,000 व्यक्ति, कृषि फार्मों पर 2.5 लाख परिवारों का स्थापन, विश्व खाद्य कार्यक्रम के द्वारा श्रमिकों को सस्ता अनाज, तेल, दालें व दूध उपलब्ध।

1992-95 तक पूर्ण होगी

(5) उद्योग की स्थिति एवं विस्तार, उद्योग एवं खनिज आधारित उद्योग

(Growth & Location of Industries, Indus material & Mineral based Industries

औद्योगिक संभावनाएं

राज्य की पंचवर्षीय योजनाओं में औद्योगिक विकास के लिए सरकार द्वारा योजनाबद्ध रूप में प्रयास किये गये हैं और नये उद्योगों की स्थापना एवं उनके विस्तार के लिए एक वातावरण बनाया गया है। उद्योगों की स्थापना के लिए सरकार ऋण, अनुदान, भूमि, विद्युत एवं अन्य सुविधाएं प्रदान कर रही है।

प्रकृति ने राजस्थान को अनेक आर्थिक संसाधन प्रदान किये हैं। राजस्थान में विभिन्न प्रकार के कृषि पदार्थ उत्पन्न किये जाते हैं, अनेक प्रकार के खनिज-पदार्थ उपलब्ध हैं, बड़ी संख्या में पशुधन है, वन सम्पत्ति है, जल-विद्युत शक्ति एवं अणु शक्ति का विकास किया जा रहा है।

कृषि पर आधारित उद्योग—राजस्थान की 70 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या कृषि-व्यवसाय में लगी हुई है और राज्य-सरकार की आय का लगभग 52 प्रतिशत भाग इसी क्षेत्र से प्राप्त होता है। [illegible]

निर्माण पूरा किया जा चुका है और अनेक पर कार्य चल रहा है। इन योजनाओं व राजस्थान नहर योजना के पूरे हो जाने पर इन पदार्थों के उत्पादन में बहुत बड़े पैमाने पर वृद्धि होगी।

वस्त्र—राजस्थान में सूती वस्त्र की दस नई मिलें और स्थापित की जा सकती हैं। [illegible]

सकते हैं। [illegible] हिए क्योंकि [illegible] सकता है।

वनों पर आधारित उद्योग—अरावली पर्वत के पूर्वी ढालों और राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भागों जैसे बांसवाड़ा, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, झालावाड़,

.लवर, भरतपुर व सवाई माधोपुर जिलों में वन पाये जाते हैं। इन वनों से ईंधन और इमारती लकड़ी प्राप्त की जाती है। धोकर वृक्षों की लकड़ी से कोयला बनाया जाता है। तेन्दू की पत्तियाँ, महुवा, गम, बाँस व अनेक प्रकार की घासें, गोंद, कत्था, आंवला की छाल आदि वनों की छोटी उपज हैं।

राजस्थान में वनों पर आधारित बड़े उद्योगों के विकास व स्थापना की [illegible]

पशुओं पर आधारित उद्योग—राजस्थान पशुधन की दृष्टि से धनी है। अनुमान है कि भारत में कुल पशुधन का लगभग 22 प्रतिशत भाग राजस्थान में ही है। अतः राजस्थान में चमड़ा उद्योग का विकास किया जा सकता है। बड़े पैमाने पर जूते बनाने के 3-4 कारखाने स्थापित किये जा सकते हैं। अभी चर्म उद्योग कुटीर उद्योग के रूप में ही है अतः बड़े पैमाने के उद्योगों की स्थापना की ओर ध्यान देना आवश्यक है। टोंक में चमड़ा साफ करने का एक कारखाना विदेशी सहयोग से स्थापित किया गया है।

राजस्थान में अच्छी नस्ल की भेड़ें बहुतायत से हैं, जिनसे अच्छे किस्म की ऊन प्राप्त की जाती है। अधिकांश ऊन बाहर भेज दी जाती है। जोधपुर व बीकानेर क्षेत्र में ऊनी कपड़ा बनाने व ऊनी होजरी के कारखाने स्थापित किये जा सकते है।

राजस्थान में अच्छी नस्ल की गायें बड़ी संख्या में पायी जाती हैं। अनुमान है कि राज्य में लगभग 4 करोड टन से अधिक दूध प्रतिवर्ष उपलब्ध होता है। प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता की दृष्टि से राजस्थान का भारत में तीसरा स्थान है। राजस्थान में बच्चों के लिए दुग्ध-चूर्ण का एक कारखाना स्थापित किया जा सकता है।

हड्डी पीसने के कारखाने बीकानेर, अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर [illegible]

[illegible] 5 हजार टन मछलियों का उत्पादन होता है जिनमे से लगभग 5 प्रतिशत का उपभोग तो राज्य मे ही हो जाता है और शेष को आगरा, दिल्ली, कलकत्ता व अन्य नगरों में भेज दिया जाता है। मछलियों को डिब्बों में बन्द करने का उद्योग स्थापित किया जा सकता है। एक कारखाना उदयपुर क्षेत्र में व दूसरा कारखाना अलवर अथवा भरतपुर क्षेत्र में स्थापित किया जा सकता है।

खनिज पदार्थों पर आधारित उद्योग

राजस्थान में अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। नेशनल-काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनोमिक-रिसर्च नई दिल्ली ने राजस्थान का टैक्नो-इकोनोमिक सर्वेक्षण करके 'राजस्थान के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना के लिए औद्योगिक कार्यक्रम, पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी इस रिपोर्ट में भारत में विभिन्न उद्योगों की क्षमता और भावी सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए राजस्थान मे स्थापित करने के लिए अनेक उद्योगों का औचित्य बतलाया था। हम यहां अधिकांश सामग्री उसी रिपोर्ट के आधार पर दे रहे है--

ट्रैक्टर व उससे सम्बन्धित यन्त्रों का कारखाना--राजस्थान नहर व अन्य सिचाई की परियोजनाएं पूर्ण हो जाने पर ट्रैक्टर आदि की माग में बहुत वृद्धि होगी अत: राजस्थान मे 5 हजार ट्रैक्टर प्रतिवर्ष बनाने की क्षमता का एक कारखाना स्थापित किया जा सकता है। इसी प्रकार ट्रैक्टर द्वारा खीचे जाने वाले यंत्रों को बनाने का भी एक कारखाना और स्थापित किया जा सकता है।

डीजल इंजिन बनाने का कारखाना--आशा है देश में लगभग 4.5 लाख डीजल इंजिन की मांग होगी। इस समय भारत में लगभग 1·5 लाख ऐसे इंजिन बनाये जा रहे हैं। अत: राजस्थान में 10 हजार डीजल इंजिन उत्पादन क्षमता वाला एक कारखाना लगाया जा सकता है।

स्कूटर एवं मोटर साइकिलों का कारखाना--देश में प्रति वर्ष लगभग 95 हजार स्कूटर व 30 हजार मोटर साइकिलो का निर्माण हो रहा है। यह स्पष्ट है कि इनकी मांग की तुलना में इनका निर्माण बहुत ही कम हो रहा है। अतः राजस्थान में मोटर-साइकिल बनाने का एक कारखाना जोधपुर में और स्कूटर बनाने का कारखाना अलवर में स्थापित किया जा सकता है। यह ध्यान रहे कि सन् 1972 में ही अलवर में स्कूटर बनाने के कारखाने का शिलान्यास राजस्थान के मुख्यमन्त्री कर चुके हैं जो कार्यरत है किन्तु उसमें किन्हीं कारणों से अच्छी सफलता नहीं मिली।

मोटर-गाड़ियों के पुर्जे--इस समय राजस्थान में मोटर-गाड़ियों के पुर्जे व अन्य कुछ भाग जैसे रेडियेटर्स प्रेशर फॉर्जिंग्स पाइप्स, किंग-पिन, पिस्टन-पिन आदि बनाने के छोटे-छोटे कारखाने हैं। इन कारखानों की उत्पादन-क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

विद्युत की सामग्री--राजस्थान में रेफ्रीजरेटर, एयर-कन्डीशनर आदि के निर्माण का कोई कारखाना नही है। राज्य में इनके निर्माण का एक कारखाना जयपुर, कोटा अथवा अजमेर क्षेत्र मे स्थापित किया जा सकता है।

इस्पात के तार— देश में इस्पात के तारों की बहुत आवश्यकता है। यद्यपि भारत मे इसको बनाने के कुछ कारखाने हैं किन्तु देश की आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो रही है और इसका आयात किया जाता है। राजस्थान मे इस्पात के तार बनाने का इस समय कोई कारखाना नही है, अतः यहा 5 हजार टन प्रति वर्ष क्षमता वाला एक मध्यम आकार का कारखाना स्थापित किया जा सकता है।

पाइप, ट्यूब आदि का कारखाना—ताबे और पीतल के पाइप, चादरें, ट्यूब आदि बनाने के सगठित क्षेत्र में राजस्थान मे दो कारखाने ही है, जो मांग का केवल एक छोटा अंश ही पूरा करते है। राजस्थान में एक हजार टन वार्षिक क्षमता वाला एक कारखाना और लगाया जा सकता है। यह कारखाना खेतड़ी क्षेत्र में अथवा जावर क्षेत्र में लगाया जा सकता है।

कीलें, बोल्ट, नट आदि का कारखाना—कीलें, बोल्ट, नट, रिवट्, पेंच, आदि बनाने का एक भी संगठित कारखाना नही है। अतः 10 हजार टन वार्षिक उत्पादन-क्षमता वाला एक कारखाना राजस्थान मे स्थापित किया जा सकता है।

पोर्टलैंड सीमेंट के कारखाने—राजस्थान के जयपुर, कोटा, उदयपुर और जोधपुर क्षेत्रों मे चूने के पत्थर के बडे भंडार हैं। इनके अतिरिक्त बीकानेर और नागौर क्षेत्रों मे जिप्सम के भंडार हैं। इस समय राजस्थान में सीमेंट बनाने के तीन कारखाने उत्पादन कर रहे हैं। चूने के पत्थर के इतने बड़े भंडार होने के कारण, राजस्थान की तो सम्पूर्ण आवश्यकता की पूर्ति हो ही सकती है और पंजाब, दिल्ली व उत्तर-प्रदेश की भी सीमेंट की लगभग 25 प्रतिशत आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है। अतः राज्य में सीमेंट बनाने के 5 और नये कारखाने बूंदी, ब्यावर, उदयपुर, निम्बाहेड़ा और नीम का थाना में स्थापित किये जा सकते हैं।

इनके अतिरिक्त जिप्सम पर आधारित सीमेंट बनाने का एक कारखाना बीकानेर क्षेत्र में स्थापित किया जा सकता है।

सफेद एवं रंगीन सीमेंट—राजस्थान मे सफेद सीमेंट बनाने के कारखाने की स्थापना की जा सकती है। उत्तरी भारत मे सफेद सीमेंट की मांग मे वृद्धि हो रही है। राजस्थान में पाये जाने वाले चूने और जिप्सम की जाच की जा चुकी है और इन्हें सफेद सीमेंट तथा सल्फेट ऑफ पोटाश बनाने के लिए उपयुक्त पाया गया है। बीकानेर और नागौर से जिप्सम, अजमेर से फेल्डस्पार, तथा राज्य के विभिन्न भागो से चूने का पत्थर प्राप्त किया जा सकता है।

सफेद सीमेंट बनाने का एक कारखाना नीम-का-थाना मे स्थापित किया जा सकता है जिसकी दैनिक उत्पादन-क्षमता 50 टन हो। इस कारखाने के लिए 55 लाख रुपये से 60 लाख रुपये की पूंजी की आवश्यकता होगी।

कांच बनाने का कारखाना—देश मे कांच की बढ़ती हुई मांग को देखकर राजस्थान में 300 से 500 टन प्रतिवर्ष उत्पादन-क्षमता वाला काच बनाने का

+ यह कारखाना धोलपुर (नागौर) में मगस्त में खुला है।
१।२९

एक कारखाना और स्थापित किया जा सकता है। राजस्थान में काच बनाने के इस समय केवल दो कारखानें हैं जो धौलपुर में स्थित हैं। नया कारखाना जयपुर, कोटा, बीकानेर, जोधपुर अथवा उदयपुर में स्थापित किया जा सकता है। इन क्षेत्रों में काँच बनाने की मिट्टी उपलब्ध है। किन्तु सबसे बड़ी कठिनाई तकनीकी व्यक्तियों की कमी है।

तेल-शोधक कारखाना—सवाई माधोपुर में पैट्रोलियम आदि को साफ करने का एक कारखाना सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित किया जा सकता है।

औद्योगिक संभावनाओं का सर्वेक्षण—राजस्थान के 'लघु उद्योग सेवा संस्थान' जयपुर तथा उद्योग निदेशालय ने राजस्थान के विभिन्न भागों मे उद्योगो की स्थापना की संभावनाओं का अध्ययन करने के उद्देश्य से अनेक जिलों का सर्वेक्षण किया है। इनमें से प्रमुख जिले ये हैं—उदयपुर, भरतपुर, श्री गगानगर, बीकानेर, सीकर, झुंझुनू, नागौर, पाली, भीलवाड़ा, टोंक, सवाई माधोपुर और बासवाड़ा आदि।

1983 में भारत सरकार ने सवाई माधोपुर के निकट बिलौना में बोम्बे हाई गैस पर आधारित एक खाद का कारखाना लगाने के लिए स्थान का चुनाव कर लिया है।

अन्त में निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थान में औद्योगिक संभावनाएं अत्यन्त आशाप्रद हैं सरकार, उद्योगपतियों एवं साहसियों के पारस्परिक सहयोग एवं सामंजस्य की आवश्यकता है।

(6) लघु, कुटीर तथा ग्राम्य उद्योग
(Small scale & Cottage Industries)

कुटीर, लघु तथा ग्राम्य उद्योग—आशय—'कुटीर उद्योगों', 'लघु उद्योगो' एवं 'ग्राम्य उद्योगों' का अध्ययन करने के पूर्व उनका आशय स्पष्ट कर देना आवश्यक है। इस सम्बन्ध मे, अधिक विस्तार में न जाकर केवल 'फिसकल कमीशन रिपोर्ट 1949–50' तथा राजस्थान स्टेट-एड-टू इंडस्ट्रीज एक्ट 1961 की धारा 4 का ही उल्लेख करेंगे।

"कुटीर उद्योग"—फिसकल कमीशन के अनुसार जो उद्योग पूर्णरूप से अथवा मुख्य रूप मे श्रमिक द्वारा अपने परिवार के सदस्यों की सहायता से पूर्णकालिक अथवा अंशकालिक व्यवसाय के रूप में चलाया जाता है; कुटीर उद्योग कहलाता है।

राजस्थान स्टेट के उपरोक्त, 1961 के एक्ट के अनुसार कुटीर उद्योग से आशय ऐसे उद्योग से है जो किसी भू-गृहादि मे चलाया जाता हो, जिस पर कारखाना अधिनियम 1948 लागू नहीं होता हो। कुटीर उद्योग मे डेयरी फार्मिंग, मधु मक्खी पालन तथा मुर्गी-पालन भी सम्मिलित है।

'लघु उद्योग' -- फिसकल कमीशन के अनुसार, वह उद्योग लघु उद्योग है--(i) जो उद्योग श्रमिक के घर मे नही चलाया जाता, और (ii) जिसमें मुख्यत: 10 से 50 तक श्रमिक कार्य करते हों, तथा (iii) जिसमे 5 लाख रुपये से कम पूंजी नियोजित हो।

राजस्थान स्टेट के उपरोक्त एक्ट के अनुसार, लघु उद्योग से आशय ऐसे उद्योग से है जिसमें---

(a) पांच लाख रुपयो से कम पूंजी लगी हो और नियोजित व्यक्तियों की संख्या चाहे जितनी ही हो।

(b) दस लाख रुपयों से कम पूंजी लगी हो और जो ऐसे उद्योगो में काम आने वाले सहायक तथा अंनभुत उपकरण उत्पादन करे जो कि राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर निर्दिष्ट किये जायं।

'ग्राम्य उद्योग'---राजस्थान स्टेट के उपरोक्त एक्ट के अनुसार ग्राम्य उद्योग से आशय ऐसे उद्योग से है जो राज्य के ग्रामीण-व्यक्तियों के किसी वर्ग के लिए पूर्ण अथवा अंशकालिक धंधे के रूप में हो।

राजस्थान की अर्थ-व्यवस्था में महत्व---स्वर्गीय प० जवाहरलाल नेहरू के अनुसार भारत के अवनति काल मे भी राजस्थान कुटीर एवं विविध कलाओं का केन्द्र रहा है और अब भी अच्छे शिल्पकार यहां हैं। मुझे विश्वास है कि जिस महान शिल्पकारी और कला के लिये राजस्थान प्रसिद्ध है, उसको प्रोत्साहित करने का उचित प्रयत्न राजस्थान सरकार द्वारा किया जावेगा।

आज के वैज्ञानिक युग में कुटीर उद्योग की कल्पना नितांत असंगत प्रतिभासित होगी, क्योंकि आज वैज्ञानिक अनुसंधानो और आविष्कारों ने वृहत्तर उद्योगों का एक जाल-सा फैला दिया है। आज इनकी चकाचौंध से विश्व चौंधिया गया है। एक ओर तो बड़े उद्योगों का द्रुतगति से प्रचार बढता जा रहा है और दूसरी ओर बेकारी की समस्या भयंकर होती जा रही है। अतः ऐसी अवस्था में कुटीर व लघु उद्योगों को औद्योगिक देशों ने भी महत्व दिया। उन्होंने अनुभव किया कि ये यंत्र व कारखाने देश की बेकारी की समस्या को हल करने में असमर्थ हैं, इसके लिए लघु व कुटीर उद्योगो को अपनाना होगा।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था में कृषि उसका शरीर है तो कुटीर उद्योग-धंधे रक्त-धमनियां हैं। राजस्थान एक कृषि प्रधान राज्य है। सन् 1981 की जनगणना

के अनुसार राज्य की 80 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है। अधिकाश व्यक्ति कृषि अथवा इससे सम्बन्धित व्यवसाय से अपनी जीविका उपार्जन करते हैं। कृषि मौसमी धंधा है और राजस्थान के एक बड़े भाग में वर्ष में केवल एक फसल ही होती है। अतः ग्रामीणों को कुटीर उद्योगों के लिए समय की कमी नही है। राजस्थान के कृषको का जीवन-स्तर भी बहुत निम्न है। अतः कुटीर उद्योग की सहायता से आर्थिक स्थिति म सुधार हो सकता है।

अवनति के कारण—किसी समय राजस्थान के कुटीर उद्योग उन्नत दशा में थे, किन्तु समय चक्र ने उन्हें अवनति की ओर ढकेल दिया। राजस्थान में कुटीर उद्योगों की अवनति के प्रमुख कारणों का विवेचन नीचे किया जा रहा है—

(1) विदेशी वस्तुओं से प्रतियोगिता—विदेशी शासन के कारण कारखानों में बनी हुई विदेशी सस्ती वस्तुएं आने लगी अतः कुटीर उद्योगो द्वारा उत्पादित वस्तुओं की मांग बहुत कम हो गई।

(2) बड़े उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धा—कुटीर-उद्योग को वड़े उद्योगों से कठोर प्रतिस्पर्द्धा करनी पड़ती है बड़े उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुएं मूल्य मे सस्ती व देखने में सुन्दर होती हैं। वड़े उद्योगों द्वारा वड़े पैमाने पर वस्तुएं उत्पन्न की जाती हैं और देश के निवासियों की माग को पूरा करने मे सामर्थ्य रखती हैं। अतः कुटीर उद्योग देश के बड़े उद्योगों की प्रतिस्पर्धा के सामने नही टिक पाते हैं।

(3) यातयात के साधनों की उन्नति— एक ओर तो यातायात के साधनों के विकास ने देश की आर्थिक दशा में सुधार किया किन्तु दूसरी ओर कुटीर उद्योगों पर कड़ा आघात किया। इन साधनो के विकास के कारण कारखानों का बना हुआ माल ग्रामीण क्षेत्रों व शहरी क्षेत्रो में पहुंच गया।

(4) रुचि में परिवर्तन—समय के परिवर्तन के साथ लोगों की रुचि में भी परिवर्तन हुआ। धनवान तथा राजा महाराजाओं का भी कारीगरों पर पहले की तरह संरक्षण नही रहा। लोग कारखानों में निर्मित वस्तुओ को अनेक कारणो से अधिक पसन्द करने लगे।

(5) आर्थिक कारण—कुटीर उद्योग के कारीगरो की आर्थिक-दशा बिगड़ती ही गई, अतः उन्होने कुटीर उद्योगों पर से निर्भरता त्यागना आरम्भ किया और नगर की ओर नौकरी, मजदूरी अथवा अन्य काम करने के लिए बढने लगे।

(6) कच्चे माल की कठिनाई—ग्रामीण क्षेत्र के अनेक कारीगरों को वस्तुएं बनाने के लिए कच्चा माल समय पर अच्छी किस्म का व सस्ता उपलब्ध नही हो पाता है प्रायः देखा गया है कि कारीगर कच्चा माल गाँव के साहुकारों से उधार प्राप्त करते हैं, जो कि उन्हे महंगा देते हैं व अन्य प्रकार से शोषण करते हैं।

(7) विक्रय की कठिनाई— कुटीर उद्योगों द्वारा उत्पादित माल के विक्रय की एक समस्या है। इस माल के विक्रय की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। अतः

कभी तो इनकी वस्तुएं नहीं बिकती हैं अथवा कभी देर से बिकती हैं और कभी कम मूल्य पर बेचना पडता है। जिसके कारण ये कारीगर हतोत्साहित हो जाते हैं।

(8) **शिक्षा का अभाव**—ये कारीगर प्रायः अशिक्षित होते है। इनकी शिक्षा एव प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था न होने के कारण अनेक व्यक्ति जो कुटीर उद्योगों में कार्य करने के इच्छुक होते है, इन उद्योगों को नही कर पाते है।

(9) **संगठन का अभाव**—कुटीर उद्योग के कारीगर बिखरे हुए है तथा इनका कोई संगठन नही है, अतः उनकी समुचित उन्नति एवं सहायता में कठिनाई होती है। संगठन के अभाव में वे अपनी सामान्य समस्या को सामूहिक रूप से हल नही कर पाते हैं।

फिर भी अस्तित्व क्यों ? हम देखते हैं कि कुटीर उद्योग के सामने इतनी कठिनाइयों के होते हुए, प्रोत्साहन के अभाव मे और सरकार की उदासीन नीति के होते हुए भी आज ये बिल्कुल लुप्त नही हो गये है, उनका अस्तित्व नष्ट नही हो सका। अनेक परिस्थितिया इस प्रकार की रही है कि क्रूर काल-चक्र उनको विध्वंस नही कर सका। आज भी ये आर्थिक-जीवन के प्रमुख अंग बने हुए है। इसके भी कुछ कारण है—

1. राजस्थान के व्यक्तियों मे 'घर रहने की प्रवृत्ति' पाई जाती है अतः यहा लोगो ने अपना घर छोड़कर अन्य स्थानो पर न जाकर अपना पैतृक व्यवसाय ही चालू रखा।

2. हमारे यहा की सामाजिक व्यवस्था ने भी कुटीर धन्धों के अस्तित्व को बनायें रखने मे सहयता दी है। जाति-प्रथा का इस दिशा मे अत्यन्त सहयोग रहा। लोहार, चमार, सुनार आदि लोगों ने अपने-अपने पेशे जारी रखे।

3. अधिकांश लोगों का व्यवसाय कृषि है और कृषक वर्ष में लगभग 6 महीने तक बेकार बैठा रहता है, अतः अपने परिवार की आय बढाने की दृष्टि से कुटीर धंधों को अपनाना पडा।

4. अनेक व्यक्तियों को कारखाने के अनुशासन का जीवन पसन्द नही था, अतः उन्होने घर पर अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अपने पुराने पैतृक कुटीर धंधों को ही अपनाया।

5. कुछ कुटीर उद्योग ऐसे हैं जो कारखानों में नहीं चलाये जा सकते, उदाहरण के लिए, ऐसे उद्योग जिनमे वैयक्तिक चतुरता की आवश्यकता होती है। अतः ऐसे उद्योगों की प्रतिस्पर्धा कारखाने नही कर पाये और इनको प्रोत्साहन मिलता रहा।

6. कुछ उद्योगों को सरकारी अथवा राजाओ, जागीरदारो अथवा धनी व्यक्तियों का सहयोग तथा संरक्षण रहा, अतः ऐसे उद्योग धधों का भी अस्तित्व नही मिट पाया।

अतः स्पष्ट है कि अनेक विषम परिस्थितियों तथा कठिनाइयों के होते हुए भी कुटीर धंधों का अस्तित्व बना रहा ।

राजस्थान के प्रमुख कुटीर उद्योग

राजस्थान ने अनेक कला-कौशलों में जीवन की चैतन्यमान शक्ति डाली फलतः पाषाण बोल उठे और कागज अपनी कहानी स्वयं कहने लगे । कला की कमनीयता और उसकी निपुणता राजस्थान की धरोहर है मूर्तियों का निर्माण, छपाई, रंगाई व बंधाई तथा अन्य कलात्मक प्रवृत्तियां इस प्रदेश में विकसित हुई है आज भी राजस्थान के हजारों घराने इन कलात्मक प्रवृत्तियों को जीवन-निर्वाह का साधन बनाये हुए है । समय की गति ने इन कलाओं के प्रति वाछनीय अपेक्षा की प्रवृत्ति को भले ही कम कर दिया हो किन्तु अनेक प्रतिभाशाली शिल्पकारों और कारीगरों ने अभी तक अपनी परम्परा को नहीं तोड़ा है ।

1. सूती वस्त्र उद्योग—यह राजस्थान का सबसे पुराना और सबसे बड़ा कुटीर व लघु उद्योग है । वैसे तो प्रत्येक गांव में ग्रामीणों की आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत कपड़ा बनाया जाता है, किन्तु कुछ क्षेत्रों ने विशेष प्रकार के वस्त्र-निर्माण में विशिष्टता प्राप्त कर ली है । उदाहरण के लिए, कोटा की मसूरिया साड़ी, जोधपुर व जयपुर की चनरियां व लहरिये प्रसिद्ध हैं । गोविन्दगढ़, करौली व [illegible] लना, सुमेरपुर [illegible] व जयपुर में पगड़ियां व पेंचे अच्छे बनते हैं ।

हजारों व्यक्ति हाथकर्घे पर कार्य करते हैं राजस्थान में लगभग 1 लाख से अधिक कर्घे चल रहे है जिन पर लगभग 5 लाख व्यक्तियों का जीवन निर्वाह होता है हाथ कर्घे के द्वारा मोटा कपड़ा, साड़ियाँ, चादरें, तौलिये आदि अनेक प्रकार के वस्त्र तैयार किये जाते हैं ।

महात्मा गांधी ने भारत में खादी का प्रचार बढ़ाया । सभी कांग्रेसी नेता व प्रायः अन्य नेता खादी आवश्यक रूप से बढ़िया व कीमती खादी ही पहनते हैं । अन्य अनेक लोग मोटी खादी पहनते है । गांवों में निर्धन लोग प्रायः मोटी खादी पहनते हैं । जुलाहे खादी का कपड़ा अपने घरों पर ही तैयार करते हैं । राजस्थान खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड खादी बनाने में महत्वपूर्ण योग देता है । यह एक प्रमुख कुटीर उद्योग है । सूती व ऊनी खादी तैयार की जाती है ।

2. बंधाई, छपाई व रंगाई— यह राजस्थान की प्राचीन कला है । यह उद्योग प्रायः सभी नगरों व बड़े गांवों में होता है । जयपुर, जोधपुर, चित्तौड़ व भरतपुर में कपड़ों पर बढ़िया छपाई, जोधपुर के साफे और पोमचा, जयपुर व सागानेर व कोटा की रंगाई प्रसिद्ध है । जयपुर, जोधपुर, कुचामन, नागौर, उदयपुर

व कोटा मे बधाई का काम अच्छा होता है। बंधाई का काम प्रायः स्त्रियां करती है और रगाई का पुरुष।

3. ऊनी वस्त्र उद्योग — राजस्थान में भारत की कुल ऊन का एक प्रमुख भाग उत्पन्न होता है। थोडा ऊन तो राज्य मे काम आ जाता है और शेष बाहर भेज देते है। बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर व जयपुर इस उद्योग के प्रमुख केन्द्र हैं। ऊन के नमदे, कम्बल, आसन, घोड़े व ऊंट की जीनें व मोटा कपड़ा बनाया जाता है।

बीकानेर, चूरू, लाडनू आदि मे ऊनी मिलें लघु उद्योग के क्षेत्र मे स्थापित की गई हैं।

4. गोटा उद्योग—अजमेर, जयपुर और खंडेला इस कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं वास्तव मे यह व्यवस्थित उद्योग है।

5. दरी व निवार उद्योग—पहले दरी बनाने का कार्य अधिकतर मुसलमान किया करते थे जिनमें से बहुत से पाकिस्तान को चले गये। राजस्थान की जेलो में सुन्दर, मजबूत व बढ़िया दरिया बनाई जाती हैं। निवार बनाने का कार्य अनेक नगरों व कस्बों में होता है। निवार उद्योग मे मुख्यतः स्त्रियां लगी हुई हैं।

6. चर्म उद्योग—राजस्थान मे पशुओं की सख्या अधिक होने से चमड़ा भी बहुत प्राप्त होता है। चमड़े को साफ करके बाहर कानपुर, आगरा, मद्रास भेज देते हैं। गावों मे चमड़े के जूते, मशक, चरस, घोड़े की जीनें व बटुए आदि बनाये जाते हैं। चमड़ा कमाने के पदार्थ राजस्थान में उपलब्ध हैं। अतः सरकार को इस उद्योग के सुधार एव विकास की ओर ध्यान देना चाहिए।

7. लकड़ी का काम—कोटा, उदयपुर, बासवाड़ा व डूगरपुर जिलों में घने जंगल हैं जिनसे लकड़ी प्राप्त करके निकट के नगरों को भेज देते हैं। नगरों में विशेषतः फर्नीचर, किवाड, पलग आदि बनाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त लकड़ी के खिलौने एवं खराद का अन्य काम भी किया जाता है। उदयपुर, जोधपुर व सवाई माधोपुर मे लकड़ी के खिलौने बहुत सुन्दर बनाये जाते हैं।

8. बांस उद्योग—बास से टोकरिया, हल्की मेजें व कुर्सियां, चिकें आदि अन्य सुन्दर वस्तुएं बनाई जाती हैं। जयपुर, जोधपुर व अजमेर इसके लिए प्रसिद्ध हैं।

9. लाख उद्योग—लाख की चूड़िया राजस्थान के प्रत्येक नगर मे बनाई जाती हैं जयपुर में विशेषतः लाख की सुन्दर चूड़िया, खिलौने व अन्य वस्तुएं बनाई जाती हैं, जिनकी मांग बाहर भी है।

10. लोहा उद्योग—राजस्थान में प्रायः प्रत्येक नगर व गांव मे कुटीर उद्योगों मे लोहा उद्योग अपना पृथक् महत्व रखता है। चाकू, छुरे, कैंची, उस्तरा, अंगीठी, कड़ाई आदि सैकड़ों प्रकार की वस्तुओं का निर्माण होता है।

11. पीतल की खुदाई—जयपुर का पीतल का काम बहुत सुन्दर एवं विख्यात है। विभिन्न म्यूजियमों में तथा लंदन में इंडिया हाउस मे इसके आकर्षक नमूने मिल सकते है। इस काम को प्रायः मुसलमान ही करते है, बहुत से पाकिस्तान चले गये हैं। इनकी आर्थिक दशा बहुत खराब है। यदि सरकार ने इस उद्योग की ओर ध्यान नही दिया तो यह कलात्मक कुटीर उद्योग नष्ट ही हो जायेगा।

12. अन्य उद्योग--उपरोक्त के अतिरिक्त पत्थर की मूर्तियां व अन्य वस्तुएं बनाना, हाथीदांत के खिलौने व अन्य सामान, कागज की कुट्टी के खिलौने, खस का इत्र व पखे प्रमुख है। इसके अतिरिक्त रस्सियां बनाना, साबुन बनाना, तेल निकालना, ईंटें बनाना, बीड़ी बनाना, ताड़-गुड़ बनाना आदि राजस्थान के अनेक प्रमुख कुटीर उद्योग है।

(7) निर्यात की वस्तुएं एवं राजस्थानी हस्तशिल्प

(Export items and Rajasthan Handicrafts)

(क) राजस्थान का हस्थशिल्प

राजस्थान प्राचीनकाल से ही हस्तकलाओं का धनी रहा है। यहा की हाथ से बनाई गई कलात्मक वस्तुएं विश्वभर मे लोकप्रिय है। सागानेरी प्रिन्ट के कपड़ें, पाली मारवाड़ के रंगाई छपाई के वस्त्र, लाख की चूड़ियां (मोजड़ी), पीतल के के खिलौने, हाथी दात व लकड़ी के खिलौने, मीनाकारी से युक्त आभूषण, चीनी मिट्टी के कलात्मक बर्तन आदि से प्रायः सभी परिचित है।

राजस्थान की प्रसिद्ध हस्तकलाए निम्नलिखित हैं–

1. रंगाई, छपाई व बधेज के वस्त्र—वस्त्रों की रंगाइ छपाई के लिए राजस्थान का कलात्मक काम विश्वभर मे लोकप्रिय है। सागानेर, पाली, बाड़मेर व बीकानेर इस काम के लिए प्रमुख केंद्र हैं। बीकानेर के लहरिये व मोठड़े प्रसिद्ध हैं। किशनगढ़, चित्तौड़ व कोटा में रूपहरी व सुनहरी छपाई का काम होता है। जयपुर में भी बधेज, रंगाई व छपाई का काम बढ़ता जा रहा है।

2. कशीदाकारी--वस्त्रों पर कसीदे का काम भी राजस्थान में बहुत कलात्मक होता है। कैरी, कमल, मोर, हाथी और ऊंट का यहां की डिजाइनों मे विशेष रूप से अकन होता है और ये राजस्थानी कशीदाकारी व छपाई कला के प्रतीक बन गये हैं। कढाई के काम मे कांच, मोती व धात्विक कणों का भी प्रयोग किया जाता है। कोटा की मसूरिया, मलमल व कोटा डोरिया की साड़ी प्रसिद्ध है। जयपुर, जोधपुर, अजमेर, उदयपुर आदि सभी जगह यह काम फैल गया है।

3. ऊनी कम्बल व कालीन—बीकानेर व मालपुरा क्षेत्र ऊन उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र हैं। यहां ऊनी कम्बल व नमदा बनाया जाता है। बीकानेर की ऊनी

सर्ज भी प्रसिद्ध है। जयपुर, जोधपुर व टोडगढ़ (अजमेर) भी कम्बल बनाने के केन्द्र हैं। मालपुरा मे बने ऊनी चकमा या घूघी प्रसिद्ध हैं जिसमे पानी प्रवेश नही कर पाता है।

4. दरी व कालीन—राजस्थान मे दरी व गलीचे का कार्य भी बहुत होता है। जयपुर, अजमेर व बीकानेर क्षेत्रा मे दरी व गलीचे बनाये जाते हैं। बीकानेर मे उत्तम श्रेणी की ऊन से वियना व फारसी डिजाइनों के गलीचे बनाये जाते हैं। जयपुर मे भी कुछ गलीचे बनाने के कारखाने है।

5. संगमरमर की मूर्तिया—मकराना मे संगमरमर की खानें हैं। जयपुर व इसके आसपास के क्षेत्रों म सगमरमर की मूर्तियाँ बनाई जाती हैं। देश मे ही नही विदेशा मे भी महापुरुषो की व सजावटी मूर्तियाँ व कलात्मक निर्माण की वस्तुए जैसे फव्वारे आदि यहाँ से बनाकर भेजे जाते है। जयपुर मे मूर्तिकला का विशेष केन्द्र है। विभिन्न धर्मों के देवी-देवताओं, महापुरुषो, सन्तों, महात्माओं आदि की मूर्तियो का शिल्प देखते ही बनता है।

6. लाख का काम—जयपुर व जोधपुर लाख के काम के लिए प्रसिद्ध हैं। लाख की चूड़िया व कड़े, पाटले आदि राजस्थानी महिलाओं मे ही नही अन्य क्षेत्रों मे भी लोकप्रिय है और विदेशी भी इन्हे चाव से खरीदते हैं। लाख के बने खिलौने, मूर्तिया, हिण्डोले आदि भी बहुत सुन्दर बनाये जाते हैं। लकड़ी पर लाख का लेपन कर बहुत ही कलात्मक वस्तुए बनाई जाती है। लाख की चूड़ियो पर कांच व मोतियों आदि से तरह-तरह से डिजाइन बनाये जाते है।

7. लकड़ी पर खुदाई का काम—राजस्थान के कुछ भागो मे लकड़ी पर नक्कासी का काम बहुत सुन्दर होता है। उदयपुर व सवाई माधोपुर में लकड़ी के खिलौने व कलात्मक वस्तुए बनाने के केन्द्र है। बीकानेर व शेखावाटी में लकड़ी के नक्काशीदार सजावटी किवाड़ बनते है। लकड़ी मे पीतल की जड़ाई का काम भी बहुत होता है।

8. हाथी दांत का काम--भरतपुर, जयपुर व उदयपुर मे हाथी दात पर कुराई व कटाई करके कलात्मक वस्तुएं, खिलौने, शतरज के मोहरे, कंघे, मूर्तियाँ आदि बनाने का काम होता है। उदयपुर व पाली मे हाथी दात की चूड़ियां भी बनती है।

9. पाटरी--मिट्टी व चीनी के बर्तन बनाने का काम राजस्थान में प्राचीन काल से होता आया है। विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के डिजाइन व कलात्मकता का प्रदर्शन पाया जाता है। जैसे अलवर में बहुत पतली परतदार बर्तन बनते हैं। जिन्हे "कागजी" नाम दिया जाता है। जयपुर में चीनी मिट्टी के सफेद व नीले रग के तथा फूल पत्तियां के डिजाइनदार बर्तन व कलात्मक खिलौने बनाये जाते हैं बीकानेर में सुनहरी पेंटिग वाले चीनी मिट्टी के कलात्मक व सजावटी बर्तन व अन्य वस्तुए बनाई जाती है। मिट्टी के बर्तन प्रायः सभी क्षेत्रो में बनाये जाते हैं।

10. ऊंट के चमड़े का काम--ऊंट राजस्थान के मुख्य क्षेत्रों मारवाड़, जैसलमेर व बीकानेर का मुख्य पशु है। इन क्षेत्रों में इसके चमड़े से पानी व तेल संग्रह के लिए मशक बना ली जाती है। इन पर त्वचा के टुकड़ों को चिपकाकर या खुदाई करके अन्य विधि से सजावट के लिए तरह-तरह के डिजाइन बना दिये जाते हैं। चमड़े से अन्य कलात्मक वस्तुएं यथा पर्स आसन, जूते आदि भी बनाये जाते हैं।

11. कागज--सांगानेर व सवाई माधोपुर में हाथ से कागज बनाने का काम किया जाता है। सांगानेरी कागज प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण कार्यों में प्रयुक्त किया जाता रहा है।

12. लोहे के औजार व हथियार--नागौर क्षेत्र में लोहे के औजार हाथ से बनाये जाते हैं। प्राचीन समय में सिरोही क्षेत्र हथियारों के लिए प्रसिद्ध था।

13. पीतल पर मीनाकारी--जयपुर व अलवर में पीतल पर फूल पत्तियों व प्राकृतिक दृश्यों की खुदाई जड़ाई आदि का काम भी किया जाता है। यह भी कलात्मक कार्य है जिसका अब केवल सजावटी कामों के लिए महत्त्व रह गया है। पीतल के खिलौने बनाने का काम भी बहुत सुन्दर होता है।

जोधपुर में पानी को ठंडा रखने के लिए 'बादला' नाम से बर्तन बनाया जाता है। यह धातु का बना होता है जिस पर विशेष रूप से व कलात्मक ढंग से कपड़े का आवरण चढ़ा होता है।

पीतल के अतिरिक्त आजकल सफेद धातु के मिश्रण के भी खिलौने बहुतायत से बनाये जाते हैं जिसमें चित्तौड़ का विजय स्तम्भ, घोड़ा, हाथी, मोर आदि लोकप्रिय हैं।

14. चमड़े का काम--जयपुर में चमड़े की कलात्मक जूतियां तथा जूते बनाये जाते हैं। इनका प्रचलन विदेशों में भी बहुत है और विदेशी युवतियां भी यहां की कलात्मक व सजावटी जूतियां (मोजड़ी) बड़े चाव से पहनती हैं। चमड़े से अन्य उपयोगी वस्तुएं जैसे पर्स, बेल्ट, बैग, आसन आदि भी बनाये जाते हैं जो अपनी कलात्मकता के कारण लोकप्रिय हैं।

15. रत्नों की कटाई व मीनाकारी का काम--सोने-चांदी के कलात्मक आभूषण बनाने के लिए जयपुर, जोधपुर, अजमेर व उदयपुर के स्वर्णकार प्रसिद्ध रहे हैं। सोने व प्लेटिनम के आभूषणों में रत्नों की जड़ाई का काम भी बहुत सुन्दर होता है आजकल प्राकृतिक एवं कृत्रिम (इमीटेशन) रत्नों की कलात्मक कटाई व पालिस करने का काम बढ़ता जा रहा है। जयपुर में इसका एक प्रशिक्षण केन्द्र खुल गया है।

(ख) निर्यात की वस्तुयें

राजस्थान अपने उत्पादनों का निर्यात करके देश के व्यापार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अन्तर्राज्यीय व्यापार में ही नही वरन् विदेशों को निर्यात मे भी राजस्थान का लगभग 20 प्रतिशत योगदान रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 1978-79 मे राजस्थान से लगभग 75 करोड़ रुपये मूल्य का सामान निर्यात किया गया और उसके पश्चात् प्रत्येक क्षेत्र मे निर्यात की मात्रा मे वृद्धि ही हुई है।

राजस्थान से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में प्रमुख स्थान जवाहरात और आभूषणों का रहा है। कुल निर्यात मूल्य का लगभग 47 प्रतिशत केवल जवाहरात व आभूषणो से प्राप्त होता है। अन्य प्रमुख मदें हैं हाथ से छपाई रंगाई किये गये वस्त्र, हस्तकला की वस्तुए, ऊनी गलीचे, नमदे, संगमरमर व इसकी मूर्तियां, खनिज व इंजीनियरिंग उत्पादन आदि। विविध मदों के अन्तर्गत निर्यात की गई प्रमुख वस्तुए और उनका अनुमानित मूल्य निम्न प्रकार है—

1. **आभूषण व जवाहरात**—लगभग 31 करोड़ रुपये मूल्य का सामान इस मद के अन्तर्गत प्रतिवर्ष निर्यात किया जाता है। इसमें वृद्धि की सम्भावनाए भी हैं। इनमें मूल्यवान रत्न व अर्द्ध मूल्यवान रत्न, सोने व प्लेटीनम के आभूषण, चादी के आभूषण, कृत्रिम रत्न, जवाहरात आदि सम्मिलित हैं।

2. **वस्त्र**—हाथ की छपाई, रंगाई व बंधेज के वस्त्र, जिनमें साड़ियां प्रमुख है, विदेशों में बहुत लोकप्रिय है। लगभग ढाई करोड के ऐसे वस्त्र तथा लगभग इतने ही सिले सिलाये वस्त्रों का निर्यात प्रति वर्ष विदेशों को किया जाता है। इसके अतिरिक्त हाथ कर्घे पर बुने वस्त्र, चादरें आदि भी निर्यात की जाती हैं।

3. **ऊनी गलीचे व नमदे**—ऊनी उत्पादन मे राजस्थान का स्थान अग्रणी रहा है और लगभग 10 करोड रुपये मूल्य के ऊनी गलीचे, नमदे व अन्य वस्तुओं का निर्यात किया जाता है।

4. **हस्तकला की वस्तुएं**—लगभग 1 करोड मूल्य का निर्यात राजस्थानी हस्तकला की वस्तुओं के रूप में किया जाता है। इनमें प्रमुख है–राजस्थानी पेंटिंग, ब्लू पॉटरी (चीनी मिट्टी के नीले बर्तन) हाथी दांत व लकडी पर कुराई खुदाई के काम से बनी कलात्मक वस्तुएं, पत्थर की जालिया व मूर्तियां, पीतल व ब्रोंज धातुओं के बर्तन व खिलौने, चमडे की जूतिया व पर्स आदि गुड़ियाएं, पेपरमेशी का सामान, जरी के काम की वस्तुएं आदि।

5. **खनिज वस्तुएं**—लगभग सवा करोड रुपये मूल्य का निर्यात इन वस्तुओं के रूप में होता है। इनमें प्रमुख हैं संगमरमर व इसकी मूर्तिया, सोप स्टोन, अभ्रक, तांबा तथा कुछ मात्रा में फासफोरस, जिप्सम व ग्रेनाइट।

6. रसायन सम्बन्धी उत्पादन—लगभग दो करोड़ रुपये का रसायनिक उत्पादन राजस्थान से निर्यात होता है, जिसमें प्रमुख हैं नमक (लगभग 8 लाख रुपये) अन्य प्रमुख उत्पादन हैं प्लास्टिक का सामान, प्लास्टिक के जूते, चप्पल आदि कीटनाशक औषधिया, कांच का सामान व बुलेट प्रूफ कांच आदि ।

7. कृषि उत्पादन—ग्वार, गम, तिलहन की खली, मक्का व मक्का की वस्तुएं इस श्रेणी में आती है ।

8. पशु धन पर आधारित वस्तुएं—ऊन और ऊनी वस्तुओं के अतिरिक्त निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में प्रमुख हैं हड्डियां व हड्डियों का चूरा, चमड़ा व चमड़े की बनी वस्तुएं बकरी व ऊंट के बालों से बनी वस्तुएं आदि ।

9. इंजीनियरिंग उद्योग के उत्पादन—इसके अन्तर्गत प्रमुख वस्तुएं हैं बालबियरिंग, तार व केबल्स, बिजली व पानी की मीटर, बिजली के तारों को लगाने के लिए खंभे, तार की जालियाँ, इलेक्ट्रानिक सामान आदि । लगभग डेढ़ करोड़ रुपये का ऐसा सामान प्रतिवर्ष निर्यात होता है ।

10. अन्य वस्तुएं—इनके अतिरिक्त अन्य बहुत सी छोटी-मोटी वस्तुएं हैं जिनका यहां से निर्यात होता है जैसे मेंहदी, ताड़ का तेल, अचार, मुरब्बे व पापड़, भुजिया, बीड़ी, शराब, अगरबत्ती, साइकिल व ओटोमोबाइल के पुर्जे आदि ।

राजस्थान मे उद्योगों का निरन्तर विकास हो रहा है और इसके साथ ही उत्पादन में वृद्धि हो रही है । इससे निर्यात की वृद्धि होने की प्रबल संभावनाएं हैं ।

(8) राजस्थान की जनजातियां एवं जनजाति अर्थ व्यवस्था

(Tribes & tribal economy of Rajasthan)

राजस्थान की जनजातियां—राजस्थान में जनजातियों का महत्वपूर्ण स्थान है । कर्नल टाड तथा गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा आदि ने ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर यह बताया है कि भील लोग ही दक्षिणी व दक्षिणी पूर्वी राजस्थान के मूल निवासी थे । भीलों को पराजित करके ही राजपूतों ने अपने राज्य स्थापित किये थे । बांसवाड़ा जिले के कुशलगढ स्थान पर कुशला भील शासन करता था । डूंगरपुर पर भी डूंगरिया भील का शासन था तथा बांसवाडा में बांसिया भील का शासन था । जयपुर के पूर्व राज्य आमेर पर तथा बूंदी में पहले मीणा शासकों का शासन था तथा कोटा में कोटिया भील का शासन था । करौली मे भी मीणों का शासन था । इस प्रकार यहा भी भील, मीणा व अन्य जनजातियां का ऐतिहासिक एवं सास्कृतिक दृष्टि से प्राचीनकाल मे बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान था ।

जनजातीय जनसंख्या—सन 1981 की जनगणना के अनुसार जनजातीय

जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान भारत का छठा राज्य है राजस्थान की कुल जनसख्या मे जनजातियों का जिलेवार प्रतिशत निम्न प्रकार है—

क्रमाक	जिला	जनजाति का प्रतिशत
1	2	3
(1)	गगानगर	0·04
(2)	बीकानेर	0·01
(3)	चूरू	0·11
(4)	झुन्झुनू	0·53
(5)	अलवर	3·55
(6)	भरतपुर	1·41
(7)	सवाई माधोपुर	8 66
(8)	जयपुर	8·85
(9)	सीकर	0·84
(10)	अजमेर	0·49
(11)	टोंक	2·28
(12)	जैसलमेर	0·22
(13)	जोधपुर	0·78
(14)	नागौर	0·06
(15)	पाली	1·46
(16)	बाड़मेर	1·42
(17)	जालौर	1·67
(18)	सिरोही	2·97
(19)	भीलवाड़ा	3·16
(20)	उदयपुर	19·42
(21)	चित्तौड़गढ	5·92
(22)	डूंगरपुर	10·80
(23)	बांसवाड़ा	15·27
(24)	बूंदी	2·77
(25)	कोटा	5·32
(26)	झालावाड़	2·05
(27)	धौलपुर	नवनिर्मित

जनजातियाँ क्रम से उदयपुर, बांसवाड़ा, में सबसे अधिक निवास करती हैं।

वितरण—भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से हम राजस्थान की जनजातियों को निम्नांकित तीन भागों में बांट सकते हैं—

(1) दक्षिणी राजस्थान—इस क्षेत्र के अन्तर्गत बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिले तथा उदयपुर जिले की सात तहसीलें आती हैं। इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या का .5·23 प्रतिशत भाग जनजातियों का है तथा राजस्थान की कुल जनजातीय जनसंख्या का 43·8 प्रतिशत भाग इस क्षेत्र में निवास करता है। भील, मीणा, गरासिया तथा दमोर आदि इस क्षेत्र की प्रमुख जनजातियां हैं।

(2) पश्चिमी राजस्थान—इस क्षेत्र में राजस्थान के ग्यारह जिले झुन्झुनू, सीकर, चूरू, गंगानगर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर तथा जालौर आते हैं। इस क्षेत्र में राजस्थान की कुल जनजातीय जनसंख्या का 7·14 प्रतिशत भाग रहता है। भील व मीणा इस क्षेत्र की प्रमुख जनजातिया है।

(3) दक्षिणी पश्चिमी राजस्थान—इस क्षेत्र में राजस्थान की जनजातीय जनसंख्या का लगभग आधा भाग निवास करता है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत अलवर, भरतपुर, जयपुर, सवाई मधोपुर, अजमेर, टोंक, भीलवाड़ा, बूंदी, कोटा, व झालावाड़ जिले तथा चित्तौड़गढ़, उदयपुर व सिरोही जिलों के कुछ भाग आते हैं। इस क्षेत्र की प्रमुख जनजातियां भील, मीणा, सहरिया तथा भील-मीणा आदि है।

जनजातीय निवास के आधार पर वितरण—यदि हम प्रत्येक जनजाति के निवास के आधार पर राज्य की जनजातीय जनसंख्या का विश्लेषण करें तो पावेंगे कि 70 प्रतिशत भील लोग बांसवाड़ा, डूंगरपुर एवं उदयपुर जिले में रहते हैं और शेष तीस प्रतिशत राज्य के अन्य भागों में बिखरे हुए है। मीणा लोगों का 51·19 प्रतिश[illegible]

अलव[illegible]

इसके [illegible]

इन तीन जिलों मे गरासियों का 96·48 प्रतिशत भाग निवास करता है।

दमोर जाति का 96·82 प्रतिशत भाग केवल डूंगरपुर जिले में रहता है। डूंगरपुर जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति में इनकी संख्या सर्वाधिक है।

[illegible] ा है कोटा की

[illegible] .18.07% भाग

भाग डूंगरपुर

[illegible] जिले में रहता है।

राजस्थान में जनजातियों का जिलेवार विभाजन

(1981 की जनगणना के अनुसार)

क्रमांक	जिला	कुल जनसंख्या	कुल जनजाति संख्या	ग्रामों में	नगरो में
1	2	3	4	5	6
(1)	गंगानगर	20,14,471	5,095	2,633	2,462
(2)	बीकानेर	8,40,059	1,496	458	1,038
(3)	चूरू	11,76,170	5,619	3,946	1,673
(4)	झुन्झुनू	11,93,146	23,077	21,356	1,721
(5)	अजमेर	14,31,609	1,43,458	1,39,708	4,150
(6)	भरतपुर	12,95,890	40,716	44,450	2,160
(7)	सवाई माधोपुर	15,32,652	3,48,130	3,41,822	6,308
(8)	जयपुर	34,06,104	3,80,199	3,45,786	34,413
(9)	सीकर	13,73,066	36,522	34,092	2,460
(10)	अलवर	17,59,057	32,183	26,471	5,712
(11)	टोंक	7,83,796	92,477	91,520	957
(12)	जैसलमेर	2,78,137	10,680	9,851	829
(13)	जोधपुर	16,50,933	40,088	29,707	10,381
(14)	नागौर	16,24,351	2,984	2,786	188

1	3	3	4	5	6
(15)	पाली	12,71,835	69,694	64,520	5,174
(16)	बाड़मेर	11,13,823	57,038	54,558	2,480
(17)	जालोर	9,02,649	72,361	68,386	3,975
(18)	सिरोही	5,40,520	1,25,245	1,17,057	8,188
(19)	भीलवाड़ा	13,08,500	1,21,664	1,15,110	6,554
(20)	उदयपुर	22,35,639	8,09,156	1,92,922	16,254
(21)	चित्तौड़गढ़	12,30,628	2,23,864	2,19,505	4,359
(22)	डूंगरपुर	6,80,865	4,40,120	4,32,877	7,149
(23)	बांसवाड़ा	8,85,701	6,43,966	6,37,912	6,054
(24)	बूंदी	5,86,596	1,18,030	1,14,763	3,267
(25)	कोटा	15,46,937	2,31,316	2,16,826	14,490
(26)	झालावाड़	7,84,982	91,610	88,040	3.570
(27)	धौलपुर	5,83,176	16,000	10,106	5,894
	कुल योग	3,41,08,292	41,83,124	40,27,186	1,55,956

अन्य जनजातियों में भापा, टावड़ी, वालयी, काठोड़िया, कालीढ़ोर, नेन्दा, पटिलिया, भील-गरासिया, ढोली भील, पावटा आदि हैं जो अधिकांश में सिरोही जिले में रहते हैं।

राजस्थान की प्रमुख जनजातियां

राजस्थान में जनजातियों की कुल जनसंख्या का अधिकांश भाग पर्वत और जंगलों में स्थित गांवों में रहता है जबकि केवल थोड़ी जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में [illegible] के हैं और [illegible] . बावरी [illegible] की पुस्तक में इन जनजातियों के विषय में अच्छा विवरण प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में तथा अन्य विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विवरण के आधार पर राजस्थान की कुछ जनजातियों का सामान्य विवरण इस प्रकार है—

मीणा जनजाति

राजस्थान की जनजातियों में जनसंख्यात्मक दृष्टिकोण से मीणा जनजाति का ही प्रथम स्थान है। आदिकालीन इतिहास से यह प्रकट होता है कि ये लोग बीहड़ जंगलों तथा पर्वतों में रहकर आत्मरक्षा करते और जीविका उपार्जन करते थे।

"मीणा" का शाब्दिक अर्थ "मछली" है। इसी आधार पर एक मान्यता यह भी है कि मीणा जनजाति का सम्बन्ध भगवान मत्स्यावतार से है। लेकिन राजस्थानी भाषा में इस प्रकार के रूपान्तर के पुष्ट प्रमाण नहीं मिलते। फिर भी इस मान्यता को बिलकुल ही नकारा नहीं जा सकता। श्री चन्द्रराज भण्डारी अपने भगवान महावीर नामक ग्रन्थ में लिखते हैं कि मत्स्य राज्य कुरू राज्य के दक्षिण और यमुना के पश्चिम में था (वर्तमान अलवर, भरतपुर व जयपुर के जिले इसी में शामिल हैं) और यहां के अधीश्वर मेना (मीणा) कहलाते थे। वर्तमान में भी मीणा जनजाति के यही खास इलाके माने जाते है और यहीं पर मीणा जनजाति लाखों की संख्या में बसी हुई है।

मारवाड़ की मीणा जनजाति के दो उप भाग हैं। उत्तर पूर्व के परगने मारोठ, नावां और सांभर के मीणा अपने को उच्च कुल के मानते हैं और गोवाड़ व जालौर के दक्षिणी परगनों के निवासियों को अपने से निम्न कुल का समझते हैं। ये लोग ढेडिया मीणा कहलाते हैं। इन दोनों उप जनजातियों में न तो खान-पान का और न ही विवाह का सम्बन्ध देखने को मिलता है।

उत्तर पूर्वीय परगनों में निवास करने वाली मीणा जनजाति अपने को उसी पूर्वज से सम्बन्धित मानती है जिस पूर्वज से आम्बेर (जयपुर) के रहने वाले मीणा सम्बन्धित है। कहा जाता है कि राजपूतों का शासन स्थापित होने से पहले आम्बेरपुर मे इन्ही मीणा लोगों की सत्ता स्थापित थी। ये लोग आज भी वहां के परम्परागत रक्षक माने जाते है। जब कभी भी कोई नया शासक जयपुर के राज सिहासन पर बैठता है तो ये मीणा ही उसके माथे पर राजतिलक करते हैं। इन मीणा लोगों मे एक वर्ग तो जमींदार है और दूसरा वर्ग चौकीदार, पर उनके आर्थिक पिछड़ेपन के कारण इन दो वर्गों में कोई स्पष्ट विभाजन सम्भव नही होता।

मीणा जनजाति की अनेक खापें है, परन्तु मारवाड़ मे बसे हुए मीणों में निम्नलिखित उल्लेखनीय है—

1. छापोला	2. जेप	3. जेखाला
4. वागडी	5. पाखरी	6. बुद्दख
7. मानोताल	8. बनसनवाल	9. चीत
10. नोगाडा	11. सीरा	12. वधिराना
13. चांड्डया	14. औसर	15. बामणवाल
16. कागीत	17. सवडी	18. मोयू
19. राखला	20. मानोता	21. जेरवाला
22. मोरजवाल	23. जाखाली वाला	24. झुखाल

मीणा जनजाति की स्त्रियां बहुत ही परिश्रमी, साहसी व धैर्यशाली होती है। वे युद्ध तक अपने पुरुषों का साथ देती हैं और खेती व अन्य घरेलू उद्योग-धन्धों में पुरुषों के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर उनका सहयोग देती हैं।

मीणा जनजाति में विवाह सम्बन्धी नातेदारी तथा रक्त सम्बन्धी नातेदारी को बहुत अधिक प्रमुखता दी जाती है। मीणा जनजाति मे बहन के पति का बड़ा आदर सत्कार किया जाता है और बहनोई को उपहार आदि देकर प्रसन्न भी किया जाता है। इस प्रकार द्वितीयक सम्बन्धियों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करने की रीति देखने को मिलती है। साले की पत्नी तृतीय नातेदारी के अन्तर्गत आती है। इनके साथ अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध तो नही रखा जाता है पर घर आने पर खूब आदर सत्कार किया जाता है। विस्तृत नातेदारी सम्बन्ध के अन्तर्गत मीणाओं के दूर के नातेदार तथा बनाये गये रिश्तेदारों को रखा जाता है। मीणा लोग रिश्तों को बहुत जल्दी बना लेते हैं। यही नही गांव का प्रत्येक सदस्य उसका कोई न कोई रिश्तेदार होता है या कम से कम रिश्ते के नामों को लेकर उन्हें सम्बोधित किया जाता है। मीणा लोगो मे गोद लेने की भी प्रथा है। किसी भी उम्र का सम्बन्धी

गोद लिया जा सकता है, पर इस मामले में निकटतम सम्बन्धी का हक पहले होता है।

मीणा जनजाति के वहीभाट, जिन्हें जागा कहते हैं, इस जनजाति की 13 पाल, 32 तड़ तथा 5200 गोत्र की बात कहते हैं। 13 पालों की कल्पना इस प्रकार है—1. देसपाल, 2. चोयतपाल, 3. खेतपाल, 4. प्राचीनपाल, 5 नवपाल, 6. पारपाल, 7. रावतपाल, 8. मालापाल, 9. पडियारपाल, 10. मैनापाल, 11. चिमरपाल, 12. भेदपाल, 13. मेवपाल। इसी आधार पर मीणाओं में पार-मीणा, मेर मीणा, पडियार मीणा, मैला मीणा, रावत मीणा आदि पाये जाते है। आचार्य मुनि मगर सागर द्वारा रचित "मीणा पुरान" के एक श्लोक से मीणों के 5200 गोत्रों की पुष्टि होती है। उसके अनुसार "भगवान मीन के वंशधरो में से हैं और वे 5200 गोत्रों में विभक्त हैं। हो सकता है कि कभी इनके 5200 गोत्र रहे हों, पर आज मीणा समाज में वह गिनती पूरी नहीं हो सकती, बहुत प्रयत्न करने पर 100 गोत्र से अधिक मिलना असम्भव है। मीणा जागाओं ने 80 गोत्र होने की बात लिखी है। गोत्रों से भी अधिक अज्ञात मीणों की 32 तड़ें है। कर्नल टॉड ने भी इनका उल्लेख करते हुए केवल इतना ही लिखा है कि इनका विस्तार से वर्णन करने के लिए बहुत समय चाहिए। मुनि मगन सागर ने भी 32 तड़ें होने की बात तो कही है पर उनका वर्णन नहीं किया है।

पालो, तडो तथा गोत्रो के अतिरिक्त मीणा जनजातियों में अन्य सामाजिक समूह भी पाए जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. जमींदार-चौकीदार—जमीदार मीणा वे हैं जो प्रायः खेती, पशुपालन आदि व्यवसाय करते हैं। चौकीदार मीणा वे है जिन्हें कभी महलों, कोषागारों तथा स्वयं महाराजा के अंगरक्षक एवं अन्तःपुर तक के रक्षक बनाये जाते थे।

2. पुराणा बासी—नया बासी—जैसा कि शाब्दिक अर्थ से ही स्पष्ट है "पुराणा बासी" मीणा वे है जो पर्याप्त समय से बसे हुए हैं और नये बासी वे हैं जो बाद मे आकर बसे है।

3. ऊजला-मैला—श्री गहलोत ने लिखा है कि मीणों की दो उप-जातिया हैं—एक तो ऊजले मीणा जो कि गाय-बैल नही खाते हैं और दूसरे मैले मीणा जो ये सब खाते हैं।

4. पड़िहार मीणा—पड़िहार नाम के मीणा टोंक, भीलवाड़ा व बून्दी जिलो मे बहुत पाये जाते हैं, ढूंढाड के मीणा, जो ऊजले मीणा माने जाते हैं, के साथ इनका वैवाहिक सम्बन्ध नही होता है। एक लोक विश्वास के अनुसार भैंस (पाड़े) का मास खाने के कारण इन्हें पडिहार मीणा कहा जाता है।

5. रावत मीणा—ये लोग अजमेर मे अधिक पाये जाते है और सवर्ण हिन्दू राजपूतो से सम्बन्धित माने जाते हैं।

6. चमरिया मीणा—सम्भवतः चमड़े का काम करने के कारण इन्हें इस नाम से पुकारा जाता है।

7. भील मीणा—ये अधिकांशतः अजमेर, मेवाड़, डूंगरपुर व बांसवाड़ा मे पाये जाते हैं। दो जनजातीय समूह मीणा तथा भील के लगातार सम्मिश्रण के कारण यह "भील मीणा" अस्तित्व में आयी हैं।

8. असली या आदु मीणा—कर्नल टॉड ने ऊपाहारा वंश के मीणों को ठेठ, असली और अमिश्रित मीणा माना है;और शेष सभी को वर्ण संकर।

9. टेढिया मीणा—गोडवाड़ तथा जालौर क्षेत्र के मीणों को टेढिया मीणा कहा जाता है। ये लोग गौ मांस से भी घृणा नही करते।

10. सुरतेवाल मीणा—कहा जाता है कि जब कोई मीणा पुरुष किसी मालिन या ऐसी ही किसी स्त्री से कोई सन्तान उत्पन्न करता है तो वह सुरतेवाल मीणा कहलाता है।

11. चौथिया मीणा—मारवाड़ के बहुत से गावों में कमजोर जागीरदारों या गांव वालो ने गांव की रक्षा के लिए चौथ कायम कर दी थी। जिन गांवों में मीणों का इस रूप में अधिक जमाव हुआ, वहां उन्हें चौथिया मीणा कहा जाने लगा।

इनके अतिरिक्त मीणा जनजाति में पाये जाने वाली अन्य उपजातियां जैसे दस्सा बीसा, मैणतल, म्यारण, मेवासी, पचवारा, ढूढाड़, मेवात, मेरवाड़ा, चौहान, सीणा, चीता, बरड़ आदि उल्लेखनीय हैं।

जहां तक विवाह का सम्बन्ध है, प्राचीन मीणाओं में ब्रह्म विवाह, गान्धर्व विवाह तथा राक्षस विवाह का प्रचलन था। इनमें राक्षस विवाह ही मीणाओं में अधिकतर देखने को मिलते थे। मीणा लोग युद्ध मे विजय प्राप्त करने के बाद स्त्रियों को पकड़कर ले आते थे और उन्हें युद्ध के उपहारस्वरूप मानते और विवाह कर लेते थे। मीणा जनजाति की स्त्रियों को भी अन्य जनजातियों के लोग बल-पूर्वक हरण कर ले जाते और उनसे विवाह करते थे। परन्तु अब स्थिति बदल गई है और राक्षस या गान्धर्व विवाह का प्रचलन नही रह गया है। अब मीणाओं में स्वाभाविक तौर पर ही विवाह रचाये जाते हैं।

मीणा जनजातियों मे विवाह विच्छेद का तरीका बहुत ही आसान है। यदि पति पत्नी का एक दूसरे से मन हट जाय या किसी अन्य कारणवश वे विवाह बन्धन को तोड़ना चाहें तो स्वामी दुपट्टे का कुछ हिस्सा फाड़कर स्त्री के हाथ में देकर पत्नी से अपना सम्बन्ध तोड़ सकता है। इस प्रकार त्यागी हुई स्त्री वह वस्त्र का टुकड़ा हाथ मे सिर पर जल से भरे दो कलश तले ऊपर रखकर जिस मार्ग से इच्छा हो उसी पर चल देती है और जो पुरुष सबसे पहले उस त्यागी हुई स्त्री

के सिर से जल कलश उतारना स्वीकार करेगा, स्त्री उसको अपना भावी पति समझेगी। पत्नी को त्यागने की यह प्रथा केवल मीणा लोगों में ही प्रचलित नहीं है अपितु जाट, गूजर और अन्य वनैली शुद्र जातियों में भी बहुत प्रचलित है। विवाह विच्छेद का अधिकार मीणा स्त्रियों को भी प्राप्त है, पर पुरुषों का यह विशेषाधिकार है कभी-कभी ये विवाह विच्छेद के मामले पंचायत द्वारा भी तय हो जाते हैं। मीणा लोग विवाह सम्बन्ध से बाहर यौन सम्बन्धों को साधारणतया पसन्द नहीं करते है। मीणा परिवार शुरू से ही पितृवंशीय रहे हैं।

मीणा जनजाति के लोग शक्ति के उपासक हैं और जयपुर के अन्तर्गत रेवासा ग्राम के निकट स्थित पहाड़ में विराजमान जीण माता को पूजते हैं। भरतपुर जनपद मे बसे हुए मीणा जनजाति का एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि वहां इस जनजाति के सदस्य अधिकाशतः दुर्गा माता को पूजते हैं। पर ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर इस बात की भी पुष्टि होती है कि मीणा लोग 'शिवजी' को भी बहुत मानते हैं। उसी प्रकार मीणाओं में पितरों को जल तर्पण किए जाने का धार्मिक कार्य अनेक ऐतिहासिक घटनाओं मे देखने को मिलता है। उसी प्रकार जादू-टोने मे भी मीणा लोग काफी विश्वास करते हैं।

भील जनजाति

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, भील राजस्थान की प्रमुख अनुसूचित जनजातियों में से एक है और जनसंख्या के दृष्टिकोण से इसका स्थान दूसरा नंबर मीणा जनजाति के बाद ही है। राजस्थान के लगभग 17 प्रतिशत भील बांसवाड़ा, डूंगरपुर तथा उदयपुर जिलो मे रहते हैं तथा शेष 30 प्रतिशत राज्य के अन्य भागों में बिखरे हुए हैं। पर्वतों तथा जंगलों में स्थित गावों में इस जनजाति के अधिकाश लोग रहते है।

कर्नल टॉड अपने अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि आर्यों के आगमन से पूर्व ही इस जनजाति के लोग यहा निवास करते थे और सर्वप्रथम यही लोग मेवाड़ पहुंचे थे। डॉ. डी. एन. मजूमदार ने अपनी पुस्तक "रेस एण्ड कल्चर्स आफ इंडिया" में लिखा है कि "भील जनजातियों का सम्बन्ध नीग्रोयड प्रजाति से है क्योंकि इनकी अनेक शारीरिक विशेषताएं इस प्रजाति से मिलती-जुलती हैं। इस जनजाति के सदस्य मूलरूप से दक्षिण भारत में रहते हैं जहा से वे गुजरात मे भी फैल गये थे। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि राजस्थान की भील जनजाति का मुख्य निवास स्थान दक्षिण ही था, जहां से कि यह राजपूताना में आ गये थे।"

भील जनजाति का सम्बन्ध दक्षिण मे निवास करने वाले द्रविड़ लोगों से है, इस बात का आभास इस तथ्य से भी मिलता है कि "भील शब्द की उत्पत्ति

द्राविड भाषा के "विल्लू" शब्द से हुई है। डाक्टर हण्टर ने लिखा है कि भील अपनी उत्पत्ति महादेव बिल्लू से बताते हैं इस सम्बन्ध में जो पौराणिक कथा प्रचलित है, वह इस प्रकार है कि एक बार महादेव जी जंगल में विचरण कर रहे थे। वहा उनकी भेंट एक स्त्री से हुई और उससे अनेक सन्तानें उत्पन्न हुई। उन संतानों मे एक सन्तान अत्यन्त कुरूप और भ्रष्ट थी उसने अपने पिता के बैल का वध कर डाला। इस अपराध के दण्डस्वरूप उसे उसके घर से निकाल दिया गया और वह जंगलों और पर्वतों पर भटकता फिरता रहा। उसी के वशज भील कहलाये। तभी से भील को बहिष्कृत या निकाला हुआ मांना जाने लगा।

भील जनजाति के अनेक उपभाग है जिनमे से कुछ का उल्लेख निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है—

(1) डाबी (2) जारगट (3) लेखिया (4) गेटार (5) दूबल (6) गूंदी (7) गोयल (8 राण्ड (9) परमार (10) चौहान (11) देया (12) लौटिया (13) कडवा (14) अलिया (15) लिडिया (16) येडेंडा (17) चुर (18) कलेदा (19) करवा (20) नोचिया (21) सोलंखी (22) भाटी।

उपर्युक्त उपभागों मे से दो चार उपभागों को छोड़कर अन्य सभी के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि वे विशुद्ध भील नहीं हैं बल्कि राजपूती तत्वों से उनका अविरल रक्त सम्मिश्रण होता रहा है और इसीलिए वे विशुद्ध भीलों का प्रतिनिधित्व नही करते हैं।

गांव में भील लोग अब छोटी-छोटी झोपड़िया बनाकर रहने लगे है, पहले वे लोग पाल तानकर उसी में रहते थे। प्रत्येक गांव का एक मुखिया या चौधरी होता है और सब लोग उसका कहना मानते है। मुखिया का प्रमुख कार्य गांव के प्रशासन को बनाये रखना और सबकी भलाई के लिए कार्य करना होता है। भीलो में पचायत व्यवस्था भी देखने को मिलती है और गाँव का मुखिया ही सरपंच होता है। यह पचायत सामान्य प्रशासन के अतिरिक्त गांव के लोगों के आपसी झगडा का निपटारा भी करती है और साथ ही जनजातीय नियमों को तोडने वालो को कठोर से कठोर दन्ड देने में भी हिचकिचाती नही है। भीलों में सामुदायिक उत्तरदायित्व की भावना बहुत प्रबल होती है और अगर किसी समूह के लोग किसी भील पर आक्रमण करते या उसे चोट पहुंचाते है तो लोग उसे पुरे गांव पर आक्रमण मानते हैं और सामुहिक रूप से उसका बदला लेते हैं।

भीलो में अन्धविश्वास का बहुत बोलबाला है या यूं भी कहा जा सकता है कि उनका जीवन अनेक अन्धविश्वासों से घिरा हुआ है। उन्ही अन्धविश्वासों के कारण जब वे शिकार आदि के लिए बाहर जाते हैं तो वे उसमे सफलता प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार की प्रार्थना पूजा इत्यादि करते हैं उसी प्रकार वे भूत-

प्रेतों पर भी बहुत अधिक विश्वास करते है और उनसे अपनी रक्षा करने के नाना प्रकार के गन्डे-तावीज धारण करते हैं। चुडैलों पर भी इनका बहुत ज्यादा विश्वास है और इसीलिए प्रत्येक गांव मे इस प्रकार के कुछ विशेष लोग होते हैं जो कि चुडैल भगाने का काम करते है। उसी प्रकार शकुन और अपशकुनों को लोग बहुत अधिक मानते है। उदाहरणार्थ, कही जाते समय अगर किसी भील का मार्ग बिल्ली काट जाये तो वह फिर कभी भी आगे नहीं बढ़ता है और निश्चित रूप से अपने घर लौट जाता है। भीलों में शपथ का भी बहुत महत्व है और शपथ लेकर जो भी वे कहते है, वह सच कहते हैं और साथ ही शपथ का पालन भी निष्ठापूर्वक करते है। इसलिए किसी भी अपराध के बारे में खोजबीन करने के लिए अकसर शपथ का सहारा लिया जाता है। इस सम्बन्ध में बड़े बूढ़ो सामने ली जाने वाली शपथा का बहुत महत्व होता है, क्योंकि भीलों में बड़े बूढ़ो का पर्याप्त आदर किया जाता है।

भीलों में पितसत्तात्मक और पितृवंशीय परिवार पाये जाते हैं जिसके कारण परिवार मे पिता की ही सत्ता होती है उसे घर का कर्ता माना जाता है और लोग उसके आदेशो का पालन करते हैं। पारिवारिक झगड़ो का निपटारा बड़े-बूढ़ो के द्वारा ही किया जाता है। उसी प्रकार शादी विवाह तय करना भी पिता या बड़े-बूढ़ो का कर्त्तव्य होता है। इस कर्तव्य का पालन पिता बड़ी निष्ठापूर्वक करते है और पुत्र के लिए वधू खोजने और उसके माता-पिता से बातचीत करने के लिए काफी रुचि लेते है। भीलो मे अक्सर सगाई अल्पावस्था में ही हो जाती है, पर विवाह तभी होता है जब वर और वधू दोनो ही यौवनावस्था में पहुंच जाते हैं। विवाह मे कन्या मूल्य अदा करने की कोई स्पष्ट प्रथा दिखाई नहीं देती है फिर भी यह रीति चली आ रही है कि विवाह मे कन्या के पिता का जो धन व्यय होता है उसका एक चौथाई भाग पुत्र का पिता कन्या के पिता को देता है। विवाह में पुरोहित का कार्य करने वाले विशेष व्यक्ति होते हैं, पर कभी-कभी कन्या पक्ष का कोई वयोवृद्ध सम्बन्धी भी पुरोहित के कार्य करता रूप मे दिखाई देता है। भीलों मे पति-पत्नी अक्सर सदभावपूर्ण स्थिति मे ही एक दूसरे से व्यवहार करते हैं। वस भील पत्नी अपने स्वामी की सेवा लगन व स्नेहपूर्वक करती रहती है।

भीलो में विधवा विवाह का प्रचलन भी देखने को मिलता है और इस सम्बन्ध में कोई विशेष सामाजिक प्रतिबन्ध नही है। बड़े भाई की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई अपने बड़े भाई की विधवा को अपनी पत्नी बना सकता है, परन्तु छोटे भाई की विधवा को बड़ा भाई अपनी पत्नी नही बना सकता। अतः वह विधवा या तो अपने मायके, लौट जाती है अथवा किसी दूसरे गोत्र मे अपना दूसरा विवाह कर लेती है।

दाढ़ी

कई
से मरे लोगों के शवों को जलाया नहीं जाता है बल्कि उन्हें गाड़ दिया जाता है। पर यदि कुछ समय तक परिवार में और किसी की मृत्यु उस रोग से नहीं होती तो गाड़े हुए शव को निकालकर उसे जला दिया जाता है। भील लोग मृत्यु के पश्चात् भी आत्मा के अस्तित्व पर विश्वास करते हैं।

भील लोगों में पुरुष की मृत्यु के पश्चात् उसकी सम्पत्ति पर उसकी पत्नी उत्तर और पुत्र का और इन दोनों के न रहने पर उसके भाई का अधिकार होता है। पुत्रियां तथा अन्य स्त्रियां का सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता।

पहले भील लोग अपना निवास स्थान अक्सर बदल देते थे, यहां तक कि चोरी, डकैती भी करते थे। पर अब वे धीरे-धीरे एक स्थान पर बस गये हैं, तथा शिकारियों, दस्तकारों व किसानों के रूप में अपना जीविकोपार्जन करते हैं कुछ भील तो अब नौकरी भी करने लगे हैं।

गरासिया जनजाति

जनसंख्यात्मक दृष्टिकोण से मीणा तथा भील जनजातियों के बाद तीसरा स्थान गरासिया जनजाति का ही है। ये राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र के गांवों में बसे हुए हैं गरासिया जनजाति को 'गासिया' नाम से भी पुकारा जाता है।

गरासिया जनजाति अपने अपने गांव में पंचायतों का संगठन करती है। ये पंचायत मुख्यतः बड़े बूढ़ों की एक परिषद होती है और इसका प्रधान या मुखिया ही गांव का मुखिया होता है। पंचायत ही गांव के लोगों के व्यवहार पर नियन्त्रण करती और आपसी झगड़ों का निपटारा [illegible]
का उल्लंघन श [illegible]
से देखा जाता [illegible]
को नहीं मिलती है।

गरासिया जनजाति में पितृसत्तात्मक व पितृवंशीय परिवार पाये जाते हैं जिसमें कि पिता को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। परिवार के भरण पोषण का उत्तरदायित्व परिवार के पुरुष सदस्यों पर ही होता है। यद्यपि स्त्रियां भी इस मामले में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करती हैं। स्त्रियां बहुत साहसी व परिश्रमी होती हैं और पति व परिवार की खूब सेवा करती रहती हैं। फिर भी यौन सम्बन्ध के मामले में उनका व्यवहार कुछ ढीला ही नजर आता है।

गरासियों में विवाह संस्कार खूब धूमधाम से और परम्परागत रूप से सम्पन्न होता है। इनमें विवाह की तीन रीतियां प्रचलित हैं। प्रथम रीति, जिसे मौरबंधिया कहते हैं, के अनुसार विवाह बहुत कुछ हिन्दुओं में प्रचलित ब्रह्म विवाह

के अनुरूप होता है जिसमे कि फेरे, चोरी और मौर (सेहरा) बांधना आदि की रस्म पूरी की जाती है। इस प्रकार के विवाह को ब्राह्मण ही सम्पन्न कराते हैं और उसके लिए उन्हें दक्षिणा, भेंट आदि दिये जाते हैं। विवाह की दूसरी रीति पहरावना कहलाता है। इसमें नाममात्र के फेरे होते हैं। और विवाह की रस्म को पूरा करने के लिए ब्राह्मण की आवश्यकता नही होती। तीसरी रीति का नाम ताणना है इस प्रकार के विवाह मे न तो सगाई की कोई रस्म होती है और न ही चोरी और फेरो की रस्मे पूरी की जाती हैं। इसमें वर पक्ष कन्या पक्ष को कन्या मूल्य वैवाहिक भेंट के रूप में देता है, और वह इस प्रकार से कि जब वर अपनी-वधू का स्वयं पसन्द कर लेता है तो वह अपनी इस वैवाहिक पसन्द या स्वीकृति को उस कन्या को जगल में पशु चराते समय छू कर व्यक्त करता है। इसके बाद इसकी सूचना स्वय वर अथवा उसके माता-पिता कन्या के माता-पिता को दे देते हैं। स्वीकृति की यह सूचना प्राप्त होने के बाद कन्या के माता-पिता गाव के सेलौत अर्थात् पचो को एकत्र करते है। ये पंच विवाह में दिये जाने वाले ढापा अर्थात् वैवाहिक भेंट निश्चित करते है। इस भेंट मे साधारणतया बारह बछड़े और बारह थान कपड़े निश्चित किये जाते हैं जो कि वर की ओर से कन्या के पिता को देना होता है। प्रत्येक पच को एक बछड़ा तथा एक थान कपड़ा दिया जाता है। इसके पश्चात् वर को यह अधिकार प्राप्त हो जाता है कि वह कन्या को घर ले जाये। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि वर अपनी पसन्द की कन्या को जगल में स्पर्श करने के बजाय उसका हरण कर लेता है। कन्या के माता-पिता अपने सगी साथियों के साथ उसका पता लगाने के लिए निकलते है और यह पता लग जाने पर कि उनकी कन्या किस घर में है, उस घर पर पथराव करने लगते है। इस बीच मे पंच वहां पहुंच जाते हैं और "ढापा" या वैवाहिक भेंट निश्चित करते हैं। "ढापा" अदा कर देने पर वैवाहिक सम्बन्ध को मान्यता प्रदान कर दी जाती है। इस प्रकार के विवाह में ढापा अदा करना बहुत जरूरी है इसीलिए जो लोग इसे तुरन्त एक मुश्त अदा नही कर पाते हैं वे किस्तों मे अदा कर देते हैं। कभी-कभी तो यह अदायगी दो पीढ़ियों तक भी चलती रहती है।

शिव, भैरव और दुर्गा देवी की पूजा गरासिया जनजाति के लोग बड़े ही श्रद्धाभाव से करते है। इनके अपने पुरोहित होते है जिन्हे 'भोपा' कहते हैं। फिर भी पुरोहित का कार्य अक्सर ब्राह्मण ही करते है। गरासिया लोग सफेद रंग के सब पशुओं को पवित्र मानते हैं, वह चाहे गाय हो अथवा बकरी या भेड़।

गरासिये अत्यन्त अन्धविश्वासी होते हैं और शकुन विचार पर बहुत विश्वास करते हैं उदाहरणार्थ, किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले वे गेहूँ, जो अथवा मक्का लेकर भैरवजी अथवा माताजी के मन्दिर जाते और भोग चढाते हैं। उस भोग में से पुजारी इन्हें जो प्रसाद देता है उसके दाने को वे गिनते हैं और यदि

वह गिनती शुभ सूचक परिणाम दर्शाती है तभी वे अपने उस कार्य को शुरू करते हैं वरना नहीं।

नाचती हैं और पुरुष इनके चारों ओर अपने ढोल बजाकर नाचते रहते हैं।

गरासियों में विधवा विवाह का प्रचलन देखने को मिलता है। यहा तक कि एक विवाहित स्त्री से कोई दूसरा पुरुष उसके जीवित पति को वैवाहिक भेंट देकर विवाह कर सकता है। गरासियों में शव को जला देने की प्रथा है और बारहवें दिन एक विशेष अन्तिम संस्कार किया जाता हैं तथा बिरादरी को भोज देने की प्रथा है।

सांसी जनजाति

राजस्थान की जनजातियो के विवरण में सांसियों का उल्लेख भी किया जा सकता है। सांसियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि इनकी उत्पत्ति सांसमल नामक एक व्यक्ति से हुई है। जो कि भरतपुर का निवासी था। इसी सासमल को सांसी जनजाति का पूर्वज माना गया है।

सामाजिक स्थिति के दृष्टिकोण से सासियों को बहुत ही नीचा स्थान प्राप्त है। इन्हे भगियो से भी नीचा माना जाता है क्योंकि ये भंगियों की झूठन तक भी खा लेते है। इतना ही नहीं, ये भंगियों का बड़ा सम्मान करते हैं और अपनी स्त्रियों को उनके सामने नचाते गवाते हैं और आपसी झगडों में भंगियो को निपटारा करने के लिए बुलाते हैं।

सांसी जनजाति आधारभूत रूप में एक खानाबदोश जनजाति है और इनका कोई स्थायी निवास नहीं होता है। वे एक जंगल से दूसरे जंगल में घूमते रहते हैं, जंगली पशुओं का शिकार करते हैं और पशु मांस व फल मूल आदि खूब खाते हैं। इनके सदस्य गिरोह के रूप में अपना डेरा डम्बर लेकर जगह बदलते रहते हैं और एक स्थान पर कुछ समय के लिए सब लोग एक साथ डेरा डालकर रहते हैं। ऐसा लगता है कि ये लोग मूल रूप से हिन्दू ही रहे हों ये क्योंकि इनमे हिन्दुओं की भांति

बहुत पसन्द है।

राजस्थान में सांसियों के दो उप भाग पाये जाते हैं। एक को बीजा और दूसरे को माला कहा जाता है। ये दोनों बहिर्विवाही समूह हैं; अर्थात् कोई भी उप समूह अपने ही समूह के अन्दर विवाह नहीं करता है, बल्कि अपने समूह के बाहर विवाह रचाते हैं। विवाह तय या निश्चित करना माता पिता का कर्त्तव्य होता है। इन लोगों में सगाई की रस्म बहुत ही अनोखे ढंग से मनाई जाती है और वह इस रूप में कि जब दो खानाबदोश समूह संयोग से घूमते हुए एक जगह मिल जाते हैं तो सगाई हो जाती है। और गिरी के गोले के लेन-देनमात्र से विवाह पक्का माना जाता है।

विवाह सम्बन्ध के बाहर यौन सम्बन्ध स्थापित करने के ये लोग बहुत खिलाफ होते हैं और इस प्रकार के अवैध सम्बन्ध स्थापित करने वालों के विरुद्ध कठोर दण्ड की व्यवस्था की जाती है और उसे जाति से भी निकाला जा सकता है।

क्षमा प्रदान करके फिर जाति में सम्मिलित कर लिया जाता है। राजस्थान के सांसियों में विधवा विवाह का प्रचलन नहीं है, परन्तु मृतक भाई की स्त्री को दूसरा भाई रखैल के रूप में अवसर रख लेता है। इस प्रकार यह जनजाति अपने परिवार की स्त्रियों को बाहर के पुरुषों के साथ शरीर सम्बन्ध स्थापित करने से रोकने का प्रयास करती है।

जनजाति अर्थ व्यवस्था—राजस्थान की जनजातियों की अर्थ व्यवस्था में सरकारी भरसक प्रयत्नों के बाद भी अभी महत्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ है।

कृषि भीलों की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार है। कुछ समय पूर्व तक ये लोग जंगलों को जला कर भूमि साफ करके कृषि किया करते थे, जिसे वे 'दाजिया' या 'झिमटी' कहते थे। जब धीरे-धीरे भूमि अनुपजाऊ हो जाती तो वे अन्य स्थान पर चले जाते। किन्तु वर्तमान समय में सरकार की नई वन नीति के कारण जंगलों को जलाने पर रोक लगादी गई है और अब वे स्थायी कृषि करने लगे हैं। कृषि के

पटवारी, अध्यापक, लिपिक आदि पदों पर काम करने लगे हैं तथा कुछ लोग ऊंचे पदों पर भी आसीन हैं।

मीणा लोगों में मुख्य रूप से चौकीदार मीणा व किसान मीणा दो तड़ हैं। किसान मीणों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है तथा ये लोग अन्य व्यवसाय भी करते हैं। आरक्षण के कारण सवाई माधोपुर और जयपुर जिले के बहुत से मीणे बहुत ऊंचे-ऊंचे पदों पर भी हैं। चौकीदार मीणा का अभी भी पेशा जरायम चोरी कमी वेसी है।

सांसी, कंजर जरायम पेशा जाति हैं जो घुमक्कड होने के कारण छोटे-छोटे हस्त शिल्प व कुटीर व्यवसाय के कार्य करती हैं। इसी प्रकार अन्य जनजातियों के भी इन्हीं से मिलते व्यवसाय हैं पर दिनो दिन जनजाति प्रगति कर रही है तथा राज्य सरकार का इनके विकास में बहुत हाथ है।

जनजाति आर्थिक विकास और राज्य सरकार—राज्य सरकार द्वारा इन लोगो के आर्थिक विकास के लिए निम्न सुविधायें प्रदान की जा रही हैं—

(1) कुटीर उद्योग का प्रशिक्षण।
(2) शिक्षा व प्रशिक्षण के लिए छात्रवृत्ति व अनुदान के रूप में आर्थिक सहयोग।
(3) बेरोजगारी भत्ता।
(4) कृषि कूप निर्माण ऋण एवं ब्याज का पुनर्भरण।
(5) कृषि भूमि का आवंटन।
(6) सरकारी ऋण।
(7) आवासीय भू-खण्डों का आवंटन।
(8) औद्योगिक क्षेत्र स्थापना।
(9) नियोजन।
(10) राजस्थान नहर क्षेत्र में भूमि एवं भवन निर्माण हेतु अनुदान।
(11) बसों एवं टेम्पुओं के क्रय हेतु ऋण।

(9) ग्रामीण विकास के विविध कार्यक्रम

(Various Economic Programmes for Rural Development)

(क) भेड़ व ऊन विकास कार्यक्रम

भेड़ों व ऊन का राजस्थान की अर्थ व्यवस्था में बड़ा महत्व है। भेड़ पालकों के आर्थिक उत्थान के कई कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। भेड़ों को संक्रामक रोगों से बचाने के संधन कार्यक्रम, सामान्य उपचार, नस्ल सुधार, प्रशिक्षण एवं

चरागाह विकास के विविध कार्यक्रमों के साथ लघु एवं सीमान्त कृषकों और कृषि श्रमिकों की आय के साधन बढ़ाने व रोजगार उपलब्ध कराने के लिए विशेष पशु-पालन कार्यक्रम के अन्तर्गत ऋण एवं अनुदान की वित्तीय सहायता दिलाकर भेड़ इकाइयों की स्थापना कराई जा रही है। इनका लाभ अनुसूचित जाति एवं जन-जाति परिवारों को भी मिल रहा है।

राज्य के 14 जिलों में 139 भेड़ व ऊन प्रसार केन्द्र, 695 उप केन्द्र तथा 36 कृत्रिम गर्भाधान प्रसार केन्द्र (मिनी फार्म) व 180 उप केन्द्र क्रियाशील हैं। इसके अतिरिक्त एक प्रशिक्षणालय, एक ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला, 5 भेड़ प्रजनन केन्द्र, 4 रोग अनुसन्धान प्रयोगशालायें और 4 परियोजना कार्यालय-सूखा-संभावित क्षेत्रीय विकास के अन्तर्गत तथा एक परियोजना कार्यालय मरु विकास योजना के अन्तर्गत है।

भेड़ के मांस एवं ऊन उत्पादन में वृद्धि और सुधार के लिये भेड़ों में संकर प्रजनन किया ज

गिक दोना ही

का कार्य जयपुर

जिलों क्षेत्रों में

36 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों के माध्यम से भी कराया जाता है। नर संकर मेमनों को (हाफब्रेड) चार-पांच माह की उम्र के होने पर क्रय कर मिनी फार्मों पर रखा जाता है तथा मेमनों के वयस्क होने पर निर्धारित दर पर भेड़ पालकों को उपलब्ध कराये जाते हैं। संकर नस्ल में ऊन उत्पादन और शारीरिक भार अधिक होता है। वर्ष 1980-81 में रायपुर (भीलवाड़ा) तथा चित्तौड़गढ़ तहसीलों में संकर प्रजनन का एक विशेष कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इसके अनुसार उक्त तह-सीलों के 20 ग्रामों के भेड़ पालकों ने अपने रेवड़ों में से देशी मेंढे पृथक् कर दिये और भेड़ों में संकर प्रजनन को अपनाया।

विशेष पशु पालन कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य के 10 जिलों यथा अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, चूरू, जालौर, बीकानेर, पाली एवं नागौर में भेड़ व ऊन प्रसार केन्द्रों के माध्यम से भेड़ विकास का कार्य चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत लघु एवं सीमान्त कृषकों को भेड़ पालन से आय के साधन बढ़ाने के लिए भेड़ इकाई की स्थापना हेतु ऋण एवं अनुदान के रूप में वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। लघु कृषकों को सम्पूर्ण राशि का चौथाई भाग और सीमान्त कृषकों तथा श्रमिकों को एक तिहाई भाग अनुदान के रूप में दिया जाता है। शेष राशि ऋण के रूप में उपलब्ध होती है। जनजाति परिवार को 50 प्रतिशत ऋण और 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है।

में सूखा सम्भावित क्षेत्रों में विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत जोधपुर,

नागौर, जालौर और चूरू में चरागाह भू-खण्डों के विकास और भेड़ों के रेवड़ों के सही प्रबन्ध के लिए कार्य किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत 100-100 हैक्टेयर भू-खण्डों का चयन व अधिग्रहण कर उस पर तारबन्दी एवं बीजारोपण कर चरागाह विकास किया जा रहा है और विकसित चरागाहों में भेड़ों को प्रवेश देकर चराई सुविधा कराई जा रही है। इन चरागाह भूखण्डों पर भेड़ों के आवास के लिए शीप शेड तथा वर्षा का जल एकत्रित करने के लिए जल कुण्डों का निर्माण कराया जा रहा है। जिसमे चरागाह भूखण्डो पर भेड़ों को पीने का पानी उपलब्ध हो सके। इसके अतिरिक्त भेड़ो व चरागाह भूखण्डों की देखरेख के लिए चौकस घर भी बनाये गये हैं। इन भूखण्डों को विकसित होने पर इन्हें सहकारी समिति को दे दिया जाता है।

मरु विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत भेड़ नस्ल सुधार के लिए झुंझुनू मे 8 एवं चूरू में 4 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र और झुंझुनू में एक रोग अनुसंधान केन्द्र चल रहा है। भेड़ पालकों को उन्नत एवं नवीन विधियो का ज्ञान कराने के लिए जोधपुर, नागौर, चूरू, जैसलमेर, जालौर, सीकर, झुंझुनू, पाली एवं बाडमेर जिलो मे भेड़ पालकों को प्रशिक्षण दिया गया।

निजी भूखण्डो पर चरागाह विकसित करने के लिए प्रति भेड़ पालक को विकास अनुदान के रूप में 31 रुपये और क्षतिपूर्ति राशि के रूप मे 200 रुपये प्रति हैक्टेयर देने का प्रावधान है। इसके लिए भेड़ पालको को प्रोत्साहित किया जाता है।

1980-81 से इस कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य के भेड़ प्रजनन फार्म फतेहपुर को बीज मेंढ़ा उत्पादन के लिए लिया गया है। फार्म पर रशियन मेरीनो मेंढों से देशी भेड़ों में संकर प्रजनन कराकर बीज मेढ़ा उत्पादन किया जा रहा है।

फैडरेशन द्वारा ऊन के क्रय पर सहकारी समितियो को 20 पैसा प्रति किलो कमीशन के रूप में दिया जाता है। इन समितियों से पशुओं के क्रय करने पर भी उन्हे 2 से 3 प्रतिशत राशि बतौर कमीशन देता है। फैडरेशन द्वारा अब तक कुल मिलाकर 814 टन ऊन और लगभग 20 हजार पशुओं का क्रय किया गया है।

फैडरेशन द्वारा अलवर में कम्पोजिट मीट प्लांट का संचालन भी किया जाता है। जनता को शुद्ध, ताजा व स्वास्थ्यवर्द्धक मांस उपलब्ध कराने के लिए दिल्ली और जयपुर में मीट की बिक्री की दुकानें चलाई जा रही हैं।

राज्य के घुमक्कड भेड़ पालकों की एक भेड़ पालन सहकारी समिति का भी गठन एवं पंजीयन किया गया है। भेड़ पालको की यह सहकारी समिति देश में अपने प्रकार की एकमात्र सहकारी संस्था है।

छठी पंचवर्षीय योजना में भेड़ व उन विभाग के लिए 431 लाख रुपये का प्रावधान किया गया है। इसमें से 80–81 के लिए 67 लाख रुपये था एवं वर्ष 1981–82 के लिए 65 लाख रुपये का प्रावधान किया गया था। इस पूरी राशि का इन वर्षों में उपयोग हुआ है।

(ख) श्वेत क्रान्ति

सिंचाई क्षमता में वृद्धि के साथ जैसे प्रदेश में हरित क्रांति होगी, वैसे ही डेयरी विकास से श्वेत क्रान्ति आएगी। राजस्थान सहकारी डेयरी संघ के 9 संयंत्रों की स्थापना के बाद उनमें पूरी क्षमता से उत्पादन होने पर 1984 तक 10 लाख लीटर दूध प्रतिदिन उपलब्ध कराया जा सकेगा। (११½ लाख ली

इस उत्पादन का कम से कम आधा दूध इससे बनने वाली वस्तुओं में उपयोग में लाया जायगा तथा शेष दूध बेचा जायगा।

संघ पूरे देश में दूध से बनने वाली वस्तुएं जिसमें मिल्क फूड, दुग्ध पाउडर, बिना चर्बी का शुष्क दूध, मक्खन, पनीर, घी तथा अन्य दूध से बनी हुई वस्तुओं के उत्पादन और विक्रय के दीर्घकालीन प्रबन्ध भी कर रहा है।

राजस्थान मे अभी भी अतिरिक्त मात्रा मे दुग्ध उत्पादन होता है। यहां से करीब करीब 2½ लाख लीटर दूध प्रतिदिन दिल्ली भेजा जाता है तथा शेष बचे हुए दूध का उपयोग दूध से बनने वाली अन्य वस्तुओं में किया जाता है।

राज्य सरकार ने दुग्ध उत्पादन कार्यक्रम व्यवस्थित रूप से चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम चरण में हाथ मे लिया था। इसके अन्तर्गत ग्राम स्तर पर प्राथमिक दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों का गठन किया गया। वर्तमान में राज्य के 19 जिलों में 2426 प्राथमिक दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियां कार्यरत हैं।

ग्राम स्तरीय दुग्ध सहकारी समितियों के सफल एवं व्यवस्थित संचालन की दृष्टि से जिला स्तर पर भी दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ कायम किए गये।

जिला स्तरीय दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों को इनकी शीर्ष संस्था राजस्थान सहकारी डेयरी संघ से सम्बद्ध किया गया। इस संघ का मुख्य कार्य राज्य मे डेयरी विकास की योजना बनाकर क्रियान्वित करना तथा जिला संघों के कार्यों में समन्वय स्थापित करना है। संघ ने राज्य मे अनेक स्थानो पर डेयरी संयत्रों तथा दुग्ध अवशीतन केन्द्रों की स्थापना की है। इसके अतिरिक्त संघ दुग्ध उत्पादन बढाने के लिए तकनीकी सामग्री देने, दुग्ध संग्रह तथा उसके विपणन तक की व्यवस्था करता है। इसके अलावा यह संघ पशु आहार फैक्ट्रियों, सतुलित आहार के वितरण तथा जमा हुआ वीर्य सुलभ कराने की भी व्यवस्था करता है।

आपरेशन फ्लड—बीकानेर जिले मे "आपरेशन फ्लड-1" के अन्तर्गत डेयरी विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया, जिसके तहत 1 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता

वाले डेयरी संयंत्र की स्थापना की गई। यह संयंत्र दूध उत्पादन में राष्ट्र में इस वर्ष (1983) प्रथम घोषित किया गया है।

राष्ट्रीय डेयरी विकास मण्डल ने "ग्रापरेशन फ्लड-2" परियोजना बनायी है। जिसमें 15 जिले अलवर, भरतपुर, जयपुर, अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, जोधपुर, नागौर, पाली, जालौर, सिरोही, उदयपुर एवं डूंगरपुर सम्मिलित हैं। राज्य के अन्य जिलों में एकाधिक कार्य होने से उनके लिए भी "आपरेशन फ्लड" तैयार किये जा रहे हैं।

सूखा संभाव्य क्षेत्रीय कार्यक्रम—इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जोधपुर में 1 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता के डेयरी संयंत्र का निर्माण किया गया तथा पोकरण, पाली, बालोतरा, मेड़ता सिटी, लूणकरणसर व सरदारशहर में 10 हजार लीटर प्रतिदिन क्षमता के दुग्ध अवशीतन केन्द्रों की भी स्थापना की गई। इन सभी अवशीतन केन्द्रों की क्षमता अब 20 से 30 हजार लीटर प्रतिदिन तक बढ़ाई गई है। इसके साथ ही जोधपुर एवं बीकानेर डेयरी संयंत्रों की वर्तमान क्षमता भी एक लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 1.5 लाख लीटर कर दी गई है। इसके अतिरिक्त बाड़मेर, नागौर, फलौदी, फालना, राजगढ़ व छत्तरगढ़ में नये अवशीतन केन्द्रों का निर्माण किया जा रहा है।

मरु विकास कार्यक्रम—मरु विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत गंगानगर जिले के हनुमानगढ़ में 1 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता के डेयरी संयंत्र की स्थापना की जा-रही है। सूरतगढ़, नोहर, गंगानगर एवं झुन्झुनू में भी 20 हजार लीटर प्रतिदिन क्षमता के दुग्ध अवशीतन केन्द्रों की स्थापना की जा रही है।

विश्व बैंक परियोजना—विश्व बैंक की सहायता से 1975 में डेयरी परियोजना प्रारम्भ की गई। इस परियोजना के अन्तर्गत राज्य के पूर्वी जिले अलवर, जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर तथा टोंक आते हैं। अलवर में 1 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता के डेयरी संयंत्र की स्थापना की जा चुकी है। जयपुर में भी 1·5 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता के डेयरी संयंत्र का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। इसी प्रकार भीलवाड़ा और अजमेर के डेयरी संयंत्रों का निर्माण कार्य भी पूरा हो गया तथा उन्होने कार्यारम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त तिजारा, कोटपूतली, मालपुरा एवं भीलवाड़ा में भी अवशीतन केन्द्र स्थापित कर दिये गये हैं, इसके साथ-साथ ब्यावर, विजयनगर, गंगापुर सिटी तथा सवाई माधोपुर में अवशीतन केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं।

राज्य योजना कार्यक्रम—राज्य योजना के अन्तर्गत कोटा व उदयपुर में स्थानीय दूध की माग की पूर्ति के लिए प्रत्येक में 25 हजार लीटर प्रतिदिन क्षमता के डेयरी संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है। डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा में 10 हजार लीटर प्रतिदिन क्षमता के अवशीतन केन्द्रों की स्थापना की जा रही है।

आर्थिक लाभ—राज्य में डेयरी विकास कार्यक्रम के अन्त 1 लाख गंतसे

अधिक किसान परिवारों को अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित किया जा चुका है। इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पिछले पांच वर्षों में प्रति कृषक परिवार की वार्षिक आय लगभग 600 रुपये से बढ़कर तीन हजार रुपये तक हो गई है।

(ग) मरु विकास कार्यक्रम

सूखा सम्भावित क्षेत्र परियोजना के समानान्तर दूसरी केन्द्रीय प्रवर्तित योजना मरु विकास कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा 1977–78 से प्रारम्भ की गई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मरुस्थल के प्रसार को रोकना, इस क्षेत्र का आर्थिक विकास तथा रोजगार की सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

यह कार्यक्रम 11 जिलों यथा सीकर, गंगानगर, झुंझुनू, पाली, नागौर, बीकानेर, बाड़मेर, जालौर, जैसलमेर, जोधपुर व चूरू में क्रियान्वित किया जा रहा है। इन जिलों की कुल 85 पंचायत समितियों में यह कार्यक्रम चल रहा है।

जिन विकास कार्यक्रमों को अपनाया गया है उनमें मुख्यतः कृषि विकास, मरुस्थलीय वन विकास, भू-जल सर्वेक्षण, डेयरी विकास, लघु सिंचाई, पशु स्वास्थ्य, भेड़ एवं चरागाह विकास, विद्युतीकरण एवं व्यक्तिगत लाभकारी योजनाएं हैं। 1977–78 से वर्ष 1979–80 के अन्त तक इस कार्यक्रम पर करीब 17.31 करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके हैं तथा 1980–81 में 9.89 करोड़ रुपये व्यय करने का प्रावधान रखा गया था। संक्षेप में इसकी विभिन्न उपलब्धियां ये हैं–

1. भू-संरक्षण कार्यक्रम (जल गृह निर्माण कार्य)	30400 हैक्टेयर
2. भू-जल विकास	3 कुओं का निर्माण
3. लघु सिंचाई	61 लघु सिंचाई कार्य
4. सिंचित क्षेत्र में वृद्धि का अनुमान 6357 हैक्टेयर	
5. डेयरी विकास	12 सहकारी समितियों का गठन जोधपुर एवं बीकानेर डेरियों की दुग्ध उत्पादन क्षमता में विस्तार।
6. भेड़ विकास कार्यक्रम	1221 भेड़ पालकों को प्रशिक्षण।
7. वन विकास	19323 हैक्टेयर में वृक्षारोपण तथा 15.31 लाख पौधे फार्म फोरेस्ट्री के अन्तर्गत लगाये गये।
8. शैल्टर बेल्ट वृक्षारोपण	2980 रो.कि.मी. लम्बाई में वृक्षारोपण।
9. पशु स्वास्थ्य	66 पशु स्वास्थ्य केन्द्र एवं 7 सर्रा नियंत्रण इकाइयों की स्थापना।
10. विद्युतीकरण	1210 कुओं का विद्युतीकरण किया गया तथा 371 गावों को विजली प्रदान की गई। नीम का-थाना, कोटपूतली व बाड़मेर, बालोतरा 132 के. वी. लाइनों का निर्माण कार्य।

11. दुधारु मवेशी, बैल व गाड़ियों 6516 व्यक्ति लाभान्वित हुए।
की खरीद (काश्तकारों द्वारा)
12. कुए (निजी काश्तकारों द्वारा) 106
13. पम्प सेट्स 34

(घ) सूखा सम्भावित क्षेत्र कार्यक्रम

सूखा सम्भावित क्षेत्र कार्यक्रम 1974-75 से प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम के अधीन उन जिलो व पंचायत समितियों को लिया गया है। जिनमें वर्षा कम होती है और जो बार-बार अकालग्रस्त होते रहते हैं।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दस जिले जोधपुर, नागौर, पाली, जालौर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, चूरू, डूंगरपुर, और बांसवाड़ा तथा 3 जिलों की 6 तहसीलें, जिनमे उदयपुर की भीम, देवगढ़ एवं खेरवाडा, झुन्झुनू की झुन्झुनू एवं चिड़ावा तथा अजमेर की ब्यावर तहसीलें ली गई है। इस प्रकार राज्य की कुल 79 पंचायत समितियों में यह कार्यक्रम चल रहा है।

इसके अन्तर्गत जिन विकास कार्यक्रमों को अपनाया गया है। उनमें मुख्य है— कृषि, भू-जल सर्वेक्षण, लघु सिंचाई, पशु-धन, डेयरी, भेड़ एवं चरागाह विकास, वन-विकास, विद्युतीकरण एवं व्यक्तिगत लाभकारी योजनाएं। 1974-75 से 1979-80 तक करीब 49 करोड़ रुपया व्यय किया गया और 1980-81 में 11.40 करोड़ रुपये व्यय करने का प्रावधान था।

संक्षेप में इस कार्यक्रम की विभिन्न उपलब्धियां अग्रांकित हैं :—

1. भू-संरक्षण कार्यक्रम — 14472 हैक्टेयर
2. भू-जल — 4366 कुओं का निर्माण
3. सिंचाई — 248 सिंचाई कार्य
4. सिंचित क्षेत्र में वृद्धि का अनुमान — 42900 हैक्टेयर
5. डेयरी — 768 सहकारी समितियों का गठन। 10,000 से 30,000 लीटर प्रतिदिन क्षमता के 6 दुग्ध अवशीतन संयंत्र व 1 से 1·50 लाख लीटर दूध प्रतिदिन की क्षमता वाली 2 डेरियों का निर्माण।
6. भेड़-कार्यक्रम — 132 भू-खण्ड 100 हैक्टेयर साइज के बनाये और उनका विकास किया।
7. व्यक्तिगत चरागाह का विकास — 858 हैक्टेयर

8. वन विकास	49033 हैक्टेयर में वृक्षारोपण।
9. शेल्टर बैल्ट प्लांटेशन	30 कि. मी. की लम्बाई में वृक्षारोपण।
10. कुण्डो (फार्म पोण्ड) का निर्माण	2871
11. दुधारु मवेशी बैल व गाड़ियों की खरीद (काश्तकारो द्वारा)	15482 व्यक्ति लाभान्वित।
12. कुए (निजी काश्तकारों द्वारा)	2658
13. पम्प सेट्स	3743
14. विद्युतीकरण	जोधपुर, नागौर लाइन, रतनगढ़, नागौर, लाइन व चूरू मे 132 के. वी. ग्रिड सब स्टेशन का निर्माण।
15. ग्रामीण जलदाय योजना	बाड़मेर, बीकानेर तथा चूरू जिलो में 13 परियोजनाओं का कार्यारम्भ। इनसे 82 गांवों में 50,000 जनसंख्या को पीने के पानी की राहत। अब तक 44 गांवों में पेयजल व्यवस्था उपलब्ध।

अब तक के 60 करोड़ के व्यय में से अधिकतम खर्च–10 करोड़ रुपया सिंचाई पर किया गया है। उसके बाद भू-जल सर्वेक्षण में 7 88 करोड़, डेयरी विकास मे 7·75 करोड़ विद्युतीकरण में 8·37 करोड़ और भू-संरक्षण में 6·30 करोड़ का व्यय 1980–81 के अन्त तक होने का अनुमान था। गत वित्तीय वर्ष में 11·40 करोड़ रु. खर्च करने का प्रावधान था।

1981–82 के लिए 1080 लाख रुपये का प्रस्ताव रखा गया था। इनमें से 897.80 लाख रुपये प्रतिभूति (कम्यूटेड) राशि एवं 182·20 लाख रुपये नवीन (न्यू) राशि के लिए प्रस्तावित थे। 1981-82 के लिए मुख्यत: कृषि के लिए 196·91 लाख, भू-जल 116·31 लाख, सिंचाई 159·02 लाख, भेड़ एवं चरागाह 62·51 लाख, पशु एवं डेयरी 77·59 लाख, वन विकास 123 08 लाख, विद्युतीकरण 83·31 लाख, दुग्ध मार्ग 174·02 लाख, सहकारिता 14·56 लाख, भू-अभिलेख 7·78 लाख, लाठी सीरीज 17 31 लाख, सेरीकल्चर 1·00 लाख, जिला विकास अभिकरण 39·72 लाख एवं परियोजना प्रकोष्ठ के लिए 6·78 लाख रुपयों का आवंटन प्रस्तावित था।

1981–82 मे कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत 1334 हैक्टेयर क्षेत्र में नवीन जल ग्राह्य योजना का क्रियान्वयन एवं एक नवीन नर्सरी, भू-जल कार्यक्रम मे 112 मध्यम क्षमता, 142 लघु क्षमता एवं लगभग 900 कुओं को गहरा करने का प्रस्ताव था।

पशु एवं डेयरी कार्यक्रम के अन्तर्गत 250 लीटर प्रतिदिन दुग्ध संकलन,

70 नवीन दुग्ध सहकारी समितियां, 3000 टन सन्तुलित आहार का वितरण, भेड़ विकास में 15 नवीन 100 हैक्टेयर वाले प्लांट का विकास, वन विकास में 3150 हैक्टेयर नवीन क्षेत्र में वृक्षारोपण एवं 6·50 लाख नवीन पौधों का लगाया जाना प्रस्तावित था। विद्युतीकरण के अन्तर्गत अलाभकारी लाइन का निर्माण एवं रतनगढ़-नागौर लाइन का पूर्ण विद्युतीकरण, दुग्ध मार्ग के अन्तर्गत लगभग 87 किलोमीटर का निर्माण, ग्रामीण जल प्रदाय योजना के अन्तर्गत बचे हुए 38 ग्रामों को लाभान्वित करने एवं लाठी सीरीज के अन्तर्गत 2 नर्सरी, 350 फल वाले वृक्षों एवं 12 गायों की खरीद का लक्ष्य प्रस्तावित किया गया था। इन सब पर प्रस्तावित खर्चे से अधिक राशि इन कार्यक्रमों पर व्यय की गई।

(ड) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम

एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के लिये गत वित्तीय वर्ष में आवंटित कुल 10·3 करोड़ रु. की राशि से भी अधिक 11·2 करोड रुपये व्यय किये गये।

इसके अतिरिक्त वित्तीय संस्थाओं से भी बीस करोड रुपये का सहयोग प्राप्त हुआ। इस प्रकार गरीबी उन्मूलन के लिए कुल 31 करोड़ रुपये की राशि गत वित्तीय वर्ष में व्यय की गयी और एक लाख से भी अधिक परिवार गरीबी की सीमा रेखा से ऊपर लाये गये।

इस कार्यक्रम पर 1977-78 में 193.14 करोड़ रुपये खर्च किये गये थे जबकि 1978-79 में 697·63 लाख रुपये खर्च हुये। 1979-80 में यह राशि 820·23 लाख रुपये तक बढ़ गयी।

1980-81 मे 1120·48 लाख रुपये व्यय होने से 1978-79 में हुये कार्य के मुकाबले 65 प्रतिशत तथा 1979-80 में हुए कार्य के मुकाबले 45 प्रतिशत अधिक कार्य निष्पादित हुआ।

राज्य सरकार द्वारा संकलित सूचनाओं के अनुसार इस कार्यक्रम के लिए उपयोग में ली गयी राशि के आधार पर राजस्थान देश में प्रथम रहा है।

उल्लेखनीय है कि अंत्योदय कार्यक्रम में तीन वर्ष की अवधि में जहां 17 करोड़ रुपये खर्च किये गये थे वहां एकीकृत ग्रामीण विकास योजना पर 1980-81 के एक वर्ष मे 31 करोड़ रुपये खर्च किये गये। इसके अलावा एकीकृत ग्रामीण विकास योजना अक्टूबर, 1980 तक जहां राज्य के 133 खण्डों में ही लागू थी वह अब सभी 236 खण्डों में लागू कर दी गयी है।

ग्रामीण पुर्ननिर्माण मन्त्रालय की नीति के अनुसार 1981-82 में प्रत्येक खण्ड पर 6-6 लाख रुपये खर्च किये जाने चाहिये थे। लेकिन राजस्थान सरकार ने इससे भी अधिक प्रति खण्ड पर आठ लाख रुपये खर्च किये हैं। इस कार्यक्रम

पर होने वाले व्यय में पचास प्रतिशत राशि केन्द्रीय सरकार तथा पचास प्रतिशत राशि राज्य सरकार ने वहन की।

राशि के इस आवंटन के तहत राज्य सरकार ने लगभग 1.60 लाख से 1.70 लाख लोगों को 1981-82 में गरीबी की सीमा रेखा से ऊपर उठाने में कामयाबी हासिल की।

(च) कृषि विकास कार्यक्रम

वर्ष 1979-80 में कम एवं असमान वर्षा की स्थितियों के कारण राज्य को भयंकर सूखे की स्थिति का सामना करना पड़ा था। सूखे की इन विषम स्थितियों से राज्य उभर भी नहीं पाया था कि इसके दूसरे वर्ष भी प्रदेश के अधिकांश जिलों को सूखे की स्थिति से जूझना पड़ा। खरीफ में वर्षा के अभाव में जहा खड़ी फसलों को क्षति पहुँची वहा राज्य के जल स्रोतों में भी पानी का अभाव रहा, जिससे खरीफ की फसलो को भारी नुकसान पहुँचा। खरीफ की फसलों में यह नुकसान 50 से 80 प्रतिशत आंका गया।

खरीफ मे व्याप्त सूखे की स्थितियों का रबी की फसलो पर भी काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, यद्यपि सितम्बर में थोड़ी वर्षा हुई किन्तु कुल मिलाकर वर्षा का अभाव ही रहा, जिसके फलस्वरूप भूमि में नमी बहुत कम हो गई और कुओं का जलस्तर भी काफी कम हो गया जिसके फलस्वरूप कुओं के अन्तर्गत सिंचित क्षेत्र में कमी हुई। जलाभाव की इन स्थितियों के कारण रबी की फसलों की बुवाई अपेक्षाकृत कम क्षेत्र मे हो पाई। इस प्रकार इसके दूसरे वर्ष भी पुन: सूखे की स्थिति से खरीफ व रबी दोनों फसलों के बुवाई क्षेत्रों में कमी हुई।

कृषि उत्पादन—इन सब विपरीत स्थितियों के बावजूद राज्य मे विभिन्न कृषि कार्यक्रमों के माध्यम से बुवाई क्षेत्र व उत्पादन में बढ़ोत्तरी के कारण प्रयास किये गये। वर्ष 1979-80 की खरीफ की फसल के अन्तर्गत 77.86 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में बुवाई की गई जबकि वर्ष 1980-81 में 80.60 लाख हैक्टेयर में बुवाई की गई। इसी प्रकार वर्ष 1979 के उत्पादन 12.76 लाख टन के मुकाबले 19.90 लाख टन खरीफ खाद्यान्न तथा 28.10 लाख टन रबी का उत्पादन हुआ। खरीफ तिलहन के अन्तर्गत वर्ष 1980-81 में 0.26 लाख टन तिल तथा 1.45 लाख टन मूंगफली का उत्पादन हुआ। वर्ष 1979-80 में गन्ने का 11.59 लाख टन उत्पादन हुआ जबकि वर्ष 1980-81 में 13.70 लाख टन उत्पादन हुआ। इसी प्रकार पूर्व वर्ष में कपास की 4.79 लाख गाठों का उत्पादन हुआ जबकि वर्ष 1980-81 में 5.30 लाख गांठों का उत्पादन किया गया।

अपर्याप्त वर्षा के कारण उत्पादन, सूखे के कारण गंग, भाखरा, चम्बल एवं राजस्थान नहर में 25 से 30 प्रतिशत कम सिंचाई होने के कारण उत्पादन में

अधिक कमी होने की आशंका पैदा हो गई थी। इस कमी को पूरा करने के लिए उन्नत बीजों व उर्वरकों के अधिक व समुचित प्रयोग तथा उपलब्ध सिंचाई साधनों के भरपूर उपयोग आदि तकनीक के प्रसार के विशेष प्रयत्न किये गये। रबी की फसलों के लिए सिंचाई हेतु डीजल एवं बिजली की समुचित सप्लाई की गई।

बीज वितरण—सूखे की स्थिति के बावजूद वर्ष 1980-81 में लगभग 89 हजार क्विंटल अधिक उपज देने वाले बीजों की व्यवस्था की गई जबकि वर्ष 1979-80 में 84 हजार क्विंटल बीज वितरित किया गया था। इसके अतिरिक्त वर्ष 1980-81 में 18 हजार क्विंटल अन्य फसलों के उन्नत बीजों की व्यवस्था की गई जबकि वर्ष 1979-80 में 14 हजार क्विंटल अन्य फसलों के उन्नत बीजों का वितरण किया गया। इस प्रकार कुल मिलाकर वर्ष 1980-81 में 9 प्रतिशत की वृद्धि रही। इसी प्रकार वर्ष 1980-81 में अधिक उपज देने वाले बीजों के अन्तर्गत 19 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में बुवाई की गई जबकि इसके पहले वर्ष यह क्षेत्र 16.63 लाख हैक्टेयर था। इस प्रकार वर्ष 1980-81 में अधिक उपज देने वाली किस्मों के अन्तर्गत क्षेत्र में 21 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई।

उर्वरक—कृषि विस्तार की समयानुकूल नीतियों को अपनाये जाने के परिणामस्वरूप वर्ष 1980-81 में 1.66 लाख टन उर्वरक वितरित किया गया जो अब तक के उर्वरक वितरण में सर्वाधिक था। वर्ष 1979-80 में 1.47 लाख टन उर्वरक काम में लिया गया था। इस प्रकार यह बढ़ोत्तरी 15 प्रतिशत रही थी।

पौध संरक्षण—फसलों को कीड़ों व बीमारियों से बचाने हेतु कीटनाशक औषधियों का उपयोग राज्य में निरंतर बढ़ रहा है। 1979-80 में 1798 टन औषधियों का वितरण किया गया था। जबकि वर्ष 1980-81 में 2415 टन औषधियों का वितरण किया गया। वर्ष 1981-82 में 3,000 टन औषधियां वितरित किये जाने का लक्ष्य था। वर्ष 1979-80 में 31.28 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में पौध संरक्षण के उपाय अपनाये गये थे जबकि वर्ष 1980-81 में 49.98 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में पौध संरक्षण कार्य किया गया तथा वर्ष 1981-82 में 63 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में पौध संरक्षण कार्य किये जाने का लक्ष्य रखा गया था।

(छ) सिंचाई सुविधाओं का विस्तार कार्यक्रम

राज्य की 1980-81 की वार्षिक योजना के अन्तर्गत सिंचाई मद में 6863.21 लाख रु. का प्रावधान रखा गया था। इसमें से 2900.00 लाख रु. राजस्थान नहर, 544.00 लाख रु. ब्यास परियोजना, 600.00 लाख रु. माही बजाज सागर, 361 लाख रु. अन्तर्राष्ट्रीय विकास सहायता के तहत सिंचाई कार्यों, 728.21 लाख रु. अन्य बहुउद्देशीय व वृहद योजनाओं, 1250 लाख रु. मध्यम

परियोजनाओं, 400.00 लाख रु. आधुनिकीकरण योजनाओं तथा 80.00 लाख रु. सर्वेक्षण एवं अनुसंधान कार्यों के लिये थे। इसके अतिरिक्त 300.00 लाख रु. बाढ़ नियन्त्रण कार्यों के लिये रखे गये थे।

इसके अतिरिक्त सिंचाई विभाग द्वारा नियन्त्रित अन्य वृहद, मध्यम व आधुनिकीकरण एवं बाढ़ परियोजनाओं के लिये 2758.21 लाख रु. का प्रावधान रखा गया था जिसे बाद मे संशोधित कर 2472.21 लाख रु. कर दिया गया था।

बहुउद्देशीय परियोजनाएं—1980–81 में बहुउद्देशीय परियोजना के अन्तर्गत 7 अधूरे कार्य जलोत्थान योजना, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर, बूंदी ब्रांच विस्तार और कोटा सिंचाई बांध को ऊंचा उठाने के प्रस्ताव थे। इनमें प्रथम चार कार्य पूर्व से ही चालू थे, शेष नवीन कार्य थे। इनके लिये संशोधित प्रावधान 152.21 लाख रु. का था।

वर्ष 1981–82 में इन योजनाओं पर 345.00 लाख रु. का प्रावधान रखा गया। *इन सभी कार्यों का छठी पंचवर्षीय योजना में पूर्ण होना सम्भावित है।* इन योजनाओं के पूर्ण होने पर जलोत्थान योजना से लगभग 53 हजार हैक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

छठी पंचवर्षीय योजना काल में बहुउद्देशीय परियोजनाओं के लिये 1386 लाख रु. का प्रावधान है।

वृहद परियोजनायें—1980–81 में 5 वृहद परियोजनाओं जाखम, गुड़गांव नहर, नर्मदा, सिद्धमुख नहर व नोहर पर कार्य करना प्रस्तावित था। इनमें नोहर फीडर और सिद्धमुख का कार्य कुछ अन्तर्राज्यीय विवादों के कारण आरम्भ नहीं किया जा सकता। शेष तीन परियोजनाओं के लिये 480 लाख रु. के संशोधित प्रस्ताव थे। इसके विरुद्ध इन योजनाओं पर 484.22 लाख रु. व्यय हुआ। जो प्रस्ताव से अधिक था।

1981–82 में इन योजनाओं के लिये 697.00 लाख रु का प्रावधान प्रस्तावित था।

मध्यम परियोजनायें–1980-81 मे मेजा फीडर, भीम सागर, सोम कामला, सोमकागदर, कोठारी, गोसुंदा, वागन डाइवर्शन, बस्सी, हरिशचन्द सागर, गिलास, छापी और छापना कुल 12 मध्यम परियोजनाओं पर कार्य प्रस्तावित था। इनमे विलास और छापी नवीन परियोजनाएं थी, शेष परियोजनाए पूर्व वर्षों से चालू थी। इनके लिये 1060 लाख रु. का संशोधित वित्तीय प्रावधान किया गया था। इन पर 1071.40 लाख रु. व्यय होने का अनुमान था, जो प्रस्तावित राशि से अधिक था। इसके अतिरिक्त पूर्ण हुई डाया, गोपालपुरा और झाडोन मध्यम परियोजनाओं के लिये बकाया छोटे मोटे कार्यों को पूर्ण करने के लिये 5 लाख रु प्रस्तावित किये गये थे, जो करीब-करीब व्यय हो चुके थे।

गोसून्दा परियोजना को छोड़कर शेष सभी मध्यम परियोजनाओं का कार्य छठी पंचवर्षीय योजनावधि में पूर्ण होने की सम्भावना है, जिससे लगभग 59 हजार एकड़ भूमि में सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

आधुनिकीकरण परियोजनाएं—राज्य में पूर्ण परियोजनाओं की सिंचाई क्षमता में कमी न आने देने तथा इनमें और सुधार लाने के लिये पिछले तीन वर्षों से आधुनिकीकरण कार्य किये जा रहे हैं।

1980–81 मे 19 परियोजनाओं पर आधुनिकीकरण कार्य जारी था। ये हैं—गूढा (बूंदी), अलनिया (कोटा), पार्वती (भरतपुर), परवन (झालावाड़), जसवन्त सागर (जोधपुर), बांकली (जालौर). जवाई (पाली), माशी (टोंक), गलवा (टोंक), राजसमन्द (उदयपुर), गम्भीरी (चित्तौड़), मेजा (भीलवाड़ा), जग्गर (सवाई माधोपुर), छापरवाड़ा (जयपुर), कालख सागर (जयपुर), पार्वती (कोटा), जयसमन्द (अलवर), जयसमन्द (उदयपुर) तथा मोरेल (सवाई माधोपुर)।

इनके लिए 400.00 लाख रु. का प्रस्ताव रखा गया था। इसके विरुद्ध व्यय 510.00 लाख रुपये का हुआ था।

इनमें से 12 परियोजनाओं का कार्य छठी पंचवर्षीय योजनावधि मे समाप्त किये जाने की सम्भावना है।

वर्ष 1981-82 में आधुनिकीकरण योजनाओं के लिए 400.00 लाख रुपये का प्रावधान रखा गया था और लगभग 8000 हैक्टेयर अतिरिक्त भूमि में सिंचाई क्षमता प्राप्त हो पाई थी।

लघु सिंचाई योजनाएं—राज्य मे 1979–80 के अन्त तक 584 लघु सिंचाई योजनाओं का कार्य पूर्ण किया गया, जिनसे करीब 1.48 लाख हैक्टर भूमि की सिंचाई क्षमता प्राप्त हुई।

वर्ष 1980-81 में 106 लघु सिंचाई योजनाओं पर कार्य प्रगति पर था, जिनमें 17 परियोजनाएं जनजाति विकास क्षेत्र के लाभार्थ थी।

इन योजनाओं पर इस अवधि मे 500 लाख रुपये के व्यय प्रावधानों के मुकाबले 517.82 लाख रुपये व्यय हुए थे।

इनके अतिरिक्त योजना सहायता, सूखा संभाव्य विकास कार्यक्रम, मरु विकास कार्यक्रम, जनजाति क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम, अकाल राहत कार्य, बाढ़ सुरक्षा कार्य तथा अनुसंधान व सर्वे कार्यों के अन्तर्गत भी सिंचाई कार्य चलाये जा रहे हैं।

वर्ष 1981-82 में सिंचाई मद मे राजस्थान नहर, माही और व्यास परियोजनाओं तथा अन्तर्राष्ट्रीय विकास सहायता के तहत सिंचाई कार्यों के अतिरिक्त चम्बल संभाग की बहुउद्देशीय परियोजना के 6 कार्य 5 वृहद, 13 मध्यम

और 21 आधुनिकीकरण परियोजनाओं पर कार्य किये जाने का प्रस्ताव था तथा मीन बांध व ओपला बैराज के लिये राजस्थान द्वारा देय हिस्से का प्रावधान था। इसके अतिरिक्त पाथर व भरतपुर तथा अन्य बाढ़ नियंत्रण कार्य हाथ में लिये थे।

इस वर्ष के लिये प्रस्तावित वित्तीय प्रावधानों के अनुसार चम्बल संभाग की बहुउद्देशीय परियोजनाओं पर 345.00 लाख रुपये, वृहद परियोजनाओं पर 697 लाख रुपये, मध्यम परियोजनाओं पर 1350.00 लाख रुपये, आधुनिकीकरण 8 हैक्टेयर चक तक नाली बनाने का कार्य, वराबंदी सर्वेक्षण एवं अनुसंधान व बाढ़ नियंत्रण कार्यों पर क्रमशः 400.00 लाख, 25.00 लाख, 8 लाख एवं 300 लाख रुपये व्यय किये गये थे।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष 8 लघु सिंचाई योजनायें पूर्व वर्षों की चालू रहेंगी तथा 30 नई परियोजनाओं को हाथ में लेने के प्रस्ताव थे। इसके अतिरिक्त सूखा संभाव्य क्षेत्र विकास तथा मरु विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत क्रमशः 30 और 25 चालू परियोजनायें प्रगति पर रही और इनमें से प्रत्येक कार्यक्रम के अन्तर्गत कुछ नई योजनाओं को भी हाथ में लिया गया था।

1981-82 में 2 विशेष कार्यक्रम वराबन्दी और 8 हैक्टेयर चक तक की नालियां बनाने के लिए गये थे जिनसे सिंचाई सुविधा प्राप्त होने में और लाभ होगा।

सरकार का यह प्रयास है कि 2000 ई० तक राज्य के लिये लक्षित कुल सिंचाई क्षमता प्राप्त करली जाये।

(10) सहकारी आन्दोलन
(Cooperative Movement)

राजस्थान की अर्थ व्यवस्था कृषि और पशुपालन पर आधारित है। अतः यहां सहकारिता का और भी अधिक महत्व है। सरकार की ओर से सहकारिता आन्दोलन को सुदृढ़, व्यापक और जन आकांक्षाओं के अनुरूप बनाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहित किया गया है।

राज्य में सहकारी वर्ष जून, 1980 तक सहकारी समितियों की संख्या 18,275 तथा सदस्य संख्या 43.05 लाख थी। समितियों की कार्यशील पूंजी 771.54 करोड़ रुपये, हिस्सा राशि 96.70 करोड़ रुपये तथा अमानत राशि 121.96 करोड़ रुपये थी।

कमजोर वर्ग समाज के कमजोर वर्ग के सदस्यों को अल्पकालीन ऋणों का 1/3 भाग और दीर्घकालीन ऋणों का 1/4 भाग उपलब्ध कराने के लिए नियमों मे आवश्यक प्रावधान किया गया है। साथ ही समिति के संचालक मण्डलों मे पिछड़े वर्ग के सदस्यों को 1/3 प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए नियमों मे प्रावधान किया गया है।

राज्य में 99 प्रतिशत ग्राम सहकारिता के अन्तर्गत लाये जा चुके हैं। 1980-81 के अन्त तक 85 प्रतिशत कृषक परिवारों को सहकारिता के अन्तर्गत लाया गया था।

वर्तमान में कृषि, डेयरी, भेड-ऊन, कुटीर व गृह उद्योग, गृह निर्माण, सामान के क्रय विक्रय, उपभोक्ता, माल संचार आदि क्षेत्रों में सहकारिता के माध्यम से लोगों को लाभान्वित किया जा रहा है। सहकारिता के माध्यम से शोषण की व्यवस्था को समाप्त करने में काफी हद तक सफलता मिली है।

कृषकों को महाजनों और बिचौलियों के शोषण से छुटकारा दिलाकर कृषि उत्पादन को बढाने के कार्य में सहकारी ऋण व्यवस्था के द्वारा सबसे अधिक योगदान दिया गया है। अल्पकालीन, मध्यकालीन व दीर्घकालीन सहकारी ऋणों की उपलब्धि से राज्य में हरित क्रान्ति को लाने में विशेष सफलता मिली है। 1980-81 में 90 करोड़ रुपये के अल्पकालीन, 10 करोड रु० के मध्यकालीन व 22.50 करोड़ रु० के दीर्घकालीन ऋण वितरित करने का कार्यक्रम बनाया गया। कुल वितरित होने वाले अल्पकालीन ऋण का 16 प्रतिशत भाग केवल अनुसूचित जाति के लोगों को उपलब्ध कराने का कार्यक्रम बनाया गया।

परिपूर्ण ऋण वितरण कार्यक्रम के नाम से राज्य में एक नया कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यह है कि गावों के सभी वर्ग के लोगों की अल्प व मध्यकालीन ऋण की आवश्यकताओं का सर्वेक्षण करके उसे उन्हें उपलब्ध कराना। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषकों, कृषि श्रमिकों, दस्तकारों, कुटीर व लघु उद्योग में कार्य करने वाले लोगों एवं ऊंट गाडी, बैलगाडी, दुधारु पशुओं व भेड पालन आदि कार्यों के लिए ऋण सुविधाएं प्राप्त हो सकेंगी। प्रारम्भ मे राज्य के प्रत्येक जिले में 2-2 कृषि ऋणदात्री सहकारी समितियों का चयन इस कार्यक्रम को लागू करने के लिए किया गया है। इस वर्ष राज्य की विभिन्न 236 पचायत समितियों के कार्यक्षेत्र की एक एक कृषि ऋणदात्री सहकारी समितियों में इस कार्यक्रम को लागू करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

अनुसूचित जाति के लोगों को कृषि ऋणदात्री सहकारी समिति का सदस्य बनाकर लाभान्वित कराने हेतु एक विशेष अभियान प्रारम्भ किया गया है। इस अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक ग्राम सेवा सहकारी समिति के क्षेत्र में कम से कम 5 ऐसे परिवारों को ऋण उपलब्ध कराकर लाभान्वित कराने का लक्ष्य है। फरवरी, 1981 के अन्त तक इस प्रकार के 14723 लोगों को सदस्य बनाकर 463·63 लाख रुपये के ऋण स्वीकृत किये जा चुके थे।

अनुसूचित जातियों के लोगों को कृषि ऋणदात्री समिति का सदस्य बनाने के लिये 250 रुपये तक का हिस्सा पूंजी ऋण 5 प्रतिशत की ब्याज दर पर उपलब्ध कराया जा रहा है। इन जातियों के लोगों को क्रय विक्रय समिति का

सदस्य बनाने के लिए 100 रुपये प्रति सदस्य हिस्सा पूंजी ऋण दिया जा रहा है। अब तक 5000 से अधिक लोगों को पांच लाख रु. का हिस्सा पूंजी ऋण उपलब्ध कराया जा चुका है। इसके अलावा इन लोगों को क्रय विक्रय समिति में उपज को रखकर लिये जाने वाले ऋण की ब्याज दर में व समिति से उपभोक्ता सामग्री क्रय करने में एक प्रतिशत की विशेष छूट प्रदान की जाती है। सहकारी भूमि विका बैंकों के माध्यम से मिलने वाले दीर्घकालीन ऋण प्राप्त करने हेतु भी इन जाति के लोगो को ऋण की आवश्यकता के अनुपात में हिस्सा पूंजी ऋण 5 प्रतिशत क कम ब्याज दर पर दिया जा रहा है।

अनुसूचित जातियों के लोगों को कृषि ऋणदात्री समिति में उपलब्ध करा जाने वाले ऋण का 50 प्रतिशत भाग अनुदान के रूप में अनुसूचित जाति विका सहकारी निगम के द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। इसके अलावा दीर्घकाली ऋण पर राज्य के विशिष्ट योजना संगठन द्वारा मिलने वाले ब्याज के अनुदान के कारण उन्हें केवल 6 प्रतिशत की दर से ही ब्याज देना पड़ता है।

इसके अलावा 80–81 में अनुसूचित जाति के लोगों की दस श्रमिक ठेक सहकारी समितियों को 2000/– रु० प्रति समिति के हिसाब से हिस्सा पूंजी अंशदान व 900/– रु० का प्रति समिति.के हिसाब से अनुदान देने की व्यवस्था की गई थी।

सार्वजनिक वितरण व्यवस्था के अन्तर्गत सहकारी संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राज्य में कार्यरत उचित मूल्य की दुकानों में लगभग 50 प्रतिशत दुकानें सहकारी संस्थाओं को आवंटित की गई हैं। सार्वजनिक वितरण व्यवस्था के अन्तर्गत गेहूँ, चावल, मोटा अनाज, दालें, मसाले, खाद्य तेल, माचिस, चाय, लिखने की कापियां, कन्ट्रोल का कपड़ा, साबुन, सस्ता कपड़ा, ब्लेड, टायर ट्यूब, बल्ब व मिट्टी का तेल जैसी 14 प्रमुख वस्तुओं का वितरण ग्राम सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता सामग्री समितियों की 99 परियोजनाएं लागू की गई हैं जिनमें से 1981 ग्राम सेवा सहकारी समितियों के कार्यक्षेत्र के परिवार लाभान्वित हो रहे हैं। चालू वर्ष में 41 परियोजनाएं और प्रारम्भ कर 699 ग्राम सेवा सहकारी समितियों के क्षेत्र में उपभोक्ता सामग्री वितरण का कार्यक्रम है। अब तक 9.56 लाख रुपये मूल्य की उपभोक्ता सामग्री ग्रामीण क्षेत्रो में सहकारी संस्थाओं के माध्यम से वितरित की जा चुकी है।

1981–82 में राज्य योजनान्तर्गत विभिन्न सहकारी विकास कार्यक्रमों पर 445 लाख रुपये का व्यय किया गया। इसके अलावा केन्द्र प्रतिपादित योजना के अन्तर्गत 693.42 लाख रुपये के व्यय का प्रावधान किया गया था। इसी प्रकार से चालू वर्ष में सहकारी विकास कार्यक्रमों पर कुल 1138.42 रुपये के व्यय का वित्तीय प्रावधान निर्धारित किया गया है।

वर्ष 1981-82 में राज्य में 5 सहकारी कारखाने स्थापित किए गये जिनमें भीलवाड़ा व पाली जिलों में 2 काटन जिनिंग व प्रेसिंग इकाइयां, गंगानगर में एक बर्फ का कारखाना, चूरू में एक दाल मिल व जयपुर में कीटनाशक कारखाने का विस्तार किया गया। केन्द्रीय सहकारी बैंकों की 30 नई शाखाएं खोली गई तथा 30 नए पे आफिस खुले। अनुसूचित जाति के लोगों की 10 श्रमिक ठेका सहकारी समितियां गठित की गई। 4 नई क्रय-विक्रय सहकारी समितियां व 2 होलसेल सहकारी उपभोक्ता भण्डार गठित किए गये। राजस्थान में सहकारी आन्दोलन को प्रसार देने एवं विस्तार करने में निम्न संस्थाओं एवं संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका है—

(1) राजस्थान राज्य सहकारी बैंक—यह राज्य में सहकारी संस्थाओं को ऋण सुविधा उपलब्ध करवाने वाली शीर्ष संस्था है। इसका मुख्यालय जयपुर में है तथा चौड़ा रास्ता में इसका अपना भवन है। यह बैंक जिलों के केन्द्रीय सहकारी बैंकों एवं उनकी शाखाओं के माध्यम से ग्राम सेवा सहकारी समितियों, क्रय-विक्रय सहकारी समितियों व अन्य विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत सहकारी संस्थाओं को ऋण उपलब्ध करवाती है। यह बैंक व्यापारिक एवं गैर सहकारी संस्थाओं को भी ऋण सुविधा व 'जमा' सुविधा उपलब्ध करवाता है। इसके साथ ही नगरीय क्षेत्रों में सहकारिता के माध्यम से ऋण सुविधाओं के लिए नगरीय सहकारी बैंक भी है।

(2) राजस्थान राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक—राजस्थान राज्य के कृषकों को आवश्यक वित्तीय सहायता देने की दृष्टि से इस बैंक का गठन 26 मार्च, 1957 को किया गया था। इस बैंक के गठन का मुख्य उद्देश्य स्थाई भूमि सुधार, कृषकों को दीर्घकालीन ऋण को उचित एवं सामयिक व्यवस्था कराना है। इस बैंक का प्रधान कार्यालय जयपुर में है तथा इसके आठ क्षेत्रीय कार्यालय उदयपुर, जयपुर, भरतपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, अजमेर एवं पाली में हैं। बीकानेर क्षेत्र के लिए गठित कार्यालय श्री गंगानगर में है। यह बैंक कृषकों को ऋण राज्य के विभिन्न भागों में स्थित 35 प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों तथा उनकी शाखाओं के माध्यम से देता है।

(3) राजस्थान राज्य सहकारी डेयरी फैडरेशन—आर० सी० डी० एफ० के नाम से बोली जाने वाली संस्था राजस्थान सहकारी डेयरी फैडरेशन का मुख्यालय जयपुर में स्थित है जो दूध एवं दूध के विभिन्न उत्पादनों में कार्यरत है। इस फैडरेशन की इकाइयां जिलों में जिला दुग्ध उत्पादक संघ, जिला डेयरी एवं पशु आहार संयंत्र के नाम से कार्यरत हैं। जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा व जोधपुर की डेयरियां, विभिन्न जिलों के जिला दुग्ध उत्पादक संघों में जयपुर, अजमेर, जोधपुर, भीलवाड़ा, उदयपुर तथा जयपुर, अजमेर, नदबई, बीकानेर एवं जोधपुर के पशु आहार संयंत्र इस फैडरेशन की महत्वपूर्ण इकाइयां है।

(4) राजस्थान राज्य क्रय-विक्रय सहकारी संघ—राजस्थान क्रय-विक्रय सहकारी संघ राजस्थान में सहकारी क्षेत्र में क्रय-विक्रय की शीर्ष संस्था है। इसकी इकाइयां क्रय-विक्रय सहकारी समितियों के नाम से राजस्थान के सारे जिलों एवं महत्वपूर्ण नगरों में फैली हुई हैं।

(5) राजस्थान राज्य सहकारी उपभोक्ता संघ—यह संस्था राज्य में उपभोक्ता वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिए सहकारी क्षेत्र में काफी प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी है। जयपुर का 'उपहार', 'समृद्धि' आदि इसी की संस्थायें हैं। जयपुर शहर व अन्य नगरों में औषधि विक्रय के क्षेत्र में तथा अन्य उपभोक्ता सामग्री के वितरण एवं विक्रय के लिए इसकी स्थान-स्थान पर इकाइयां कार्यरत हैं।

(6) राजस्थान राज्य सहकारी हाउसिंग फाइनेंस सोसाइटी—यह शीर्ष संस्था सहकारी क्षेत्र में गृह निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसके अन्तर्गत गृह निर्माण के लिए ऋण देने की व्यवस्था है।

(7) राजस्थान अनुसूचित जाति विकास सहकारी निगम—अनुसूचित जातियों के आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में उत्थान के लिए राज्य सरकार ने इस निगम की सहकारी क्षेत्र में स्थापना की है जो जयपुर में स्थित है तथा अनुसूचित जातियों को ऋण एवं अनुदान, रोजगार एवं प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था करता है।

(8) राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ—राज्य स्तरीय सहकारी क्षेत्र में स्थापित यह संघ बुनकरों को साधन, सुविधा एवं आर्थिक दृष्टि से ऋण सुविधा उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। राजस्थान में बुनकर ग्राम-ग्राम व नगर-नगर में फैले हुए हैं तथा इस संघ के सहयोग से ग्रामीण खादी को महत्वपूर्ण सहयोग मिला है तथा इस क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है।

(9) राजस्थान अनुसूचित जनजाति विकास सहकारी निगम—अनुसूचित जनजातियों के विकास के लिए सहकारी क्षेत्र में स्थापित यह निगम राज्य सरकार द्वारा अनुसूचित जनजातियों के विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। इस निगम के द्वारा इन जातियों के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जा रही है। जनजातियों की शिक्षा, रोजगार सुविधा, कृषि ऋण, पशुपालन व अन्य क्षेत्रों में निगम द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जा रही है।

(10) राजस्थान राज्य भेड़ ऊन सहकारी संघ—यह संघ राजस्थान की भेड़ों व ऊन के व्यवसाय में लगे राजस्थानवासियों को ऋण सुविधा, भेड़ पालन व उनकी नस्ल सुधार में तकनीकी सहयोग तथा ऊन व्यापार में पूर्ण सहयोग देता है। राजस्थान एक मरु प्रदेश है जिसमें भेड़ ऊन व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है जिसमें यह संघ महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

इसके अतिरिक्त राजस्थान में ग्राम सेवा सहकारी समितियों, दुग्ध उत्पादक

सहकारी समितियां, भवन निर्माण सहकारी समितियां, क्रय-विक्रय सहकारी समितियां एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत सहकारी समितियों का जाल फैला हुआ है जिनका यहां विस्तार से विवेचन अपेक्षित नहीं है।

(11) पंचायती राज-संगठन एवं विकास में इसकी भूमिका
(Panchayati Raj-Its set up & its role in development)

संगठन—1959 में दो अक्टूबर से राज्य में प्रशासनिक व्यवस्थाओं का विकेन्द्रीकरण पंचायत राज संस्थाओं के गठन के साथ किया गया। पंचायत राज संस्थाओं का गठन तीन स्तरों पर हुआ—

1. ग्राम पंचायतें—ग्राम स्तर पर
2. पंचायत समितियां—विकास खण्ड स्तर पर
3. जिला परिषद—जिला स्तर पर

पंचायत राज संस्थाओं के गठन का मुख्य उद्देश्य गावों के प्रशासन और उनके विकास में वहीं के लोगों को भागीदार बनाने का प्रमुख था। 1965 तक पचायतें सुचारु रूप से कार्य करती रही पर उसके बाद 13 वर्षों तक उनके चुनाव किसी न किसी कारण से टलते रहे। 1978 में उनके चुनाव फिर कराये गये पर कुछ पंचायत समितियां और पूरी जिला परिषदों के चुनाव नहीं हो सके। पर वर्ष 1981-82 में इनके पूरे चुनाव कराये गये।

ग्राम पंचायतों का गठन व कार्य—राज्य में इस समय 7 हजार 292 ग्राम पंचायतें हैं। एक ग्राम पंचायत 2 हजार तक की आबादी पर बनती है। कम आबादी के दो तीन गांवों को मिलाकर भी एक पचायत बनाई जाती है। एक गांव में पंचों की संख्या आबादी के हिसाब से होती है उनमें एक पिछड़ी जाति के और एक महिला पंच को सहवृत किया जाता है। सरपंच का चुनाव अब सीधे ही होता है।

ग्राम पंचायतों को गाव की प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध करना पडता है वहीं सार्वजनिक स्थानों की सफाई, रोशनी व पेयजल की भी व्यवस्था करनी पडती है। गावों में पशु मेले का आयोजन भी पचायत ही करती है। प्रौढ़ शिक्षा, कुओं की मरम्मत, पशुधन की देखभाल आदि के कार्य भी पंचायत ही कराती है।

पिछले वर्षों में पंचायतों ने जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किये वे काम के बदले अनाज कार्यक्रम के तहत गांवों में पंचायत घर, अस्पताल, स्कूल भवनों का निर्माण, सडकें बनाना, तालाब खोदना आदि थे। उससे बहुत बड़ी संख्या में काम हुए जो पुख्ता थे।

न्याय पंचायतें—ग्राम पंचायत की तरह ही न्याय पंचायतों का गठन गावों के छोटे विवाद निपटाने के लिये किया गया था। राज्य में करीब डेढ हजार न्याय पंचायतें थी। ये न्याय पंचायतें, पंचायत स्तर पर दीवानी, फौजदारी और राजस्व सम्बन्धी छोटे छोटे मामलों की सुनवाई करती थीं।

न्याय पचायतें 50 रुपये तक की माल की चोरी, जानवरों की हत्या, शराब पीकर दुराचरण करना, तालाबो को गन्दा करना आदि मामलो की सुनवाई कर सकती थी। ये 50 रुपये तक का जुर्माना कर सकती थी। इनमे वकील पैरवी नहीं कर सकते और इनके निर्णय की अपील ऊंची अदालत मे की जा सकती थी। एक सौ रुपये तक के दीवानी मामलो की भी न्याय पचायतें सुनवाई कर सकती थी। अब सन् 1981 मे ग्राम पचायत के अधीन ही न्याय-उपसमिति की व्यवस्था की गई है जो सामान्य रूप मे वही कार्य करती है जो पूर्व मे न्याय पंचायत के थे।

पंचायत समितियां—खण्ड स्तर पर पंचायती राज की संस्था पचायत समिति होती है। इस समय राज्य मे 236 पचायत समितिया हैं। खण्ड मे आने वाली सभी पचायतो के सरपच इसके सदस्य होते हैं। सरपचो के अलावा दो महिलाएं, दो अनुसूचित जाति व जनजाति के सदस्य लिये जाते हैं। एक कृषि विशेषज्ञ, एक सहकारी समिति का सदस्य तथा दो विकास कार्य के लिये जिम्मेदार सदस्य सहवृत किये जाते हैं। ये सब मिलकर पचायत समिति के प्रधान व उप प्रधान का चुनाव करते हैं। खण्ड के विधायक और उप जिलाधीश भी पंचायत समिति के सदस्य होते है।

पचायत समिति क्षेत्र के विकास की योजनाए बनाकर उन्हें क्रियान्वित करती है। कृषि, पशुपालन, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण आवास कार्यक्रमों को वह क्रियान्वित करती है। समिति अपने क्षेत्र मे रोजगार के साधनो मे वृद्धि का भी काम करती है। समिति मे सरकार का प्रतिनिधि खण्ड विकास अधिकारी (बी.डी.ओ.) होता है।

जिला परिषद—जिला स्तर पर पचायत राज संस्थाओं के कार्य की देख-रेख के लिये जिला परिषदों का गठन किया जाता है। परिषद के सदस्य सभी पंचायत समितियों के प्रधान, विधायक, सासद, विकास अधिकारी होते हैं। पिछडी जातियों के सदस्यो व महिला सदस्यों को सहवृत किया जाता है। जिला परिषद का अध्यक्ष जिला प्रमुख कहलाता है। जिला परिषद के सचिव अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी या अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) होते हैं। वर्तमान मे जिला परिषदों का भी नया गठन हो गया है।

विकास में पंचायती राज की भूमिका—पंचायती राज की भावना के मूल में जन-सहभागिता का बुनियादी सिद्धान्त है और क्षेत्रीय न्याय, प्रशासन व्यवस्था आदि मे क्षेत्रीय सहभागिता ही उसके लिए कारगर उपाय है। अतः इन संस्थाओं का बहुत ही महत्व है और अशिक्षा, गरीबी व भ्रष्टाचार की अंग्रेजी राज से मिली विरासत के बावजूद भी राजस्थान मे पंचायती राज का कार्य सराहनीय रहा है। हरित क्रान्ति, श्वेत क्रान्ति एवं प्रौढ़ तथा अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र मे तो इन संस्थाओं का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है।

भाग "स"

इतिहास एवं संस्कृति

History and Culture

(1) राजस्थान के मुख्य धर्म एवं सम्प्रदाय

Main Religions and Cults of Rajasthan

राजस्थान का निर्माण विभिन्न रियासतों और ठिकानों से मिलकर हुआ है। ये रियासतें भी पूर्व में बंटी हुई थी और कई राज्यों में थी जिनकी अपनी-अपनी बोली, पहनावा, खानपान रहा है। कहा जाता है कि राजस्थान में 25 कोस चलने के बाद बोली बदल जाती है। इसी तरह वेषभूषा और खान-पान भी अलग-अलग पाये जाते हैं।

पुरातत्व विभाग ने राजस्थान में जो खुदाई व अन्वेषण किया है उससे पता चलता है कि यहां की सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है। कालीबंगा में खुदाई से सिन्धु घाटी की सभ्यता के चिन्ह मिले हैं तो उदयपुर के पास आहड़ मे खुदाई करने पर चार हजार वर्ष पुरानी आहड़ नदी घाटी सभ्यता सामने आई है। इससे पता चलता है कि तब भी लोग सभ्य ढंग से पक्के मकान बनाकर, सड़कों व नालियों का निर्माण करा कर सफाई से रहते थे मिट्टी के कलात्मक बर्तन बनाना भी उन्हें आता था वहीं वे अपनी रक्षा के लिये तांबे के हथियार बनाते थे।

इन सभ्यताओं के बाद यहां उत्तरी भाग से आर्य आकर बसे और ब्राह्मण संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ। जनपद युग में यहां मालव, शिवि शाल्व यौधेय आदि जातियां आकर बसी। कुषाण भी इसी काल में यहां आये। गुप्त वंश के शासकों ने भी कुछ समय यहां राज्य किया। बाद में हूणों ने भी आकर यहां राज्य किया। इससे पता चलता है कि यहां अनेक जातिया आई और बस गई जिनके रहन-सहन समन्वय, शरीर रचना यहाँ के लोगों में पाया जाता है। सातवी शताब्दी में यहाँ राजपूतों की विभिन्न जातियां आकर बसी जिन्होंने धीरे-धीरे राजस्थान पर अपना शासन फैलाया, मुगल शासको का भी राजपूतों से बेटी व्यवहार चला और अजमेर व टोंक में उनका राज्य रहा।

राजस्थान में आदिवासी भी काफी संख्या में पाये जाते हैं। उदयपुर डिवीजन में भील काफी संख्या में है। डोम, मधुए, धोबी, चमार, नट जुलाहे, चिड़ीमार, मातंग आदि जातियों के लोग भी यहां प्रारम्भ से ही रहे हैं। भरतपुर क्षेत्र में जाट आकर बसे है जो अब पूरे राजस्थान में प्रायः सभी स्थानों पर बसे हुए

हैं। गुर्जर व अहीर भी यहां लम्बे अर्से से रह रहे है वहीं पंजाबी और सिंधी भी काफी समय पहले शहरी क्षेत्रों मे आकर बस गये हैं।

राजस्थान में इस समय मुख्य रूप से राजपूत, जाट, गुर्जर, यादव, मीणा, भील, चारण, भाट, दरोगा, ब्राह्मण, महाजन, गिरासिया, सहरिया, काथोडी बंजारे, रेबारी, गाडिया, लुहार, माली, बढई, कुम्हार, मोची, मुसलमान आदि पाये जाते है।

1981 की जनगणना के अनुसार यहां धर्म के आधार पर लोगों की संख्या इस प्रकार है—

हिन्दू	89·53%
मुसलमान	7·00%
जैन	1·9%
सिक्ख	·33%
ईसाई	·18%
बौद्ध पारसी व अन्य	·06%

हिन्दू धर्म—हिन्दुओ की संख्या हमारे राज्य में सर्वाधिक है पर उनमें भी कई जातियां और सम्प्रदाय हैं। इन्हे हिन्दू इसीलिए कहा जाता है कि ये हिन्दुस्तान के पुराने निवासी है। राजस्थान में यो तो हिन्दुओं में सैकडो सम्प्रदाय व मत जाते हैं पर उनमे से प्रमुख वैष्णव, शैव, रामोपासक व शक्ति के उपासक है।

राजपूत, चारण भाट, कायस्थ आदि जातियां शक्ति की प्रतीक देवी की उपासना करती हैं। वैष्णव सम्प्रदाय के लोग वल्लभाचार्य के उपासक माने जाते हैं। राजस्थान में नाथद्वारा और कोटा में वैष्णव सम्प्रदाय की गद्दियां हैं। हिन्दू लोग मुख्य रूप से पुराणों में बताये गये धर्म को मानते हैं। पुराणों के अनुसार किसी एक देवता की पूजा नही की जाती है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, गणेशजी, हनुमानजी, राम, कृष्ण, बुद्ध देवी शक्ति की भी पूजा की जाती है। हिन्दू लोग इसी के साथ गोवर्धन पर्वत, गंगा, यमुना, नर्मदा नदियों और तुलसी वट व पीपल के पेड़ की भी पूजा करते है।

कृष्ण के उपासक उनके बाल रूप की ही सेवा करते हैं उनके यहां पूजा की मनाही होती है पर कई लोग राधाकृष्ण की पूजा करते है। राम के उपासकों मे राम सनेही सम्प्रदाय प्रमुख है जिनकी गद्दी बांसवाड़ा में है। राजस्थान में शैव मत के अनुयायी बहुत कम हैं। राजस्थान में कबीर पंथी और दादू पंथी भी कुछ संख्या मे मिलते हैं। दादूपंथ की गद्दी नारायणा में है और ये लोग भगवावस्त्र पहनते हैं।

जैन धर्म—जैन धर्म के प्रवर्तक तीर्थंकर महावीर थे। इस धर्म में मुख्य रूप से श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी और तेरहपंथी सम्प्रदाय है। श्वेताम्बरों के गुरु श्वेतवस्त्र पहिनते हैं। इन्हीं की एक शाखा तेरहपंथी है जिसे मानने वाले

भीखमजी ओसवाल थे। भीखमजी ने अपने गुरु से वैचारिक मतभेद होने के कारण नया पथ चलाया था। उन्हें अपने विचारों के तब केवल 13 साधु मिले थे इसलिये तेरहपंथी मत कहलाया। स्थानकवासी जैन गुरुओं की पूजा करते है जो सफेद वस्त्र धारण करते है और मुंह पर भी सफेद पट्टी बंधी होती है। दिगम्बर मत के लोगों के गुरु नग्न रहते हैं और नग्न मूर्तियों की ही पूजा भी करते हैं।

मुसलमान—हिन्दुओं के बाद राजस्थान में मुसलमानों की आबादी सबसे ज्यादा है। मुसलमान धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब थे इस धर्म में बाद में दो वर्ग हो गए सुन्नी और शिया। राजस्थान में दोनों ही वर्गों के मुसलमान पाये जाते हैं। यहां पर मुगलकाल से पहले भी कई मुस्लिम शासकों ने हमला किया पर उनका मुख्य उद्देश्य लूटमार करना होता था और वे वापस अपने देश लौट जाते थे। मुगल बादशाहों ने पहली बार यहां राज्य किया और यही पर आकर बस गये। इसके साथ ही राजस्थान में भी मुस्लिम आकर बसे। राजस्थान में अधिकतर मुसलमान वे हैं जिन्हें जबरन धर्म परिवर्तन करके मुस्लिम बनाया गया था। कायमखानी ऐसे ही मुसलमान कहे जाते हैं जो आज भी अपने नाम के आगे राठौड़, गौड़ आदि जाति सूचक शब्द लगाते हैं।

सिक्ख धर्म—राजस्थान में सिक्ख धर्म को मानने वाले लोग पहले बहुत कम संख्या में शहरों व कस्बों में ही पाये जाते थे। देश के स्वतन्त्र होने के बाद जब भारत का विभाजन हुआ तब इनका आगमन राजस्थान में हुआ और ये लोग यहां आकर विभिन्न भागों में बस गये। सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानकदेव थे जो जाति-पांति, तीर्थों और मूर्ति पूजा के विरोधी थे। सिक्ख आज भी मूर्ति पूजा को नहीं मानते हैं और अपने पवित्र ग्रन्थ 'गुरु ग्रन्थ साहिब' को मत्था टेक कर अपनी श्रद्धा प्रगट करते है।

ईसाई धर्म—ईसाई धर्म के लोगों का आगमन राजस्थान में काफी देर से हुआ। उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे जब अंग्रेजों का राज भारत में हो गया तब वे राजस्थान भी आये। अजमेर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक सीधे अंग्रेजों से शासित राज्य रहा इसलिए इसी क्षेत्र मे ईसाई अधिक पाये जाते हैं। वैसे बहुत कम संख्या में यह सारे प्रदेश में फैले हुए है। ईसाईयों में प्रमुख दो वर्ग हैं कैथोलिक जो मूर्ति पूजा के समर्थक हैं और प्रोटेस्टेन्ट जो विरोधी हैं। ईसा मसीह इस धर्म के प्रवर्तक थे। इन दो प्रमुख वर्गों के अलावा मैथोडिस्ट, चर्च आफ इंगलैण्ड और फ्री चर्च आफ स्काटलैण्ड भी ईसाई धर्म के वर्ग हैं।

बौद्ध धर्म—प्राचीनकाल में जयपुर और मेवाड़ राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचलन काफी था। वैराठ मे प्राप्त बौद्ध चैत्यालय इसका प्रमाण है पर अब राजस्थान में बौद्ध धर्म मानने वाले गिनती के लोग रह गये हैं। महात्मा बुद्ध इस धर्म के प्रवर्तक थे और एक समय इसका अत्यधिक विस्तार हुआ था। भारत ही नहीं चीन, तिब्बत श्रीलंका, थाईलैण्ड तक बौद्ध धर्म फैला था पर बाद में यह समाप्त प्रायः हो गया।

राजस्थान में अनुसूचित जाति और जन-जातियों के लोग भी काफी संख्या में रहते हैं। इन के अलावा जाट और राजपूत, अहीर, गुर्जर भी राजस्थान के सभी हिस्सों में पाए जाते हैं और इनकी संख्या भी काफी है। अनुसूचित जातियों में रैगर, खटीक, धानक्या, हरीजन मुख्य हैं जो संख्या में काफी हैं लेकिन पूरे राज्य में बिखरे हुए हैं। ये जातियां उच्च वर्ग की सेवा करती आई हैं पर अब इनमें भी सामाजिक जागृति आई है। सविधान में इनके उत्थान के लिए नौकरियों में आरक्षण की सुविधा दी गई हैं।

अनुसूचित जनजातियों का भी राजस्थान में बाहुल्य है। मेवाड़ और सिरोही में भील, गिरसिया, कथोडिया आदि बहुत हैं तो जयपुर डिवीजन में मीणा और कोटा जिले मे सहरिया जाति के लोग काफी है। जयपुर के मीणा पहले शासक थे तथा आज भी उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है। इसके विपरीत भीलो की माली हालत दयनीय बनी हुई है। वनसम्पदा पर ही मुख्य रूप से उन्हें गुजारा करना पड़ता है।

जनजातियों के रहन-सहन और सामाजिक जीवन की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है—

भील—भील राजस्थान में सबसे पुराने निवासी हैं। मेवाड में मुख्य रूप से उदयपुर, भीलवाडा, चित्तौड, डूंगरपुर, बांसवाडा जिले में रहते है। मेवाड पर वहीं शासक राज्य कर पाया जिनको भीलों की सहायता मिल गई। बप्पा रावल, महाराणा प्रताप, राणाकुम्भा इसके उदाहरण हैं जो भील सेना की मदद से राज करते रहे। भीलो की भाषा बागडी है और ये अरावली की पहाडियों में छोटे-छोटे समूहों में झोंपड़ियां बनाकर रहते है। इनकी एक बस्ती पाल के नाम से जानी जाती है। ये लोग गांव के मुखिया को गोमती कहते है और उनका निर्णय सर्वमान्य होता है। भील जाति के लोग आज भी टोने-टोटको, भूत-प्रेत, बलिप्रथा मे विश्वास करते है।

गिरासिया—भीलो के बाद आदिवासियों की दूसरी जनजाति गिरासिया है जो मुख्य रूप से सिरोही और मेवाड मे उदयपुर जिले के कुछ भाग मे रहती हैं। गिरासिया जाति के लोग भी राजस्थान मे बहुत पहले से रहते आये है। गिरासियों की आजीविका का मुख्य साधन वन सम्पदा ही है। इनके मुख्य त्यौहार होली व गणगौर हैं। गणगौर के त्यौहार पर गिरासी युवतियां का घूमर-नृत्य देखने लायक होता है। माऊन्ट आबू के पिछले कुछ वर्षों से गिरासिया युवतिया आबू सुन्दरी के रूप में चुनी जा रही है।

गिरासिया जाति के लोग अन्य विश्वासों से अभी तक बन्धे हुए हैं। कोई भी नया काम कराने से पूर्व गिरासिया लोग भैरूजी या माताजी के मन्दिर में जाकर पूजा करते है और गेहूं, जौ और मक्का के अक्षत चढ़ाकर अपनी सफलता का परिणाम ज्ञात करते हैं।

काथोडिया—यह जाति भी भीलों का ही एक भाग है और उदयपुर बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिलों में रहते है। इनका मुख्य व्यवसाय कत्था बनाना है और काथोडिया महिलाएं इसमें प्रवीण होती हैं पर उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। अपने व्यवसाय से इस जाति के लोग न भरपेट खाना खा सकते हैं और ना ही तन ढकनों को कपड़ा जुटा पाते हैं। कत्था बनाने के कारण ही इन्हें काथोडिया कहा जाता है।

काथोडिया जाति के रीति-रिवाजों में हिन्दुओं से एक ही भिन्नता है कि इनके यहा मृतक का दाह-संस्कार करने की बजाय उसे दफनाया जाता है काथोडिया काली मां की पूजा करते हैं। होली, दीवाली आदि त्यौहार ये बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं। अन्धविश्वास से ये भी परे नहीं है और झाड़-फूंका से उपचार पर ही विश्वास करते हैं।

(2) राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनायें एवं स्मारक
Important Historical Events and Monuments of Rajasthan

राजस्थान के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल—

अजमेर

अजमेर की गणना राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक नगरों मे की जाती है। मध्ययुग में मुगल बादशाहों द्वारा संवारे गये इस नगर की सीमाओं में निम्नलिखित दर्शनीय स्थान है—

ख्वाजा साहब की दरगाह—

यह मुसलमानों के प्रमुख तीर्थ स्थानों मे से एक है। 1464 मे सर्वप्रथम ख्वाजा साहब की कब्र पर सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी ने नागौर के ख्वाजा के कहने पर एक पक्की कब्र और उस पर छोटा सा गुम्बज बनाया था। इसका विस्तार सम्राट अकबर ने किया और तभी से यह प्रसिद्ध हो गयी। दरगाह अकबरी मस्जिद, शाहजहा की जुमा मस्जिद, बुलन्द दरवाजा, बेगमी दालान, संदलखाना, महफिल-खाना आदि स्थान है। यहां सम्राट अकबर के समय के दो बड़े देग है। जिनमें 100 मन चावल एक साथ पकाया जा सकता है। रजब माह की। तारीख से 6 तारीख तक विशाल रूप में उर्स का मेला लगता है। जिसमें भारत, पाकिस्तान, तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रों से हजारों की संख्या में लोग सम्मिलित होते है। इस दरगाह में प्रत्येक जाति का व्यक्ति प्रवेश पा सकता है।

नसियां

यह स्वर्गीय सेठ मूलचन्द सोनी द्वारा दिगम्बर जैन मन्दिर के रूप में बनवाई गई थी जिसे सिद्धकुट चैत्यालय के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इसका निर्माण सन् 1895 में हुआ था। यह भवन पूर्णतः लाल पत्थर का बना हुआ है। इसकी छत पर लगे स्वर्ण काफी ऊंचाई पर है। इस मन्दिर के पीछे 40 फीट चौड़ा और 80 फीट लम्बा एक भव्य कमरा है। जिसमें रंग-बिरंगे मनमोहक चित्रों का

प्रदर्शन किया गया है । इसकी दीवारें और छत कांच की पच्चीकारी से ढकी हुई है। इस कमरे में प्रदर्शित दृश्य दो भागों में विभाजित है । वर्तुलाकार भाग में जैन मतानुसार गोल आकृति में सृष्टि की रचना का दृश्य है जिसके बीच में "सुमेरू" नाम ऊंचा पर्वत है । कमरे के दक्षिणी भाग में अयोध्या नगरी का दृश्य है । इसके दक्षि मे प्रयाग, त्रिवेणी और पवित्र वट वृक्ष का मनमोहन दृश्य और श्री ऋषभदेव जी व मूर्ति है और दूसरे भाग में श्री महावीर भगवान के जन्म का दृश्य तिपालों द्वार दिखाया गया है । मन्दिर के अगले हिस्से में मकराने के पत्थर का एक सुन्दर मा स्तम्भ है ।

पुष्कर—

यह अजमेर से सात मील उत्तर पूर्व में हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है झील के चारों ओर लगभग 60 पक्के घाट बने हुए है । यहा ब्रह्माजी तथा सावित्री के मन्दिर भी है । रगनाथ जी के दो मन्दिर एक पुराना तथा एक नया और वराह का प्राचीन मन्दिर है । ब्रह्माजी तथा सावित्री जी के मन्दिर समस्त विश्व मे एक मात्र पुष्कर जी मे ही विद्यमान है । पुष्कर में कार्तिक की पूर्णिमा को पर्व स्नान का मेला भरता है । इस महत्वशाली मेले की गणना भारत के विशाल पशु मेलो मे प्रथम स्थान पर की जाती है । कहा जाता है कि पाडवों ने अपने वनवास के कुछ वर्ष यहां व्यतीत किये थे । यहां अगस्त्य और भर्तृहरि का स्मरण करने वाली गुफाएं आज भी विद्यमान हैं । सरस्वती नदी के टाके में जो पांच पुष्कर माने जाते हैं उनमे बूढे पुष्कर का स्थान महत्त्वपूर्ण है । इसकी झील रेतीले क्षेत्र में कुण्ड के समान है। इसी के पास ही एक दूसरा पुष्कर सुदाधाम के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसकी गणना भी पाच पुष्करो में की जाती है । अजमेर से यहा जाने का रास्ता सुन्दर पहाड़ियो में होकर एवं काफी टेढ़ा-मेढा है । इसकी प्राचीनता का कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता । अजमेर से पुष्कर जाने के लिए बसें व कारें अजमेर स्टेशन पर उपलब्ध रहती हैं ।

तारागढ़—

अजमेर के दक्षिण पश्चिम में समुद्र की सतह से लगभग 28·5 फीट ऊंची पहाड़ी पर लगभग 87 एकड़ भूमि मे फैला हुआ यह गढ़ राजा अजय देव द्वारा सातवी शताब्दी में बनाया गया था । इस गढ में अनेक युद्धों की कथाएं छिपी हुई है । दीवार मे 14 बड़े-बड़े बुर्ज हैं और स्थान-स्थान पर विशाल तोपें रखी हुई है । गढ़ के अन्दर पानी का पंच कुण्ड और एक नाना साहब का झालरा है आयताकार इमारत के रूप में यहा एक मोरा साहब की दरगाह है जो शिया मुसलमानों के प्रबन्ध में है ।

ढाई दिन का झोंपड़ा

अजमेर के सम्राट श्री विशालदे (बीसल देव) द्वारा जैन धर्म के प्रचारार्थ निर्मित यह मन्दिर स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट नमूना है । सन् 1192 में

मौहम्मदगौरी ने इसे गिरवाकर मस्जिद का रूप दे दिया था। तभी से यहां मुसलमान फकीरों का ढाई दिन का उर्स होने लगा और उसे ढाई दिन के झोंपड़े के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। इसके दरवाजे पर कुरान की आयतें खुदी हुई हैं। इसके आंगन की खुदाई में कई प्राचीन मूर्तियां तथा शिलालेख मिले है। नक्कासी की मनोहर प्रचुरता, कमनीय कटाई का निखार, कारीगरी की कष्ट साध्य यथार्थता का श्रेय हिन्दू कारीगरी को है।

आनासागर झील—

नगर के दक्षिण से सुन्दर पहाड़ियों के बीच 8 मील की परिधि में स्थित यह कृत्रिम झील बड़ी ही आकर्षक दृश्य उपस्थित करती है। इसके जल में सध्या के समय किनारे पर खड़े विशाल नाग पहाड़ का प्रतिबिम्ब झलकता है। इस झील का निर्माण सम्राट पृथ्वीराज के पितामह अरणों राज 'अनाजी' द्वारा सन् 1135 में करवाया गया था। कला रसिक जहांगीर ने इस झील की सौन्दर्यता से प्रभावित होकर निकट में ही एक शाह बाग लगवाया जो आजकल दौलत बाग के नाम से सम्बोधित किया जाता है। सम्राट शाहजहां ने सन् 1627 में लगभग 1240 फीट लम्बा कटहरा लगवाकर और चिकने संगमरमर की पाच बारहदरियां बनवाकर इसकी रमणीयता मे चार चांद और लगा दिये।

मैगजीन तथा राजपूताना म्यूजियम—

नगर के बीच स्थित यह इमारत ऐतिहासिक महत्व से भरपूर है और मैगजीन के नाम से प्रसिद्ध है। इसे अपने निवास के लिए सम्राट अकबर ने सन् 1571–72 में बनवाया था। इस इमारत में चार बड़े-बड़े बुर्ज हैं। बीच मे म्यूजियम विद्यमान है जिसे राजपूताना म्यूजियम के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसमें राजस्थान की स्थापत्य कला तथा मूर्तिकला के नमूनों का दर्शनीय सग्रह प्रदर्शित किया हुआ है।

मेयो कालज—

लार्ड मेयो के जमाने में सन् 1875 में राजकुमारों को शिक्षा ग्रहण करवाने के लिए इसका निर्माण कराया गया था। कॉलेज की इमारत सफेद संगमरमर से हिन्दू सरासीनी वास्तुकला के ढंग पर बनी हुई है। इमारत के ऊपर लगभग 127 फीट ऊंचा कलापूर्ण घण्टाघर लगा हुआ है। यह शिक्षण संस्थान अपनी गौरवमयी परम्पराओं के लिए विख्यात है।

उक्त प्रमुख स्थानों के अतिरिक्त हटुंडी का महिला शिक्षण सदन, ब्यावर का जैन गुरुकुल तथा अजमेर का डी. ए. वी. कालेज आदि शिक्षण संस्थान है जिन्होंने शिक्षा के प्रसार में अत्यधिक योगदान देकर दूरदर्शिता का परिचय दिया है।

किशनगढ़

किशनगढ चारों ओर परकोटे से घिरा हुआ है। यहां दो बड़े तालाब हैं नव ग्रहों का प्राचीन मन्दिर एवं शहर से लगभग तीन मील दूर मंसैला नाम झील दर्शनीय है। किशनगढ के पास ही सलेमाबाद में भारत के एक महान दार्शनिक निम्बार्काचार्य की परम्परा से चली आने वाली गद्दी है। लगभग 16 मील उत्तर में रूप नगर है जहां भारत प्रसिद्ध पृथ्वीराज की घुड़शाला है। वालेचों के टीबों पर 11वी शताब्दी के शिलालेख भी हैं।

अलवर

यह पहाड़ी और सुन्दर वनों का प्रदेश है। शहर में देखने योग्य स्थानों में पहाड़ पर बना किला, फतहगंज की गुम्बज और बाजार के बीच का त्रिपोलिया प्रसिद्ध है। किले मे निकुम्बी के महल, सलीम द्वारा बनाया गया सलीम सागर महल, सूरज कुण्ड तथा जलाशय भवन दर्शनीय स्थानों में मुख्य है। यहां के नये राजमहल तथा मन्दिर दर्शनीय है। प्रदेश के राजगढ़ और भानगढ आदि स्थान भी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध हैं।

राजगढ़—

यह पहिले अलवर की राजधानी थी। यहां के पुराने मन्दिर, बावड़ी, तालाब तथा खंडहार प्राचीन काल के जीवित उदाहरण हैं। भारत मे सबसे बड़ी जैन मूर्ति नागोजा इसी प्रदेश में है।

भानगढ़—

अलवर के दक्षिण पश्चिम में लगभग 50 मील दूर पर भानगढ़ है जो इस समय खंडहर के रूप है।

पांडुपोल—

यहा पर पाडुवो ने अज्ञातवास के कुछ दिन बिताए थे। यहा हनुमान जी का प्रसिद्ध मेला भी लगता है। यहा के प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोहारी है।

ऐतिहासिक महत्व का स्थान नीलकण्ठ वड़गुजरों की राजधानी थी। यहाँ शिवजी का 12वी शताब्दी के प्रारम्भ का एक मन्दिर है।

बीकानेर

यह नगर चारो ओर से परकोटे से घिरा हुआ है। यहा एक नया और प्राचीन किला है। किले मे अनेक भाषाओं के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ है। प्राचीन अस्त्र-शस्त्रों, पीतल की मूर्तियों और मिट्टी की वस्तुओं का सुन्दर संग्रह है।

करणी माताजी का मन्दिर—

बीकानेर से लगभग 16 मील दूर देशनोक मे स्थित यह एक प्रसिद्ध मन्दिर है। यह मन्दिर महाराजा सूर्यसिंह के राज्य काल मे बनाया गया था। इस मन्दिर का बाहरी गेट मारबल कटिंग (संगतराशी) का एक अद्वितीय नमूना है। जो महाराजा गंगासिंह जी द्वारा बनाया गया था और मन्दिर मे सोने का छतरी महाराजा जोरावरसिंह जी द्वारा भेंट की गयी थी।

लालगढ़ महल—

शहर के बाहर पूर्णतः लाल पत्थर से बना हुआ एक किला है। जो चित्रकला का विशेष संग्रह प्रस्तुत करता है और दर्शनीय है। भवन निर्माण की दृष्टि से देखने वालों के लिए यह महल एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

कोलायत जी का मन्दिर—

दक्षिण पश्चिम में लगभग 30 मील दूर कोलायत का तालाब है। ऐसा कहा जाता है कि यह कपिल मुनि का आश्रम स्थान था और इसी से पुण्य तीर्थों मे इसकी गणना की जाती है। कार्तिक की पूर्णिमा का यहा मेला लगता है। हजारों यात्री यहां दर्शनार्थ आते हैं। तालाब के किनारे पर अनेक छोटे-छोटे मन्दिर व छतरियां बनी हुई है।

गंगा निवास पार्क—

किले के सामने यह एक सार्वजनिक उद्यान है। जिले के प्रमुख सरकारी कार्यालय इसी उद्यान में है। सर्किट हाऊस तथा अजायबघर इसके पूर्वी दरवाजे के बाहर है। इस नगर की समस्त इमारतें प्रायः लाल पत्थर की बनी हुई है। लालगढ़ के महल में खुदाई का सुन्दर काम है।

भरतपुर

यह प्राचीन काल में ब्रज का हिस्सा था। इस नगर का नाम श्री रामचन्द्र के लघु भ्राता भरत के नाम पर पड़ा बताया जाता है। इसके चारों ओर गहरी खाई है जो मोती झील के पानी से भरी जाती है। यहां के कुछ दर्शनीय स्थान निम्नांकित हैं—

डीग का किला—

भरतपुर से 21 मील उत्तर की ओर यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक किला है। इसके चारो ओर खाई है। किले में प्राचीन महल बने हैं। यहा दो झीलों के बीच भव्य महल बने हुए हैं। जिनमे अठारवी शताब्दी की कारीगरी के सुन्दर नमूने उपलब्ध है।

बयाना का किला—

मध्यकाल में इस किले की गणना भारतवर्ष के प्रसिद्ध किलों मे की जाती थी वि. स. 428 मे वारिक विष्णुवधन पुण्डरीक द्वारा जो यज्ञ किया गया था, उसके स्मारक के रूप में झील लाट के नाम से इस किले में एक खम्भा है।

अन्य स्थानों में पास ही कामा में यदुवंशियों के चौरासी कीर्ति स्तम्भ हैं। इनमें से एक पर आठवीं शताब्दी का खुदा हुआ संस्कृत का एक लेख है जो इसकी प्राचीनता को प्रमाणित करता है।

बूंदी

पर्वतीय उपत्यका में बसा हुआ बूंदी का लघुनगर अपनी प्राकृतिक सुषमा एवं चित्रकला के लिए सुविख्यात है। बूंदी एक पुराना शहर है जिसके चारों

तरफ परकोटा है। यहा की बावड़िया बड़ी कला पूर्ण है। बूंदी का नवलखा तालाब चौरासी खम्भो की छतरी और बूंदी का किला प्रमुख दर्शनीय स्थान है।

बांसवाड़ा

बासवाड़ा के चारों ओर पत्थर का परकोटा है तथा राजमहल 7400 फीट ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। तलवाड़ा और कलिजरा दो प्रमुख दर्शनीय स्थान है।

तलवाड़ा—

बांसवाड़ा से 8 मील पश्चिम में है। यहां पर गुजरात के महाराजा श्री सिद्धराजजयसिंह सोलंकी का बनाया गया गणपति का मन्दिर और विक्रम की ग्याहरवी शताब्दी के लगभग बना सूर्य का मन्दिर दर्शनीय है।

कलिजरा—

यह बासवाड़ा के 17 मील दक्षिण-पश्चिम में हारन नदी के किनारे एक छोटा गांव है। यहां दिगम्बर जैनियों का एक श्री ऋषभदेव का बड़ा मन्दिर है।

चित्तौड़गढ़

इसे मौर्यवंश के राजा चित्रागद ने बसाया था। पहले इसका नाम चित्रकूट था लेकिन कुछ दिन बाद ही बिगड़कर चित्तौड़ हो गया। चित्तौड़ का किला जिसमें पद्मिनी सती हुई थी दर्शनीय है। किले तक पहुंचने के लिए सात दरवाजे पार करने पड़ते हैं। मालवा विजय करने के पश्चात् महाराणा कुम्भा द्वारा बनाया गया 120 फुट ऊचा विजय स्तम्भ इसी चित्तोड़ के किले मे ही है। विजय स्तम्भ में घूमती हुई 170 सीढियां हैं तथा यहां राजपूती कला की खुदाई के नमूने भी मिलते हैं। विजय स्तम्भ के साथ ही जैनियों के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के नाम से बनाया गया कीर्ति स्तम्भ भी है जिसके चारों कोनों पर 5-5 फुट ऊंची ऋषभदेव की मूर्तियां भी खुदी हुई हैं।

डूंगरपुर

डूंगरपुर में शहर के पास ही जैव सागर झील के तट पर स्थित उदय विलास नामक राजमहल है जैव सागर के भीतर का बादल महल और उसके तट पर गोवर्धननाथ का विशाल मन्दिर, राजधानी से 6 मील दूर स्थित एडवर्ड समन्द नामक विशाल तालाब उत्तर पूर्व में 14 मील दूर सोमनदी के तट पर सोमनाथ का प्राचीन मन्दिर दर्शनीय स्थान है।

जयपुर

गुलाबी नगर के नाम से सम्बोधित किया जाने वाला जयपुर नगर अपनी भव्यता तथा सुन्दरता के लिए समूचे भारत के नगरों में बेजोड़ ख्याति रखता है। जयपुर की सड़कें अपनी चौड़ाई तथा सीधाई के लिए प्रसिद्ध हैं। सब रास्ते एक दूसरे को समकोण पर काटते हैं। प्रमुख बाजारों की दुकानों और मकानों की बनावट एक सी है तथा रंग भी एक ही गुलाबी है। नगर के चारों ओर परकोटा है जिसमें आठ दरवाजे हैं। अब नगर का फैलाव परकोटे के बाहर भी हो गया है।

जयपुर के पुराने राजमहल, जन्तर-मन्तर, पुराना घाट, गलता, हवामहल, नाहरगढ़, आमेर का किला, जगत शिरोमणी जी का मन्दिर, गैटोर, सांगानेर का जैन मन्दिर आदि कई दर्शनीय स्थानों का विवरण इस प्रकार है—

पुराने राजमहल—

यहां प्राचीन पुस्तकों एवं कलात्मक सामग्री का संग्रह है जो पोथीखाना के नाम से जाना जाता है। महलों की दीवारों को मुस्लिम वास्तुकला के अनुरूप सुन्दर पुष्पों से सजाया गया है। विशेष रूप से जाली झरोखे का काम अनोखा है।

सिटी पैलेस—

यहां के दर्शनीय स्थानों में चन्द्र महल सर्वश्रेष्ठ है। यह आकर्षक भवन सात मंजिला और भीतरी सजावट की दृष्टि से अद्वितीय है। चन्द्र महल के विभिन्न कमरों मे राजपूत शैली के प्राचीन चित्र, भित्ती चित्र तथा काच की कारीगरी दर्शनीय है। मुबारक महल जिसमें महाराजा का निजी पुस्तकालय और शस्त्रागार है और जिन्हें क्रमशः पोथीखाना व सिलहखाना के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है इसी सिटी पैलेस मे स्थित है। पुस्तकालय में पुरानी पुस्तकों, ग्रंथों, नक्शों चित्रों व ज्योतिष यन्त्रों का संग्रह अवलोकनीय है। शताब्दियों पुराने शस्त्रों के भारी संग्रह युक्त शस्त्रागार भी सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है।

सिटी पैलेस के दक्षिणी द्वार का नाम त्रिपोलिया है यह द्वार ईशर लाट (सरगासूली) के कुछ ही दूर है जो सिर्फ राज्य परिवार के सदस्यों के लिए ही काम मे आता है। ईसरलाट (सरगासूली) तथा त्रिपोलिया द्वार की कारीगरी दर्शनीय है।

जन्तर मन्तर (ज्योतिष यन्त्रालय)—

यह गणितज्ञ एवं ज्योतिष प्रेमी महाराजा जयसिंह द्वितीय द्वारा बनवाया गया था। इसकी स्थापना जयपुर शहर के निर्माण के साथ ही खगोल विद्या के पारखी एवं वैज्ञानिक श्री विद्याधर द्वारा की गई थी। जन्तर-मन्तर, सूर्य एव चन्द्र की गति तारों की परिक्रमा तथा अन्य खगोल सम्बन्धी समस्याओं की गवेषण शाला के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान है।

हवामहल—

शहर के मध्य मे ठीक बड़ी चौपड़ के निकट सिरहड्योढी बाजार में आकर्षण ढग का हवा महल बना हुआ है। गोल और आगे निकले हुए झरोखे एवं खिड़कियों से युक्त ये महल पिरामिड की तरह है। झरोखों मे काफी जालिया है जिनमें सदैव काफी तेज हवा आती रहती है। यह गुलाबी रग का 9 मजिला महल है तथा जयपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थानों मे है।

पुराना घाट—

पहाड़ों के बीच लगभग 1 मील लम्बा यह घाट जयपुर से आगरा जाने वाली सड़क पर स्थित है। मार्ग के दोनों ओर आदि से अन्त तक देवालय, उद्यान, छतरिया

अवकाश गृह आदि बने हुए हैं। अन्त में खानियां हैं। वहां का जैन मन्दिर सुनहरी पच्चीकारी के लिए काफी प्रसिद्ध है। यह मन्दिर जयपुर निवासी राणा परिवार के पूर्वजों द्वारा बनवाया गया था। यहां की रानी सिसोदिया का महल एवं गोलछा गार्डन भी दर्शनीय, आकर्षक एवं काफी सुन्दर है।

गलता—

जयपुर के पूर्व में पहाड़ियों के बीच स्थित हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ गलता सैलानियों की आकर्षण स्थली है यहा पर अनेकों कुण्ड और मन्दिर हैं। प्रमुख कुण्ड में गऊ मुख से जल धारा पड़ती रहती है। इस धारा का स्रोत जानने के लिए अनेकों प्रयत्न किये गये लेकिन आज तक यह ठीक पता नही लगाया जा सका है कि यह कहां से आती है। प्राचीन काल में गालिव ऋषि की तपस्या के परिणाम स्वरूप यह धारा शुरू हुई थी। ऐसा मानना है कि गगा की एक धारा यहा तक आई है। इसी कारण धार्मिक पर्वों पर हजारों की तादाद में लोग यहा स्नान करने आते है। गलता से पहिले पहाड़ की चोटी पर राव कृपाराम द्वारा निर्मित एक सूर्य मन्दिर है जिनमें सूर्य भगवान की स्वर्णिम प्रतिमा है। यहां से प्रतिवर्ष माघ शुक्ला सप्तमी (सूर्य सप्तमी) को समारोहपूर्वक शोभा यात्रा सजधज के साथ शहर में निकाली जाती है।

अजायबघर (म्यूजियम)—

जयपुर का अजायबघर राजस्थान के ही नही बल्कि समूचे भारत के मुख्य एवं महत्वपूर्ण स्थानों में से एक है। इसकी नीव बादशाह एडवर्ड (सप्तम तत्कालीन प्रिन्स ऑफ वेल्स द्वारा 6 फरवरी, 1886) को लगायी गयी थी। अनेकों गैलेरियों से युक्त यह अजायबघर जयपुर के रामनिवास बाग में स्थित है। इमारत में भारतीय व अरबी शैली की सौदर्यमयी पत्थर की खुदायी का काम निश्चय ही हृदयग्राही है। इस संग्रहालय मे चीन, जापान, असीरिया, परसीपिलस के प्रख्यात तेल चित्रों के अतिरिक्त मिश्री, हिन्दू, रोमन, आरजेन्टाइन और प्राचीन यूनानी शैली की कला कृतियां संग्रहीत है। यह म्यूजियम एलबर्ट हाल के नाम से भी प्रसिद्ध है।

रामनिवास बाग मे स्थित जन्तुशाला और चिड़ियाघर भी दर्शनीय है। जिनमें विभिन्न किस्म के जानवरों व पक्षियों का अच्छा सग्रह है।

जयगढ़ दुर्ग—

वह विशाल दुर्ग शहर के उत्तर पश्चिम मे ऊंची पहाड़ी पर सन् 1734 मे बनवाया गया था। ऐसा मानना है कि राजाओं का खजाना इसी दुर्ग मे रखा जाता था और स्वयं राज्य परिवार के सदस्यों को भी दुर्ग रक्षक आंख पर पट्टी बांधकर भीतर ले जाते थे। और अब यह दुर्ग जनसाधारण के लिए खुला है। दुर्ग पर जाने के लिए काफी चढ़ाई करनी पड़ती है तलहटी से दुर्ग तक बढ़िया सड़क बनी हुई है।

नाहरगढ़—

यह भी जयपुर का प्रसिद्ध दुर्ग है।

आमेर—

यह जयपुर शहर से 6 मील दूर उत्तर पूर्व में स्थित है। जयपुर शहर को तीन ओर से घेरे हुए अरावली की श्रेणी पर आमेर का किला बना हुआ है। इसके अतिरिक्त मावठा झील, राजाओं के महल, शिला माता का मन्दिर व सागर आदि प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं। जगत शिरोमणी के मन्दिर मे मीराबाई द्वारा पूजी जाने वाली कृष्ण की मूर्ति है। संगमरमर के पत्थर का तोरण द्वार एव गरुड़ की मूर्ति बड़ी कलात्मक हैं।

सांगानेर—

यह जयपुर के दक्षिण में लगभग 8 मील दूर स्थित है। यहां से हवाई अड्डा सिर्फ आधा मील दूर है। लगभग एक हजार वर्ष पूर्व निर्मित संघीजी द्वारा बनाया गया जैन मन्दिर यहाँ का मुख्य दर्शनीय स्थान है। कला की दृष्टि से राजस्थान के प्रमुख जैन मन्दिरों में इसकी गणना की जाती है। अभी पिछले कुछ वर्षों में बाल संग्राहलय की भी यहां स्थापना की गई है। यहाँ कपडों की छपाई का श्रेष्ठतम कार्य होता है तथा कागज बनाने का यह प्रमुख केन्द्र है।

गेटोर—

यह जयपुर नरेशों का दाह-स्थल है। यहाँ पर जयपुर के मृत राजाओं की स्मृति में छतरियां बनी हुई है। इन छतरियों पर खुदाई का काम बहुत बारीक लुभावना है और जयपुर की स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। इनमें जयपुर के निर्माता जयसिंह की छतरी श्रेष्ठ है। इसका एक मॉडल लन्दन के कंसिंगटन म्यूजीयम में भी रखा हुआ है।

जोधपुर

नगर के चारों ओर परकोटा है और सात बड़े-बड़े दरवाजे हैं। नगर को महाराजा मालदेव के समय मे ऐतिहासिक महत्व प्राप्त हुआ। जोधपुर का नवीन ढंग से विकास किये जाने का श्रेय महाराजा श्री उम्मेदसिंह जी को है जोधपुर निकटस्थ दर्शनीय स्थानों का विवरण इस प्रकार है—

किला—

युद्ध के समय काफी लम्बे मैदानों को एक ही स्थान से नियन्त्रित किये जा सकने वाले इस किले का काफी महत्व है। सौन्दर्य, शक्ति और पुरातन की याद मे खड़ा किला सुन्दर महल, शस्त्रागार, पुस्तकालय एवं चित्रशाला से सुसज्जित है यह किला 400 फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। इसे मेहरान गढ़ के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मंडोर एवं बालसमन्द—

जोधपुर शहर से क्रमशः 7 व 5 मील की दूरी पर स्थित है। मंडोर मारवाड़

की प्राचीन राजधानी थी। अब यह नगर उजाड़ सा हो गया। इसके कुछ तोरण द्वार जिन पर कृष्ण लीला अंकित है चौथी शताब्दी के मिले हैं। रावण की पत्नी मन्दोदरी यहीं की बतायी जाती है तथा मन्दोदरी की छतरी इसी पहाड़ पर है। यहा अनेक छतरियाँ व मन्दिर प्राचीन कला के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। मंडोर के प्राचीन उद्यान को फिर से सुरम्य बनाया गया है। यह वर्षा ऋतु में मनोरंजन का प्रमुख आकर्षण है।

बाल समन्द एक कृत्रिम झील है लम्बे पहाड़ी की घाटी के बीच यह झील सारे शहर को मीठा पानी देती है। झील का दृश्य देखने योग्य है।

सरदार समन्द –

जोधपुर से लगभग 35 मील दूर यह एक रमणीय झील है। यहां पर महाराजा श्री उम्मेदसिंह द्वारा निर्मित राजमहल है। इसे सरदार समन्द पैलेस के नाम से सम्बोधित किया जाता है। महल पहाड़ी पर है। समस्त भूमि पर एक बहुत बड़ा एवं सुन्दर बगीचा है, गर्मी की मौसम में सैकड़ों लोग यहाँ विहार के लिए जाते हैं।

उम्मेद भवन–

महाराजा श्री उम्मेदसिंह जी द्वारा निर्मित यह भवन आधुनिक भवन निर्माण कला का अद्‌भुत नमूना है। इस भवन पर लगभग 3 करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान है। इस महल में पाश्चात्य एवं पूर्वीय वस्तु कला का सुन्दर सामंजस्य देखने को मिलता है।

पब्लिक पार्क –

जोधपुर शहर का यह एक सुन्दर बगीचा है इसी में अजायबघर चिड़ियाघर तथा एक पुस्तकालय भी है। पब्लिक पार्क के निकट ही एक ऐतिहासिक छतरी पन्ना धाय की है। पन्ना धाय ने औरंगजेब की कट्टरता से बचाने के लिए अजीतसिंह को पालने का जिम्मा लिया था। इनके अतिरिक्त जसवंत कालेज, महाराज कुमार कालेज, सिविल इन्जीनियरिंग कॉलेज, रातानाड़ा महल, महात्मा गांधी का अस्पताल एवं उम्मेद अस्पताल दर्शनीय है। भवन में खुदाई का काम काफी बारीकी का है। यहां पुराने राजाओं के चित्र लगे हुए है। जसवन्तसिंह जी के बाद राजाओं का दाह संस्कार यहीं होता है।

पोलोग्राउण्ड –

सर प्रताप पैलेस के पास पोलोग्राउन्ड बना हुआ है। पहले यहाँ पर पाँच पोलोग्राउण्ड थे। जोधपुर के राव राजा हणुवंतसिंह तथा जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह भारत के प्रमुख पोलो खिलाड़ियों में थे तथा भाई जी श्री केशवराम पोलो स्टिक बनाने मे भारत प्रसिद्ध है तथा भारत की टीमों के साथ योरोप गये हैं।

हवाई मैदान—

भारत के प्रथम तीन हवाई मैदानों में से एक जोधपुर का हवाई मैदान भी है। द्वितीय महायुद्ध के बाद इसका विस्तार हुआ है भारत की आजादी के बाद इसे भारतीय वायु सेना का महत्वपूर्ण केन्द्र बनाया गया है।

रणकपुर

फालना जंकशन से 14 मील दूर एक छोटे से शहर सादड़ी से लगभग 6 मील पर रणकपुर नामक स्थान है। वह स्थान कोटा जोधपुर से लगभग 100 मील दूर है तथा उदयपुर से 60 मील दूर है, रणकपुर की प्रसिद्धि का कारण यहां का जैन मन्दिर है। यह जैन मन्दिर 400,00 वर्ग फुट क्षेत्र में फैला हुआ है तथा मन्दिर में 420 खम्भों युक्त 29 बड़े-बड़े हाल हैं। वहां की कारीगरी खम्भो की बनावट रोशनी व सजावट का दृश्य दर्शनीय है।

जैसलमेर

भारत की प्रकृति ने जहां हिमालय का सौंदर्य प्रदान किया है वहां रेगिस्तान का भी अपना सौंदर्य है। इस शहर के चारों ओर करीब 3 मील घेरे का पांच से सात फुट चौड़ा और 10 से 15 फीट ऊंचे पत्थर का परकोटा है। जैसलमेर का छींटेदार पत्थर विश्व में अपनी किस्म का एक ही है। परकोटे के भीतर 280 फीट ऊंची पहाड़ पर किला भी बना हुआ है। जिसमें 99 बुर्ज हैं। यहां कई महल यथा रंग महल, राज विलास एवं मोती महल आदि है। राजस्थान में प्राचीनता की दृष्टि से चित्तौड़गढ़ के बाद जैसलमेर का ही नम्बर आता है।

जैसलमेर में जैनियों के प्रसिद्ध मन्दिर सुन्दर व आकर्षक पच्चीकारी के लिए बेजोड़ हैं। जैन मन्दिर एक हिस्से जिन भद्र सूरी ज्ञान भण्डार मे भारत प्रसिद्ध कई प्राचीन पांडुलिपियों का अमूल्य संग्रह है। ऐसा अनुमान है कि बारहवीं शताब्दी पूर्व ही उनके महत्वपूर्ण पांडुलिपियां यहां उपलब्ध हैं। जैन ग्रन्थों के अतिरिक्त पुस्तकालय में अनेकों उच्चकोटि के ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं जिनमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

लौद्रावा पाटन—

जैसलमेर की प्राचीन राजधानी लौंद्रवा पाटन है और यह शहर से लगभग 10 मील दूर स्थित है। यहां के प्रसिद्ध मन्दिर देखने योग्य है। जैन धर्मावलम्बी इसे इसे तीर्थ स्थान मानते हैं। यहां पर उच्चकोटि के पत्थर से प्राचीन कारीगरी तथा आकर्षक ढग से बनाया गया मन्दिर तोरण द्वार भी दर्शनीय है। इसके अलावा यहां महल, जवाहर विलास व पटवों की हवेली आदि भी आकर्षक व सुन्दर है।

कोटा

कोटा के सरस्वती भण्डार में हजारों पांडुलिपियां सुरक्षित हैं जिनमें कई तो बहुत ही सुन्दर लिखी हुई है पब्लिक गार्डन, चम्बल पर बना वाटर वर्क्स और कोटा बांध आदि कई दर्शनीय स्थान हैं।

कोटा के आसपास भी कई स्थान पुरातात्विक महत्व के है। रामगढ के भिण्ड देवड़ा मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दी की शिल्प कला के सुन्दर नमूने हैं। भक्तिकालीन युग के महत्वपूर्ण स्थान अटरू के भवन और मन्दिर, शेरगढ़ में मुस्लिम शासन काल का बना हुआ एक किला जिसमें पवार राजाओं के प्राचीन शिलालेख उपलब्ध हुए हैं महत्वपूर्ण हैं। तहखाने में स्थित दानपुर तथा जैन मन्दिर भीणपुरे का सप्त मातृकाओं का प्राचीन-मन्दिर तथा श्री दृष्ट्देवी और डेक माता के सुप्रसिद्ध मन्दिर जो कोटा नगर के 12 मील के घेरे में स्थित है और इस क्षेत्र की प्राचीन संस्कृति का आभास देते हैं। कोटा के राजमहल, गीतावाड़ी का पावन तीर्थ, चम्बल का सिधाडिया घाट, अधर शिला और अमर निवास इस क्षेत्र के प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं।

कोटा से लगभग 50 मील दूर झालरा पाटन है यह चन्द्रभागा के नाम से भी जाना जाता है। सातवी शताब्दी से भी पूर्व का बना हुआ यहां का सबसे बडा मन्दिर शीतलेश्वर महादेव का है। एक छोटे संग्राहलय युक्त सतसहेली का मन्दिर भी पाटन का एक महत्वपूर्ण एवं दर्शनीय स्थान है।

कोटा से लगभग तीस मील दूर बारोली ग्राम में जगल में प्रकृति के सुन्दर स्थल पर स्थित आठवीं शताब्दी के देवालय भी दर्शनीय हैं।

झालावाड़

झालावाड का इलाका पहले कोटा का हिस्सा था यहां का राजा राजपूतो की झाला खाप के हैं और अपने को चन्द्रवंशी मानते है। झालावाड़ का नया विस्तृत राज्य सन् 1899 ई. में स्थापित हुआ था झालारापाट्न इसकी राजधानी थी। झालावाड शहर हरियाली से परिपूर्ण है। यहां प्राचीन शिला लेख अनेकों सुन्दर मूर्तियां तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का बहुत अच्छा संग्रह है। झालावाड़ के पास पाटन तथा चन्द्रावती के खण्डहर है। यहां की मूर्तियों पर सूक्ष्म खुदाई प्राचीन कला की उत्कृष्टता के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करती है जो देखने योग्य है। दर्शनीय स्थानों में सूर्य मन्दिर महत्वपूर्ण है।

उदयपुर

झीलों की नगरी उदयपुर पहाड़ियों से घिरी होने के कारण अत्यन्त रमणीय प्रतीत होती हैं। यहा के दर्शनीय स्थानो का विवरण निम्न प्रकार है :—

जग मन्दिर :—

इसें महाराणा जगतसिंह (प्रथम) ने 15 लाख रुपये की लागत से बनवाया था। चारो ओर पानी और बीच में जग मन्दिर का सौंदर्य अनिवर्चनीय है। यह भी पिछौला झील के बीच स्थित है।

जग निवास :—

यह पिछोला झील के एक टापू पर बना हुआ आकर्षक महल है। इसें महाराणा जगतसिंह (द्वितीय) ने वि. संवत् 1748 में बनवाया था। यहां के फव्वारों की छटा अद्‌भुत है।

सहेलियों की बाड़ी :—

फतहसागर की ऊंची पाल के नीचे फलों, सुन्दर पुष्पों एवं ऊंचे-ऊंचे हरे भरे पेड़ का यह बाग राजस्थान के प्रसिद्ध रमणीक बगीचों में से एक है। यहां के फव्वारों का दृश्य दर्शनीय है।

फतहसागर एवं स्वरूप सागर :—

पिछोला झील के बाद की छोटी सी झील को स्वरूप सागर तथा बड़ी झील फतहसागर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। फतहसागर का तट बहुत फैला हुआ है तथा दो पहाड़ियों के बीच आया है तट के साथ सड़क बनी हुई है तथा बीचों बीच मकराने का एक महल बना हुआ है। फतहसागर में पिछले कुछ वर्षों से नौका विहार का भी प्रबन्ध है।

पिछोला झील :—

इसे विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी में किसी बनजारे ने बनवाया था। यह ढाई मील लम्बी तथा डेढ मील चौड़ी झील है और इसके किनारे पर सुन्दर महल बने हुए हैं। पिछोला गांव के निकट होने के कारण इसका नाम पिछोला झील पड़ा हुआ है।

एकलिंगजी का मन्दिर :—

उदयपुर के राजाओं के कुलदेव का यह मन्दिर उदयपुर से 12 मील उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित है। मन्दिर के पास एक सुन्दर तालाब और महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित विष्णु का मन्दिर है जिसे आजकल मीरा बाई का मन्दिर कह कर भी सम्बोधित किया जाता है। 11 वी शताब्दी का बना सास बहू का मन्दिर भी दर्शनीय है। एकलिंगजी के मन्दिर की छतरियों पर मूर्तिकला का उत्कृष्ट काम है।

नाथद्वारा

उदयपुर से 30 मील उत्तर पूर्व में बनास नदी पर स्थित वल्लभ सम्प्रदाय का यह महान तीर्थ है। बनास नदी पर श्री नाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। ऐसा कहा जाता है कि मन्दिर में श्री नाथजी की मूर्ति औरंगजेब के समय में वृन्दावन से लाई गई थी। लाखों स्त्री-पुरुष प्रतिवर्ष यात्रा के लिए आते हैं।

कांकरोली

यहां पर वल्लभ सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर में द्वारिकाधीश की मूर्ति स्थापित है। हस्तलिखित पुस्तकों का एक बहुमूल्य संग्रह है। कांकरोली के दस मील पूर्व में प्रसिद्ध चार भुजा का मन्दिर है जहां नौ चौकी नामक एक बहुत बड़ा तालाब है।

राजसमन्द

कांकरोली से सम्बद्ध चार मील लम्बी और 3-4 मील चौडी यह झील महाराणा राजसिंह ने बनवाई थी। आज-कल इससे नहरें निकाल कर सिंचाई कार्य किया जा रहा है। राजसमन्द का बांध कला का उत्कृष्ट नमूना है।

ऋषभेव (केशरियानाथजी)

उदयपुर से 39 मील दक्षिण में धुलेव कस्बे में स्थित एक प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यहां प्रतिवर्ष हजारों यात्री दर्शन के लिए आते है। इस मन्दिर में चूंकि केशर चढाई जाती है, अतः इसको केशरियानाथ जी भी कहते है यहां वर्षा के दिनों में काफी हरियाली रहती है।

जयसमन्द

उदयपुर से लगभग 34 मील दक्षिण में नौ मील लम्बी तथा पांच मील चौड़ी यह झील एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है। इस झील का बांध राणा ... ने बनवाया था। आजकल इससे विभिन्न नहरें निकाल कर सिंचाई कार्य किया जाता है। आसपास के पहाड़ों व घने वनों में खुखार पशु रहते हैं तथा बीच के टापुओं में भीलों की वस्तियां हैं। बांध की बनावट देखने योग्य है।

सिरोही

सिरोही का हर "सिरणवा" नामक पहाड़ी के नीचे बसा होने के कारण सिरोही कहलाया। सिरोही के पहाड पर बने राजमहल देखने योग्य है। राजमहलों से थोड़ी ही दूर जैन मन्दिरो का समूह है। जो कि "देरीसेरी" के नाम विख्यात है। इन मन्दिरों में लगभग 400 वर्ष पुराना चौमुखा जी का जैन मन्दिर, वामणवार का श्री महावीर स्वामी मन्दिर तथा झाड़ोली का श्री शांतिनाथ का मन्दिर मुख्य है।

बसन्तगढ़

पिंडवाड़ा स्टेशन से 6 मील दूर है। यहां की पहाड़ी पर क्षेमवटी देवी का मन्दिर दर्शनीय है।

चन्द्रावती

आबू रोड स्टेशन से चार मील पर चन्द्रावती नामक प्रसिद्ध और प्राचीन नगरी के खण्डहर हैं। यहां पहले आबू के परमारों की राजधानी थी। परमारो के बाद वि. संवत् 1482 में सिरोही बसते तक यह देवड़ा चौहानों की भी राजधानी रही। यद्यपि इतिहास में इसका नाम नगण्य सा है फिर भी खण्डहर इसके अन्तर्गत गौरव का स्मरण कराते हैं।

आबू पर्वत

अरावली पर्वत पर यह शहर बसा हुआ है यहीं पर अरावली का ... शिखर गुरू (गुरु शिखर) है यहां खूब ठण्डक रहती है। यहा के कई मन्दिर व प्राकृतिक झीलें प्रसिद्ध हैं। पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर सूर्य अस्त होने का दृश्य देखने योग्य है। आबू पर्वत पर स्थित देलवाडा के प्रसिद्ध जैन मन्दिर, अचलगढ़ का विशिष्टों का मन्दिर तथा अर्बुदा देवी का स्थान प्रमुख दर्शनीय स्थानों में से है। आबू सैलानियो का प्रमुख आकर्षण केन्द्र है। राज्य सरकार द्वारा इसे और भी आकर्षक बनाने तथा विविध सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयत्न किये जा रहे हैं

ाजस्थान के आसपास के रहने वाले लोग गर्मी की ऋतु में यही रहते हैं राज्य कर्म-
ारियों को आवास आदि की विशेष सुविधा उपलब्ध है।

अर्बुदा देवी

अर्बुदा अर्थात् अम्बिका देवी का एक प्रमुख मन्दिर है। जो कि ऊंची पहाड़ी
: बीच स्थित है यहां की प्राचीन गुफा देखने योग्य है।

वशिष्ट का मन्दिर

आबू के लगभग डेढ़ मील दूर वशिष्ट का मन्दिर है। यहां वशिष्ट जी के साथ
ी भगवान राम व लक्ष्मण की भी मूर्तियां हैं तथा वशिष्ट का प्रसिद्ध अग्निकुण्ड यहीं
। जिसमें से क्षत्रियों के परमार, परिहार, सोलंकी और चौहान वंशज के मूल
ुरुषों का उत्पादन होना कहा जाता है।

अचलगढ़

परमार राजाओं द्वारा बनवाया हुआ यह स्थान देलवाड़ा से लगभग 5 मील
दूर है। यहां कुम्भा वेकमहल तथा भृतृहरि की गुफा दर्शनीय है।

देलवाड़ा

राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ और अत्यन्त कलात्मक मन्दिर देलवाड़ा में ही है।
यहां के भगवान आदिनाथ और नेमिनाथ के मन्दिर वास्तु कला की दृष्टि से उत्कृष्ट
माने जाते हैं। भगवान आदिनाथ का मन्दिर सन् 1031 ई. में विमलशाह ने लगभग
19 करोड़ रुपये की लागत से बनवाया था। इस मन्दिर मे मुख्य मूर्ति जैन धर्म के
प्रथम ऋषभदेव की है जिसमें हीरे पन्ने जुड़े हुए हैं। मन्दिर के पास ही विमलशाह
की अश्वरूढ़ पत्थर की मूर्ति है। यहां हस्तशाला भी है जिसमें पत्थर के दस हाथी
बने हुए है। मन्दिर के स्तम्भ तोरण, गुम्बज छत आदि सभी हिस्से वास्तुकला के
विभिन्न नमूनों से भरे पड़े हैं। पत्थर की कटाई कला मध्यकला की कलाप्रियता की
प्रतीक है। इसी मन्दिर के पास वस्तुपाल एवं तेजपाल का मन्दिर है। यह मन्दिर
भी विमलशाह के मन्दिर के समान ही सुन्दर है। सूक्ष्म नक्काशी का काम तो और
भी सुन्दर बन पड़ा है। इस मन्दिर की मुख्य मूर्ति भगवान नेमिनाथ की है। वस्तुपाल
के मन्दिर के निकट भीमशाह का मन्दिर है। इसमें 108 मन वजन की पीतल की
भगवान नेमिनाथ की मूर्ति काफी सुन्दर है। मन्दिरों के सौन्दर्य के साथ-साथ प्रकृति
का अच्छा सामंजस्य होने के कारण देलवाड़ा का आकर्षण और बढ़ जाता है।

राजस्थान के प्राचीन भाग

प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग की 7 वीं शताब्दी मे भारत यात्रा के समय
प्राचीन राजपूताना 4 भागों में विभाजित था। ये चार भाग निम्न नामों से जाने
जाते हैं :—

(i) गुर्जर (ii) बधारी।
(iii) वैराठा (iv) मथुरा

प्रमुख राजपूत वंश व राज्य

लेकिन समय के चक्र के साथ ही राजपूताना के राज्यों व प्रशासकों में परिवर्तन आए। अनेकों राज्यों का निर्माण व विलय हुआ। अनेकों वंशों ने शासन किया, नाम अर्जित किया और समय के साथ विलीन हो गये। वृहत राजस्थान के निर्माण से पूर्व निम्नलिखित वंश के राजा तत्कालीन राज्यों पर राज्य कर रहे थे :—

1.	गहलोत	उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा
2.	कछवाह	जयपुर, अलवर, प्रतापगढ़ व शाहपुरा
3.	राठौड	जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़
4.	झाला	झालावाड़
5.	परमार	दांता ठिकाना
6.	चौहान	बूंदी, कोटा, सिरोही
7.	यादव	करोली व जैसलमेर

इसके अतिरिक्त भरतपुर व धौलपुर के राज्य जाट राजाओं के अधीन थे। अजमेर केन्द्र प्रशासित भाग रहा। टौंक व पालनपुर में मुसलमान शासक थे। यह सम्पूर्ण क्षेत्र राजपूताना के नाम से जाना जाता था।

तत्कालीन राज्य व ठिकाने
(Erstwhile States and Thikanas)

निम्नलिखित मुख्य तत्कालीन राज्य व ठिकाने (खुद मुख्त्यारा) थे :—

राज्य

1. अजमेर-मेरवाड़ा
2. जयपुर
3. जोधपुर
4. जैसलमेर
5. बीकानेर
6. उदयपुर
7. अलवर
8. भरतपुर
9. करोली
10. धौलपुर
11. किशनगढ
12. कोटा
13. झालावाड़
14. टौंक
15. डूंगरपुर
16. प्रतापगढ
17. बासवाड़ा
18. बूंदी
19. शाहपुरा
20. सिरोही
21. दांता

ठिकाने

1. कुशलगढ़
2. लावा

(महत्वपूर्ण राजा व राजकुमार तथा उनसे सम्बन्धित नगर)
(Important Kings or Princes connected with cities)

राजस्थान में निम्नलिखित नगरों का नामकरण किसी न किसी राजा या राजकुमार की प्रसिद्धि या निर्माण करवाने के कारण हुआ है :—

नगर	राजा या राजकुमार
1. जोधपुर	राव जोधाजी
2. बीकानेर	राव बीकाजी
3. जयपुर	सवाई जयसिंह
4. जैसलमेर	भाटी जैसल
5. उदयपुर	राणा उदयसिंह
6. उम्मेद नगर	उम्मेदसिंह
7. गंगानगर	गंगासिंह
8. खिराजाबाद	खिजर खान
9. पंचकुण्ड	पाण्डव
10. दोराय	दारा
11. डूंगरगढ़	महारावल डूंगरसिंह
12. चित्तौडगढ़	चित्रगद् मौर्य
13. भरतपुर	राजा भरत
14. शाहपुर	शाहजहां
15. किशनगढ़	राठौर किशनसिंह
16. प्रतापगढ़	महारावल प्रतापसिंह
17. सरदार शहर	महाराजा सरदारसिंह
18. रतनगढ़	महाराजा रतनसिंह
19. सूरतगढ़	महाराजा सूरतसिंह
20. सुजानगढ़	महाराजा सूजानसिंह
21. अजमेर	अजयपाल
22. जहाजपुर	राजा जनमाजय

राजस्थान के तत्कालीन राज्यों के प्राचीन नाम

आधुनिक नाम	प्राचीन नाम	राजधानी
1. जोधपुर	मारवाड	मन्डोर
2. बूंदी व कोटा	हाड़ौती	बूंदी
3. जयपुर	ढुंढाड	आमेर
4. बीकानेर (नागौर)	जांगल	क्षत्रियपुर

5. उदयपुर	मेवाड़	चित्तौड़
6. जैसलमेर	माड़	जैसलमेर

राजस्थान के महत्वपूर्ण नगरों के प्राचीन नाम

वर्तमान नाम	प्राचीन नाम
1. बयाना	श्रीपंथ
2. बूंदी	हाड़ौती
3. बैराठ	विराट
4. चित्तौड	खिजराबाद
5. धौलपुर	कोठी
6. जयसमन्द	ढेवर
7. जैसलमेर	माड़
8. जोधपुर	मरूभूमि
9. मेवाड़	मेदपाट
10. नगरी	माध्यामिका
11. नागौर	अक्षत्रियपुर
12. रामदेवरा	रूणेचा
13. राजस्थानी	मरूभाषा
14. सांचौर	सत्यपुर
15. तारागढ़	गढ़ बीरली
16. अलवर	अल्पस
17. अरावली	आड़वाला

राजा एवं उनके सिक्के

राजपूताना के कुछ राजाओं ने अपने सिक्के भी चलाए जो निम्न ... हैं :—

1. स्वरूप शाही	महाराणा स्वरूपसिंह (उदयपुर)
2. अखै शाही	महाराजा अखैसिंह (जैसलमेर)
3. विजयशाही	महाराजा बिजयसिंह (जोधपुर)

ऐतिहासिक व्यक्ति परिचय

1. अर्जुनलाल सेठी—

अर्जुनलाल सेठी का नाम जन्म 9 सितम्बर 1880 को हुआ था। इनके ... का नाम जवाहरलाल सेठी व माता का नाम पर्ची देवी था। सन् 1898 में ... मैट्रिक व 1902 मे बी. ए. पास किया। यह दिगम्बर जैन खण्डेलवाल मे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने बी. ए. पास किया।

इन्हे जिलाधीश का पद दिया गया था लेकिन उन्होंने स्वीकार नहीं किया और अपने पिता की मृत्यु के बाद चौमू ठिकाने का कार्यभार सम्भाला। इन्होंने किसानों से अधिक लगान वसूल करने के परिणामस्वरूप सन् 1904 से क्रांतिकारी समिति का गठन किया। सन् 1908 के रेगूलेशन के अन्तर्गत इन्हे 6 साल की सजा हुई। सेठी जी ने जेल में अन्दर 60 दिन तक सत्याग्रह किया। इनकी गणना राष्ट्रीय नेता एवं संस्कृत अरबी, फारसी व अंग्रेजी के विद्वानों में की जाती थी।

2. अजीतसिंह महाराजा—

महाराजा अजीतसिंह के जन्म से पूर्व ही औरंगजेब आलमगीर मारवाड़ पर अपना अधिपत्य जमा लिया था वह अजीतसिंह व उनके भाई दलथम्भन को बाल्य काल में ही समाप्त कर देना चाहता था। लेकिन वीर दुर्गादास ने मुकन्ददास खीची व गोरा धाय की मदद से अजीतसिंह की रक्षा की और 28 वर्ष के बाद अजीतसिंह मारवाड़ को पुनः प्राप्त कर सके।

महाराजा अजीतसिंह दयालु एवं पक्के हिन्दू शासक थे। महाराजा अजीत-सिंह में गुण व अवगुण दोनों ही थे। एक महान् विद्वान व कवि के साथ ही वह घमन्डी व निर्दयी भी थे। उन्होंने दुर्गादास को अपने राज्य से निकाल दिया। जोधपुर के राजमहल, दौलतखाना व फतेह महल का निर्माण उन्होंने ही करवाया था। इनकी हत्या उनके पुत्र अभयसिंह ने करदी थी।

3. महाराणा अमरसिंह

अमरसिंह एक महान् योद्धा व राणा प्रताप के पुत्र थे। इन्होंने अपने पिता की अन्तिम इच्छा सम्पूर्ण मेवाड़ को स्वतन्त्रता कराने का प्रयास किया लेकिन अन्त में उन्होंने अपने सरदारो की सलाह पर मुगलो से सन्धि करली थी।

4. बापा रावल—

बापा रावल 2 साल की उम्र में नगेन्द्र लाए गए थे जहां एक लिंग जी की शरण मे उनका पालन हुआ। सम्वत् 734 में इन्होने चित्तौड दुर्ग पर कब्जा किया। बापा रावल मेवाड़ के वंश क्रम मे आठवें शासक थे। लोगों की दृष्टि मे रावल का स्थान पिता तुल्य था। इसलिए इन्हे बापा रावल के नाम से जाना जाता है।

5. बादल एवं गोरा—

गोरा व बादल दोनों भाई महान् योद्धा एवं मेवाड़ की रानी पद्मिनी के सम्बन्धी थे। अलाऊद्दीन खिलजी रानी पद्मिनी को प्राप्त करना चाहता था। उसने राणा रतनसिंह को कैद कर लिया। इस पर पद्मिनी ने गोरा व बादल की मदद से राजा को कैद से मुक्त कराया। बादल व गोरा बहादुरी से लड़े और युद्ध के दौरान गोरा की मृत्यु हो गई। बादल की उम्र उस समय 12 वर्ष की थी।

6. बिहारीमल व भारमल—

राजा बिहारीमल के समय मे जयपुर राज्य उन्नति के चरम शिखर पर था। सम्वत् 1571 में राजा बिहारीमल ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली इन्होंने अपनी पुत्र का विवाह भी अकबर के साथ किया। राजा बिहारीमल का अकबर के दरबार में सबसे अधिक किया जाता था।

7. बीकाजी राव—

राव बीकाजी बीकानेर राज्य के संस्थापक थे। बीकानेर राज्य की एक व्यंगपूर्ण मजाक का परिणाम है। एक समय बीकाजी अपने चाचा राव के साथ जोधपुर के राज दरबार में गये और दरबार मे देरी से पहुंचे और काना फूसी करते पकड़े गये। इस पर जोधपुर मे राजा जोधाजी ने कहा कि ये किसी क्षेत्र को जीतने की योजना बना रहे हैं। बीमारी ने इसे चुनौती के रूप मे स्वीकार किया और अपनी योग्यता व वीरता से नये बीकानेर का निर्माण किया। बीकानेर का किला इन्हीं द्वारा बनाया गया था।

8. चन्द्र शशि—

चन्द्र शशि राजस्थान की प्रसिद्ध कवियित्री रही हैं इनका जन्म 1886 हुआ मानते हैं। शगुन लीला इसी की रचना है। यह भी माना जाता है कि के राजा बख्तावरसिंह भी इसी नाम से कविता लिखा करते थे।

9. दादू—

दादू दयाल जन्म से गुजराती थे उन्होंने अपना अधिकाश समय राजस्थान बिताया और दादू पंथी विचाराधारा का प्रतिपादन किया। नरायना जयपुर इनका प्रसिद्ध स्थान है।

10. दुर्गादास—

मारवाड़ का प्रत्येक व्यक्ति वीर दुर्गादास के नाम से परिचित है। इनके पिता असकरणसिंह जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह के साथ रहा करते थे। बचपन दुर्गादास ने एक आदमी को मार दिया। उस समय महाराजा जसवन्तसिंह ने कहा था कि यह कभी डगमगाते हुए मारवाड को कंधा देगा। यह कथन सत्य भी हुआ। जब औरंगजेब ने जोधपुर के दोनों राजकुमारो को मारने का प्रयास किया तो वी दुर्गादास ने उन्हे 28 वर्ष तक कठिन परिश्रम से बचाये रखा और जोधपुर का राज्य अजीतसिंह ने पुनः प्राप्त किया। अजीतसिंह द्वारा मारवाड़ से निकाल पर दुर्गादास उदयपुर आ गये। वहाँ महाराणा ने उन्हें विजयनगर की जागीर दी। सन् 1775 में इनका देहात हो गया।

11. हाड़ी रानी व सरदार चूड़ावत—

सरदार चूड़ावत राणा राजसिंह के दरबार में मुख्य सरदार थे। राजसिंह रूपनगर की राजकुमारी रूपमति से विवाह करने जा रहे थे तब औरंगजे

को रोकने का कार्य सरदार चूडावत को सौंपा। जब चूड़ावत युद्ध-स्थल को प्रणाम कर रहा था तो उसने हाडीरानी को महल के झरोखे में खड़ा देखा और सेनाणी को रानी से याददास्त के लिए कोई चीज लाने को कहा। रानी महान् व उच्चकुल की क्षत्रिय राजकुमारी थी। उसने सोचा अगर में जीवित रही तो सरदार युद्ध में अधिक रुचि न ले सकेंगे और मेरी तरफ आकर्षित होंगे। इस पर उसने अपना सिर काटकर सरदार को भेज दिया। सरदार ने घमासान युद्ध करके औरंगजेब को रोके रखा व रूपमती व राणा राजसिंह की शादी सम्पन्न हो सकी।

12. जयमल एवं पत्ता–

सन् 1598 में अकबर ने चित्तौड़गढ दुर्ग पर आक्रमण किया। राणा उदय सिंह ने युद्ध किया और जयमल ने किले में स्थित सेना की कमान सम्भाली। दुर्भाग्यवश उसे गोली लग गई लेकिन फिर भी वह लड़ते रहे और युद्ध के मैदान में ही अपने प्राण त्याग दिये।

13. जसवंतसिंह महाराणा

गजसिंह की मृत्यु के बाद महाराणा जसवंत सिंह मारवाड़ की गद्दी पर पदासीन हुए। जसवन्तसिंह के अवयस्क होने के कारण शाहजहा ने एक योग्य अमीर भेजकर इनके राज्य की व्यवस्था की। यह शाहजहा के प्रति वफादार रहे। इन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध शाहजहां की तरफ से युद्ध लड़ा। औरंगजेब ने उन्हें महाराजा का नाम दिया और काबुल में विद्रोहों के दमन के लिए भेजा। मार्ग में उनकी मृत्यु जमरुद नामक स्थान के पास ही गई।

14. जोधाजी राव–

"जोधा भाग सके तो भाग;
थारो रिड़मल मारयो काल'

अर्थात् जोधा तू भाग सके तो भाग जा, कल तेरे पिता रिड़मल को मार दिया गया है। उपरोक्त शब्द सुनने के बाद जोधा ने मेवाड छोड़ दिया। मारवाड़ आकर उसने देखा कि उसकी राजधानी मन्डोर पर शत्रुओं ने कब्जा कर लिया है। उसने तुरन्त सेना एकत्रित करके मन्डोर पर आक्रमण किया लेकिन सफलता नहीं मिली। वह इधर उधर घूमता रहा। एक दिन उसने एक जाटणी के घर आश्रय लिया। जाटनी ने उनके लिए खीच पकाई। जोधाजी को भूख लग रही थी। इसलिए उन्होंने शीघ्र ही खीच खाना शुरू कर दिया तो उसकी अंगुलियां जल गई। इस पर जाटणी ने कहा कि वह भी जोधाजी की तरह मूर्ख है तब जोधाजी को आश्चर्य हुआ और इसका स्पष्टीकरण मांगा। तो जाटणी ने कहा कि जोधाजी ने सीमांत प्रदेशों को जीतने की अपेक्षा पहले केन्द्र-(मण्डोर) पर आक्रमण किया। इसी तरह आपने किनारे की खीच खाने की बजाय बीच में खाना शुरू किया। जोधाजी ने जाटणी से एक सबक सीखा और शीघ्र ही एक सेना का गठन करके सीमांत

को जीतता हुआ पूर्ण मारवाड़ पर कब्जा कर लिया और मण्डोर से 3 मील दूर एक महानगर जोधपुर) बसा कर अपनी राजधानी बनाई ।

15. जैतसी राव—

राव जैतसी महान प्रशासक एवं राजनीतिज्ञ थे। यह बहुत बुद्धिमान थे। जब हुमायूँ के मामान भाइयों ने आक्रमण किया तो राव जैतसी से पहले उन्हें किले मे प्रवेश दे दिया और फिर किले पर आक्रमण कर दिया। एक समय राजा मालदेव बीकानेर पर आक्रमण किया तो उसने शेरशाह सूरी की मदद से बीकानेर को बचाया। राव जैतसी ने अपनी बुद्धिमत्ता एवं दूरदर्शिता के कारण राज्य की आय को बिना कर लगाये दस गुना बढा लिया। उसने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति प्राप्त करली।

राव जैतसी को आधुनिक 'भारत का भागीरथ कहा जाता है। उन्होंने गंग नहर का निर्माण किया और बीका राज्य का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक विकास किया।

16. महाराणा कुम्भा—

महाराणा कुम्भा एक बहादुर, साहसी योद्धा थे। ये राणा सांगा के बाबा थे और अपने जीवनकाल में इन्होने अत्यधिक ख्याति प्राप्त की। इन्होंने अलाउद्दीन खिलजी को परास्त कर यादगार स्वरूप कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कराया। कुम्भलगढ़ दुर्ग भी इन्हीं द्वारा बनाया गया था। इन्हे संगीत, हस्तकला एवं अन्य कलाओं से भी प्रेम था। साथ ही ये संस्कृत के विद्वान व साहित्यक प्रवृति के व्यक्ति थे।

17. कमलावती—

कमलावती मेवाड़ की बहादुर व साहसी रानी थी। राणा की मृत्यु के बाद दुर्ग में रानी के साथ केवल 500 सिपाही शेष थे दूसरी तरफ अहमद शाह ने किले पर आक्रमण कर दिया। रानी कमलावती बहादुरी से लड़ती रही और अन्त में जलती चिता में भस्म हो गई।

18. कविवर व्रिंद—

कविवर व्रिंद का जन्म सन् 1700 मे नागौर जिले में मेड़ता ग्राम में हुआ था। इन्होने 'व्रिंद सतसयी' की रचना की। इन्होंने अपना अधिकांश समय किशनगढ़ रियासत में राजा मानसिंह व जयसिंह के काल मे गुजारा।

19. लाखा, महाराणा—

महाराणा लाखा महान् योद्धा एवं साहसी वीर थे। उदयपुर की प्रसिद्ध पिछोला झील का निर्माण इन्ही के समय मे हुआ था। महाराणा लाखा का विवाह रणमल राठौड़ की बहिन हंसा बाई से हुआ था। क्योंकि महाराणा लाखा के पुत्र चूंडा ने उससे विवाह करने से इन्कार कर दिया था। इसी कारण महाराणा लाखा का राज हंसा बाई के पुत्र मोकाजी को दिया गया था और चूंडा जीवन-पर्यन्त अविवाहित रहे।

20. रानी लीलावती—

खण्डवा की लड़ाई में महाराणा सांगा की पराजय के बाद बाबर ने चंदेरी पर आक्रमण किया। विशाल सेना का सामना करने के लिए रानी लीलावती के पास बहुत कम सैनिक थे। इसलिए रानी लीलावती ने राजपूताना की ऐतिहासिक परम्परानुसार सम्पूर्ण परिवारों सहित अपने को चिता में अर्पित कर दिया।

21. मालदेव राठोड़—

राणा मालदेव राठोड़ राणा सांगा की तरह महान् योद्धा थे। इन्होंने अनेकों राज्य जीतकर मारवाड़ की सीमा का विस्तार किया। इन्होंने हुमायूं एवं शेरशाह सूरी के दिल्ली सल्तनत के लिए हो रहे आपसी संघर्ष पर बहुत बुद्धिमत्ता से कार्य किया और मारवाड़ को बचाए रखा।

22. मानसिंह राजा—

राजा मानसिंह अपनी रणकुशलता, तरकीबों एवं प्रशासनिक अनुभव के लिए प्रसिद्ध थे। ये अकबर की सेना के सबसे बड़े सेनापति थे। राजा मानसिंह ने अफगानों का विद्रोह व बंगाल, बिहार, उड़ीसा के विद्रोह दबाने में मदद की। इनकी गिनती अकबर के नवरत्नों मे की जाती है। सन् 1576 में इन्होंने राणा प्रताप को हल्दी घाटी के मैदान में पराजित किया। मथुरा मे गोविन्दजी का मन्दिर इन्हीं द्वारा बनाया गया था।

23. मिर्जा राजा जयसिंह—

मिर्जा राजा जयसिंह महान् योद्धा थे। इन्होंने औरंगजेब की तरफ से शिवाजी से संघर्ष किया, उन्हें दरबार में पेश किया। लेकिन जब औरंगजेब शिवाजी को मृत्यु दण्ड देना चाहता था तो राजा जयसिंह ने एक चाल सोच कर उन्हें चुपके से गायब कर दिया।

24. मीरा बाई—

मीरा बाई नागौर जिले के मेड़ता नगर के राजा रतनसिंह की पुत्री थी। इनका विवाह राणा सांगा के पुत्र भोजराज सिंह से हुआ था। लेकिन बचपन से ही मीराबाई का भगवान् कृष्ण के प्रति अनुराग व लगाव था। अपने पति की मृत्यु के बाद मीराबाई ने अपना जीवन भगवान् की आराधना में लगा दिया।

25. प्रताप, महाराणा—

महाराणा का नाम इतिहास मे 'राणा कीका', 'मेवाड़ केशरी', 'मेवाड़सिंह' के नाम से भी जाना जाता है। भारतवर्ष का प्रत्येक नागरिक राणा प्रताप की बहादुरी, देशभक्ति, साहस एवं निर्भयता की भूरी 2 प्रशंसा करता है। महाराणा प्रताप ही राजपूताना के ऐसे सम्राट थे जिन्होंने अकबर की आधीनता स्वीकार नहीं की और मातृभूमि की रक्षा हेतु अपना सब कुछ अर्पण कर अपने छोटे से पुत्र एवं

पत्नि को लेकर जंगलों में भटकते रहे। राणा प्रताप ने एक बार आमेर के राजा मानसिंह के साथ भोजन करने से इन्कार कर दिया। क्योंकि उसने अपनी बहिन का विवाह अकबर से कर दिया था। इसलिए हल्दी घाटी के मैदान में अकबर व प्रताप की सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ। युद्ध में महाराणा प्रताप का अश्व चेतक घायल हो गया लेकिन वह महाराणा को लेकर जंगल में आ गया और महाराणा ने उसकी मृत्यु स्थान पर एक स्मारक का निर्माण करवाया। महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की स्वाधीनता की शपथ ली और जंगल में घूमते रहे। मृत्यु पर अपने पुत्र से भी यही इच्छा प्रकट की।

26. पन्ना धाय—

राजपूताना के इतिहास में पन्ना धाय का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। विश्व के इतिहास में स्वामि-भक्त एवं मातृ-त्याग के ऐसे ज्वलंत उदाहरण बहुत कम देखने को मिलते है। पन्ना धाय ने उदयसिंह की जान बचाने के लिए उसी की उम्र के अपने पुत्र बनवीर की नगी तलवार के सामने उदयसिंह बनाकर रख दिया और अपनी आँखो के सामने अपने पुत्र को कत्ल होते देखा। यही नही उसने चुपके 2 राजकुमार उदयसिंह का कुम्भलगढ़ में लालन-पालन की व्यवस्था की और समय पर राजा बनाया।

27. पदिमनी रानी——

मेवाड़ की रानी पद्मनी अपनी सुन्दरता के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष मे प्रसिद्ध थी। जब अलाउद्दीन खिलजी को इस बात का पता चला तो उसने रानी पद्मनी को प्राप्त करने के लिए चितौड़ पर आक्रमण कर दिया। किले मे चारो तरफ घेरा डाला गया लेकिन कोई परिणाम नही निकला। इस पर खिलजी ने प्रस्ताव रखा की वह केवल रानी की शीशे में झलक देखकर वापस चला जाएगा। जब उसने रानी की झलक देखी तो चाल से राणा को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन रानी पद्मनी ने गोरा व बादल की मदद व बुद्धिमत्ता से राणा को आजाद करा लिया और जब युद्ध के मैदान से मेवाड़ की सेना पराजित हो गई तो अपने आपको अग्नि में फेंक कर ऐतिहासिक जौहर का प्रदर्शन किया।

28. पृथ्वी सिंह—

पृथ्वीसिंह मारवाड़ के महाराजा जसवन्तसिंह का पुत्र था। 10 वर्ष की उम्र में उसने औरंगजेब के दरबार में चीते से लड़ाई की। इसलिए औरंगजेब ने उसे वयस्कता प्राप्त करने से पूर्व ही समाप्त करने की सोची। उसने उसे जहरी कपड़े पहिना दिये और वह मर गया।

28. पृथ्वीराज कवि—

पृथ्वीराज बीकानेर के प्रसिद्ध कवि थे और अकबर के दरबार में रहते थे।

21 नवम्बर 1962 को उसने चीनियों से घमासान युद्ध किया और 1 भारतीय के मुकाबले 10 चीनियों को मार गिराया। चीनियों ने यहां सेना की अधिकता जानकर अधिक सैनिक सहायता प्राप्त कर चौकी को चारों तरफ से घेर लिया लेकिन शैतानसिंह ने चौकी नहीं छोड़ी और अन्तिम दम तक मशीनगन चलाते रहे।

मेजर शैतानसिंह का जन्म 1 दिसम्बर 1924 में बनारस तहसील फलौदी के भाटी राजपूत हेमसिंह के घर हुआ था। इनकी तरह इनके पिता भी देश भक्त व सेनानी थे। प्रथम महायुद्ध में उन्होंने भाग लिया था। मेजर शैतानसिंह स्नातक की उपाधि प्राप्त कर सन् 1947 में सेना में भर्ती हुए।

35. सागरमल गोपा—

स्वाधीनता संग्राम के अमर सेनानी सागरमल गोपा जैसलमेर के निवासी थे। ये राजपुताना मध्य भारत कमेटी के सदस्य थे। इन्हें देश निकाल दिया गया और बाद में जैसलमेर के राजनैतिक प्रतिनिधि (Political Agent) ने सन् 1941 में इन्हें जेल में भेज दिया और जिन्दा जलवा दिया।

36. तेजाजी—

यह अभी विवादास्पद है कि तेजाजी की मां गूजरी थी या जाटनी। ये बचपन में पक्के बहादुर व सहासी युवक थे। एक कहावत है कि तेजाजी अपनी पत्नी को लेने सुसराल जा रहे थे तो उन्हें भयंकर आग में एक जहरीले सांप को जलते देखा। उन्होंने उसे बचा लिया। सांप इस पर नाराज हो गया और तेजाजी को काटना चाहता था। तेजाजी ने वापस आते समय काटने को कहा। जब तेजाजी वापस आए तो उन्होंने सर्प को काटने के लिए अपनी जीभ समर्पित करदी और स्वयं सिधारगये।

37. राणा उदयसिंह—

बचपन में उदयसिंह की रक्षा पन्ना धाय ने की थी। फिर इनका लालन पालन कुम्भलगढ दुर्ग में हुआ। धीरे 2 बड़े होने पर जब रिश्तेदारों को सत्य का पता चला तो उन्होंने अनेकों इच्छाओं से उदयसिंह को गद्दी पर बिठाया, लेकिन उनकी आशाएं निराशा में परिवर्तित हो गयी। उदयसिंह बहुत कमजोर व ऐयाश राजा थे। जब भी कभी युद्ध की सुनता, उदयसिंह किले से भाग जाता था। इन्होंने उदयपुर नगर का निर्माण कराया।

38. अमरसिंह राठोड़—

अमरसिंह राठोड़ जोधपुर नरेश के जगवन्तसिंह के भाई थे। इनके साहस शौर्य एवं पराक्रम को देखकर शाहजहां इसका सम्मान करते थे। एक बार सलावत खां शाहजहां के साले ने उसकी बेइज्जती की [illegible] उसने भरे [illegible] सलाबत खा का सिरकाट दिया। लेकिन बाद में अ[illegible] साले [illegible] धोके से उसका सिरकाट दिया।

39. रामसिंह राठौर

अमरसिंह राठौर की मृत्यु पर उसका शरीर मुगल दरबार से लाकर सत्ती बनाने का कार्य रामसिंह ने सम्पन्न किया। रामसिंह बहादुरी से लड़ा और सफलतापूर्वक अमरसिंह का मृत शरीर लेकर आ गया। रामसिंह जोधपुर रियासत के राजकुमार व अमरसिंह राठौर का भतीजा था।

राजस्थान के दुर्ग एवं किले

राजस्थान में 20 से अधिक किले हैं जो प्रसिद्ध हैं। छोटे-छोटे दुर्ग व गढ़ी भी अनेक हैं। कुछ किले व दुर्ग इस प्रकार हैं—

(1) चित्तौड़गढ़ का किला—

यह सबसे प्रसिद्ध और प्राचीन किला है जो मेवाड़ के राजाओं के अधिकार में रहा है। इस पर अनेक युद्ध हुए हैं और इसमें अनेक जौहर किये गये हैं। यह 500 फीट की ऊंचाई पर स्थित है काफी बड़े क्षेत्र-फल में फैला हुआ है।

(2) तारागढ़ का किला—

यह अजमेर में अरावली पर्वत के एक शिखर पर स्थित है। यह मैदान से 800 फीट ऊंचा है और 80 एकड़ क्षेत्रफल में है। इसका निर्माण अजयपाल ने कराया था। मेवाड़ के राजा पृथ्वीराज की पत्नी ताराबाई के नाम पर बने राजप्रसाद पर ही इसका नाम तारागढ़ पडा है। बाद में यह मुगलों तथा अंग्रेजों के अधिकार में रहा।

(3) रणथम्भौर का किला—

यह सवाई माधोपुर के निकट स्थित है। जहां राजा हमीर व अलाउद्दीन खिलजी का युद्ध (1301) हुआ था। यह बहुत मजबूत किला है।

(4) कुम्भलगढ़ का किला—

इसे मेवाड़ के राणा कुम्भा ने बनवाया था। यह उदयपुर से 60 मील दूर है और अरावली की पहाड़ियों पर बना है। यह भी मेवाड़ के अनेक युद्धों से सम्बन्धित है।

(5) नाहरगढ़ का किला—

यह जयपुर में एक पहाड़ी पर बना है कछवाहा राजाओं का खजाना इस किले में रखा जाता था।

(6) जयगढ़ का किला—

यह आमेर में स्थित है और एक पहाड़ी पर बना है। यह भी कछवाहा राजाओं का स्थान है। इसके अन्दर ही राजप्रसाद बने हैं। यह किला गुप्त खजाने के लिए पिछले दिनों चर्चित रहा है।

(7) जैसलमेर का किला—

यह भी एक प्राचीन किला है जो 280 फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित है।

(8) बीकानेर का किला—

इसका निर्माण 500 वर्ष पूर्व हुआ था। यहाँ स्थापत्य कला के सुन्दर नमूने पाये जाते है। यह जूनागढ़ कहलाता है।

(9) जोधपुर का किला—

यह 400 फीट की ऊंचाई पर पहाड़ी पर स्थित है। इसका सम्बन्ध मारवाड़ के युद्धों से है।

(10) भरतपुर का किला—

यह मिट्टी का किला कहलाता है परन्तु इसमें दोहरा परकोटा है। इसे अंग्रेज भी नही जीत पाये थे। इसका निर्माण यहां के जाट राजा सूरजमल ने करवाया था।

(11) डीग का किला—

यह भरतपुर से 32 कि. मी. दूरी पर है। इसमें राजा के महल स्थित है। पास में दो झीलें भी हैं।

(12) मांडलगढ़ का किला—

यह चित्तौड़गढ़ के पास स्थित है।

(13) सिधाना का दुर्ग—

इसे जोधपुर मे 54 मील पश्चिम में स्थित है इसे पंवार राजा वीर नारायण ने बनाया था।

(14) जालौर का किला—

इसे भी परमार राजाओं ने बनवाया था जो बाद में चौहानों व राठौड़ों के अधिकार में रहा।

(15) अचलगढ़ का किला—

यह आबू पर्वत के पास स्थित है जिसे राणा कुम्भा ने बनवाया था।

उपरोक्त के अतिरिक्त निम्न किले भी प्रसिद्ध हैं—

(16) नागौर का किला।
(17) भटनेर का किला।
(18) बूंदी का किला—
(19) इन्दरगढ़ का किला।
(20) सुवतगढ़ का किला।
(21) बयाना का किला

राजस्थान के महल

राजस्थान में निम्नलिखित महल प्रसिद्ध हैं—

(1) चन्द्रमहल, जयपुर (2) रामबाग पैलेस, जयपुर (3) जगमन्दिर महल, उदयपुर (4) जगनिवास महल, उदयपुर (5) विनय विलास महल, अलवर। (6)

पाल भवन महल, डीग (7) डीलालगढ़ महल, बीकानेर (8) राणा कुम्भा का हल, चित्तौड़गढ़ ।

राजस्थान की छतरियां

राजस्थान की निम्नलिखित छतरियां दर्शनीय हैं—

(1) ग्राहड की छतरियां—

उदयपुर से तीन मील दूर पर यहां मेवाड़ के महाराणाओं की छत-रियां है।

(2) मण्डोर की छतरियां—

जोधपुर से 8 कि. मी. दूर पर यहां राठौड़ राजाओं को छतरियां हैं।

(3) गेटोर की छतरियां—

नाहरगढ़ के किले के समीप बनी यहां कछवाहा राजाओं की छतरियां हैं।

(4) देवकुड की छतरियां—

बीकानेर से 8 कि. मी. दूर यहां पर यहां के राजाओं की छतरियां बनी है।

(5) राजा बख्तावरसिंह की छतरी—

यह अलवर में स्थित है।

(6) राणा प्रताप की छतरी—

यह बण्डोली गाँव के निकट स्थित है।

राजस्थान के म्यूजियम

राजस्थान के निम्नलिखित म्यूजियम प्रसिद्ध हैं।

(1) जयपुर का म्यूजियम—

यह रामनिवास बाग में स्थित है। इसमें यहां में इतिहास से सम्बन्धित कलाकृतियां, तैलचित्र, तलवारें ढाल, कपड़े आदि एकत्रित हैं।

(2) राजपूताना म्यूजियम—

यह अजमेर में स्थित है। इसमें यहां के स्थापत्य कला और मूर्तिकला के नमूने एकत्रित किये गये हैं।

(3) बीकानेर म्यूजियम—

यहां सिन्धु घाटी सभ्यता से लगाकर आगे आने वाले गुप्तवंश के भी नमूने संग्रहीत हैं।

(4) कोटा म्यूजियम—

यहां मध्यकाल की मूर्तिकला के नमूने संग्रहीत हैं और अनेक पाण्डुलिपियां भी सुरक्षित रखी हैं।

(5) अलवर म्यूजियम—

यहां हथियारों तथा ऐतिहासिक पुस्तकों का संग्रह उपलब्ध हैं।

राजस्थान का इतिहास

राजस्थान का प्राचीन काल का इतिहास

राजस्थान का इतिहास भी इतना ही प्राचीन का जितना कि भारतवर्ष का। यहां कालीबंगा में सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। आहड़ में फैली सभ्यता भी इसी के समयकालीन है। यहां आर्य भी आये और अपना राज्य स्थापित कर गये। बाद मे यहा मौर्य, शक, कुषाण तथा हूण भी अपना राज्य स्थापित करने में सफल हुए। इसके बाद यहां गुप्त वंश द्वारा आधिपत्य स्थापित किया गया। अतः यहां का प्राचीनतम इतिहास 5000 वर्ष ईसवी पूर्व से स्थापित होकर 700 ए. डी. तक कायम कर रहा। आठवीं शताब्दी में यहां राजपूत राजाओं ने अनेक राज्य स्थापित किये। राजस्थान का प्राचीनतम इतिहास संक्षेप मे इस प्रकार है--

(1) कालीबंगा की सभ्यता--

यहां सभ्यता हर्षद्वती तथा सरस्वती नदियों की घाटी में (गंगानगर के निकट) फैली थी। यह करीब 5000 वर्ष पूर्व थी। यह हडप्पा तथा मोहनजोदड़ों के समकक्ष तथा समकालीन थी। यहां पशुपालन, भाण्ड बनाना, खिलौने तैयार करना, मकान निर्माण करना आदि के नमूने प्राप्त हुए हैं। यहां खुदाई में बर्तन, तांबे के औजार, चूडिया, मुहरें, तैल, मूर्तियां, खिलौने आदि प्राप्त हुए हैं। यहां पर मकान सडकें, गोल कुए दीवारें आदि बहुत अच्छी व विकसित सभ्यता के द्योतक है। यह एक नगर योजना के प्रतीक है। यहा की दीवारें पक्की ईंटों से बनती थी और मिट्टी से उन्हें जोड़ा जाता था। मकानों व सड़कों की नालियां, कूडा डालने के भाण्ड आदि सफाई व्यवस्था को बताते हैं। मुहरो पर एक लिपि भी प्राप्ति हुई। जो पढ नही जा सकी है। भूचाल से या रेत की आंधी के कारण यह स्थान रेत में दब गया जिससे यह सभ्यता नष्ट हो गई।

(2) आहड़ की सभ्यता--

यहां सभ्यता उदयपुर के निकट आहड नदी घाटी में फैली थी। यह करीब 3500 वर्ष प्राचीन है। यहां भी खुदाई में प्राप्त सामग्री से ज्ञात होता है कि यहा पर मकान पत्थरों के बनते थे, उनकेकमरे बड़े थे। बास के द्वारा उन्हें छाया मे विभाजित किया जाता था। चिकनी मिट्टी द्वारा फर्श लीपे जाते थे। दीवारें एक के ऊपर दूसरी बनाई जाती थी। चिनाई बहुत सफाई से होती थी यहां के लोग कृषि से परिचित थे। इनके पास अन्न पीसने के पत्थर थे और खाना पकाकर खाते थे। बडी-बड़ी भट्टियां यहां सामूहिक भोज की पुष्टि करती है। नदियां एवं वर्षा द्वारा यहां की खेती को पानी प्राप्त होता था। यहां के लोग मिट्टी के बर्तन बनाना जानते थे।

जैसे कटोरियां, प्याले, मटके, कलश आदि। इन पर, चित्रकारी व चिकना व चमकीलापन भी उत्पन्न किया जाता था। इसके आभूषण, सीप, मूंगा, व मूल्य-

थान पत्थरों के थे। यहां तांबा उपलब्ध था जिससे वे औजार बनाते थे कुत्ता भेढा, हाथी, गेडा आदि इनके पशु थे। ये अपने मृतकों को आभूषण युक्त गाडते थे। इन सबसे सिद्ध होता है कि यहां की सभ्यता बहुत विकसित थी जो शायद भूकम्प, बाढ़ या आक्रमण द्वारा नष्ट हो गई थी।

(3) आर्य सभ्यता—

आर्य भी राजस्थान में आकर बसे, बात अनूपगढ़ तथा तरखा नवाला डेरा की खुदाई मे प्राप्त भूरी मिट्टी के बर्तनों से सिद्ध होती है। ये लोग पूर्वी व दक्षिण राजस्थान में ठहरे थे। यहां इन्होंने यज्ञ की महत्ता, इन्द्र व सोम की अर्चना के मन्त्रों की रचना, जीवन मुक्ति का ज्ञान आदि अर्जित किया। बाद में ये लोग गंगा व यमुना के मैदान की ओर बढ़े।

कहा जाता है कि महाभारत काल में बलराम व कृष्ण जांगल (बीकानेर) तथा मरुकान्तर (मारवाड़ या जोधपुर) से गुजरे थे। उस समय के तीर्थस्थल पुष्करारण्य तथा अर्बुदाचल भी राजस्थान में स्थित थे। भीनमाल, सांचोर तथा सिरोही के आस पास महाभारत की शाल्व जाति की बस्तियां भी स्थित थी। जंगल कौरवों के पूर्वजों का राज्य माना जाता है। उन्होंने विराटनगरी के राजा पर आक्रमण किया था परन्तु अर्जुन की सहायता से विराट के राजा की जीत हुई। बाद में नकुल ने नगरी, मरुभूमि, तथा पुष्कर क्षेत्र को जीता और सहदेव ने मत्स्य अवन्ति पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार राजस्थान पाण्डवो के चक्रवर्ती राज्य में शामिल हो गया।

जनपद युग—

ईसा के 200 वर्ष से 300 ई. तक राजस्थान में अनेक जनपद स्थापित हो गये। यहां पर उस समय ब्राह्मण तथा बौद्ध संस्कृति का विकास हुआ। इसका प्रमाण यहां से प्राप्त मुद्राएं, आभूषण, अभिलेख व खण्डहर है। उस समय सिकन्दर के आक्रमण के कारण पंजाब की कुछ जातियां राजस्थान में आगई थी। ये जातियां मुख्य रुप से मालव, शिवि, अर्जुनायन आदि थी। मालवों ने जयपुर के निकट नागरछल को अपना केन्द्र बनाया और बाद में अजमेर, टोंक मेवाड़ आदि तक फैल गये। इनके सिक्के तथा ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं। कुछ समय तक इनको पश्चिम के क्षत्रपोने परेशान किया था परन्तु बाद में इनकी शक्ति संगठित हो गई थी। इन्होंने क्षत्रपों को पराजित किया था। इनके एक राजा थी सोम ने 225 ई. मे एक यज्ञ किया और गोदान द्वारा ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया।

शिव लोगों ने चित्तौड के निकट मिरी में अपना जनपद स्थापित किया था। अलवर में शाल्व जनपद स्थापित हुआ था। भरतपुर में राजन्य तथा मत्स्य जनपद स्थापित हुए थे। परन्तु इन सब में नागरछल का मालवा जनपद प्रमुख था। इसी

के साथ भरतपुर व अलवर में अर्जुनायन जाति की विजय हुई थी। इन्होंने भी क्षत्रपों को परास्त किया था। उत्तरी राजस्थान में योधेय जाति स्थापित हो गई थी। इस जाति ने भी कुषाण शक्ति को नष्ट किया। इन सब जनपदों में एक विशेष प्रकार की शासन व्यवस्था थी जिसमें सेनापति को विशेष आदर प्रदान किया जाता था।

इन जनपदों में तथा अन्य भागों में पहले चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्य फैल गया था। इस बात का प्रमाण बैराठ कस्बे से प्राप्त अशोक महान का एक शिलालेख है। शक सम्वत के शुरू से कुछ वर्षों तक यहां कुषाणों का राज्य भी रहा। उनके क्षत्रप के रूप में शक लोग भी राजस्थान में आये। ये शिव के भक्त थे। बाद में जब कुषाणों तथा शकों की शक्ति क्षीण हो गई थी, तब मालव, अर्जुनायन, योधेय जातियां यहां अपने जनपद स्थापित कर सकी थी।

गुप्त वंश—

350 ई. के करीब उपरोक्त जातियों के जनपद क्षीण हो गये थे। गुप्त वंश के राजाओं ने उन्हें वैसा ही बना रहने दिया परन्तु इन्हें अर्ध आश्रित बना दिया। इस प्रकार वे हूणों के आने तक कायम रहे। समुद्रगुप्त ने इन गणतन्त्रों से कर वसूल किया। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने सम्पूर्ण राजस्थान पर अपना आधिपत्य रखा। यह गुप्त शासन पांचवीं शताब्दी के अन्तर्गत रहा।

हूणों का आक्रमण—

छठी शताब्दी के आरम्भ में हूणों ने उपर्युक्त जातियों के गणतन्त्रों को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया। उन्होंने बैराठ, रंगमहल, बड़ोपल पीर सुल्तान की थडी आदि समृद्ध स्थान नष्ट कर डाले। उस समय तोरमाण नामक उनके राजा ने राजस्थान पर अधिकार कर लिया क्योंकि भारत में गुप्त वंश भी नष्ट हो चुका था। तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल ने बाड़ोली नामक स्थान मे एक शिव मन्दिर बनवाया। परन्तु बाद में वह मन्दसौर के राजा यशोवर्धन से हारकर भाग गया।

वर्धन वंश तथा उसके पश्चात—

सातवी शताब्दी के प्रारम्भ से हूणों के बाद गुर्जरों का राज्य हो गया था। जालौर जिले में स्थित भीनमाल को इन्होंने अपनी राजधानी बनाया। इनका राज्य बहुत वर्षों तक रहा, परन्तु वर्धन वंश के आते ही यह उजड़ गया। हर्षवर्धन के पिता प्रभाकर वर्धन ने गुर्जरों के राज्य नष्ट कर दिया। उसी समय जंगल प्रदेश (बीकानेर) में नाग वंशियों का राज्य था जिनकी राजधानी नागौर थी। उन्होंने कोटा का क्षेत्र भी बाद में जीत लिया। हर्षवर्धन के राज्यकाल में यह राज्य अर्ध स्वतन्त्र थे, परन्तु उसकी मृत्यु के बाद वे स्वतन्त्र हो गये। उस समय भीनमाल के परिहार राज्य नागभट्ट ने हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज को जीत लिया और अपना

राज्य भीनमाल से वहां तक फैला दिया। उसका राज्य उस समय सम्पूर्ण उत्तरी भारत में फैला था। उसने सिन्ध के मुसलमानों को भी हराया था। आगे चलकर यह परिहार राज्य भी कमजोर हो गया हो और ग्यारहवी शताब्दी में महमुद गजनवी परिवारों को मारवाड से निकालकर सोमनाथ पर हमला करने में सफल हो गया। यही संक्षेप में प्राचीनकाल का राजस्थान का इतिहास है।

राजपूतों का उदय

सातवीं शताब्दी में राजपूतों का उदय माना जाता है। सिकन्दर के आक्रमण के बाद बहुत सी बहादुर जातियां जैसे—मालव, अर्जुनायन, शिवि, यौधेय राजस्थान में आकर बस गई थी और उन्होने अपने गणराज्य स्थापित कर लिए थे। बहुत से विदेशी जैसे शक, कुशाण तथा हूण भी राजस्थान में आकर वस गये। इन लोगो ने बहादुर हिन्दू जातियों के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित कर लिये और उनमे घुल मिल गये। जैन धर्म ने इन जातियों के सामंजस्य पर बहुत जोर दिया था। अपने-अपने क्षेत्र के अनुसार इन लोगों के आचार-विचार जीविका और सभ्यता में समानता आ गयी और इनके संगठन वन गये। धार्मिक पुरोहितों ने उन्हे क्षेत्रिय के रूप में ग्रहण किया और इनके नेताओं को राजपूत की सज्ञा दी। राजपुत्रों से ही राजपूत शब्द की उत्पत्ति हुई है।

यह भी कहा जाता है कि यहां के आदवासियो द्वारा अपनी सत्ता स्थापित की गई और गुजरात, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के मैदानों से राजपूत के समुदाय राजस्थान में आ गये। आदिवासियों के सहयोग से इन्होंने भी अपनी सत्ता स्थापित की। ये सत्तायें राजस्थान के प्रत्येक स्थान में फैल गई और सैकड़ों वर्षों से एक स्थायी स्वरूप इनको प्राप्त हो गया। इस काम में इनको अनेक कठिनाइया उठानी पड़ी जो भौगोलिक थी या जाति सम्बन्धी यह कहना कठिन है।

मुख्य-मुख्य राजपूत जिन्होंने सातवीं शताब्दी से बारवही तक अपने स्थापित कर लिये थे वे इस प्रकार हैं—(1) मारवाड़ के प्रतिहार और राठौड़ (2) मेवाड़ के गुहिल (3) सांभर के चौहान (4) चित्तौड़ के मौर्य (5) भीनमाल तथा आबू के चावड़ा (6) अम्बेर के कछवाहा (7) जैसलमेर के भाटी।

विदेशी इतिहासकारों ने राजपूतों को सीथियन, शक तथा हूण जातियों की सन्तान माना है। जबकि भारतीय इतिहासकार इन्हें विशुद्ध क्षत्रिय मानते है। परन्तु सत्य यह है कि इनमें देशीय और विदेशीय दोनों जातियों का मेल है।

राजस्थान के चौहानों का इतिहास

सातवीं शताब्दी मे चौहान राजपूत उत्तरी राजस्थान मे वसे हुए थे और अपनी शक्ति बढ़ा रहे थे। बहुत पहले ये लोग दक्षिणी राजस्थान की ओर भी जाकर बूंदी और सिरोही में बस गये थे। उत्तरी राजस्थान के चौहानों ने पहले सांभर को जीता। फिर इन्होंने अजमेर और जालोर पर विजय प्राप्त की। कुछ

समय इनकी राजधानी नागौर थी। फिर वह यहां से हटकर सांभर मे बना ली गई। साभर के बाद राजधानी का परिवर्तन अजमेर मे हो गया। बारहवीं शताब्दी मे जब उनकी शक्ति और बढ़ी तो इन्होंने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। इनका प्रथम शासक वासुदेव था। परन्तु ग्यारहवी शताब्दी के अन्त में पृथ्वीराज प्रथम का पुत्र अजयराज इनका शक्तिशाली राजा हुआ जिसने मालवा के परिमार शासक नर वरमन को परास्त करके अपने राज्य का विस्तार किया। 1113 मे अपने राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से इसने अजमेर की स्थापना की और वहा के किले का निर्माण कराया। इसके बाद उसका पुत्र अर्णोराज गद्दी पर बैठा। उसने तुर्कों को अजमेर से भगा दिया। जब उसकी शादी चालुक्य के राजा जयसिंह की पुत्री से हो गयी तो इनकी आपसी वैमनस्यता समाप्त हो गई। परन्तु उसका झगड़ा दूसरे चालुक्य राजा कुमारपाल से चलता रहा।

अर्णोराज के बाद दूसरा शक्तिशाली चौहान राजा विग्रहराज चतुर्थ था जिसने दिल्ली, पंजाब, पाली, जालौर नागौर आदि राज्यो को जीतकर अपने राज्य का विस्तार किया। वह एक अच्छा सेनाध्यक्ष, साहित्य प्रेमी, मन्दिरो का निर्माता आदि था। उसके बाद पृथ्वीराज द्वितीय चौहान राजा बना। परन्तु चौहानों का अन्तिम राजा पृथ्वीराज तृतीय था जिसने शसन की बागडोर 1117 ई. मे अपने हाथ मे ली। उस समय उसकी उम्र सिर्फ 11 वर्ष की थी। उसके राज्य की देख-भाल उसकी माता कर्पूरदेवी ने की और उसका सेनाध्यक्ष भुवनमल्य था। जब पृथ्वीराज ने कुछ समय बाद स्वयं शासन सम्भाला तो उसके विरुद्ध विद्रोह उठ खड़ा हुआ। पृथ्वीराज ने अपने चाचा अपरगाम्य और नागार्जुन को परास्त करके इस विद्रोह को समाप्त किया। फिर उसने पंजाब के भडाणकों का दमन किया। फिर पृथ्वीराज ने महोबा पर विजय प्राप्त की। फिर उसने चालुक्य राजा जो दक्षिण में फैल थे, के साथ संघर्ष किया और उन्हे परास्त किया। पृथ्वीराज की इनके बाद तीसरी विजय गढ़वाल के राजाओ की थी जो उत्तर पूर्व में फैले थे। इस विजय मे उसने कन्नौज के जयचन्द्र को भी परास्त किया और वह उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठा लाया और उसके साथ अपनी राजधानी में विवाह कर लिया।

पृथ्वीराज की सबसे महान विजय 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध मे मुहम्मद गौरी के विरुद्ध हुई इसमें मुहम्मद गौरी बुरी तरह घायल हुआ और जान बचाकर भाग गया। पृथ्वीराज ने उसका पीछा नही किया। यह उसकी बहुत बड़ी भूल थी। 1192 ई. के द्वितीय तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज की मुहम्मद गौरी से हार हुई। इस हार के कारण थे जयचन्द्र का मुहम्मद गोरी से मिल जाना, मुहम्मद गोरी का बड़ी सेना तैयार करके आना और सन्धि करने का भुलावा देना तथा पृथ्वीराज का विलासी और प्रमादी होना। इस हार मे पृथ्वीराज को मरवा दिया

गया। पृथ्वीराज रासो के अनुसार पृथ्वीराज को गजनी ले जाया गया। जहां शब्दभेदी बाण चलाकर उसने गौरी की हत्या की और अपनी आत्महत्या कर ली। पृथ्वीराजकी मृत्यु के साथ-साथ चौहान राजपूतों का साम्राज्य भी समाप्त हो गया।

राजस्थान के अन्य चौहानों का इतिहास

पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद उसका पुत्र गोविन्दराज रणथम्भौर चला गया और वहाँ उसने चौहान वंश की नींव डाली। इसके उत्तराधिकारी वहाँ राज्य करते रहे एक उत्तराधिकारी जैत्रसिंह ने नसरुद्दीन की सेना को असफल कर दिया। जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र हमीरदेव था जिसका नाम रणथम्भौर के साथ जुड़ा हुआ है। यह एक बहादुर योद्धा था। इसने चौदह स्थानों पर विजय प्राप्त की। इसने जलालुद्दीन के आक्रमण को 1290 ई. में विफल कर दिया। इसके बाद 1200 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया परन्तु राजा हमीर ने इसका आक्रमण भी विफल कर दिया। परन्तु सन्धि के बहाने और प्रलोभन देकर अलाउद्दीन ने राजा हमीर के साथियों को अपनी ओर फोड़ लिया जिससे किले की मोर्चाबन्दी ढीली कर दी गई और तुर्क सैनिक किले में घुस पड़े। राजा हमीर शत्रु सेना से लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हुआ और उसकी रानी, पुत्री तथा अन्य राजपूत स्त्रियों ने जौहर करके अपने धर्म की रक्षा की। इस प्रकार राजा हमीर के साथ रणथम्भौर का चौहान वंश समाप्त हो गया।

चौहान राजपूतों का शासन जालौर, नाडौर तथा सिरोही में भी था। कीतिपाल ने 1181 ई. में जालौर को प्रतिहारों से छीन कर अपने अधिकार में ले लिया था फिर उसके उत्तराधिकारियों समरसिंह, उदयसिंह, चाचिग देव तथा समान्तसिंह आदि हुए हैं। उदयसिंह के काल में इस राज्य का विस्तार हुआ। इस वंश का अन्तिम राजा कान्हडदेव था। उसकी अलाउद्दीन खिलजी से वैमनस्यता हो गयी थी। जब खिलजी की सेना गुजरात से विजय प्राप्त करके लौट रही थी। तो कान्हडदेव की सेना ने उस पर हमला कर दिया जिससे सुल्तान की सेना भाग खड़ी हुई। फिर उन दोनों में सन्धि के प्रयत्न भी हुए। परन्तु असफल रहे। 1131 ई. में जालौर के किले पर फिर आक्रमण किया गया जिसमें कान्हडदेव और उसका पुत्र वीरमदेव शत्रुओं से लड़ते हुए मारे गये और राजपूत महिलाओं ने जौहर करके अपने धर्म की रक्षा की।

दसवीं शताब्दी में राजा लक्ष्मण ने नाडोल में चौहान वंश कायम किया फिर वहाँ उसके उत्तराधिकारी राज्य करते रहे। यहाँ की सेनाओं ने महमूद गजनवी तथा मुहम्मद गोरी के विरुद्ध युद्ध किये। 1205 ई. में इनका वंश जालौर के चौहानों में मिल गया।

1311 ई. में राजा लुम्बा ने यहां चौहान वंश की नींव डाली और उसके उत्तराधिकारियों ने चौहान वंश कायम किया। 1451 ई. में लाखा यहां का राजा

बना जिसने आबू पर अपना अधिकार कर लिया। फिर उसका पुत्र जगमाल सिंहासन पर बैठा। इसके चरित्र में अनेक दोष थे जिसके कारण उसका वंश उसके साथ ही समाप्त हो गया।

हाड़ौती में भी 1241 ई. में चौहान वंश का शासन हुआ। इसका संस्थापक देवसिंह था। 1274 में कोटा को इसकी राजधानी बनाया गया। इसका अन्तिम राजा वीरसिंह था जो मुसलमान बादशाहों के आक्रमण में मारा गया, उसके पुत्र भी बन्दी बना लिए गये और इस प्रकार यह राज्य भी समाप्त हो गया।

गहलौत वंश का इतिहास

हूण राजा मिहिरकुल के बाद सातवीं शताब्दी में राजपूतों का जो वंश सबसे प्रमुख और प्रबल हुआ है वह गुहिल या गहलौत वंश था। इस वंश का दूसरा नाम सिसोदिया वंश भी था। इसकी उत्पत्ति के बारे में अनेकों बातें कही जाती हैं। इतिहासकार इन्हें विदेशी मानते हैं परन्तु अधिकतर इन्हें देशीय मानते हैं। यह मालवा, कल्याणपुर, चाटसू, बागड़, काठियावाड़ आदि स्थानों में फैले हुए थे, परन्तु बाद में मेवाड़ में एकत्रित होकर शक्तिशाली बन गये। पहले ये अन्य शासकों के सामन्त थे। इसका संस्थापक गुहिल नाम का कोई व्यक्ति था जिसके सिक्के साभर के संग्राहलय में सुरक्षित रखे हैं। गुहिल के उत्तराधिकारियों में बापा का नाम उल्लेखनीय है। बापा को रावल की उपाधि दी गई थी। इसी के द्वारा आठवीं शताब्दी में मेवाड़ राज्य की नीव डाली गई थी। कहते है कि पहले बापा हारीत ऋषी की गायें चराता था। उसकी सेवा से प्रसन्न होकर हारीत ऋषी ने देवी या महादेव की उपासना की और बापा के लिए राज्य माँगा। देवी या महादेव ने खुश होकर उसकी माँग पूरी कर दी और बापा को किसी स्थान से मुहरें निकलकर सेना तैयार करने का आदेश दिया। बापा ने ऐसा ही किया और मौर्यों से चित्तौड़ का राज्य छीन कर अपने अधिकार में कर लिया, बापा के बारे में कहा जाता है कि वह चार बकरे खाता था, पैंतीस हाथ की धोती और सोलह हाथ का दुपट्टा पहनता था और बत्तीस मन का खड्ग रखता था। बापा के उत्तराधिकारियों में भोज, सिलादित्य अपराजित, काल भोज, खम्भाण प्रथम, मत्तर, भतृभट्ट खम्भाण द्वितीय महायक, अल्लाहट, नरवाहन, शालिवाहन, शक्तिकुमार, सम्बाप्रसाद, विजयसिंह, विक्रमसिंह, रणसिंह आदि हुए हैं। फिर यहां का राज्य कमजोर पड़ गया जिसे गुजरात के अजयपोल और कीतू चौहान द्वारा पराजित किया गया। मन्थनसिंह पद्मसिंह तथा जैत्रसिंह ने इसकी व्यवस्था कुछ ठीक की। इस प्रकार तेरहवी शताब्दी में यहा बहुत उथल-पुथल होती रही।

तेहरवी शताब्दी में जैत्रसिंह ने मेवाड़ के राज्य में नयी शक्ति का संचार किया। उसने नाडौल के चौहान वंशीय उदयसिंह को हराया, परन्तु उदयसिंह की पोती का विवाह जैत्रसिंह के पुत्र के साथ हो जाने से उनका यह वैमनस्य

समाप्त हो गया। फिर उसने मालवा के परमारों को हराया। फिर इसका विरोध इल्तुतमिश की सेनाओं से हुआ जैत्रसिंह से सुल्तान की सेना की हार हुई और इस बार फिर सुल्तान को सेना को वापस लौटना पड़ा जैत्रसिंह के उत्तराधिकारियों में तेजसिंह समरसिंह और रत्नसिंह के नाम आते हैं। ये भी बहादुर राजा थे। रत्नसिंह की रानी पद्मिनी बहुत सुन्दर थी जिसे प्राप्त करने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर 1303 ई. में आक्रमण किया। आठ वर्ष तक सुल्तान चित्तौड़ के किले पर घेरा डाले रहा परन्तु जीत नहीं सका। फिर उसने रत्नसिंह से मेल करके पद्मिनी को एक दर्पण में देखा और चालाकी से रत्नसिंह को गिरफ्तार कर लिया। राजा को छुड़ाने के लिए 1600 डोलियों में राजपूत सैनिक सुल्तान के पास भेजे गये और उनके द्वारा रत्नसिंह को छुड़ाकर दुर्ग में भेज दिया गया। फिर राजपूत सेना सुल्तान की सेना से लड़ते-लड़ते समाप्त हो गई और रत्नसिंह गोरा और बादल भी बहादुरी से लड़ते हुए मारे गये। पद्मिनी तथा अन्य राजपूतानियों ने जौहर करके अपने धर्म की रक्षा की। इस प्रकार चित्तौड़ अलाउद्दीन के हाथों आ लगा।

रत्नसिंह के साथ-साथ राजपूतों की रावल शाखा भी समाप्त हो गई। चित्तौड़ के चारों ओर तुर्क फैल गये तथा चौहानों और राठौड़ों का जोर हो गया। परन्तु सीसोदे के सरदार हम्मीर ने मेवाड़ का उद्धार किया। अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद उसने चित्तौड़ पर अपना अधिकार कर लिया और सिसोदिया वंश की स्थापना की। उसके उत्तराधिकारी क्षेत्रसिंह व लक्षसिंह उसी के राज्य को आगे बढ़ाते रहे। लक्षसिंह या लाखा के समय राठौड़ रणमल की बहिन हंसाबाई का नारियल कुंवर चूड़ा के लिए भेजा गया। परन्तु चूड़ा के इन्कार करने पर हंसाबाई की शादी लाखा से हो गई जिनका पुत्र मोकल बाद में राजगद्दी पर बैठा। मोकल का साम्राज्य सरदार चूड़ा ने ही चलाया। परन्तु उसकी मा हंसाबाई ने उसे वहा से हटा दिया और अपने भाई रणमल को बुलाकर चित्तौड़ में राठौड़ों का बोल-बोला कर दिया। बाद में मोकल ने इस प्रभाव को कम किया।

मोकल की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कुम्भा 1433 ई. में मेवाड़ का शासक बना। अब तक के मेवाड़ के शासकों में यही एक सबसे बड़ा शासक और गुणवान व्यक्ति था। इसे अनेक उपाधियां प्रदान की गयी। यह साहित्य और कला का भी पोषक था। उसने पहले देशद्रोही सामन्तों का अन्त किया। फिर उसने भीलों की शक्ति को अपनी ओर मिलाया। उसने चूड़ा को भी मेवाड़ में बुला लिया। इधर मेवाड़ के सरदारों ने रणमल की हत्या कर दी जिससे राठौड़ों का प्रभाव मेवाड़ से समाप्त हो गया। फिर उसने अनेकों किलों को विजय किया। उसने आबू पर भी विजय प्राप्त की। फिर उसने रणमल के पुत्र जोधा से उसकी पुत्री का विवाह अपने पुत्र के साथ करके, आपसी वैमनस्य समाप्त कर दी। फिर उसने मालवा के

महमूद खलजी को हराया और मालवा पर विजय प्राप्त की। इस विजय के उपलक्ष में उसने कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कराया। छः महीने बाद उसने महमूद को भी छोड़ दिया और उसका राज्य लौटा दिया। छः वर्ष बाद यही महमूद अपनी पहली बार हार का बदला लेने के लिए मेवाड़ पर चढ़ आया और राजपूतों से कुम्भलगढ छीन लिया। परन्तु चित्तौड़ से उसे वापस जाना पड़ा फिर कुम्भा ने नागौर के शमाखां को हरा कर उसके किले को छीन लिया। इस हार का बदला लेने के लिए गुजरात का सुलतान कुतुबुद्दीन मेवाड़ की ओर चल दिया परन्तु मार्ग में उसके सेनापति की हार के बाद वह वापस लौट गया। फिर मालवा और गुजरात के शासकों ने मिलकर मेवाड़ पर आक्रमण किया। परन्तु सन्धि के बाद इन दोनों की सेनायें वापस लौट गयी। महाराणा कुम्भा अपने कलाप्रेम और साहित्य निपुणता के लिए भी विख्यात थे। उन्होंने संगीत के ग्रन्थ भी लिखे हैं।

राणा कुम्भा की उसके पुत्र ऊदा ने हत्या कर दी। परन्तु उसके भाई राणा रायमल ने उसे मेवाड़ से भगा दिया। रायमल ने माण्डू की सेना को भी हरा कर वापस कर दिया था। परन्तु उसके समय में आपसी फूट के कारण मेवाड़ का राज्य कमजोर हो गया था और सरदारों मे दलबन्दी शुरू हो गयी थी। उसके बाद उसका पुत्र राणा संग्रामसिंह सिंहासन पर आया। उसे अपने भाइयों से इस काम में अनेक कठिनाइयां उठानी पड़ी। फिर उसने गुजरात के सुल्तान पर आक्रमण करके अहमदनगर में लूट-मार की। बाद में सुल्तान को राणा के साथ सन्धि करनी पड़ी। फिर राणा ने मालवा के महमूद को परास्त करके कैद कर लिया और अच्छे व्यवहार की प्रतिज्ञा पर उसे छोड़ दिया। 1517 में दिल्ली के इब्राहिम ने मेवाड पर चढ़ाई की जिसमें सुल्तान की हार हुई। 1527 ई. मे बाबर और सांगा का युद्ध खन्वाह के मैदान में हुआ जिसमें बाबर से सांगा को हारना पड़ा।

सांगा के उत्तराधिकारी रत्नसिंह विक्रमादित्य और वनवीर थे। परन्तु सांगा का पुत्र उदयसिंह जो पन्ना दाई के कारण वनवीर से बच गया था, मेवाड़ का शासक बना। उदयसिंह का जीवन अनेक कष्टों से गुजरा। उसके सम्बन्ध पड़ौसी राज्यों से अच्छे थे। परन्तु उसकी मारवाड़ के राव मालदेव से नहीं पटी। जब शेरशाह चित्तौड़ पर आक्रमण करने आया तो उदयसिंह ने उससे सन्धि कर ली। उसने मुगलों के गोला बारूद से बचने के लिए चित्तौड़ के चारों ओर आबादी पर आक्रमण करके उसे जीतना चाहता था। इसलिए चित्तौड़ के किले का भार जयमल पर छोड़ा गया और उदयपुर जाकर रहने लगा। आस-पास की बस्तियां भी उजाड़ दी गयी। अन्त में राजपूतों और अकबर का युद्ध हुआ। इसमे अकबर जीत तो गया परन्तु उसकी सेना को बहुत हानि हुई।

राणा उदयसिंह के बाद महाराणा प्रताप मेवाड़ के शासक बने। उन्हें अनेकों

संकटों से गुजरना पड़ा परन्तु इन्होंने अकबर से सन्धि नहीं की। उन्होंने मानसिंह के साथ भोजन न करके भी अपने स्वाभिमान का परिचय दिया और इसका परिणाम 1576 ई. का हल्दीघाटी का युद्ध था। इस युद्ध में राणा प्रताप और मानसिंह का मुकाबला हुआ। प्रतापसिंह के घोड़े चेतक ने मानसिंह के हाथी के मस्तिष्क पर पैर जमा दिया और राणा ने भाले से उस पर वार किया परन्तु मानसिंह हौद में छिप गया और बच गया। चेतक की टांग टूटने से कुछ दूर पर उसकी मृत्यु हो गई लड़ाई कुछ दिन तक चली। आखिर में मानसिंह बिना जीते वापस लौट गया। राणा ने मुगलों को खूब छकाया। जिससे वे मेवाड़ से भाग निकले। इसके बाद राणा को कठिनाइयां अवश्य उठानी पड़ी परन्तु उसके मन्त्री भामाशाह ने अपनी निजी सम्पत्ति देकर राणा को सेना तैयार करने में सहायता की। इस सेना से उसने मेवाड़ की खोई हुई भूमि अकबर से प्राप्त की। फिर भी चित्तौड़ और माण्डलगढ़ उसके अधिकार में नहीं आ सके। उसकी राजधानी चावंड नामक कस्बे में थी। जहां 1597 में प्रताप की मृत्यु हुई और जहां उसके स्मारक के रूप में छोटी सी छतरी अब भी बनी है।

राणा प्रताप की मृत्यु के बाद अमरसिंह मेवाड़ का शासक बना। उसने भी अपने पिता की प्रतिज्ञा को बनाये रखा। उसने उजड़ी हुई बस्तियों को आबाद कराया। 1599 ई. में हुए मुगल आक्रमण जिसका सेनापति सलीम था, का अमरसिंह ने मुकाबला किया। परन्तु सलीम उदयपुर जाकर लौट गया। जब सलीम खुद बादशाह बन बैठा तो उसने भी मेवाड़ पर आक्रमण करवाये। परन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिली। 1613 ई. में जहांगीर अपनी सेना लेकर खुद अजमेर पहुँचा और शाहजादा खुर्रम के द्वारा उसका नेतृत्व कराया। इससे मुगलों ने अपने कुछ ठिकाने जीत लिये। बाद में राणा और मुगल बादशाह में सन्धि हो गई। अमरसिंह की मृत्यु के बाद राणा कर्णसिंह मेवाड़ का शासक बना। उसे चित्तौड़ वापस मिल गया था। उसने शहजादे खुर्रम का स्वागत भी किया। फिर राणा जगतसिंह और राजसिंह उसके उत्तराधिकारी बनें। राजसिंह ने चित्तौड़ के दुर्ग की मरम्मत करवाई जिसे शाहजहां ने स्वीकार नहीं किया। परन्तु शाहजहाँ की मृत्यु के बाद उसने औरंगजेब की सहायता की। बाद में राजसिंह ने औरंगजेब की धार्मिक नीति का विरोध किया। परन्तु उससे सम्बन्ध बादशाह से नहीं बिगड़े। जब औरंगजेब ने मारवाड़ पर आक्रमण किया और जसवन्तसिंह के पुत्र अजीतसिंह को बन्दी बना लिया उस समय अजीतसिंह को वीर दुर्गादास ने छुड़ाकर मेवाड़ में लाकर रखा। इससे मुगलों और राजपूतों में फिर से लड़ाई शुरू हो गई परन्तु कोई युद्ध नहीं हुआ क्योंकि 1680 ई. में राजसिंह की मृत्यु हो गई थी और औरंगजेब भी मराठों की शक्ति कम करने के लिए दक्षिण में चला गया था।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मेवाड़ राज्य में शांति बनी रही। 1818 ई. मेवाड़ के राजपूतों की सन्धि इस्ट इण्डिया कम्पनी से हो गई। जिससे वहां शांति कायम हो गई।

राठौड़ वंश का इतिहास

राजस्थान के उत्तरी और पश्चिमी भागों में राठौड़ राजपूतों का राज्य कायम हुआ जिसे मारवाड़ के नाम से पुकारते हैं। इसमें जोधपुर और बीकानेर के राज्य शामिल हैं। राठौड़ शब्द राष्ट्रकूट से बना है जो एक दक्षिण की जाति थी। कुछ लोग इसको हिरण्याकश्यप की सन्तान मानते हैं। परन्तु जोधपुर का राठौड़ वंश बंदायु के वंश से उत्पन्न हुआ है। यहाँ के एक राव सीहा बंदायु छोड़कर लूनी और पाली के निकट आकर बस गए थे। सोलंकियों की प्रार्थना पर इन्होंने सिन्धु के मारू लाखा को पराजित किया। भीनमाल के ब्राह्मणों की प्रार्थना पर इन्होंने यहां के मुसलमानों को परास्त किया। इसके बाद इन्होंने भोमियों; भाटियों, बालचा, चौहानों में लाखा फुलाड़ी आदि को परास्त किया। इससे इनकी वीरता की एक धाक जम गई और उनके राजपूत राजाओं ने अपनी कन्याओं की शादी उनके साथी कर दी। फिर इसने अपना राज्य पाली के पास स्थापित किया। दो सौ वर्ष क अवधि में राठौड़ों का राज्य मारवाड़ में पूरी तरह से स्थापित हो गया।

राव सीहा के बाद उसके पुत्र आसथान ने राठौड़ों की शक्ति को मजबूत किया। परन्तु जलालुद्दीन खिलजी की फौजों के साथ लड़कर वह वीरगति को प्राप्त हुआ। फिर उसके उत्तराधिकारी धुहड़, रायपाल, कर्णपाल, भीम आदि ने प्रतिहारों, भाटिया और तुर्कों से मुकाबला किया। बाद में जालणसी, छाणा और तीड़ा ने भी अनेक युद्ध किए और म्होवा, भीनमाल, अमरकोट आदि प्रदेशों को मारवाड़ का हिस्सा बनाया।

राठौड़ का प्रथम बड़ा शासक वीरमदेव का पुत्र राव चूड़ा था। इसने धीरे-धीरे अपनी जागीर को बढ़ाया और सैनिक शक्ति को शक्तिशाली बनाया। फिर उसने मण्डौर के किले को जीता। वहा से चूड़ा ने अपनी शक्ति इकट्ठी करके नागौर के सूबेदार को परास्त किया और तुर्की थाने को जीता। फिर उसने अपने भाई जयसिंह से फलौदी छीन लिया क्योंकि वह भाटियों से मिलकर चूड़ा को कुचलना चाहता था। अन्त में चूड़ा की शक्ति कमजोर हो गई और भाटियों ने उससे नागौर छीन लिया और वह स्वयं युद्ध में मारा गया।

राव चूड़ा का उत्तराधिकारी राव रणमल था जिसने अपनी बहिन हंसाबाई की शादी राणा लाखा से कर दी थी। उसने मेवाड़ की सेना के साथ अजमेर और माण्डु को दबाया लाखा की मृत्यु के बाद उसके पुत्र मोकल का शासन भार रणमल पर आ पड़ा। उस समय वह मेवाड़ और मारवाड़ दोनों का स्वामी था। उसने जालौर पर भी अपना अधिकार कर लिया था परन्तु 1438 ई. में चित्तौड़ के किले में वहां के सरदारों ने उसकी हत्या कर दी। रणमल के बाद उसका पुत्र राव जोधा

मारवाड़ का शासक बना। उसने मण्डोदर के किले को जीतना चाहा और 15 वर्ष में उसे वह सफलता मिली। फिर उसने शीजत को विजय किया। 1459 ई० में उसने जोधपुर नगर बनाया और वहां के किले का निर्माण कराया फिर जोधा ने अपनी पुत्री का विवाह कुम्भा के पुत्र से कर दिया। जिससे उसकी वैमनस्यता समाप्त हो गई।

राव जोधा के उत्तराधिकारी राव सातल और राव सूजा थे। राव सातल ने अपने भाई बरसिंह को अजमेर के हाकिम मल्लूखां से छुड़ाने के लिए अजमेर पर चढ़ाई कर दी। बरसिंह तो छोड़ दिया गया परन्तु मल्लूखां ने मेड़ता और जोधपुर पर आक्रमण किया जिसमें उसे भागना पड़ा परन्तु राव सातल की मृत्यु हो गई। इधर बीका ने जो राव जोधा का पांचवा लड़का था, राजस्थान के उत्तरी भाग को विजय किया। और बीकानेर शहर बसाया। उसने आसपास का इलाका भी जीता। फिर उसके लड़के नरा और लुणकरण बीकानेर के स्वामी बने। उसने जैसलमेर पर अपना अधिकार जमा लिया।

राव सूजा के बाद उसका पौत्र गंगा मारवाड़ का शासक बना। उसने राणा सांगा से मेल करके नागौर के शासक दौलतखा को हराया। उसके बाद मारवाड़ का महान शासक गांगा का पुत्र मालदेव हुआ। इसने गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह के विरुद्ध मेवाड़ की रक्षा की और कुम्भलगढ में छिपे उदयसिंह को बनवीर के विरुद्ध, चित्तौड़ के सिंहासन पर बैठाया। फिर उसने नागौर, मेड़ता, अजमेर और जालौर पर अधिकार किया। उसका विवाह जैसलमेर, के लुनकरण की पुत्री से हुआ हुमायूं जब कन्नोज में शेरशाह से हारकर पश्चिम की ओर भागा तो मालदेव से उसने सहायता मांगी जिसने उसे अस्वीकार कर दिया और हुमायूं को अमरकोट जाना पड़ा। फिर शेरशाह ने मालदेव पर आक्रमण किया। इसमें एक स्थान पर सामेल में शेरशाह को कुछ सफलता मिली, परन्तु राजपूतों की बहादुरी देखकर जोधपुर जाने का उसका इरादा बदल गया। अन्त में उसने कहा कि एक मुट्ठी बाजरा के लिए वह हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता। मालदेव के बाद उनका पुत्र राव चन्द्रसेन गद्दी पर बैठा। इसने भी अकबर के विरुद्ध लगातार युद्ध किए, परन्तु जोधपुर अकबर के हाथ में चला गया। राठौड़ों की इस हार का कारण आपसी फूट थी।

अकबर ने जोधपुर की देख-भाल के लिए रायसिंह को नियुक्त किया उसने अपने दुश्मनों को समाप्त किया और मुगल-साम्राज्य की सेवा की और उसके सम्बन्ध जहांगीर से भी अच्छे रहे।

चन्द्रसेन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र उदयसिंह मारवाड़ का शासक बना उसने अपनी पुत्री का विवाह अकबर के साथ कर दिया। जिससे मारवाड़ में सुख और शान्ति फैल गई। इसके बाद उसके पुत्र सुरसिंह को मुगलों ने गुजरात सिरोही और दक्षिणी राज्यों के विरुद्ध सेना में रखकर भेजा। शेरसिंह के पुत्र

गजसिंह को भी दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया फिर उसके पुत्र जसवंतसिंह को मारवाड का शासक स्वीकार किया गया। उसने शाहजहां की सेवा की, परन्तु यह औरंगजेब के विरुद्ध लड़ता रहा और उसे मिलकर धोखा देता रहा।

जसवन्तसिंह के बाद उसका पुत्र अजीतसिंह जो उसकी मृत्यु के बाद पैदा हुआ था मुगलों के क्रोध का भाजन बना। औरंगजेब ने उसे मारवाड़ का उत्तराधिकारी नहीं माना बल्कि उसे और उसकी मां को कैद में डाल दिया। परन्तु उसकी रक्षा जोधपुर के सरदारों द्वारा की गई। वीर दुर्गादास ने अजीतसिंह और उसकी मां को किसी प्रकार जेल से मुक्त कराया और मारवाड पहुंचाया। फिर दुर्गादास ने मेवाड और मारवाड में सन्धि कराई दुर्गादास मराठों से भी मिला। अजीतसिंह की रक्षा के लिए उसको मारवाड से हटाकर मेवाड और सिरोही में रखा गया। अन्त में दुर्गादास ने अजीतसिंह को मारवाड की गद्दी पर बैठाया। बाद में उनका बादशाह से मेल हो गया। फिर अजीतसिंह की भी जोधपुर में हत्या कर दी गई।

अठारहवीं शताब्दी में मारवाड आन्तरिक कलह के कारण बरबाद हो गया। मराठों ने भी उसे अपने आक्रमण द्वारा नष्ट किया। बाद में मारवाड़ के मानसिंह और आमेर के जगतसिंह के बीच उदयपुर की राजकुमारी से विवाह करने के विषय पर आपसी वैमनस्य हो गया। अन्त में मानसिंह ने 1818 ई. में अंग्रेजों से मित्रता करली और इस प्रकार मारवाड में सुख और शान्ति स्थापित हो गई।

कछवाहा राजपूतों का इतिहास

सिकन्दर के आक्रमणों के समय कछवाहा राजपूत ग्वालियर और नरवर से हटकर पश्चिम की ओर चले गये थे और जयपुर के निकट आकर बस गये थे। इनके एक वंशज दुलाहराव ने बड़गुजरों को परास्त करके ढूंढाड़ राज्य की स्थापना की थी। फिर इसी वंश के कोकिल देव ने 1207 ई० में मीणों को परास्त करके आमेर प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की और उसी को राजधानी बनाया और इसी ने ही यादवों से मेड और वैराठ जीते। इसी वंश के शेखा ने अपना अलग राज्य शेखावाटी के नाम से स्थापित कर राजपूतों के राजनैतिक प्रभाव को कायम किया। परन्तु इसके बाद उन्होंने अपने सम्बन्ध मुगल सत्ता से जोड़ [illegible] जिससे इनका प्रभाव समस्त राजस्थान में फैल गया। [illegible] क्तिशाली [illegible] चवनदेव का नाम

भारमल कूटनीतिज्ञ था। उसने अपनी पुत्री का विवाह अकबर से कर दिया। इस मित्रता के द्वारा उसे हर प्रकार की मुगल सहायता मिली। भारमल के बाद उसके पुत्र भगवानदास ने अपने पिता का मार्ग अपनाया और मुगल साम्राज्य की ओर से मेवाड़, गुजरात, काश्मीर और अफगानिस्तान में हुए मुगल युद्धों में भाग लिया। इसने भी अपनी पुत्री मानबाई की शादी शहजादे सलीम के साथ की।

भगवानदास का दत्तक पुत्र मानसिंह अपने पिता की मृत्यु के बाद आमेर का शासक हुआ। यह अकबर की सेना में एक सेनापति था। मुगल सेना के साथ वह गुजरात, मेवाड़, बंगाल और अफगानिस्तान भेजा गया। राणा प्रताप के विरुद्ध हुए हल्दीघाटी के युद्ध का नेतृत्व मानसिंह ने ही किया था। परन्तु इस युद्ध में उसे कोई सफलता नही मिली। मानसिंह से खुश होकर अकबर ने उसे बिहार और बंगाल का सूबेदार भी नियुक्त किया।

मानसिंह के बाद उसका पुत्र भावसिंह आमेर की गद्दी पर बैठा। उसके पुत्र न होने के कारण महासिंह का पुत्र मिर्जा राजा जयसिंह गद्दी का हकदार बना। इसने भी मुगलों का बहुत साथ दिया और जहांगीर, शाहजहाँ तथा औरंगजेब आदि मुगल सम्राटों की सेवा की। उसे दक्षिण कन्धार तथा बिहार में युद्ध करने के लिए भेजा गया। पुरन्दर पर घेरा डालकर उसने शिवाजी को भी सन्धि करने और आगरा जाकर औरंगजेब से मिलने के लिए बाध्य किया। अन्त में जब वह बीजापुर पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया और जब वह वहां से लौट रहा था तो औरंगजेब ने उसे जहर दिलाकर मरवा दिया।

मिर्जा राजा जयसिंह के बाद उसके उत्तराधिकारी रामसिंह बिशनसिंह और सवाई जयसिंह आमेर की राजगद्दी पर आये। जयसिंह ने ही जयपुर नगर बसाया और पांच वैधशालाएं स्थापित की। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बहादुरशाह ने आमेर से जयसिंह को हटा दिया। फिर जयसिंह ने मारवाड़ के अजीतसिंहा और मेवाड़ के अमरसिंह के साथ मेल करके मुगल शक्ति के विरुद्ध लड़ने की योजना बनाई और जोधपुर और आमेर वापिस उनके शासकों से प्राप्त कर लिए। बहादुरशाह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र बहादुरशाह ने जयसिंह का मालवा का सूबेदार बनाया और फिर उसके द्वारा जाटों का दमन कराया।

जयसिंह के बाद आमेर की गद्दी पर प्रतापसिंह शासक बना। उनके समय में मराठों के आक्रमण के द्वारा और आन्तरिक कलह के कारण इस राज्य की शक्ति क्षीण हो गई थी। प्रतापसिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ने जगतसिंह ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सन्धि कर ली और आमेर राज्य को इस प्रकार सुख शान्ति प्रदान की।

अन्य राजपूत राजाओं का इतिहास

उपर्युक्त वर्णित राजपूतों के अतिरिक्त राजस्थान में अन्य राजपूत वंश भी उत्पन्न हुए। इनमे गुर्जर या प्रतिहार राजपूत प्रमुख थे जिनके राज्य सातवी से बारहवी

शताब्दी तक मण्डारे, भण्डौच, जालौर आदि में पाये जाते थे। इनके अतिरिक्त राजपूतों का दूसरा वंश परमारों का था जिनके राज्य भी आठवीं से तेरहवी शताब्दी तक आबू, जालौर, बागड़ आदि मे स्थापित हुए थे। जैसलमेर में भाटी राजपूत का राज्य भी बारहवीं शताब्दी तक कायम रहा था। इसके अतिरिक्त चावड वंश के राजपूत अपना राज्य भीनमाल मे स्थापित कर सके थे। फिर भरतपुर, करौली धौलपुर आदि मे यादव वंश के राजपूत फैल गए थे। जो बाद में अलवर के पास जाकर बस गए। कुछ अन्य राजपूत वंश भी इसी प्रकार बारहवीं शताब्दी तक फैले और बाद मे शक्तिशाली राजपूतों या विदेशी मुसलमान शासकों के आक्रमण में लपेट में आकर या तो समाप्त हो गये और उनमें ही विलीन हो गए। हाड़ौती अथवा कोटा बूंदी क्षेत्र में भी हाडा राजपूतों ने अपने राज्य कायम किए और सोलहवी शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक मुगलों के सामन्त बने रहे। इन सभी राजपूतों के राज्य अधिक शक्तिशाली नही थे।

राजस्थान के इतिहास की महत्त्वपूर्ण तिथियां

प्रमुख युद्ध व तिथियां

1191 तराइन का प्रमुख युद्ध—पृथ्वीराज व मुहम्मद गौरी-गौरी हारे।
1192 तराइन का द्वितीय युद्ध—पृथ्वीराज व मुहम्मद गौरी-पृथ्वीराज हारे।
1301 रणथम्भौर का युद्ध—हम्मीर और अलाउद्दीन-हम्मीर हारे।
1303 चित्तौड़ युद्ध—राणा रत्नसिंह और अलाउदीन खिलजी-राणा हारे।
1527 कनवाहा का युद्ध—राणा सांगा और बाबर-राणा हारे।
1544 सामेल (जैतारण) का युद्ध–राजा मालदेव और शेरशाह–राजा हारे।
1576 हल्दी घाटी युद्ध—राणा प्रताप और अकबर-राणा हारे।
1803 लस्वरी युद्ध—दौलत राव सिन्धिया और लार्ड लेक-सिन्धिया हारे

अन्य प्रमुख तिथियां

728 चित्तौड़ में मेवाड़ राज्य की नीव—बापा रावल
967 जयपुर राज्य की नीव—धोलाराय
1031 देलवाडा का आदि नाथ मन्दिर—विमलशाह
1156 जैसलमेर की नींव—जैसल
1230 देलवाड़ा का नेमीनाथ मन्दिर—तेजपाल व वस्तुपाल
1242 बूंदी राज्य की नीव—हाड़ा देवराज
1440 चित्तौड़ का विजय स्तम्भ—महाराजा कुम्भा
1459 जोधपुर शहर की नींव—राव जोधा
1518 बांसवाडा राज्य की नीव—जगमल
1567 उदयपुर शहर की नीव—उदयसिंह

1596 किशनगढ़ की नींव—किशनसिंह

1625 कोटा राज्य की नींव—माधोसिंह

1660 राज समंद की नींव—राजसिंह

1691 नाथद्वारा मन्दिर—राजसिंह

1727-28 जयपुर शहर की नींव—जयसिंह II

1733 भरतपुर राज्य की नींव—सूरजमल जाट

1771 अलवर राज्य की नींव—प्रतापसिंह

1838 झालावाड़ राज्य की नींव—माधवसिंह

(3) राजस्थानी कला साहित्य एवं संस्कृति
(Rajasthani Art Literature & Culture)

(क) राजस्थानी कला

ललित कलायें

साहित्य के क्षेत्र में राजस्थान जितना सरनाम रहा है, ललित कलाओं के क्षेत्र में भी उसकी उपलब्धियां उतनी ही महत्वपूर्ण रही हैं। राजस्थानी चित्र-शैलियों का भारत की चित्रकला के इतिहास में अद्वितीय स्थान है। भारतीय चित्रकला को जो समृद्धि प्राप्त हुई है, उसमें राजस्थान की चित्रकला का अमूल्य योगदान सभी कला समीक्षकों ने एक स्वर से स्वीकार किया है।

चित्रकला की भांति यहां की मूर्ति कला भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर चुकी है। जयपुर के मूर्तिकारों की छेनी का चमत्कार प्रान्त और देश की सीमाओं को लांघ कर सुदूर विदेशों तक विस्तार पा गया है।

मूर्तिकला ही नहीं, संगीतकला के क्षेत्र मे भी यहा के गायकों ने अपनी गौरव पताका फहराई है। शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत दोनों में ही यहां के कलाकारों ने उन ऊंचाइयों का स्पर्श किया है, जो बहुत ही बिरले साधकों का सौभाग्य होता है।

यहां संक्षेप में राजस्थान की इन तीनों ही ललितकलाओं के बारे में स्थूल जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

चित्रकला

भारतीय जनता की रसप्रधान कल्पना और अनुभूति का जो विस्तृत क्षेत्र है उस समग्र का चित्र राजस्थानी शैली में कालान्तर में उसी से अनुप्राणित हिमाचल चित्र शैली में प्राप्त होता है। जनता के काव्य, संगीत और नाटय से भी इस कला का घनिष्ठ सम्बन्ध था। प्रेम इस कला का मूलतत्व है। कहा जा सकता है कि प्राकृतिक दृश्यों की लिखाई में जैसी उत्कृष्ट सफलता चीनी चित्रकारों को प्राप्त हुई थी कुछ वैसे ही प्रसिद्ध, प्रेम के क्षेत्र में राजस्थानी चितेरों को प्राप्त थी। उनकी दृष्टि मे प्रेम ही जीवन में विचित्रता लाने का मर्म है। सोते हुए

हृदय में प्रेम के द्वारा नये लोक में प्रवेश करते हैं। भारतीय प्रेम ही हृदयों को पारस्परिक संयोग में बांधने का एकमात्र कारण है। प्रेम के बिना हृदय एक दूसरे से पृथक बने रहते हैं। राधा और कृष्ण के रूप में जगतीतल के स्त्री और पुरुष प्रेम के लोक में अपने आपको मूर्तिमत देखते है। स्त्री पुरुष का प्रेम व्यवहार राधा कृष्ण की प्रेम लीला की झांकी मात्र है। प्रेम की यह सरस, सुबोध और सुन्दर व्याख्या राजस्थानी चित्रकारों के हाथ में खूब फूली-फली, जिसके फलस्वरूप अनेक भावात्मक चित्रों की सृष्टि हुई। श्रीकुमार स्वामी के शब्दों में "राजस्थानी चित्रकला की सुन्दर कृतियों को देखते हुए हमारे मन में ऐसा भाव उत्पन्न होता है कि राजा कृष्ण का पवित्र लीला लोक हमारे अपने जीवन की अनुभव भूमि है।" यदि हम अपने जीवन में ही सौंदर्य के दर्शन नहीं कर पाते तो अपरिचित और पराई वस्तुओं में उसे कैसे पा सकते हैं? अपने गृह मन्दिरों में अपने जीवन की लीला में जो हमें नहीं मिलता वह हमें कहीं भी प्राप्त नही हो सकता। ऐसी दृढ़ आस्था राजस्थानी चित्रों की मानस पृष्ठ भूमि को आलोकित करती है। इसी कारण ये चित्र स्त्री पुरुषों के नित्य के जाने पहचाने जीवन के सजे सजाये आलेखन प्रतीत होते हैं।

राजस्थानी चित्र शैली स्त्रियों की सुन्दरता की खान है। भारतीय नारी के आदर्श सौंदर्य की उसमें पूरी छटा है। कमल की तरह उत्फुल्ल बड़े नेत्र, लहराते हुए केश, धन स्तन क्षीण कटि और ललित अंगयष्टि। भारतीय स्त्री के हृदय में प्रेम का अटूट भण्डार है। उसका प्रभाव मानो इन चित्रों में बह निकला है।

अनेक प्रकार के चटकीले रंगों का प्रयोग इन चित्रों की विशेषता है। भांति भांति के चटक रंगों को एक साथ सजाने का रहस्य इन चित्रकारों को विदित हो गया था। लाल, पीले. हरे, बैंगनी, किरमिजी, काले, सफेद और सुनहरी रंगों की खुदाई चित्रों को अत्यन्त मनोहर बना देती है। कहीं-कहीं तो चतुर चित्रकार अनेक रंगों के साथ क्रीड़ा करते हुए जान पड़ते हैं।

राजस्थानी चित्रों के विषय बहुत विस्तृत है। राधा कृष्ण की लीला, अनेक प्रकार की नायक नायिकाएं, रामायण महाभारत की कथाएं, ढोला मारु, माधवी नलकाम कदला, सदृश लोक कथाएं, स्त्री पुरुषों के शृंगार भाव, ऋतुओं के चित्र और बारहमास तथा राजाओं की प्रतिकृतियां या शबीह इन चित्रों के विस्तृत विषय है। लेकिन इनकी सबसे बड़ी विशेषता रागमालाओं का चित्रण है जिसके लिए राजस्थानी शैली भारतीय चित्रकला मे अनोखा स्थान रखती है।

राग और रागिनी संगीत के विषय है, किन्तु काव्य और चित्र के साथ भी उनका सम्बन्ध है। प्रत्येक राग और रागिनी के पीछे जो मनोभाव है, उसको पहिचान कर उसकी चित्रात्मक लिखाई से ही राग-रागिनी के चित्रों का स्वरूप निष्पन्न हुआ है। उदाहरण के लिए टोडी रागिनी के चित्र में एक युवती "

बजाती हुई दिखाई जाती है, जिसके संगीत स्वर से आकर्षित होकर मृग चारों ओर से घेरते हुए दिखाए जाते हैं।

राग का "टोडी" नाम दक्षिण भारत से लिया गया है, जहां मध्यकाल में मलाबार प्रदेश "तोढी मण्डलूम" के नाम से प्रसिद्ध था। वीणा दक्षिण का प्रसिद्ध वाद्य है। चित्रगत राग का तात्पर्य स्पष्ट है। उससे यही ध्वनि निकलती है कि कोई युवती किशोरावस्था को छोड़कर यौवन में पदार्पण करती है। उसके सौंदर्य संगीत से आकृष्ट होकर मृग रूपी प्रेमी युवक उसके चारो ओर एकत्र हो रहे हैं। बिलावल राग के चित्र से यौवन गर्विता नायिका दर्पण में अपना सौंदर्य देखकर अपने ही रूप पर रीझती हुई दिखाई जाती है। भैरवी रागिनी के चित्र अत्यन्त प्रसिद्ध और सुन्दर हैं। इनमें शिव की प्राप्ति के लिए शिव पूजा में निरत स्त्री अंकित की गई है। भारतीय वसन्त के मानसिक उल्लास ऋतु और प्राकृति सौदर्य को प्रकट करते हैं। प्रायः मृदंग बजाती हुई सखियों के साथ नृत्य से थिरकते हुए कृष्ण इन चित्रों के विषय हैं। भैरवी, मालव, श्रीराग, बसन्त, दीपक और मेघ इनका सम्बन्ध छःह ऋतुओं से है। और प्रत्येक राग का सम्बन्ध पांच या अधिक रागिनियों से है। इन सबसे चित्रांकन में चित्रकारों को भाव और सौंदर्य का विस्तृत क्षेत्र प्राप्त हुआ और इस प्रकार राजस्थानी चित्र शैली भारतीय जीवन की व्यापकता के साथ मिल गई।

राजस्थान गुजरात की सीमा के समीप इस शैली का पूर्वोदय हुआ होगा। अवश्य ही उदयपुर, मेवाड़ और मालवा में इसकी आरम्भिक लीला भूमि होनी चाहिए। उस सामग्री की सुव्यवस्थित अनुसंधान का कर्त्तव्य शेष है। सोहलवीं सदी के निश्चित उदाहरण अभी तक उपलब्ध नहीं किये जा सके हैं। किन्तु शैली के विकास की दृष्टि से यह माना जा सकता है कि जिस चित्रकला का मध्याह्न सत्रहवी शती में हुआ होगा उनका प्रारम्भ लगभग एक शती पूर्व तो हुआ ही होगा। डाक्टर आनन्दकुमार स्वामी पारखी आख से कुछ राजस्थनी चित्रों की शैली सोलहवी सती को स्वीकार करते हैं। इस विषय में अभी इस शैली के समुचित अध्ययन से और भी नई जानकारी मिलने की आशा है। शनैः शनैः राजस्थान के पूरे क्षेत्र में यह चित्र शैली व्यापत हो गई और उदयपुर की भांति अनेक राज्यो में इसके रचना केन्द्र स्थापित हो गये। राज्याश्रय से बाहर भी अनेक चित्रकार बराबर चित्र लिख रहे थे। राजस्थान में शायद ही कोई ठिकाना ऐसा हो जहां इस शैली के चित्र न लिखे गये हों।

राजस्थानी चित्र शैली की श्वास वायु राज दरबारों के अवरुद्ध वातावरण से नहीं, जनता के उच्छवसित वातातपिक जीवन से आई हैं। सतरहवीं शती में तो चित्रों के विषयों का सम्बन्ध राजकीय जीवन से नहीं के बराबर है। उसमें जीवन का ही आलेखन हुआ है। लगभग तीन शतियों तक लोक मानस को रस की अभूतपूर्व अनुभूति से इस शैली ने आनन्दित किया है। देश के बसन्त में क्रमशः आने वाले मलयानिल की भांति देश के एक कौने से उठकर इस चित्र

शैली ने विस्तृत भूखण्ड को छा लिया। राजस्थानी चित्रों में भावों के अपूर्व मेघ जल बरसे हैं। भाव और कल्पना की अनेक धाराएं इस चित्र शैली में लीन हो गई। राजस्थानी चित्रकार रंगों के जादूगर थे। उनकी वर्ण यंजना सचमुच किसी अभूतपूर्व नेत्र कौमुदी का सुख देती है। उनके चित्र रस के अक्षय होते हैं। सचित्र ग्रन्थ और फुटकर चित्रावली के रूप में अनेक भावात्मक चित्रों का अंकन राजस्थानी शैली में हुआ। मनोभावों की चित्रात्मक अभिव्यक्ति राजस्थानी चित्र शैली का प्राण है। मानवीय हृदय सदा रस का अभिलाषी होता है। राजस्थानी चित्र मुख्यतः रसात्मक है। अतएव इन चित्रों की भाषा मानवीय हृदय के अति सन्निकट है। श्रीकुमारस्वामी के शब्दों में राजस्थानी चित्रकला विश्व की महान चित्र शैलियों में स्थान पाने योग्य है।

राजस्थानी चित्रकला के इस प्रसंग में यहां की लोक चित्रकला के प्रतीक भित्ति चित्रों की चर्चा करना अत्यन्त आवश्यक है।

भित्ति चित्र

राजस्थान, जिसका कोई भवन, चित्रों से खाली नहीं है, भित्ति चित्रों की दृष्टि से बहुत समृद्ध प्रदेश है। बिना चित्रों के भवन भूतवास समझे जाते हैं। भवन के प्रमुख द्वार पर गणपति, द्वार के दोनों ओर भारी आकृतियां, अश्वारोही, अथवा गजारूढ़ सामन्त चित्रित किये जाते हैं, लड़ते हुए हाथी, सेवक, दौड़ते हुए ऊंट, रथ, घोड़े, गायों के झुण्ड गोवत्स अथवा कदली पत्र लिखे जाते हैं। शंख, चक्र, पदम और पताकायें भी द्वारों पर चित्रित रहती है।

इस दिशा में जयपुर, कोटा, बूंदी, किशनगढ़, बीकानेर, उदयपुर सभी राजस्थान के प्रमुख नगर उल्लेखनीय है। किन्तु कोटा इस दिशा में अधिक सम्पन्न है। सबसे छोटा नगर होते हुए भी वहां के रसज्ञ श्रीमन्तों ने इसे खूब सजाया है। जहां भी दृष्टिपात करिए, चित्रों के विविध रूप दिखलाई पड़ते है। दक्षिण के चित्रकारों ने भी कोटा में रहकर अपनी कला का गौरव प्रकट किया है, तंजोर शैली के अनेक चित्र कोटा के भवनों में चित्रित हैं। झाला जी की हवेली, रसिक बिहारी जी के मन्दिर में भित्ति चित्रों की वह परम्परा अब तक देखी जा सकती है जब कोटा की चित्र शैली ने अपना एक पृथक स्थान बनाया था। कोटा की चित्र शैली यद्यपि बूंदी से आई हुई है और बूंदी के चित्रकारों की ऋणी है, तब भी उसकी एक विशेषता है जो अस्तित्व को प्रकाश में ला सकी है।

बूंदी के चित्र आलेखन की दृष्टि से बड़े श्रम और सम्पन्न और विविध है। इनकी कल्पनामूलक अभिव्यक्तियां कृष्णलीला के शृंगारिक प्रसंगों पर आधारित और सौंदर्य के विविध भेदों पर आश्रित है। भट्ट जी की हवेली, राजमहल और मन्दिरों के अनेक गृह चित्रों से सुसज्जित हैं। ये आलेखन आकृति में खड़े शृंखला बद्ध और प्रसंगों को क्रम से प्रकाश में लाने वाले हैं। इनमें रंग आज भी चमकदार

सुवर्ण के आलेखनों से सौंदर्य सम्पन्न तथा रेखाओं की गतिशील बारीकियों से युक्त है।

राजस्थान में भित्ति चित्रों को चिरकाल तक जीवित रखने के लिए एक आलेखन पद्धति है जिसे आरायश कहते हैं। आरायश पर चित्रों को स्याही की रेखाओं से सर्वप्रथम लिखकर रंग भरे जाते हैं। इसकी एक विशेष विधि है जिसे जयपुर के अस्सी प्रतिशत कलाकार जानते हैं। इस पद्धति का प्रचार सारे राजस्थान में है, किन्तु उसका जन्म जयपुर में ही हुआ प्रतीत होता है। यह भी सम्भव है कि ये परम्परागत हों। जयपुर में इसका विशेष प्रसार है। इसके अतिरिक्त यहां की आरायश अधिक सुन्दर और टिकाऊ होती है। जयपुर में भित्ति चित्रों की परम्परा बहुत विकसित हुई थी तथा यहां के चित्रकार अन्य नगरों में जाकर अपना कौशल दिखलाया करते थे। जयपुर में पुंडरीकजी की हवेली, गलता घाट, रावलजी के महल भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। अनेक भित्ति चित्र असावधानी के कारण नष्ट हो चुके हैं तथा अनेक हो रहे हैं। तब भी जो कुछ बच रहा है राजस्थान के चित्र प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त है। किशनगढ के भित्ति चित्र अधिक प्राचीन नहीं हैं। ये आरायश पद्धति के अनुसार बने हैं उनके विषयों में विविधता हो है। राधाकृष्ण के युगल रूप की झांकी कहीं सर्वत्र पाई जाती है। किशनगढ़ के भित्ति चित्र आकार में बहुत बड़े नहीं हैं और न उसकी संख्या ही अधिक है। जोधपुर के चित्र सवारी शिकार कथा प्रसंगों के दृश्यों में सीमित है। यहां के चित्र उदात्त भाव के लिए वीर रस के प्रतीक और पीले रंग को अधिकतर लिये हुए हैं। बीकानेर के राजमहलों के चित्रों में घुमडते हुए बादलों के दृश्य चमकती हुई बिजलियों की प्रकाश धारा, उड़ते हुए पक्षी, विविध बेल बूटे और सुवर्ण के आलेखन हैं। डाक्टर कुमारस्वामी ने बीकानेर के राजमहलों मे चित्रित एक पक्षी युगल का चित्र अपनी पुस्तक में प्रकाशित किया है जो बड़ा ही सुन्दर और भावग्राही है। बीकानेर की अनेक प्राचीन हवेलियों में चित्र बने हुए हैं जो यहां उस्ताद कहलाने वाले चित्रकारों ने बनाये हैं, ये उस्ताद जाति के मुसलमान हैं तब भी हिन्दू धर्म के देवी देवताओं से परिचित और भारत की चित्र पद्धति के अनुयायी है।

उदयपुर के चित्र संख्या में अधिक हैं किन्तु जयपुर जैसा सौन्दर्य इन चित्रों में नहीं। भित्ति चित्रों की पद्धति जयपुर, अलवर, कोटा, बूंदी में ही अधिक प्रस्फुटित हुई, इसका एक छोर वल्लभ सम्प्रदाय की सगुण उपासना है तो एक छोर मुगल घरानों के अनुकरण की परम्परा है। कोटा, बूंदी, वल्लभीय उपासना के केन्द्र हैं और जयपुर, अलवर मुसलमान परम्परा के प्रतीक हैं।

राजस्थान ही नहीं, समस्त भारत की चित्रकला का प्रारम्भ भित्ति चित्रों से हुआ है। कारण कि कागज का अभाव था, काष्ठ फलक छोटे थे। वस्त्रों के नष्ट

हो जाने का भय था, इसलिए भित्तियां सुविधाजनक उपकरण थी जिस पर अपनी भावनाओ को विशद रूप से व्यक्त किया जा सकता था, बड़े से बड़े आलेखन भी सम्भव थे और छोटे से छोटा रूप भी अंकित किया जा सकता था। रंग वही प्रयोग मे लाये जाते थे जो अधिक समय तक जीवित रह सकें। ये रंग थे प्रस्तर खड़ों के गर्भ से निकले अथवा पत्थरों को पीस कर बनाये गए। मृतिका से प्राप्त हुए राजस्थानी भित्ति चित्रों के रगों मे प्रधान रंग है, हरा पत्थर, हिरमिच पत्थर रामरज, काजल और गोगोली। ये सभी रंग स्वाभाविक और न उड़ने वाले हैं। यद्यपि कई स्थानों पर लाल, गुलाबी, नीले का भी प्रयोग है पर वह उन अन्तःपुरों में जहां के चित्रों की धूप और पानी से रक्षा होती है। ऐसे विविध रंगों से बनाए चित्र अलवर के समीप राजगढ़ नामक ग्राम में हैं। ये चित्र किले की उन दीवारों पर बने है जहाँ इस नगर के राजा का अन्तःपुर है। चित्रों के विषय हैं, सुन्दर युवतियों की क्रमवद्ध पक्तियां। इन आकृतियों में सुवर्ण और मूल्यवान विविध रंगों का प्रयोग किया गया। समस्त राजस्थान में इन भित्ति चित्रों की जैसी श्रम साध्य कला अन्यन्त्र देखने में नही आती। ये अधिक प्राचीन नही है तब भी बड़े उत्कृष्ट हैं। जयपुर के चित्रो में केवल गलता के एक मन्दिर मे बने चित्र बहुत सुंदर हैं। पर वे नष्ट हो चुके हैं। जितना अंश बच रहा है उसी से उनकी विशेषता का परिचय मिलता है।

जैसलमेर तथा शेखावाटी के कतिपय गाँवों में भित्ति चित्रों की अधिकता है परन्तु वे लोककला के अन्तर्गत माने जा सकते हैं। वे अधिक श्रम साध्य और उत्कृष्ट नही है।

संगीत कला

19 वी शताब्दी के अन्तिम चरण में, मुगल साम्राज्य के क्षय के पश्चात समस्त उत्तरी भारत की हिन्दू रियासतों और रजवाड़ों में भारतीय संस्कृति तथा कला का जो पुनरुत्थान हुआ वह जयपुर में सम्भवत उससे बहुत पहले आरम्भ हो गया था। आमेर व जयपुर के कछवाहा शासक दिल्ली मे हुमायूं का शासन स्थापित होने के समय से ही मुगल साम्राज्य के विश्वस्त और वफादार साथी रहे और उन्हें कभी मुसलमानों के आक्रमणों का सामना नही करना ... । सम्पूर्ण मुगल काल मे

ग्रौर समृद्धि के फलस्वरूप जयपुर के शासक संगीत व नृत्य जैसी ललित कलाग्रों को भी प्रोहत्साहन एवं संरक्षण देने तथा उन प्रतिभाग्रों का विकास कराने में समर्थ हुए जो उस मध्य काल में उदार ग्रौर कला पारखी नरशों के दरबारों में पनप सकती थी।

ग्रौरंगजेब के प्रमुख सेना नायक, मिर्जा राजा जयसिंह का दरबार कवियों; कलाकारों ग्रौर संगीत विशारदों के लिए उर्वरा भूमि थी, जिसमें बिहारी के बोये हुए बीजों से ग्रंकुर फूट कर सतसई की विशाल ग्रौर सुगन्धित लता फैल चुकी थी इसी दरबार में 1620 के ग्रास-पास हस्तकार रत्नावली नाम का विपद संगीत ग्रन्थ लिखा गया। मीरा के पद ग्रौर दादू पंथ के प्रवर्तक दादू दयाल के शब्द इस समय तक जनता के गीत बन चुके थे ग्रौर ग्रावश्यकता थी तो यह कि लोक जीवन में व्याप्त इन राग रागनियो का शास्त्रीय ग्राधार पर वर्गीकरण कर दिया जाय। महाकवि बिहारीलाल को उसकी सतसई ने एक-एक दोहे पर स्वर्णमुद्रा प्रदान करने वाले इस मिर्जा राजा ने ऐसे प्रमाणिक संगीत ग्रन्थ की रचना करा कर भारत की इस पुरातन विद्या के शास्त्रीय ग्रध्ययन को बड़ी प्रेरणा दी।

सवाई प्रतापसिंह जो 1775 में गद्दी पर बैठे थे, स्वयं एक काव्य मर्मज्ञ, कवि ग्रौर संगीताचार्य थे। उनके दरबारी संगीतज्ञ, उस्ताद चाद खां थे। जिन्हे महाराजा बुधप्रकाश की उपाधि प्राप्त हुई थी, स्वर सागर नामक एक उच्च कोटि के संगीत ग्रन्थ की रचना की। उनके वंशज जो सोनियां कहलाते हैं, ग्रब भी ग्रपने पूर्वजों की परम्पराग्रों का निर्वाह कर रहे हैं।

देवर्षि भट्ट द्वारकानाथ जयपुर के राजाग्रो की तीन पीढ़ियों के कृपा भाजन थे, ग्रौर उन्होंने महाराजा माधोसिंह से सुरसुति, महाराजा पृथ्वीसिंह 'भारती' ग्रौर महाराजा प्रतापसिंह से 'बानी' की उपाधिया प्राप्त हुई थी। इन्होंने "रामचन्द्रिका', का प्रणयन किया। किन्तु संगीत के एक ग्रत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रौर विशद ग्रन्थ 'राध गोविन्द संगीत सार' के निर्माण का श्रेय उनके पुत्र देवर्षि भट्ट ब्रजपाल को है, जिन्हें महाराजा प्रतापसिंह ने बदरवास की जागीर दी ग्रब तक उनके वंशजों के पास है। सात खण्डों में लिखा गया यह विशाल ग्रन्थ ग्राज भी शास्त्रीय संगीत का एक ग्रपूर्व प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। इसकी प्रकाशित प्रति जयपुर की महाराजा पब्लिक लाब्रेरी में उपलब्ध है। "राधागोविन्द संगीत सार" के ग्रागे पीछे कवि राधाकृष्ण ने राग रत्नाकर नामक एक ग्रौर संगीत ग्रन्थ तैयार किया।

बहुत सम्भव है कि जयपुर का "गुणीजन खाना" जिससे इस काल की "साहित्य ग्रौर ललित कला ग्रकादमी" समझा जा सकता है, महाराजा प्रतापसिंह के संरक्षण में भली-भांति स्थापित हो चुका था। कहा जाता है कि महाराजा विभिन्न विषयो के विशेषज्ञों की 'बाइसी' रहते थे ग्रौर उनके दरबार से 22 कवि, 22

ज्योतिषी, 22 संगीतज्ञ 22 और इसी प्रकार अन्य विषयों के ज्ञाता और विद्वान थे संगीतज्ञों में अली भगवान और श्रद्धारग भी थे, जो अपने समय के प्रसिद्ध स्वरकार थे।

महाराजा माधोसिंह प्रथम (1751–1765) के शासनकाल में दरबार मे प्रजलाल नामक एक हस्तसिद्ध वीणावादक थे, जिन्हें जागीर प्राप्त हुई थी।

आधुनिक जयपुर के निर्माता महाराजा रामसिंह द्वितीय के संरक्षण में "संगीत रत्नाकर" और संगीत राग कल्पद्रुम नामक दो और प्रामाणिक संगीत ग्रन्थों की रचना की गई, जिनके प्रणेता हीरानन्द व्यास थे। पण्डित मधुसूदन सरस्वती ने, जो एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक के अवसर पर स्वर्गीय महाराजा के साथ इंगलैण्ड गये थे और वहां वैदिक विज्ञान पर आक्सफोर्ड व केम्ब्रिज में व्याख्यान भी दिये थे। विभिन्न शास्त्रीय राग रागनियों का एक सचित्र "खरडा" तैयार किया, जिसका नाम "राग-रागिनी संग्रह" था। महाराजा रामसिंह के समय में ही जयपुर में रामप्रकाश थियेटर की, जो सम्भवतः राजस्थान की पहली सुनिर्मित नाट्यशाला थी, स्थापना हुई।

वंशीधर भट्ट को भी, जो अपने समय के एक संगीतज्ञ थे, महाराजा रामसिंह से एक गाँव जागीर में प्राप्त हुआ। जयपुर के निकट गावलाश्रम के राजगुरु हरिवल्लभाचार्य को भी एक बड़ी जागीर प्रदान की गई। हरिवल्लभाचार्य संगीत के पण्डित थे। सन् 1920 में उनका देहान्त हुआ।

संगीत के अतिरिक्त जयपुर के नृत्य ने भी उच्चता एवं विशेषता प्राप्त की और यहां के कत्थकों ने विख्यात कत्थक नृत्य शैली का विकास किया। यह शैली मुख्यत भावात्मक है, जिसकी भाव-भंगिमा और मुद्रायें देखते ही बनती है।

1947 में भारत के स्वतन्त्र हो जाने और फिर संयुक्त राजस्थान के निर्माण के पश्चात् गायकों और नृत्यकारों के लिए दरबारी संरक्षण उठ गया और गुणीजन का भी केवल नाम ही शेष रह गया है। जयपुर के कलाकार, जिनके पूर्वजों ने इस सच्चे जादू को अनेक उच्च और आदर्श परम्पराओं का प्रादुर्भाव किया था, इस प्रकार आश्रयहीन हो गये। जिन्होंने उस्ताद करामात खां को 108 वर्ष की आयु में भी भागते हुए सुना है, वे उनकी मानसिक खिन्नता और दर्द को नही भुला सकते हैं। वह वयोवृद्ध जो ध्रुपद का अद्वितीय गायक और बुद्धप्रकाश का वंशज था कहा करता था कि इस बुढ़ापे में भी मेरे गले में लोच है, क्योंकि मैंने टके पाव मलाई खायी है। आज जब हमारे तरुण कलाकारों के लि[illegible] जीवन निर्वाह भी कठिन हो रहा है तो क्या यह [illegible]। बात [illegible] उन उच्च परिपाटियों और परम्पराओं का जो [illegible] प्रति-निधित्व कर पायेंगे।

जयपुर के कुछ प्रमुख कलाकारो, गायको व वादको को कई वर्षों से आकाशवाणी का संरक्षण मिलता रहा है। किन्तु कहने की आवश्यकता नही कि महीने में रेडियों पर एक दो कार्यक्रम हो जाना कलाकार के रूप मे उनके जीवित रहने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। आकाशवाणी की प्रसार योजना के अन्तर्गत जो नये ब्राडकास्टिंग स्टेशन खुले हैं, उनमे जयपुर भी है। स्थानीय कलाकारो के लिए यह आशा करना अधिक नही है कि रेडियो स्टेशन जैसे सामान्य धरातल पर वे संस्कृति और ललित कलाओं की उन समृद्ध परम्पराओं की रक्षा तथा विकास करने मे समर्थ होंगे जिनके लिए जयपुर और राजस्थान अतीत काल से विख्यात रहे हैं।

मूर्ति कला

जयपुर की मूर्तिकला की उच्चता और उसकी समृद्धि का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि समूचे हिन्दू संसार मे प्रतिष्ठापित देवी देवताओं की अधिकांश मूर्तियाँ यहीं के कलाकारों की बनाई हुई हैं। हिन्दू धर्म में तैंतीस करोड़ देवी देवता गिनाये गए हैं और पौराणिक काल से ही इस देश के श्रद्धालु जन-भक्ति भावना के साथ इन देवी देवताओं की मूर्ति पूजा करते आये हैं। अतः भारतीय मूर्तिकला शताब्दियों के उत्थान-पतन में होकर जीवित रही और फली-फूली। जयपुर में यह कला आज भी एक लाभ-दायक उद्योग के रूप में विकसित हो रही है।

जयपुरी मूर्तिकला के क्रमिक विकास का सिंहावलोकन मुगल सम्राट अकबर के प्रधान सेना नायक राजा मानसिंह के समय से किया जा सकता है। उनके समय में आमेर राज्य के उत्तरी भारत मे अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया था और आमेर का नगर इस राज्य की राजधानी के रूप मे विकासोन्मुख था। राजा मानसिंह ने देश के अन्य भागों से जिन शिल्पिको और कलाकारों को आमन्त्रित कर अपने राज्य में पुनर्स्थापित किया उनमें मूर्तिकार भी थे जो दक्षिण में माण्डू, उत्तर मे नारनौल और पूर्व में मडावर तथा डीग के आसपास के ग्रामों से आमेर आए थे। 728ईसवी में सवाई मानसिंह ने जयपुर की नई राजधानी में पदार्पण किया तो मूर्तिकार परिवार भी आमेर को छोड़कर नये जयपुर अथवा जयनगर में स्थानान्तरित हुए। इस नये नगर में पूरा एक "वार्ड" ऐसे ही लोगों के लिए सुरक्षित किया गया था जो अपने हाथ के हुनर से जीविकोपार्जन करते थे। फलतः शिल्पिक और कारीगर, चितेरे अथवा चित्रकार हाथी दांत नक्काशी करने वाले और दूसरे कलाकार नगर के इसी भाग मे बसे। दो रास्ते तो मूर्तिकारो से ही भर गये और उन्ही के कारण अब भी वहां सिलावटों का मोहल्ला बना हुआ है।

मुगल शासन काल मे यद्यपि ऐसे अवसर भी आये थे, जब हिन्दू मन्दिरों और उनकी पवित्र मूर्तियों का विनाश प्रायः निश्चित हो गया था, किन्तु जयपुर औरंगजेब जैसे धर्मांध शासक के समय में भी सुरक्षित ही रहा। मुगलों की मैत्री

हिन्दू देवी-देवताओं की संख्या को देखते हुए मूर्तियो के विषय का अत्यन्त व्यापक होना स्वाभाविक ही है। फिर भी चतुर्भुज नारायण, जिसके हाथो में शंख, चक्र, गदा और पद्म है शेषशायी विष्णु और उनका पद चम्पन करती हुई लक्ष्मी, सरस्वती, राम और सीता, राधा और कृष्ण, हनुमान, गरुड़ और ऋद्धि सिद्धि के स्वामी गणेश आदि की मूर्तियो की सारे भारत से माग होती है। जैन तीर्थंकरा, महावीर, आदिनाथ पार्श्वनाथ की मूर्तियो की मांग भी कुछ कम नही है। श्रीलंका, बर्मा, हिन्द-चीन, और सुदूर हांगकाग तक से भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं के आर्डर आते हैं। इधर देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द बोस और अन्य राष्ट्रीय नेताओं की पूरे आकार या अर्द्ध मूर्तियां की माग बहुत है।

जयपुर की मूर्ति कला को जीवित रखने और इसे वर्तमान व्यावसायिक रूप में विकसित करने का श्रेय यहा के स्कूल ऑफ आर्टस को है। 1836 का स्थापित यह स्कूल भारत का दूसरा प्राचीनतम कला प्रशिक्षण संस्थान है। प्रारम्भ में यह व्यापारिक दृष्टिकोण से आरम्भ किया गया था और इस उद्देश्य मे इसे पर्याप्त सफलता भी मिली। सारनाथ के नये बौद्ध विहार में प्रतिष्ठित बुद्ध का 7 फुट ऊंची प्रतिमा इसी स्कूल में बनायी गई थी। बनारस मे स्थापित महात्मा गाधी की मूर्ति भी यही की देन है, जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। जयपुर की मूर्ति कला का आधुनिक विकास नयी दिल्ली के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर में दर्शनीय है, जहां की सभी मूर्तिया जयपुर के मूर्तिकारो की रचना है।

हस्त कलायें

राजस्थान की हस्तशिल्प की वस्तुयें अपनी कलात्मकता के लिये देश और दुनिया में समान रूप से लोकप्रिय रही है। पिछले वर्षों में कई अन्तर्राष्ट्रीय मेलों और प्रदर्शनियों में इन हस्तशिल्प की वस्तुओं को सराहा गया है और उसके परिणामस्वरूप इनके निर्यात में दिनों-दिन वृद्धि होती जा रही है। जयपुर के हीरे जवाहरातों की वस्तुयें, संगमरमर की मूर्तियां, पीतल की खुदाई, कुट्टी के खिलौने, ऊनी कालीन, जोधपुर की बन्धेज और कशीदाकारी, सांगानेरी वस्त्र-छपाई, उदयपुर के लकड़ी के खिलौने, जैसलमेर की पत्थर की जालिया आदि कई हस्तशिल्प वस्तुयें अपने परम्परागत विशेषताओं को बनाये रखे हुये हैं।

ऊनी कालीन

जयपुर की बनी ऊनी कालीनें अपनी रंग-बिरंगी और आकर्षक बनावट के लिये प्रसिद्ध रही है। इंगलैंड, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस और अन्य कई यूरोपीय देशों को निर्यात की जाने वाली ये कालीनें लगभग 200 वर्षों से जयपुर में बनाई जाती रही हैं। पिछले लगभग 50 वर्षों मे कालीन निर्माण की दिशा मे विशेष प्रगति हुई है। कालीन उद्योग के लिये ऊन हुएक प्रमुख कच्चा माल होता है। ऊन यमें

और अपने व्यक्तित्व के कारण जयपुर के राजाओं ने आमेर और जयपुर को तब राजस्थान में एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक केन्द्र के रूप में विकसित किया, जिससे अनेक प्रकार के कला कौशल, दस्तकारियां और उद्योगों को प्रश्रय मिला। इस प्रकार देश के अन्य भागों में जब अनेक पावन मूर्तियां के नष्ट होने की आशंका थी, जयपुर के मूर्तिकार निरन्तर पौराणिक कल्पनाओं को पाषाण में साकार बनाने और अन्य स्थानों की मूर्तियों की मांग पूरा करने में व्यस्त थे।

जयपुर की इन मूर्तियों में विभिन्न प्रकार के पाषाणों का उपयोग किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ पाषाण तो संगमरमर है, जो जयपुर से 50 मील पश्चिम में सांभर झील के उस पार, मकराना की खानों से आता है। स्थायी रूप से शुभ्र, श्वेत रंग का यह पाषाण मुलायम होता है, जिस पर कलाकार की छैनी और हथौड़ी सुगमता से अपना कौशल दिखा सकती है। रंगीन और पालिश की मूर्तियों के लिए अलवर की सीमा पर स्थित रियालों का संगमरमर काम में लिया जाता है। इस पाषाण में हल्की नीली झाई होती है। रियालो, मकराना से पर्याप्त सस्ता होता है और भी सस्ती मूर्तियां खिलौने, काले संगमरमर के बनते हैं जो खेतड़ी के निकट भैंसलाना की खानों से निकलता है इसके अतिरिक्त अलवर जिले की झीरी और बलदेवगढ़ का सफेद पत्थर तथा डूंगरपुर का काला पत्थर भी काम में लिया जाता है, किन्तु इन्हें संगमरमर बताना केवल व्यापारिक चाल ही है।

महंगी और सुन्दर कलात्मक मूर्तियों के लिए मकराना के संगमरमर, किफायती काम के लिए रियालों और जैन तीर्थंकरों, विशेषतः शिव लिंगम, तथा शनिश्चर की मूर्तियां, हाथियों तथा अन्य खिलौने के लिए भैंसलाना के काले संगमरमर की मांग बहुत रहती है। जयपुर के मूर्तिकार वर्ष भर अपने कारखाने में मूर्तियां तथा विभिन्न वस्तुयें बनाते रहते हैं। नवम्बर-दिसम्बर में गुजरात और बंगाल से व्यापारी यहां आते हैं और तैयार माल को खरीद ले जाते हैं।

मूर्ति निर्माण का कार्य पाषाण पर ही किया जाता है और मूर्तिकारों के औजार आज भी वहीं है जो तीन सौ वर्ष पहले थे। छोटी, बड़ी, मोटी, पतली अनेक प्रकार की छैनियां और हथौड़े जिनकी सहायता से वे बड़ी से बड़ी पूरे आकार की मूर्तियां और छोटे-छोटे खिलौने तक बनाते हैं। कोयले अथवा पैन्सिल से पाषाण पर कृति की रूप रेखा बनाने के साथ ही कलाकार की छैनी हथौड़ी पर आ जाती है और मूर्ति बनाई जाने लगती है। मूर्ति बन जाने पर एक विशेष प्रकार के पत्थर को उस पर घिसा जाता है। जिससे यह सूचिकरण होता है, यह कार्य महिलाएं करती है। इसके पश्चात् एक अन्य पत्थर की रगड़ से मूर्ति के अंशों को और निखारा जाता है। फिर पालिश की जाती है। जिन मूर्तियों के रंग की आवश्यकता होती है, उन्हें चितेरे के पास जाना होता है।

हिन्दू देवी-देवताओं की संख्या को देखते हुए मूर्तियों के विषय का अत्यन्त व्यापक होना स्वाभाविक ही है। फिर भी चतुर्भुज नारायण, जिसके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म है शेषशायी विष्णु और उनका पद चम्पन करती हुई लक्ष्मी, सरस्वती, राम और सीता, राधा और कृष्ण, हनुमान, गरुड़ और ऋद्धि सिद्धि के स्वामी गणेश आदि की मूर्तियों की सारे भारत से माग होती है। जैन तीर्थंकरों, महावीर, आदिनाथ पार्श्वनाथ की मूर्तियों की मांग भी कुछ कम नहीं है। श्रीलंका, बर्मा, हिन्द-चीन, और सुदूर हांगकांग तक से भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं के आर्डर आते हैं। इधर देश को स्वतन्त्रता के पश्चात् महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस और अन्य राष्ट्रीय नेताओं की पूरे आकार या अर्द्ध मूर्तियों की माग बहुत है।

जयपुर को मूर्ति कला को जीवित रखने और इसे वर्तमान व्यावसायिक रूप में विकसित करने का श्रेय यहा के स्कूल ऑफ आर्ट्स को है। 1836 का स्थापित यह स्कूल भारत का दूसरा प्राचीनतम कला प्रशिक्षण संस्थान है। प्रारम्भ मे यह व्यापारिक दृष्टिकोण से आरम्भ किया गया था और इस उद्देश्य मे इसे पर्याप्त सफलता भी मिली। सारनाथ के नये बौद्ध विहार में प्रतिष्ठापित बुद्ध की 7 फुट ऊंची प्रतिमा इसी स्कूल में बनायी गई थी। बनारस में स्थापित महात्मा गांधी की मूर्ति भी यहीं की देन है, जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। जयपुर की मूर्ति कला का आधुनिक विकास नयी दिल्ली के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर में दर्शनीय है, जहा की सभी मूर्तियां जयपुर के मूर्तिकारों की रचना है।

हस्त कलायें

राजस्थान की हस्तशिल्प की वस्तुयें अपनी कलात्मकता के लिये देश और दुनिया में समान रूप से लोकप्रिय रही हैं। पिछले वर्षों में कई अन्तर्राष्ट्रीय मेलों और प्रदर्शनियों मे इन हस्तशिल्प की वस्तुओं को सराहा गया है और उसके परिणामस्वरूप इनके निर्यात मे दिनों-दिन वृद्धि होती जा रही है। जयपुर के हीरे जवाहरातों की वस्तुयें, संगमरमर की मूर्तियां, पीतल की खुदाई, कुट्टी के खिलौने, ऊनी कालीन, जोधपुर की बन्धेज और कशीदाकारी, सागानेरी वस्त्र-छपाई, उदयपुर के लकड़ी के खिलौने, जैसलमेर की पत्थर की जालियां आदि कई हस्तशिल्प वस्तुयें अपने परम्परागत विशेषताओं को बनाये रखे हुये हैं।

ऊनी कालीन

जयपुर की बनी ऊनी कालीनें अपनी रंग-बिरंगी और आकर्षक बनावट के लिये प्रसिद्ध रही है। इंगलैंड, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस और अन्य कई यूरोपीय देशों को निर्यात की जाने वाली ये कालीनें लगभग 200 वर्षों से जयपुर मे बनाई जाती रही हैं। पिछले लगभग 50 वर्षों में कालीन निर्माण की दिशा में विशेष प्रगति हुई है। कालीन उद्योग के लिये ऊन इसका प्रमुख कच्चा माल होता है। ऊन यमें

विशेषता होती है कि इसे किसी भी मोटाई तक गूंथा जा सकता है और कोई भी रंग इस पर आसानी से चढ़ाया जा सकता है। बीकानेरी ऊन इस कार्य के लिए विशेष उपयोगी मानी जाती है।

पीतल की वस्तुयें

पीतल की कलात्मक वस्तुओं के लिये जयपुर सम्पूर्ण देश का एक प्रमुख केन्द्र है। मुरादाबाद और बनारस देश के अन्य प्रमुख केन्द्र हैं।

पीतल के बर्तनों पर कलात्मक खुदाई का यह काम जयपुर में लगभग दो सौ वर्षों से हो रहा है। अधिकांश कारीगर मुरादाबाद से ही आकर बसे हैं। इस कला का देखने का सर्वोत्तम स्थान मिर्जा इस्माईल रोड पर स्थित अलाबक्स का कारखाना है। पीतल की कलात्मक रंगीन खुदाई की कई प्रसिद्ध वस्तुयें जयपुर म्यूजियम में भी रखी हुई हैं।

चन्दन और हाथी दांत की वस्तुयें

चन्दन और हाथी दांत की बनी विभिन्न वस्तुयें विदेशी पर्यटकों में विशेष रूप से लोकप्रिय होती जा रही है। ऊंट पर ढोलामारू, अम्बावाड़ी हाथी दांत और चन्दन की खुदाई की प्रसिद्ध वस्तुयें मानी जाती हैं। परन्तु अब बिजली के टैबिल लैम्प, कानों में पहनने के इयररिंग, कागज काटने के कलात्मक चाकू आदि भी बनाये जाते हैं। घर की सजावट के काम आने वाली कई वस्तुयें भी बनाई जाने लगी हैं।

ब्ल्यू पाटेरी

काच, गोंद मुलतानी मिट्टी, आदि के मिश्रण से बनाये जाने वाले बर्तनों पर विभिन्न प्रकार के मोहक बेल-बूटे बनाये जाते हैं।

ब्ल्यू पाटेरी के लिये जयपुर वर्षों तक मशहूर रहा। 1935 तक इन वस्तुओं की विदेशों में बड़ी मांग रही है, परन्तु इसके बाद इस काम को करने वाले अधिकांश कारीगर यहां से बाहर चले गये। जो कुछ थोड़े बहुत कारीगर बचे थे, उनके सहयोग से राज्य हस्तकला मण्डल ने इस कला को पुनः जीवित करने की ओर हाल ही में कुछ प्रयत्न प्रारम्भ किये हैं।

लाख की बनी चूड़ियां

है। जब लाख पिघल जाता है तब इसे फूट-फूट कर अन्य पदार्थों के साथ मिला दिया जाता है तब इसके तार खींच-खींच कर लाख बढ़ाई जाती है।

कसीदाकारी की जूतियां

आमतौर पर जूतियां मोजरी कहलाने वाले जूते अपनी आकर्षक बनावट के कारण तथा साथ ही वजन से हल्के और पहिनने में सुविधाजनक होने के कारण बहुत ही लोकप्रिय हुए हैं। इन जूतियों का नीचे का भाग तो चमड़े का ही होता है परन्तु ऊपर के मुख्य भाग के चमड़े के ऊपरी सतह पर कपड़ा या मखमल लगा होता है। इस कपड़े या मखमल पर बारीक डिजाईन की कसीदाकारी की जूतियां बनाने का यह उद्योग शहरों और गांवों में समान रूप से फैला हुआ है, परन्तु जोधपुर और जयपुर की बनी जूतियां अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय हुई हैं।

संगमरमर की मूर्तियां

जयपुर की बनी संगमरमर की मूर्तियां अपनी संजीव और कलात्मक बनावट के कारण सम्पूर्ण भारत में लोकप्रिय है। जयपुर के मूर्तिकारों द्वारा बनाई गई प्रसिद्ध मूर्तियां भारत के कई नगरों के मन्दिरों और सार्वजनिक स्थानों पर स्थित है। सारनाथ के नवीन बौद्ध विहार में प्रतिष्ठापित बुद्ध की 7 फुट ऊँची मूर्ति, नई दिल्ली के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर की मूर्तियां बनारस में स्थापित महात्मा गांधी की मूर्ति आदि अनेकों मूर्तियां प्रसिद्ध हैं।

जयपुर के निकट ही मकराना में संगमरमर पत्थरों की खानों से निकाला जाने वाला सफेद संगमरमर पत्थर इन मूर्तियों के लिये अधिक उपयुक्त माना जाता है। खेतडी के निकट भैंसलाना के काले संगमरमर पत्थर, डूंगरपुर के काले पत्थर घोरी और बलदेवगढ के सफेद पत्थर से भी मूर्तिया बनाई जाती है। कुशल मूर्तिकारों का आज भी अभाव नही है और इस उद्योग की उज्जवल परम्पराओं को भविष्य में भी बनाये रखने में सक्षम और समर्थ है।

आधुनिक मोड़ देने की आवश्यकता

विदेशों में हुई विभिन्न प्रदर्शनियों में राजस्थान की इन हस्त शिल्प वस्तुओं की काफी सराहना हुई है और उनके प्रति जो दिलचस्पी प्रकट की गई है। उससे स्पष्ट है कि हमारे हस्त शिल्पों में निर्यात की महान सम्भावनायें निहित है। यदि इनकी डिजाइनों को विदेशों की पसन्द अनुकूल बनाया जा सके तो इन सम्भावनाओं का क्षेत्र और भी व्यापक बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से यह उचित और उपयोगी होगा कि एक डिजाइन केन्द्र की स्थापना की जाय तथा हमारे हस्त शिल्प कलाकारों को समुचित प्रशिक्षण देकर ऐसी वस्तुयें बनाने की प्रेरणा और प्रोत्साहन दे जो विदेशी लोगो की पसन्द के अनुकूल हो। हमारी हस्त शिल्प के वर्तमान प्रवाह का मुकाम पुरानी बस्ती में अधिकतर है। ये लोग भी छपाई से पूर्व कपड़ों को सरस्वती नदी के पानी में सांगानेर धो लाते हैं। ततपश्चात छपाई की

खण्ड–2—वीसलदेव का राजमती से रूठकर उड़ीसा की ओर प्रस्थान करना तथा वहां एक वर्ष रहना।

खण्ड–3—राजमती का विरह वर्णन तथा बीसलदेव का उड़ीसा से लौटना

खण्ड–4—भोज का अपनी पुत्री को अपने घर लिवा ले जाना तथा बीसलदेव का वहां जाकर राजमती को चित्तौड़ लाना।

नरपति नाल्ह की कविता का एक नमूना देखिये—

माणिक मोती चउक पुराय। पांव पपाल्या राय का॥

राजमती दीई वीसलराव। हुई सोपारी मनि सरप्यो दई राव॥

वाजित्र बाजई नीमाणीं घाय। गढ़ माहिं गुडी उछली॥ घरि घरि मंगल तोरण च्यारी।

चन्द बरदाई

हिन्दी में आदि महाकाव्य पृथ्वीराज रासो के रचयिता चन्द बरदाई का जीवन चरित्र सम्भवतः सबसे अधिक विवादास्पद और संदिग्ध है। चंद के बारे में यह बहुत प्रसिद्ध है कि वह दिल्ली के अन्तिम हिन्दू सम्राट महाराजा पृथ्वीराज के सामन्त और राजकवि थे। न केवल कुशल कवि ही थे अपितु पृथ्वीराज के अनन्य सखा और सामन्त भी थे। पृथ्वीराज रासो ढाई हजार पृष्ठों का वृहद ग्रन्थ है, जिसके उत्तरार्द्ध के बारे में यह कहा जाता है कि उसकी रचना चन्द के पुत्र जल्हण ने की थी। रासो में एक स्थान पर ऐसा उल्लेख भी मिलता है।

"पुस्तक जल्हण हाथ दे चलि गज्जन नृप काजे"

पृथ्वीराज रासो की प्रमाणिकता के विषय में विद्वानों में बहुत मतभेद है, क्योंकि ऐतिहासिक तथ्यों के साथ इस ग्रन्थ में वर्णित घटनाओं का कोई ताल-मेल नहीं बैठता। भाषा की विविधता भी इसके प्रमाणिक होने में सन्देह उपस्थित करती है। यहाँ हम इस ग्रन्थ के बारे में केवल दो ही तथ्यों का जिक्र करना चाहेंगे एक तो यह कि पृथ्वीराज रासो डिंगल का नहीं अपितु पिंगल का ग्रन्थ है और दूसरा यह कि इसका जो स्वरूप प्राप्त होता है। उससे उसकी रचना किसी एक कवि द्वारा हुई हो ऐसा अनुमान नहीं किया जा सकता फिर भी इतना तो मानना पड़ेगा कि यह हिन्दी का सर्वप्रथम उपलब्ध महाकाव्य है जिससे काव्य का सौन्दर्य असाधारण कोटि का है। पृथ्वीराज रासो के पद्मावती समय के कुछ पद्य उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है—

मनहु कला ससभान कला सोलह सो बन्निय।
बाल वैस, ससि ता समीप अम्रित रस पिन्निय।
बिगसि कमल स्त्रिग, भवर बेनु, खंजन, मृग लुट्टिय॥
हीर, कीर अरु बिंब, मोती नषसिष अहि घुट्टिय॥
कुट्टिल केस सुदेस पोह परिचियत पिक्क सद।

कमल गंध, वयसंध, हंसगति चलति मंद मद ।।
सेत वस्त्र सोहे सरीर नष सवति बूंद जस ।
भमर भवहि भुल्लहि सुभाव मकरद बास रस ।

शिवदास

चारणवंश में उत्पन्न इस कवि ने "अचलदास खीची री वचनिका" नामक एक छोटे से ग्रन्थ की रचना की थी। इसमें मांडू के बादशाह और गांगरोनगढ के खीची राजा अचलदास की लड़ाई का चित्रण है। इस ग्रन्थ की भाषा डिंगल है और शैली पुरानी और सीधी सादी है। डा० रामकुमार वर्मा के मतानुसार इस ग्रन्थ का रचना काल सम्वत् 1516 है। वचनिका के कुछ दोहे यहां प्रस्तुत किये जाते हैं—

एकणि वांनि वंसतड़ा, एवड अन्तर काई।
सीह कवड्डी ना लहै, गैंवर लखि बिकाई ।। 1 ।।
गैंवर गले गलथीयो, जह खचे तहं जाए।
सीह गलथ्थण जे रहे, दई लक्ख बिकाई ।। 2 ।।

गणपति

इन्होने माधवानल का मंकदला के लोक प्रिय प्रेमाख्यान को मारवाड़ी दोहों में प्रस्तुत किया था। इनका ग्रन्थ माधवानल प्रवन्ध दोग्धवन्ध कवि गणपति कृत है, जिसकी रचना इन्होने नर्मदा के तट पर सम्वत् 1584 में की थी।

खिडियो जग्गो

इन्होने वचनिका राठौर रतनसिंह जी री महेश दासोत की खिडियै जग्गै कहीं नामक प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें जोधपुर नरेश ... और शाहजहां के विद्रोही पुत्र औरंगजेब और मुराद के बीच अवन्तिका के ... स्थल में सम्वत् 1718 में हुए युद्ध का वर्णन किया गया है। इस युद्ध मे रतलाम रतनसिंह जी ने अपना आत्मोत्सर्ग किया था। इसलिए उन्हीं के नाम पर पुस्तक नामकरण किया गया है।

सूजाजी

बीठू शाखा के इस चारण कवि ने रवि जैतसी रो छन्द नामक प्रसिद्ध ग्र... की रचना की है। यह ग्रन्थ बीकानेर के राव जैतसी की प्रशसा में लिखा गया है ... बाबर के पुत्र कामरान द्वारा बीकानेर पर चढ़ाई किए जाने पर राव जैतसी ने ... जिस असाधारण शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया उसी की प्रशस्ति इस ... में गाई गई है। इस युद्ध के बारे में जहां मुसलमान इतिहासकार मौन रहे हैं ... सूजाजी ने इसका वर्णन किया है। इस दृष्टि से इस पुस्तक का न केवल साहि... महत्व है अपितु ऐतिहासिक महत्व भी है। ग्रन्थ का रचना काल सम्वत् 1597 ... 1598 के बीच अनुमानित किया जाता है। ग्रन्थ की भाषा और शैली का ... उदाहरण लीजिए—

पड़हड़े ढोल धूजे धरती, पडियालगी थरर्रे मेड़पति ।
बीकाहर राजा ईंद वग्गि, ग्राफरां मिर खिविया खड़गि ॥
पतिामह फौज पटन्ति पालि, ग्रह्माड जैत गाजे विचालि ।
ग्रम्बहर जैत वरसे ग्रवार, धूड किया मौर मुहि खगधार ॥

हरराज

इस कवि ने सम्वत् 1607 में ढोला मारवाड़ी चउपही नामक ग्रन्थ जैसलमेर के यादव नरेश के मनोरंजन के लिए लिखा था। ग्रन्थ की कथा प्रेमख्यानक है और उसमें इतिहास की ग्रपेक्षा कल्पना तत्त्व का प्राधान्य है।

मीरांबाई

भारत की महिला कवियों में सम्भवतः मीरा बाई का नाम ऐसा है जो दूर दूर तक बहु विश्रुत है। कृष्ण की ग्राराधिका इस कवियित्री का जन्म सम्वत् 1515 के ग्रासपास मेड़ता के राठौड़ घराने में हुग्रा था। लगभग 19 वर्ष की ग्रवस्था में इनका विवाह मेवाड़ के राजा भोजराज के साथ हुग्रा। किन्तु विवाह के कुछ वर्ष बाद ही इनके पति का देहान्त हो गया। पति के स्वर्गवास के पश्चात यह सांसारिक जीवन से विरक्त हो गई ग्रौर भजन कीर्तन तथा कृष्ण ग्राराधना में संलग्न रहने लगी। परिवार के लोगों द्वारा इनकी भक्ति साधना में ग्रनेक विघ्न भी उपस्थित किए गए किन्तु उनका इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मीरा ने किसी प्रबन्ध काव्य की रचना नहीं की उन्होंने स्फुट भक्ति पद ही लिखे तथा ये पद ग्रपनीस हजता, सरलता, भावुकता ग्रौर संतात्मकता के कारण इतने लोकप्रिय हुए कि न केवल राजस्थान ग्रपितु मालवा ग्रौर गुजरात के लोकखण्ड में भी वे रम गए मीरावाई की भाषा ग्रामफहम राजस्थानी है। जिस पर ब्रज भाषा ग्रौर गुजराती का भी प्रभाव है। यहां उनके दो दो पद नमूने के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं—

म्हाने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यू बाग लगास्यू नित उठ दरसन पास्यू।
वृन्दावन की कुंज गलिन में तेरी लीला गास्यू।
हरे हरे नव बाहि बनाऊ विच बिच राखू वारी।
सावलिया के दरसन पाऊ पहिरि कुसम्भि सारी।
योगी ग्राया योग करन कूं तप करने सन्यासी।
हरि भजन कूं साधु ग्राये वृन्दावन के वासी।
मीरा के प्रभु गहिर गभीरा हृदय रहो जी धीरा,
ग्राधी रात प्रभु दरसन देहैं प्रेम नदी के तीरा।
मैं तो गिरधर के घर जाऊं।
गिरधर म्हारां साचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊं।
रैन पड़े तब ही उठि जाऊं भोर भये उठि ग्राऊं।

रोज रोज थांके संग खेलू ज्यों त्यों ताहि रिझाऊं ।
जो पहिरावे सो हि पहिरु जो दे सोई खाऊं ।
मेरी उनकी प्रिति पुरानी उन बिन पल ना रहाऊं ।
जहु बैठावे नितहूं बैठू बेचे तो बिक जाऊं ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर वार बार बलि जाऊं ॥

ईसरदास

इनका जन्म सम्वत् 1595 में जोधपुर राज्य के भाद्रेस नामक गांव में हुआ था इनके जीवन की अनेक चमत्कारपूर्ण कथाएं राजस्थान में प्रचलित हैं । इनमे से सांगा गौड़ नामक चारण से उसकी मृत्यु के पश्चात् भी नदी में से आवाज देकर कम्बल की भेंट लेने की कथा अत्यधिक लोकप्रिय है । ईसरदास ने कुल मिलाकर लगभग 10-12 ग्रन्थों की रचना की । इनमें से हरिरस और हाला झाला री कुण्डलिया बहुत प्रसिद्ध है । हाला झाला री कुण्डलिया वीररस का अत्यन्त उत्कृष्ट ग्रन्थ है जिसमें 42 कुण्डलियां संग्रहीत है । नमूने के तौर पर, कुछ पद्यांश लीजिए-

धीरा धीरा ठाकुरा गुम्मर कियो मजाह ।
महुगा देशी झूपड़ा जै धरि होसी नाह ॥
नाह महुगा दियण झूपडा भ्रिमंव नर ।
जाबसौ कड़ताला केमि जरसौ जहर ॥
रुक हथ पैखि सौ हथ जस राज रा ।
ठिवता पांव धीरा दीयो ठाकुरा ॥

पृथ्वीराज

वीकानेर के राजा रार्जासह के अनुज कवि पृथ्वीराज का जन्म सम्वत् 1609 ई. में हुआ था । वे न केवल काव्य कौशल में ही श्रेष्ठ थे वलिक असाधारण योद्धा भी थे । उनका रचा हुआ 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' राजस्थानी में शृंगार रस का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है । वेली की रचना सम्वत् 1637 में हुई थी । उसकी कथा वस्तु रुकमणी हरण, कृष्ण रुकमणी परिणय, विलास और प्रद्युम्न जन्म से संबंधित है । वेलि में कुल मिलाकर 305 पद्य है जो डिंगल के प्रसिद्ध छन्द वेलियो गीत में लिखे गये हैं । बेलियो गीत की विशेषता यह होती है कि उसमें चार चरण होते हैं । दूसरे और चौथे चरण की रचना समान होती है । और उसमें तुकान्त भी रहता है । प्रथम और तृतीय पंक्तियों की रचना भिन्न प्रकार की पाई जाती है । प्रथम पंक्ति मे 18 और तृतिय पंक्ति में 16 मात्राएं तथा द्वितीय और चतुर्थ पंक्तियां में 14, 14 या 15 मात्राएं होती है । कवित्व की दृष्टि से यह ग्रन्थ इतना उत्कृष्ट कोटि का है कि डा. तैस्सित्तौरि ने इसे राजस्थानी साहित्य की खान का उज्जवलतम रत्न कहा है । डिंगल भाषा का सम्भवतः यह एक मात्र ग्रन्थ है जिसकी टीका संस्कृत में उपलब्ध होती है । राजस्थान मे इस ग्रन्थ का सम्मान वेद पुराण की भांति किया

गया है और और उसे पांचवा वेद कहा गया है। बेलि के काव्य सौन्दर्य के एक नमूने के रूप मे यह छन्द देखिये। रुकमणी के वयो विकास के वर्णन में कवि कालिदास से भी आगे बढ़ गया है।

> आन वरसि वधे ताई मास वधेई,
> वधै मास ताई पहर वधन्ति।
> लखण बत्तीस बाललीला में,
> राजुकंवरि ढुलड़ी रमन्ति॥

कालिदास के कुमार सम्भव में पार्वती के वय विकास के का वर्णन इस प्रकार है—

> दिने दिने सा परिवर्धन माना, लब्धोदया चान्द्रमसीव लेखा।
> पुपोष लावण्यमान विशेषंक; ज्योत्सनान्तराणीव कलान्तराणि॥

सांयाजी झूला

इनका जन्म सम्वत् 1632 में और स्वर्गवास 1703 मे हुआ था। सायाजी श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे। कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित इन्होंने दो ग्रन्थ रचे हैं। पहला रुकमणी हरण और दूसरा नागदमन। रुकमणी हरण में कृष्ण और रुकमणी के परिणय का चित्रण है जबकि नागदमन मे कृष्ण की किशोरावस्था, गोपियों का प्रेम और उनकी रासलीला तथा कृष्ण कालिया युद्ध वर्णन है। रुकमणी हरण की भाषा डिंगल है किन्तु उस पर यत्किंचित गुजराती का भी प्रभाव है। रुकमणी हरण के कुछ छन्द लीजिए—

> प्रगदया क्रिसन वसुदेव जादव पता,
> श्री हुई रुकमण राव भीमक सुता ।1।
> विमल पिता मात कुल छात जणावियों,
> लार भरतार अवतार रुकमण लियो ।2।
> मलमला राजहँस राजकुंवरी मली,
> एह छै रुखमणी रूप जुग ऊपली ।3।
> मात पित पूत पखार बैठा मतो,
> सोझियों वाद विवाह कारण सुति ।4।
> माखियों भीम मुख जोय चवदे भवन,
> कुंवर वर मुझ ए मुफ क्रिसन ।5।
> रुखमियो जाधि घ्रत जालिणी रालियो,
> मला भीकम तम्हें वर मलियों ।6।

दुरसा जी

दुरसाजी का जन्म सम्वत् 1592 में जोधपुर राज्य के एक गांव में हुआ था। ये डिंगल के बहुत समर्थ कवि थे। बादशाह अकबर के दरबार में इनका असाधारण सम्मान बताया जाता था। दुरसाजी के वीर रसात्मक दोहे राजस्थान के लोगों की जबान पर आज भी हैं। उनके लिखे तीन ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। विरुद्ध छहतरी किरतार बावनों और श्री कुमार अज्जाजी नी भूचर मोरी ती गजगत। दुरसाजी के सशक्त और ओजस्वी कविता के कुछ दोहे प्रस्तुत है—

अकबर समन्द अथाह, सह डुबा हिन्दु तुरक।
मेवाड़ो तिण माह, पोयण फूल प्रतापसी,
अकबरियो इक बार, दागल की सारी दुणी,
अणदागल असवार, रहियो राणा प्रतापसी।
लोपे हिन्दु लाज, सगपण रोपे तुरकमू,
आरज कुल री आज, पूँजी राण प्रतापसी।
आज हित स्याल समाज, हीन्दू अकबर वस हुआ।
रोसीलो मगराज, प्रजे न रया प्रतापसी॥

मुहणोत नेणसी

मुहणोत नेणसी सम्वत् 1667 मे ओसवाल जाति के मुहणोत वंश मे पैदा हुआ था। इन्होंने मुहणोत नेणाणी की ख्यात नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा है। इस पुस्तक मे राजपुताना, गुजरात, काठियावाड़ कच्छ, मालवा, बुन्देलखन्ड और मागेलखण्ड के राजपूतो का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। राजस्थानी के गद्य साहित्य मे मुहणोत नेणसी की ख्यात का बडा महत्वपूर्ण स्थान है। स्वर्गीय मुंशी देवी प्रसाद के शब्दों मे नेणसी राजपूताने के अबुल फजल नेणसी की दूसरी पुस्तक जोधपुर राज्य का सर्व संग्रह है किसमें जोधपुर राज्य के उन परगनों का विवरण है जो उस समय जोधपुर राज्य में थे। उत्कृष्ट कोटि के इतिहासकार होने के साथ साथ नेणसी डिंगल भाषा के सिद्धहस्त गद्य लेखक भी थे। उनकी गद्य रचना का एक अंश देखिए—

डूंगरपुर सहर, ता उगवण ने दिपण वैउ तरफ मासर छै। खोहल माहे सहर मगरारी सम्भ बसीयो छैं छोटो सो कोट छे। उठै रावल रा घर छैं। गाव माहैं देहुरा घणा छैं। चोहटा घणा विण हाटे उसडी पीढ हो नहीं। डूंगरपुर री उतर दिस तुंरावल पूंजा रो करायो गोवरधन नाथ रो बडो देहरो छै। गाव सूं इमान कूंण मे रावल गेपा रो करायो बडो तालाब छै। सहर री पाछे भाखर है। सकार रो आहुरवाणो पिण उण हीज माखरा ऊपर छै। घणी दूर आहुखाने रे वास्ते भीत छै। सहर सूंकास पूर्ण में गांगडी नदी छै। तिण रे टाहे रावल पूंजा रो करायो बडो राज बाग छैं।

वीरमाण

राजरूपक नामक डिंगल भाषा के प्रसिद्ध ग्रन्थ के रचयिता मे वीरमाण जोधपुर राज्य के गढोई ग्राम में सम्वत् 1745 में पैदा हुए थे। राजरूपक मे महाराजा अभयसिंह और गुजरात के सूबेदार शेर बिलन्द खां के युद्ध का वर्णन है। इस युद्ध मे जो अहमदाबाद में हुआ था, वीरभान स्वयं भी उपस्थित थे। अतः इस ग्रन्थ में लड़ाई का आंखों देखा इतिवृत में प्रस्तुत किया गया है। राजरूपक की भाषा का एक नमूना लीजिये :—

सुन्दर भाल विसाल अलक, सम माल अनोपम। हित प्रकास मृदु हास, अरुण वारीज मुख कपादान नव कुंज, नयज अभिराम सनेही। रुचि कपोल ग्रोवा त्रिरेख, छवि वेस अछेही। निरखत संत सनमुख निजर, करण पुनीत सुप्रीत कर। गुणमान दान चाहे मुग्रहि, कवि सुग्यान भो ध्यान धर।।

जोधराज

हम्मीर रासो नामक ग्रन्थ के रचयिता जोधराज कुशल कवि होने के साथ निष्णात् ज्योतिषी भी थे। हम्मीर की वंशावली तथा उनके जीवनकाल की महत्वपूर्ण घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया है। हम्मीर रासो वीर रस का ग्रन्थ है किन्तु शृंगार का भी उसमें सुन्दर पुट दिया गया है। हम्मीर रासो का एक अंक लीजिये :—

मिले बंधु दोऊ धाय। बहु हरप कीन सुभाय।
अब स्वामी धर्म सुधारित। दोऊ उठे वीर हूंकारि।।
असमान लग्गिय सीस। मनों उमें काल सदीस।
इत कोप महिमा कीन्ह। हम्मीर गोन सु चीन्ह।।
उत गोर गमर आय। मिलि सेख के परि पाय।
कर तेग वेग समाहि। रहि द्रुह सेनसचाहि।।

प्रतापसिंह

जयपुर के महाराजा प्रताप सिंह का जन्म सम्वत् 1821 में और मृत्यु सम्वत् 1860 में हुई। ये कला वन्तों के बड़े गुणगायक थे और स्वयं भी व्रजनिधि के उपनाम से कविता लिखते थे। काशी नगरी प्रचारिणी सभा द्वारा उनके काव्य ग्रन्थों का संग्रह व्रजनिधि ग्रन्थावली के नाम से प्रकाशित किया जा चुका है, जिसका सम्पादन पुरोहित हरिनारायण विद्याभूषण ने किया है। व्रजनिधि की कविता का एक अंश लीजिये :—

राधेबैठी अटारिया, झांकत खोकिकिवार।
मानो सदन गढ तैं चली, द्वै गोली इकसार।।
द्वै गोली इकसार, आनि आखिन में लागी।
छेदे तन मन प्रान, कान्ह की सुधि बुद्धि भागी।।

ब्रजनिधि है बेहाल, बिरह बाधा सी दाधे ।
मंद-मद मुसकाई, सुधा सी सीचति राधे ।।

बांकीदास

इनका जन्म जोधपुर राज के मडियावास नामक ग्राम में सम्वत् 1828 में हुआ था । ये महाराजा मानसिंह के बड़े कृपा पात्र थे । डिगल भाषा के उन विरल कवियों मे इनका नाम लिया जा सकता है जो अपने कवित्व के कारण अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखे जाते है । इन्होंने कुल मिलाकर लगभग 26 ग्रन्थ लिखे। काशी नागरी प्रचारिणी द्वारा बांकीदास ग्रन्थावली का प्रकाशन हो चुका है। बांकीदास न केवल वीर रस के कवि थे अपितु नीति विषयक साहित्य भी इन्होंने प्रचुर मात्रा में लिखा है।

नरकायर ग्रांणे नहीं, लूण लिहाज लगार ।
धोले दिन छोड़े धणी, ग्रणी मिले उण वार ।। 1 ।।
बादल ज्यूं सुर धनुप विण तिलक बिना दुजपूत ।
बनो न सापे मोड विण, धाव विना रजपूत ।। 2 ।।

सूर्यमल

वंश भास्कर के सुप्रसिद्ध लेखक सूर्यमल का जन्म सम्वत् 1872 में बूंदी में हुआ था वंश भास्कर बूंदी राज्य का पद्यात्मक इतिहास है जिसमें वर्णित घटनाएं तथ्यों पर आधारित है। इनका दूसरा अपूर्ण ग्रन्थ वीर सतसई है। बलवन्त विलास और छन्दोमयूख नामक दो ग्रन्थ भी इन्होंने लिखे थे। वीर रस के कवियों में सूर्यमल की टक्कर का कवि सम्भवतः दूसरा नहीं हुआ। उनकी वीर रस की कविता का एक नमूना लीजिए :—

दुव सेन उदग्गन खाग समग्गन अग्ग तुरग्गबग्गलई ।।
मचि रंग उतंगन सज्जि रंनग जंग लई ।
लगि कप लजाकन भीरु भजानन वारु कजाकन हाक वढी ।।
जिम सेह ससय र यो लगि ग्रंबर चंड ग्रडंबर खेह चढी ।

बख्तावरजी

इनका जन्म सम्वत् 1870 मे और मृत्यु 1951 मे हुई। इनका सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ केहर प्रकाश है, जिसमें कमल प्रसन्न नामक एक वेश्या और इसके प्रेमी केशरी सिंह की प्रणय लीला का वर्णन है। केहर प्रकाश के काव्य सौन्दर्य का एक नमूना लीजिए :—

कंवल उवरसी आत आत मे कहात ।
परस्थानी परियों सी सहेल्या ले साथ ।।
जरकस पट जेवर झलामल के जोत ।
हेरी जात चारो ओर चानणी सी होत ।।
छुद्र घण्टा बिछियों का छूटे छण छणख ।

ज्यों हुवे बच्चों की वानी का बनाव ।
बादल का झनकार ह्वै चोरें परजोर ।
सावन के मोसम ज्यों झिल्लियों का शोर ।
रवबी मधुपगू में मगदिन के बैन ।
सुन्दर के महल मांई मिजाजों के सैन ।

ऊमरदान

जोधपुर राज के ढाढरवाड़ा गांव में सम्वत् 1909 में उत्पन्न इस चारण कवि ने भक्ति रस की सुन्दर रचनाएं की है। इनकी रचनाओं का संग्रह ऊमर काव्य के नाम से प्रकाशित किया जा चुका है। इनका सम्पादन श्री जगदीश चन्द गहलोत ने किया है। इनकी भाषा विद्वतापूर्ण न होकर बोलचाल की है। नमूने के रूप में यह देखिये—

भव भोनकार, मसार उबार
        निस दिवस नाम, रट राम राम
है सुगम दोक, श्रद्धा समीप,
        रवि हवेलु, यह दिव्य दाम ॥ 3 ॥

केशरी सिंह बारहट

मेवाड़ राज्य में सोन्याणा नामक ग्राम में इनका जन्म सम्वत् 1927 में बारहट कुल में हुआ इन्होंने प्रताप चरित्र, राजसिंह चरित्र, दुर्गादास चरित्र और रूठी रानी नामक 5 पुस्तकें लिखी हैं। ये बड़े विद्वान, इतिहास प्रेमी और काव्य कला के पारंगत थे। इनकी कविता का एक अंश लीजिये।

बोली वीर भगिनी में हौं पै बलिहारी वीर।
जग्यावत शूर ग्रीर जर्यो ममजी को है।
जननी हमारी जन्म भूमि हेतु जावत तू
कीरति अपार कहीं किनिरधी याकी है।
कै तो तीज पेढ़ के पयान कर देहु प्रान
सुनउ अथाह चतुर गिनों अरि को है।

आधुनिक काल सम्वत् 1950 से आगे

इस युग को हम राजस्थानी का ह्रास युग भी कह सकते हैं। इस काल में राजस्थानी का प्रभुत्व धीरे-धीरे समाप्त होने लगा और उनका साहित्य [illegible] विस्मृति के गर्भ में जाने लगा। राजस्थानी अब मात्र बोल चाल की भाषा रह [illegible] फिर भी इस युग में कतिपय बड़े महत्वपूर्ण लेखक हुए हैं और अनेक नई [illegible] सामने आई है, जिनका संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत है।

शिवचरण भरतिया

आधुनिक राजस्थानी के महत्वपूर्ण लेखकों में इनकी गणना की जाती है। इन्होंने बोलचाल की भाषा में अनेक नाटक लिखे हैं। ये संस्कृत हिन्दी और राजस्थानी के मर्मज्ञ विद्वान कहे जाते हैं। राजस्थानी भाषा में लिखे हुए इनके ग्रन्थ कुल मिलाकर 9 हैं—केशर विलास नाटक, फाट का जंजाल, बुढ़ापा की सगाई, कनक सुन्दर, मोतियां की कंठी, वैश्य प्रबोध, विश्रांत प्रवासी, संगीत मानकुंवर नाटक और बौद्ध दर्पण।

श्याम दास

इनका जन्म सम्वत् 1893 ई. में और मृत्यु 1951 ई. में हुई। ये मारवाड़ के महाराजा सज्जनसिंह के बहुत ही कृपापात्र थे और उनकी सलाहकार परिषद् के सदस्य थे। वीर विनोद इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है। जिसमें इतिहास और काव्य दोनों का समन्वय है। जहां तक मेवाड़ के इतिहास का सम्बन्ध है, वीर विनोद से अधिकृत और कोई इतिहास नहीं हो सकता।

पंडित रामकरण आसोपा

इनका जन्म सम्वत् 1914 जोधपुर राज्य में बडलू गांव मे और मृत्यु सम्वत् 2002 मे हुई। ये संस्कृत, हिन्दी, डिंगल आदि भाषाओं के मर्मज्ञ विद्वान होने के साथ साथ सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ भी थे। डा. टेस्सिटोरी को भी डिंगल भाषा के ग्रन्थों के सम्पादन मे इन्होंने पर्याप्त सहायता की थी। पंडित जी ने छोटे मोटे लगभग छः दर्जन से ऊपर ग्रन्थों का सम्पादन, सृजन और अनुवाद किया होगा। इनमें से निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है। राजरूपक, सूरक प्रकाश, नैनसी की ख्याति, मारवाड़ का मूल इतिहास, मारवाड़ी व्याकरण और बांकीदास ग्रन्थावली।

नाथूसिंह महियारिया

नाथूसिंह महियारिया राजस्थान में डिंगल परम्परा के प्रसिद्ध कवियों मे से हैं। इन्होंने वीर सतसई नामक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है इनकी काव्य रचना के उदाहरण स्वरूप कुछ दोहे लीजिए—

ओपद जाणो मोकला पीड न जाणे लोग।
पिउ केसरिया नहं किया हू पीली उण रोग।
सुत मरियो हित देसरे हरख्यो बधु समाज।
मा नहं हरषी जनमदे उतरी हरषी आज।

चन्द्र सिंह

आधुनिक राजस्थानी के बहुत सुप्रसिद्ध कवियों में है। बादली और लू इनकी सुप्रसिद्ध रचनायें है। मौलिक सृजन के अतिरिक्त इन्होंने कालीदास के

रघुवंश और हालकी गाथा सप्तसती का भी अनुवाद किया है। इनके काव्य रचना का एक नमूना लीजिये :—

सावण सांझ सुहावणी, बाजे झीणी बाल
गावे सूमल गयेरड्या, खावे हियो उछाल ॥

नान्हा गीता पालणे, खिल-खिल अछूलिया।
चूवे गूंडो चाव सू मारे पग्गलिया।

सूर्य करण पारीक

इनका जन्म सम्वत् 1980 मे और देहान्त सम्वत् 1996 में हुआ। अपने समय के ये प्रकाण्ड विद्वानों में समझे जाते थे। आधुनिक राजस्थानी के सम्भवतः ये एक मात्र विद्वान थे जिन्होने राजस्थान वासियों का ध्यान अपनी-अपनी मातृभाषा के उत्थान की ओर आकृष्ट किया। इन्होने अनेक ग्रन्थों का सृजन और सम्पादन किया है जिसमें ढोला मारू रा दूहा, वेलि कृष्ण रुकमणी री, छन्द राव जेतसी रो और राजस्थानी वार्ता उल्लेखनीय है।

अन्य लेखक

वर्तमान युग के अन्य लेखकों मे श्री नरोत्तमदास स्वामी, श्री मनोहर शर्मा, श्री रावत सरस्वती श्री अगरचन्द नाहटा, श्री मुरलीधर व्यास, श्रीमती रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, श्री पुरुषोत्तम लाल मेनारिया और श्री पतराम गौड आदि प्रमुख है स्वामीजी ने राजस्थानी के अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया है। नाहटाजी ने भी प्राचीन साहित्य को प्रकाश में लाने की दिशा में असाधारण काम किया है और श्री मुरलीधर जी व्यास राजस्थानी में बड़ी मर्मस्पर्शी कहानिया लिखते रहते हैं। उनका एक संकलन वर्षगांठ के नाम से प्रकाशित हो चुका है। लोक साहित्य के सकलन और सम्पादन का भी वे महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। कवियों मे श्री मेघराज मुकुल श्री गजानन्द वर्मा, श्री मदन गोपाल शर्मा सत्य प्रकाश जोशी, श्री रेवत दान चारण, श्री मनोहर प्रभाकर, श्री विश्वनाथ विमलेश, श्री कल्याण सिंह राजावत आदि अनेक कवि अपनी काव्य प्रतिभा से राजस्थानी का भंडार भर रहे हैं।

प्रमुख आधुनिक कवि-लेखकों का परिचय

कन्हैयालाल सेठिया—

यह राजस्थानी और हिन्दी भाषा के आधुनिक काल के लेखक हैं। हिन्दी के प्रमुख गीतकारो में इनका नाम है। 'पाथल और पीथल' नामक इनकी सुन्दर काव्य रचना है।

विजयदान देथा—

इन्होंने राजस्थानी में अनेक पुस्तके लिखी है। राजस्थानी के लोक गीत, लोककथाएं आदि पर हो रहे शोध कार्य में इनका बहुत बड़ा योगदान है। इन्होंने

"बातां री फुलवारी" नामक पुस्तक में राजस्थानी लोक कथाओं का संग्रह किया है। इस पर इन्हें 1974 मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था।

सीताराम लालस—

यह भी राजस्थानी भाषा के आधुनिक विद्वान हैं। इन्होंने राजस्थान शब्द कोष का निर्माण किया है। जोधपुर विश्व विद्यालय ने उन्हें साहित्य सेवा के लिए डी. लिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया है।

कोमल कोठारी—

यह 'रुपायन' नामक सस्था के संचालक हैं। यह सस्था राजस्थानी लोक गीतों, कथाओं आदि का संकलन कर रही है। अतः इनकी राजस्थानी साहित्य सेवा के लिए इन्हे 1975 में नेहरू फैलोशिप पुरस्कार प्रदान किया गया था।

अगरचंद नाहटा—

यह राजस्थानी और हिन्दी के गद्य लेखक है। इनके पास पाडुलिपियों का बहुत बड़ा संग्रह है। राजस्थानी में इन्होने लघु कथायें भी लिखी हैं।

बशीर अहमद मयूख—

यह कोटा के प्रसिद्ध कवि हैं और वैदिक व जैन धर्म के विद्वान हैं। गालिब की रचनाओं का इन्होने राजस्थानी में अनुवाद किया है। 1976 में इन्हे सिंघवी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार प्रदान किया गया था।

नारायणसिंह भाटी—

यह राजस्थानी भाषा के विद्वान हैं। राजस्थानी साहित्य के लिए इनका बड़ा योगदान है। आप राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर के संचालक हैं।

मणि मधुकर—

यह राजस्थानी और हिन्दी के विद्वान हैं। इनके उपन्यास 'भरत मुनि के वाद' पर 1976 का 1500 रु. का इन्हें प्रेमचन्द पुरस्कार प्रदान किया था। इनके काव्य 'पगफेरो' पर इन्हे साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

राजस्थानी संस्कृति—

संस्कृति में किसी भी देश, राज्य समाज के खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज धर्म, परम्परायें तथा अन्य सस्कृतिक धरोहर की बातें आती है। राजस्थानी संस्कृति की इन सब बातों की जानकारी इसी पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में दी गई है। यहां हम केवल इन क्षेत्रों की कुछ महत्वपूर्ण संस्थाओं एवं सस्थानों की जानकारी देने का प्रयत्न कर रहे है—

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी—

संगीत की सांस्कृतिक विद्या को प्रोत्साहन देने के लिए राजस्थान में संगीत नाटक अकादमी कार्य कर रही है। अकादमी नाटक शिक्षण के शिविर आयोजित करती है और संगीतकारों को प्रोत्साहन देती है।

जयपुर कत्थक केन्द्र—

जयपुर का कत्थक घराना कत्थक नृत्य के लिए भारत में प्रसिद्ध है। यहां राज्य सरकार ने कत्थक-नृत्य को प्रोत्साहन देने के लिए कत्थक केन्द्र खोला है जो वित्तीय वर्ष 1979–80 से कार्यरत है।

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी—

राज्य सरकार ने विश्व विद्यालय स्तर के ग्रन्थों को हिन्दी माध्यम से उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार की नीति के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ अकादमी का गठन किया है। अकादमी ने अब तक करीब 300 से अधिक ग्रन्थों का प्रकाशन किया है।

अरबी-फारसी संस्थान—

राज्य सरकार ने अरबी और फारसी भाषाओं के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक अनुसंधान कार्य के लिए 1978 के दिसम्बर में टोंक मे अरबी व फारसी के शोध संस्थान की स्थापना की है। संस्थान ने अरबी हस्त लिपि के ग्रन्थों की छपाई का काम शुरू किया है। इस संस्थान को कुछ ग्रंथ भेंट स्वरूप भी प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान ललित कला अकादमी—

नये व युवा रंग कर्मियों को प्रोत्साहन देने के लिए ललित कला अकादमी काफी अर्से से कार्यरत है। अकादमी प्रत्येक वर्ष नये चित्रकारों के चित्रों की प्रदर्शनी लगाती है।

रवीन्द्र रंगमंच जयपुर—

राजस्थान की राजधानी जयपुर में रवीन्द्र रंग मंच की स्थापना की गई है जो सांस्कृतिक कार्यक्रमो के लिए राज्य सरकार की एक बहुत बड़ी देन है।

गुरुनानक संस्थान, जयपुर—

यह संस्थान भी जयपुर में कार्यरत है और कला, संस्कृतिक व साहित्य के विकास मे योगदान दे रहा है।

राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद—

राज्य में खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य क्रीडा परिषद महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। प्रत्येक वर्ष राज्य व अखिल भारतीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का यह आयोजन करती है तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के लिए प्रोत्साहन देती है।

रुपायन संस्था—

जोधपुर जिले में बोरुंदा गांव में 'रुपायन' एक सांस्कृतिक व शैक्षणिक संस्था के रूप में कार्य कर रही है। सन् 1960 में स्थापित यह संस्था गांव के कुछ साहित्यकारों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहकारी प्रयास का प्रतिफल है जो आज अपने

ढंग की देश में एक मात्र संस्था है। "रुपायन" संस्था राजस्थानी लोक गीतों, कथाओं एवं भाषाओं की परम्परागत धरोहर की खोज कर उसका सिलसिलेवार संकलन कर रही है। संस्था का अपना स्वयं का प्रेस, पुस्तकालय तथा रिकार्ड करने का उपकरण है। राज्य तथा केन्द्र सरकार द्वारा संस्था को अनेक रूपों में अनुदान किया जा रहा है।

राजस्थान कला संस्थान—

यह संस्थान कला के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट स—

इस संस्था द्वारा चित्रकला व रंगकार्य को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

गैलेरी ग्राफ मोडर्न आर्ट—

यह संस्था भी कला को प्रोत्साहन देती है।

इसके अतिरिक्त अन्य कई संस्थान भी राज्य में साहित्य, कला व संस्कृति के प्रोत्साहन के लिए कार्यरत हैं।

(4) राजस्थान के लोक गीत एवं नृत्य, मेले, उत्सव एवं त्यौहार, रीति रिवाज तथा प्रथायें,

Folk songs and dances, fair festivals, Custom & Costumes of Rajasthan

(क) राजस्थान के लोकगीत एवं लोक नृत्य—

राजस्थान की कलात्मक परम्परा का बहुत बड़ा अंश हमारे लोक गीतों, लोक नाट्यों और लोक नृत्यों में निहित है। इन कलाओं के विविध रूप आज भी हमारे लोक जीवन को विकसित और उल्लासित करने में सहायक होते है। सरल लोक गीतों से स्पन्दित जनता में जागृत चेतना की भव्य झांकी प्रतिबिम्बित होती है। उसके अपार हर्ष और कामनाओं का संसार आशयों और उमंगों की मस्तियों मे झूम उठता है। अपनी कल्पना के चित्रण में लोक गीतों के रचयिता गायक स्वाभाविकता की ओर से तनिक भी उदासीन नहीं रहते। यही कारण है कि ये लोक गीत जन जीवन के समीप रहकर परम्परागत चलते रहते है। उसी लय, तान, स्वर और माधुर्य से।

सावन का महीना है। चारो ओर रिमझिम रिमझिम वर्षा हो रही है। वृक्षों और पौधो में नई-नई पत्तियां और नये-नये फूल खिल रहे हैं। इसी बीच सावन मास में राजस्थान का प्रसिद्ध लोकप्रिय त्यौहार तीज आता है। गरजते काले बादर में दमकती बिजली की चमाचमाहट से विरहिणी प्रिय मिलन के लिए व्याकुल हो उठती है। प्रकृति के हर अंग मे उसे विरह ज्वाला दिखती है। उसका रुद्ध कंठ चीख उठता है परदेश गये प्रियतम को देखिये वह कैसे आमंत्रित करती है।

"सावण बरसै, भादवों जी मारा राज, सायबा तपे जैठ असाढ
कुसुमल केसीरिया जी मारा राज, सायवा सुणीर तीज घर आवजो"

सावन बरस रहा है, भादवा बरस रहा है परन्तु हे प्रियतम में तो तुम्हारे वियोग में ज्येष्ठ आषाण की गर्मी अनुभव कर रही हूं। योवन की मदमाती केशर सी लाली वाले प्रियतम मेरी करुण विनती सुनकर तुम आशय ही तीज के दिन आ जाना।

परन्तु वह इतना कह करके ही शांत नही हो जाती है। उसकी बिरह वेदना को वह पक्षियों के स्वरों में जगाती है।

आमेजी बैठीं कोयली, दोय शब्द सुणावे, गोका वैठी गोली, दोय बात बतावें सुणा रा भंवर मारी विनती परी तीज पधारों।

प्रियतम मिलन के लिये जब वह प्राय: निराश हो जाती है तो वह अपने पति से प्रार्थना करती है कि वह किसी प्रकार उसे दर्शन तो दे दे। पति दर्शन के लिए उसका वहाना देखिए कितना उपयुक्त है।

आगण वाऊ एलची, कई रे कवरे नागरवेल, बीडी रे मस लीजो, भवरजी मारो मुसरोक्षेल।

अर्थात् हे प्रियतम। मैं अपने मकान के चारो ओर नागरवेल लगाऊंगी क्योंकि तुम्हें पान खाने का शौक है। पान खाकर तुम बीडी भी पीते हो उस समय तुम मेरा मुजरा स्वीकार कर लेना।

बरसात के मौसम में गांव की गोरिया बाग बगीचों में डालों पर झूला झूलती है। तालाव के किनारे झूले पर मौजी पति अपनी प्रियतमा को झूला झुलाता है और झुलाते-झुलाते स्वयं झूले पर चढ जाता है।

पणिहारा कंवरजी, अणी सजरिया री पार, आंबा दोई रावरा, हों दा सोई रावर होर्चे भोजो मायबा, हिचाये घर की नार, हीचे दो ही जणा।

राजस्थानी लोकगीतों में सोत का प्रमुख स्थान है। आनन्द मगल के हर अवसर पर उसे याद कर लिया जाता है। विरह वेदना से व्याकुल विरहणी के घावों पर बस नमक मिर्च का कार्य करती है।

जोसण हींदों वाल्यों, अणी अंबुआ री डाल, हरी साडी न हरियो ही लेगो रे
जोरण हरियो मारी मारणी री वाग, जोरण हरियो बाग में झुलोरिया रे

सोत ने आम की डाली पर झूला डाला है वह हरी साड़ी और हरा लहंगा पहने हुई है। उसने मेरे पति का मन मोह लिया है। वह हरे-भरे बगीचे में झूल रही है। मेरी सोत झुला रही है।

अनुमान लगाइये जब उस टीसका स्त्री अपने पति को मौसमी बहार में किसी अन्य स्त्री के झूले में झूलते रंग-रेलियां करते देखे। जैसे उसके कोमल कुसुम हृदय पर मन भर का पत्थर रख दिया गया हो। सावन की ऋतु समाप्त हो गई है।

शीतकाल का आगमन हो रहा है। काली-काली अन्धियाली लम्बी-लम्बी रातों में गृहिणी बिन प्रियतम के करवटें ले रही है। उसका पति किसी अन्य स्त्री के साथ आनन्द मग्न है। ठण्डी-ठण्डी हवा बह रही है चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है वह गाती है।

मेडी चडने हेलो पाड़ूंगरे आवो गाडा मारुजी सुखरी
सियालो राजन यूं ही गयो।
गया जीजीबाई रे गया सोकण बाई रे, वलम्या वालम
पाधानी आया रे।
जीजीबाई गणाई, नखरा पा गणरा राजन, नान री
वीडा में राजन रसगयो रे।

अपने घर के द्वार पर खड़े होकर पत्नी पुकारती है कि हे पतिदेव, शीघ्र ही घर आ जाओ सुख का शीतकाल है राजन ऐसे ही बीत रहा है। उसके रूप झंझाल में बहला पति वापिस नही आए हैं, उसने पान के बीड़े में राजन का मन मोह लिया है।

यह सुनकर भोग विलास में लिप्त पति उत्तर देता है—
गोरी मारो हियो मत बारो, मारै मोसा मति बोलो,
सियालो आजू आवसी, उनालो ओजू आवसी गयो
जीवन पाछो नी आवसी।"

हे गोरी मेरा दिमाग खराब नहीं हुआ है, मुझे कडवे वचन मत बोलो। शीत ऋतु फिर आयेगी, ग्रीष्म ऋतु फिर आएगी परन्तु गया हुआ यौवन फिर नहीं लगेगा।

शीतकाल से ही विवाह ऋतु भी आरम्भ हो जाती है अन्य राज्यों की भांति राजस्थान मे विवाह कार्य गणेश पूजन से आरम्भ होता है। वर और वधू दोनों के घर में विनायकजी की स्थापना की जाती है और उनसे प्रार्थना की जाती है कि यह मंगल कार्य आनन्द निर्विघ्न समाप्त हो। लाल पीले गोटे किनारी के साड़ी लहंगे, सोने-चांदी के गहनो से लदी सुहागिन स्त्रियां मिलकर गणेश पूजन को जाती हुई गाती है—

चालो गजानन्द आपां जोसीडा रे चाला, आछा लगन
दिखाई दो।
चालो गजानन्द बजाजी रे चांला आपा आछा आछा
पडरा मोलावां।
कोटा रीगादी पर नौबत बाजे, नौबत बाजे घरड घरड,
झालर बाजे झरण झरण।

हे गजानन्द चलो हम ज्योतिषी के यहां चलकर विवाह के अच्छे लगन लिखवा लें। चलो हम ब्याज की दुकान पर चलें और अच्छे-अच्छे कपड़े खरीद लें। कोटा के महलों में नौबत बज रही है। नौबत गड-गड बज रही है और झालर भरण-झरण।

वर-वधू के मिलन का कमरा सजाया गया है। फूलों की सेज पर दीपक की विमल ज्योति में वधू लेटी हुई प्रियतम की प्रतीक्षा कर रही है। इस दृश्य को दिखाते हुए वधू की भावनाओं को राजस्थानी महिलाएं निम्न गीत में प्रकट करती है।

ई मेल कुणीका, कचन का थमा दीसे दूर से ई मेल बनाका, अन्तर की लपटा आए दूर मे चन्दा तो थारी चांदणी, सूती पलग बिछाय सायबा थारी याद में छिण-छिण जुग-जुग जाय शीशी तो मेरी गुलाब री जी भेजू किसके साथ भेजन-वाला गरेनीईजी, देवरिया नादान—

अर्थात् यह महल किसका है? जो कंचन का है और जिसके खम्भे दूर से दिखते हैं, यह महल प्रियतम का है जिसमें से दूर-दूर तक इत्र की लपटें आती हैं। हे चन्दा तेरी चांदनी तो पलंग बिछा कर सोई हुई है। प्रियतम, तुम्हारी याद में एक-एक क्षण एक-एक युग की भांति व्यतीत कर रही हूं।

गुलाब के इत्र की शीशी भरी हुई है प्रियतम किसके साथ भेजूं। मेरे पास ले जाने वाला कोई नहीं है और देवर मेरा नादान है।

वधू के घर पर मंगल द्वार बनाया गया है। लाल-पीली फर हरिया उड रही है। वर घोड़े पर तोरण द्वार आता है। मन में आनन्द का अथाह सागर लिये मुस्कान को छिपाये, गम्भीरता का कृत्रिम रूप बनाये। यहीं वधू पक्ष की महिलाएं उसका स्वागत व्यंग में करती हैं। देखिए व्यंग की तीखी मार कैसी है,

मारा दादा सारी पीर, अपने चाकर राखूंली। चरवादार राखूंली।

छड़ीदार राखूंली, हुक्कादार राखूंली। आदि अर्थ भी इनका स्पष्ट है।

विवाह मंडप सजा है। पवित्र होम अग्नि के चारों ओर वर-वधू सात फेरे खा रहे हैं। पंडित मंत्रोच्चार के साथ उनको मंगल सूत्र में बांध देता है। तभी वधू पक्ष की महिलाएं वधू के पिता को व्यंग करते हुए गाती है—

पेलो फेरों दादाजी री पियारी, दूजो ने फेरो ए लाडी,
काकासा री पियारी,
दमडा रा लोभी, ओ काकासा की दी रे पराई ढोला री
ढकमी, फालर री फणकार।
की दी रे पराई।

देखिये वर-वधू की डोली उठ रही है। वधू की मां, भाई, बहिनें सहेलियां सभी के आंचल विदाई के आंसू से गीले है। वधू आनाकानी करती है। उमड़ पड़ती है। महिलाएं गाती है—

छोपियें की चिप्योसो प्रागणों, लाडूरा गुण गुडजाय।
प्रापरी में तासा घीडयी साजन जीत्यों, जाय जीत
जिताई नै विसरिया ढोल देवायां जाय।
प्रागे-प्रागे जान्यां चाल्यां, पाछे-पाछे मांडूया
प्रदवचे मेतसा धीयडी साजन जीत्य जाय।

प्रर्थात् प्रांगन लिपा पुता हुआ है. जिस पर लड्डू वेखट के सिरज जा रहे हैं। हे मेहता जी प्रापकी लड़की को वर जीत के ले जा रहा है। यह तो जीत गए प्रौर ढोल बजा रहे हैं। प्राप देख-देख के भी भूले जा रहे हैं। पीछे-पीछे मंडल वाले प्रागे बराती चल रहे हैं, प्रौर बीच में मेहताजी की लड़की को वर जीत के ले जा रहा है।

लतिका सी कोमल बाला का हृदय प्रपने पितृगृह के विछोह से पसीज उठता है, परन्तु वह विवश है प्रौर र उसी विवशता में प्रपने पिता को कहती है।

प्राये जायने दादा सा पाछा फरिया, उबिया मांडाहेटे।
प्राप क्यूं उबा माडा हेटे, मा तो चाल्या परदेश,
सम्पत वे तो लावजो,

गीतों में ही भला परदेश। यह सुनकर कन्या का पिता कहता है—सम्पत तो थोड़ा ए बाई, रण घणो थाने लवांगा बड़ वेग।

कन्या की मा सहेलियां प्रादि उसको धीरज बांधी हुई उसकी सासू से बिनती करती है—

प्रो थारे करकरिया री बीठी जीमे मार,
जरा कवर बाइसा बैठी,
प्रो सासू गारी मत दीजो,
में तो दूध पायने मोटी की दी,
प्रो में तो लाड़ू से लड़ाई,
प्रो में तो पापडसू पढ़ाई,
प्रो में तो खाजा सुं खेलाई,
प्रो सासूजी गारी मत दीजो—

इस गीत में प्रंकित वात्सल्य स्नेह को ममतामय झांकी की तुलना विश्व के किसी भी साहित्य से की जा सकती है। मां किस प्रकार प्रपने बच्चों को हृदय के टुकड़े का पालन-पालन करके बड़ा करती है।

दाम्पत्य जीवन चल रहा है। धीरे-धीरे गृहस्थी जम रही है। पति खेत पर काम करने को चला जाता हैं। तभी सासू बहू को प्रपने पति के लिये खाना दे प्राने को कहती है तो वह उत्तर देती है,

मूनी जाऊ रोटी देवाने,
सासूजी थांका जाया ने ।
लड़-झगड़ने चढ्याजी गोखड़ा,
अब लाग्या समझावाने ।
सासूजी श्रो थांका जाया ने,
मूनी जाऊं रोटी देवाने ।

हे सासू मैं तेरे सुपुत्र को रोटी देने नही जाऊंगी, वह मुझसे पहले लड़-झगड़, फिर झरोखे में बैठे पश्चाताप कर रहा है । मैं उसे रोटी देने नही जाऊंगी ।

पति के काम पर चले जाने श्रौर सास के वृद्ध होने से वह अपने को अकेली अनुभव करती है । उसे अपना बचपन याद आ जाता है । पास के बच्चों की किलकारियां सुनकर उसमें मातृत्व की भावना जागृत होती है श्रौर धीरे-धीरे वह भी चांद से मुखड़े वाले शिशु की मां बन जाती है । चारों श्रोर हर्ष का वातावरण छा जाता है । बच्चे को पालने में झुलाते हुए मातृत्व का गौरव लिए वह लोरी गाती है ।

हांलो हुलो हांसी रो,
खाडयो पग थारी मासी रो,
लाल चूडो थारी भुवा रो,
लातो तो मारो राया रो,
दूध पीउ दस गाया रो । श्रादि ।

इस पर भी यदि बच्चे को नींद नहीं आती है तो वह गाती है ।

गुईजां रे लाला थारे पलणे पाटुलारी
डोर गावे गीत ने माचे मोर,
मोरिया पग रात राता,
लाला राई बासा माता ।

श्राजकल सिनेमा के गानों के प्रचार से राजस्थान के शहरी जीवन में लोक गीतों का महत्व उठता जा रहा है । नये गीतों की रचना तो प्रायः बन्द है । यद्यपि ग्रामीण जनता में लोकगीत श्रभी भी जीवन के पग-पग पर पाये जाते हैं । लोक संस्कृति की सम्पुष्टता के लिए लोकगीतों के संकलन की श्रोर शीघ्र प्रयत्न किए जाने चाहिए ।

लोक नृत्य

वीरता श्रौर शौर्य का प्रतीक राजस्थान ललित लोक कलाश्रों के लिए भी सर्वत्र विख्यात है । यहां के कलात्मक लोकनृत्यों में लय, ताल, गीत, सुर श्रादि का सुन्दर श्रौर सन्तुलित सामन्जस्य मिलता है । अपनी विशिष्ट वेषभूषा के कारण वे श्रौर भी अधिक आकर्षक लगते है ।

देश के अन्य राज्यों की भांति राजस्थान में भी लोकनृत्य देहाती क्षेत्रों में अधिक अभिनीत होते हैं। शुद्ध, आदिवासी तथा निम्न श्रेणी की कही जाने वाली जातियां ही लोकनृत्यों की धरोहर को सुरक्षित रखे हुए है। ये जातियां जीवन को अधिक स्वाभाविक और प्रकृति के अधिक निकट मानती हैं और यही कारण है कि लोक कलाएं स्वाभाविक रूप से उनकी जीवन शक्ति बनी हुई है।

लोक नृत्यों की अनेक सुन्दर परम्पराएं भील, मीणा, बालदिया, नट, सांसी, कंजर, वणजारा, गिरासिया, डोली, सरगर, भोपा, कामड़, राव, मिरासी नामक आदि जातियों ने जीवित रखी हैं। राजस्थानी लोकनृत्यों की अधिक किस्में इन्हीं जातियों के पास सुरक्षित है। ये जातियां मानव कला को अपना पेशा नहीं बनाकर उनमे जीवन के ललित पक्ष का अभिन्न अंग बनाये हुए है। वे कला को अपने जीवन निर्वाह का बन्धन नही बल्कि आनन्द के लिए अभिनीत करते हैं।

मीणों और भीलों के नृत्य

1. धूमर

यह नृत्य सभी विशेष समारोहों, विवाह के अवसरों और त्यौहारों पर किया जाता है। स्त्री और पुरुष एक चक्कर बना लेते हैं और गाते हुए नृत्य करते है गीत प्रायः घटनाओं पर रचे जाते हैं। यद्यपि इसकी लय बड़ी सरल होती है। किन्तु अंग संचालन से बड़े सुन्दर और प्रभावोत्पादक होते हैं।

2. गैर—

होली पर यह नृत्य होता है। इसमें केवल पुरुष ही भाग लेते है। एक बड़ा ढोल थालियों के साथ बजाया जाता है। भील गोलाकर डंडियों के साथ नाचते है। यह अपेक्षाकृत बड़ा उत्तेजक नृत्य है जो सुन्दर है।

3. नेजा—

यह बड़ा रुचिप्रद खेल नृत्य है और होली के तीसरे दिन अभिनीत किया है। एक बड़ा खम्भा भूमि में रोप दिया जाता है। उसके सिरे पर नारियल रोप दिया जाता है। उस खम्भे को स्त्रियां छोटी छड़ियाँ और बलदार कोरडे लेकर चारों ओर से घेर लेती है। पुरुष जो यहां से थोड़ी दूर पर खड़े हुए रहते है, उस खम्भे पर चढने का प्रयत्न करते है, वे नारियल लेकर भाजते है स्त्रियां उनको छड़ियों और कोरोडों से पीटती है।

बणजारों के नृत्य—

बणजारा एक घुमक्कड़ जाती है। इसका मुख्य व्यवसाय एक स्थान से दूसरे स्थान पर बोझ ले जाना है। साधारणतया बणजारे जोटो में नाचते हैं। नाचने में ये इतने मग्न हो जाते है कि इन्हें अपना ध्यान तक नही रहता। इनकी स्त्रियों की पोशाकें बड़ी कलात्मक और आकर्षक रहती है। नृत्य के साथ मुख्य

वाद्य ढोलकी रहती है किन्तु कभी-कभी उसकी अनुपस्थिति में थाली और कटोरियों से भी वे संगीत पैदा कर लेते हैं।

वागड़िया—

ये लोग राजस्थान के लगभग समस्त भागों में पाये जाते है। इनका मुख्य धन्धा ताड़ की पत्तियों की झाड़ू बनाना और पड़ौस के गावों में बेचना होता है। इनकी स्त्रियां भीख मांगते समय नाचती है। इनका मुख्य वाद्य चंग होता है। नृत्य संगीतमय और लयबद्ध होते हैं।

गिरासिया के नृत्य—

ये नृत्य सामुदायिक नृत्यों में बहुत प्रगति-शील है। प्रायः परिश्रम के बाद वे आनन्द और उल्लास के लिए नृत्य करते हैं। इनका सबसे अधिक मोहक नृत्य गर्वा है इसमें केवल स्त्रिया ही भाग लेती है।

वालर—

यह नृत्य विशेषकर गणगौर त्यौहार के दिनों में होता है। इसमे स्त्री और पुरुष जोड़ों में नृत्य करते हैं। एक रूपता और शारीरिक अंग सचन की सजीवता विशेषता होती है।

गेर—

यह बड़ा जिन्दादिल नृत्य होता है जो लगभग भीलों के गैर नृत्य के समान होता है। यह नृत्य भी डंडियों से नाचा जाता है और इसमे स्त्रिया भाग नही लेती।

कालबेलियों के नृत्य--

कालबेलिया (सपेरा) बड़ी रोचक आदिवासी जाति है। सांप का पकड़ना उनकी चतुराई पर निर्भर नही करता किन्तु उनके सगीत और नृत्य पर भी निर्भर करता है। उनकी स्त्रियां भी नृत्य और गायन द्वारा आजीविका कमाती है। उनके प्रिय नृत्य निम्न प्रकार से है—

इण्डोणी—

यह एक मिश्रित नृत्य होता है और गोलाकार रूप में किया जाता है। प्रमुख वाद्य पूंगी और खंजरी होते हैं। औरतों की पोशाकें बड़ी कलात्मक होती है। इनके बदन पर मणियो की सजावट रहती है।

शंकरिया—

यह एक अत्यन्त आकर्षक युगल नृत्य है। प्रेम कहानी पर आधारित इस नृत्य में अंग संचालन बहुत सुन्दर होता है।

पणिहारी—

यह नृत्य प्रसिद्ध गीत पणिहारी पर आधारित हैं। यह भी युगल नृत्य है।

मवाई नृत्य—

संगीतज्ञों और नृत्यकारों की यह एक आदिम जाती है। इसमें जाटों के

अतिरिक्त चमार, रेगर, मीणा, भील, कुम्हार आदि भी शामिल हैं भवाइयों के कई प्रकार के नाच है। जैसे बोरी, सूरदास, लोडी बड़ी, ढोकरी, बीकाजी, शकरिया ढोलामारू, बाबाजी, कमल का फूल, मटको का नाच, बोतलें, तलवार का नाच आदि ये सभी नृत्य सामाजिक जीवन की विविध प्रवृत्तियों तथा ऐतिहासिक और काल्पनिक घटनाओं पर आधारित होते हैं।

सासियों के नृत्य—

सासी भूतपूर्व जयाराम पेशा कौम है। इनका मुख्य धन्धा चोरी डाके लूट-मार आदि ही रहा है। अब ये लोग बसनें शुरू हो गये हैं। इनकी स्त्रिया नृत्य करती है। ये नृत्य अव्यवस्थित, कामुकतापूर्ण और व्यक्तिवादी रहते हैं। इनका अंग संचालन सुन्दर रहता है किन्तु संगीत गवारु और भद्दा रहता है। इनके साथ ढोलक और थाली बजाते है।

कजर लोग भी सासियो से मिलते-जुलते होते हैं। ये लोग जाति के मुसलमान होते है। इनकी औरतें अपने आपको अनेक आभूषणो और मणियो से अलंकृत किये रहती है। गाने और नृत्य करने में वे बड़ी चतुर होती है। मर्द चंग बजाते है और स्त्रिया भिन्न-भिन्न प्रकार के नृत्य करती है। इनमे से एक लाठियों पर नाच होता है, यह नृत्य बहुत सुन्दर और ताल तथा लय की दृष्टि से काफी ऊंचे स्तर का होता है।

झूमर और घूमर—

अब तक हमने अधिकांश उन लोग नृत्यों का वर्णन किया जो पिछड़ी और आदिम जातियो में प्रचलित है। इनके विपरीत झूमर और घूमर राजस्थान के सबसे अधिक लोकप्रिय नृत्यों मे से हैं। सभी श्रेणियो के परिवारों मे यह नाचा जाता है। यह विशुद्ध औरतों का ही नृत्य है। यह गुजरात के गर्बा नृत्य से मिलता जुलता है। स्त्रियो का यह एक सामूहिक नृत्य है जिसमे अनेक स्त्रिया गोलाकार रूप मे घूमती है। घूमर छोटे-छोटे डण्डों से की जाती है। इनकी धुन मादक और नर्तकियो का अंग संचालन अत्यन्त कम्पनीय होता है।

आधुनिक युग में नृत्य—

युग के प्रभाव से नृत्य अब लोप होते जा रहे है। स्वस्थ एव स्वाभाविक इन मनोरंजन व कला साधनों का स्थान सिनेमा ने ले लिया है। सामूहिक जीवनी की इतनी सुन्दर और सस्ती परम्परा का बचाना नितांत आवश्यक है।

कत्थक राजस्थान के जयपुर घराने का प्रसिद्ध नृत्य हैं।

(क) उत्सव एवं त्यौहार

(1) हिन्दुओं के सामान्य त्यौहार एवं उत्सव—

भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं के अन्तर्गत जो त्यौहार अथवा लोकोत्सव सार्वदेशिक है, ये तो समूचे राजस्थान में उल्लास एवं उमंग के साथ मनाये जाते हैं. इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे त्यौहार भी हैं, जो इस प्रदेश की लोक संस्कृति के परिचायक हैं।

इन त्यौहारों का जन्म यहां की प्राकृतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से हुआ है। रेगिस्तान होने के कारण यहा वर्षा ऋतु का सदैव बड़ा महत्व रहा है। वर्षा के आते ही यहां के निवासी आनन्द और मौज मनाने की मन स्थिति में आ जाते है। यही कारण है कि यहां वर्षा ऋतु में अनेक उत्सव और त्यौहारों का आयोजन होता है।

इन सभी लोकोत्सवों का इतिवृत संक्षेप में यहां प्रस्तुत है—

तीज

"तीज त्यौहारां बावडी ले डूबी गणगौर" अर्थात तीज वापिस त्यौहारों को लेकर आई और गणगौर उनको लेकर डूब गई। राजस्थान में गर्मियों के दिनों में कोई त्यौहार नहीं मनाया जाता। दो-तीन महिनों तक मनोरंजन की दृष्टि से सामाजिक जीवन में नीरसता आ जाती है। तीज त्यौहार आने के साथ ही त्यौहारो की शुरुआत होती हैं।

तीज के त्यौहार के पहले से ही चौमासा के गीत प्रारम्भ हो जाते हैं। ये चौमासा के गीत, मारवाड़, बीकानेर, जैसलमेर और शेखावाटी के शुष्क प्रदेशों में विशेष गाये जते हैं। ये इलाके वर्षा का मूल्य ठीक आंक सकते हैं। कुछ प्रदेशो में तो वर्षा से पहले से ही गीत शुरू हो जाते है और कुछ इलाकों में वर्षा शुरू होते ही गीत प्रारम्भ होते है। अपने अपने मोहल्लों में स्त्रियों के झुण्ड गीत गाना प्रारम्भ कर देते है गांव गांव और कस्बों मे जब ये गीत गाये जाते हैं तब लोक जीवन में उल्लास और उत्साह आ जाते है। और सरसता उमड़ पड़ती है। कालिदास के यक्ष को जब आषाढ़ मे बादल दिखलाई दे गया था तो उसने मेघ के द्वारा संदेश भेजा बादल देखते ही उसकी विरह व्यथा जाग उठी। बरसात के लिये तरसने वाले प्रदेश तो वर्षा का कैसे उपकार नही मानें।

किसी किसी इलाकें में तीज के त्यौहार की समाप्ति पर बरसात के गीत समाप्त कर दिये जाते है और किसी किसी में समस्त चौमासे (आषाढ, श्रावण, भादवा, आसोज) में गाये जाते हैं। तीज का त्यौहार मुख्यतः बालिकाओ और नवविवाहितों का त्यौहार है। इस त्यौहार के अवसर पर स्त्री समुदाय नये वस्त्र धारण करता है और घरों में पकवान बनाता है। एक दिन पूर्व बालिकाओं का सिंझारा (श्रृंगार) किया जाता है। "आज सिंझारा तड़के तीज, छोरियां ने लेगो पीर" उक्ति भी बालीकाएं कहती है। हाथों पैरो पर मेंहदी मांडी जाती है। विवाहिता बालिकाओं के ससुराल में सिंझारा वस्त्र आदि भेंट स्वरुप उनके माता पिता भेजते है। तीज के त्यौहार पर लड़की अपने पिता के घर जाती है।

इस त्योहार के दिन किसी सरोवर के पास मेला भरता है। इसमें झूला डाला जाता है। सभी लोग उस पर झूलते है। गणगौर की प्रतिमा भी कहीं कही निकाली जाती है। तीज को कहीं कहीं हरियाली तीज भी कहते हैं।

सिरोही जिले मे तीज की पूजा के अन्तिम दिन विवाहिता बहनो के भाई अपनी बहिनो को भेंट और पोशाक देते हैं। यदि सगा भाई न हो तो कुटुम्ब कबीले का भाई यह कार्य सम्पन्न करता है। इसके पीछे एक दर्दपूर्ण कथा है कि अन्तिम पूजा के दिन पुराने जमाने मे किसी बहिन को भाई उपहार देने नही आया। उसने उसकी बड़ी प्रतिक्षा की। अन्त में वह इस मानसिक वेदना के कारण कि उसके भाई के हृदय मे अपनी बहन के प्रति कोई प्यार नही हैं, जल मे गिर पड़ी उसी समय उसका भाई पहुंचा भी किन्तु वह तो तब तक जल मग्न हो गई थी।

श्रावण शुक्ला तीज को छोटी तीज मनाई जाती है और बडी तीज भादवे महने मे। छोटी तीज ही अधिक प्रसिद्ध है और इस पर प्राय: सभी मेले लगते है। इन मेलों मे ऊंटों और घोड़ो की दौड़ होती है जिसका दृश्य दर्शनीय है।

होली

होली का त्योहार भी आदि त्योहार है। इस के पीछे ऋतु परिवर्तन और रवी फसल की कटाई है। जाडे को कठिन और कष्ट दायक ऋतु के बाद वसन्त का आगमन होता हैं। और सर्वत्र सुहावना वातावरण हो जाता हैं।

होली के त्योहार से कुछ दिन पूर्व गोवर के बडकुल्ले बनाये जाते है। उनकी माला तैयार की जाती है। गोवर की ही होली की प्रतिमा बनाई जाती है। एक माला को थोड़ा जलाकर (होली की अग्नि में) निकाल भी लेते है और वह घर में टंगी रहती है।

होलीका दहन के दिन होली जलने से कुछ समय पूर्व उस सामग्री का पूजन होता है। उसमे होली खाडा भी रहता है। ढाल और तलवार भी लकड़ी के रहते हैं। ये उपकरण शौर्य और युद्ध की स्मृति करवाते है। गोवर आर्य संस्कृति की याद दिलाता है जिसमें गो और खेती की प्रधानता है।

फाल्गुन शुक्ला पुर्णिमा को होली का त्योहार मनाया जाता है। राजस्थान के कुछ भागों मे दुलण्डी के दिन अभिवादन करने और मन्दिरों मे जाने की प्रथा है। इस दिन सभी लोग नृत्य गायन द्वारा अपना और दूसरो का मनोरंजन करते है।

दीपावली

राजस्थान में दीपावली का त्योहार बड़े उत्साह से मनाया जाता है। 10-15 रोज पहले ही घरों और दुकानो की मरम्मत और सफाई की जाती है। काम में

माने वाले औजार कलम: दवात आदि की सफाई होती है। काली रोशनाई तैयार की जाती है। बही खाते नये डाले जाते हैं और पिछला हिसाब चुकाये जाने का तकाजा किया जाता है।

दीपावली से दो दिन पूर्व एक दीपक जलाया जाता है इसे जम दिया (जम दीप) कहते है। उसमें एक कोडी भी डालते है। इसके पास बैठे रहना पडता है घर के बाहर धूल की ढेरी बनाकर यह जलाया जाता है और हवा से उसे बचाने की पूर्ण चेष्टा की जाती है। दूसरे दिन छोटी दीवाली मनाई जाती है। इसमें 11 दीपक जलाये जाते है। कार्तिक कृष्णा अमावस्या का अधंकार दूर करने के लिए बड़ी दीवाली लगभग समस्त हिन्दुस्तान मे मनाई जाती है। छोटी दीवाली को तेल की चीजे बनाई जाती है और बड़ी दीवाली को तेल और घी दोनों की। राजस्थानी पैदावार कैरिया, गुंवार की फली आदि विशेष रुप से तल कर खाई जाती है और शकुन माना जाता है। खरीफ की फसल लगभग कट जाती है। राजस्थान के अधिकाश भागों में केवल यही एक फसल होती है। अतएव लोगों को उत्साह भी रहता है। बड़ी दीवाली को कही 41 कहीं 51 और कही 101 दीपक जलाये जाते है। दीपावली पूजन रात्रि को लगभग 8-9 बजे होती है। पूजन के बाद भोजन होता है घर का बड़ा-बूढा श्रद्धा और लगन से पूजा करता है नंगे सिर पूजन नहीं होता। सभी बारी बारी से लक्ष्मीजी की प्रतिमा अथवा चित्र को नमस्कार करते है। लक्ष्मीजी की छपी हुई या चित्रित तस्वीरें बिकती है। रुपये, मोहर आदि उनके सामने रख जाते है।

एक दीपक रात भर लक्ष्मीजी के सामने जलता रहता है। घरों पर दीपक जला कर रख दिये जाते है। पूजन के बाद बाजार में लोग रामराम (नमस्कार) अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों से करते है।

गोवर्धन पूजन अथवा अन्नकूट

दीपावली का दूसरा दिन अर्थात कार्तिक शुक्ला प्रतिप्रदा अन्नकूट अथवा गोवर्धन पूजन का दिन होता है। मन्दिर मे अन्नकूट (भोज) तैयार होता है। कुछ घरों में वह मन्दिरों से भेजा जाता है। और बदले में उन्हें रुपया पचास या पच्चीस जैसे यथा शक्ति भेंट स्वरूप दे देते है। इसी दिन घर के आगे गोबर डाला जाता है। उसकी पूजा होती है। दूसरे शब्दों में यह गाय की महत्ता बतलाता है। गोवर्धन का मतलब ही है गोवंश की वृद्धि। केन्द्रीय सरकार पिछले पांच वर्ष से इसी दिन से गो समृद्धि सप्ताह मना रही है, जो गोपाष्टमी तक चलता है। इसी गोवर्धन के दिन राजस्थान भर में छोटे, बड़ो के चरणों में नये वस्त्र पहन कर पड़ते है। इस अवसर पर जाति पांति क्रम बरती जाती है। यद्यपि अपनी जाति वाले अत्यन्त निकट वालों के ही घर जाते है फिर भी आजकल जाति पाति का भेद कुछ कम होता जा रहा है। प्रीति सम्मेलन भी इसी दिन कही कही मनाये जाते हैं। इस दिन विरोध वैर

भुला दिये जाते हैं। और सभी जैरामजी की अथवा नमस्कार, नमस्ते करते है। जैसा प्रेम का वातावरण इस त्यौहार पर देखा जाता है वैसा और किसी त्यौहार पर नही। चरण स्पर्श इस त्यौहार पर ही अधिक होता है। होली पर भी सर्वत्र नही होता। अतएव गौ और गोबर तथा समृद्धि तीनों का नाता यही त्यौहार है। स्त्रिया भी अपने सम्बन्धियों के घरों में मिलने जुलने के लिए जाती हैं।

दीपावली का त्यौहार प्रेम और उल्लास का त्यौहार हैं। गाने बजाने होते है, रोशनी होती है गोवर्धन पूजन के दिन कहीं कही बछड़े का पूजन कर स्त्रियां उससे हल जुतवाने का शकुन करती है और गीत गाती है, बैलो के सींग रंगें जाते हैं और रगों के छापे उनके बदन पर दिये जाते है, भरतपुर, अलवर, उदयपुर की ओर यह प्रथा विशेष है।

दीपावली की रातों को हीड देने जाने की प्रथा राजस्थान में कई स्थानो पर प्रचलित है। वे लोग गो पूजन करते है। गायो के गले में घंटिया बाधते है और हीड का एक विशेष गीत गाते है।

मेवाड़ में दीवाली से 15 दिन पहले ही लड़के और लड़कियों की टोलियां प्रायः सबके घर गाती हुई निकल जाती है। स्त्रियों के द्वारा भी दीवाली के गीत गाये जाते है। लड़को के द्वारा लोवडी या हरणी के गीत गाये जाते है और लड़कियां द्वारा घडल्यां।

शीतलाष्टमी

होली पूजन के आठवें दिन यह त्यौहार पड़ता है। शीतला का तात्पर्य शीतल करने वाली से है। यह माता चेचक, वोदरी आदि देवी के रूप मे पूजी जाती हैं। प्रत्येक कस्बे अथवा गाव में इसके मन्दिर बने रहते है।

इसी दिन दिन घुडले का त्यौहार मनाया जाता है। स्त्रियां इकट्ठी होकर कुम्हार के घर जाती है और छेदों से युक्त एक घड़ें में दीया रख कर अपने घर गीत गाती हुई वापिस आती है। यह घडा बाद में तालाब मे बहा दिया जाता है। कहा जाता है कि मारवाड़ के पीपाड नामक स्थान पर कुछ स्थान पर कुछ स्त्रिया एक बार तालाब पर गौरी पूजार्थ गई थी। अजमेर का सूबेदार मल्लूखा उन्हें ले गया। जोधपुर नरेश राव सातलकी को जब यह ज्ञात हुआ तब उन्होंने उसका पीछा किया। बड़ा भंयकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में मल्लूखां के सेनापति घुडलेखां का सिर तीरों से छेद डाला गया और राजा जी अपने राज्य की स्त्रियों को बचाकर ले आये। कहा जाता हैं कि उस सिर को लेकर स्त्रियां गाव में घूमी थीं।

गणगौर

गणगौर का त्यौहार राजस्थानी स्त्रियां बड़ी निष्ठा और श्रद्धा से मनाती हैं। राजस्थान में कुमारियों का ऐसा विश्वास है कि इस व्रत के करने पर उनको श्रेष्ठ

पति मिलेगा। सधवा स्त्रियों का यह विश्वास रहता है कि उनका पति चिरायु होगा। लोक गीतों में तो यहां तक वर्णन मिलता है कि यदि तू रुठी हुई इस त्यौहार को मनायेगी तो तुझे रुठा पति मिलेगा। इसलिए बड़ी उमंग और उल्लास से यह त्यौहार उनके द्वारा मनाया जाता है।

इस त्यौहार से लगे हुए गीतों की संख्या राजस्थानी त्यौहारों में सबसे अधिक है। लगभग 35 की संख्या के गीत इसी त्यौहार से सम्बन्धित मिलते हैं।

होलिका दहन के बाद गणगौर का त्यौहार आरम्भ हो जाता है। होली की राख के पिण्ड बांधे जाते है। सात दिनों तक उनकी पूजा होती है। आठवें दिन शीतला पूजने के बाद टीलों से बालू मिट्टी तथा कुम्हार के यहा से चिकनी मिट्टी लाकर गौर की प्रतिमा बनाई जाती है। ईसरदास, कानीराम, रोवा, गौर और मालण की भी प्रतिमाएं निर्मित की जाती है। जो वो दिये जाते है इन्हें झंवार कहते है। गौर की पूजा 18 दिन तक की जाती है। गौर का त्यौहार चैत्र बुदी 1 से शुरु होकर चैत्र शुक्ला तृतिया को समाप्त होता है। चैत्र शुल्ला 1 से 3 तक यह मेला समस्त राजस्थान मे लगता है।

गणगौर के अवसर पर स्त्रियां घूमर नत्य करती है उदयपुर, बून्दी में ये घूमर बहुत ही कलापूर्ण होती है।

सिरोही मे गोरी की प्रतिमाएं शहर की गलियों में से निकाली जाती है। स्त्रिया गीत गाती है और गरबा नृत्य करती है।

पौराणिक आधार पर यहां ऐसा विश्वास है कि पार्वती (शिव की स्त्री) के अपने पिता के घर वापस लौटने के उपलक्ष्य में उसका स्वागत और मनोरंजन अपनी सखियों द्वारा हुआ था, तब से गणगौर का त्यौहार मनाया जाता है। गणगौर की सवारी जयपुर और बीकानेर में धूमधाम से निकलती है।

अक्षय-तृतीया

राजस्थान के जीवन में खेती का महत्व तो है ही। उत्तरी राजस्थान के भागो में तो एक फसल होती है और वह भी बीकानेर, जैसलमेर सरीखे इलाकों में बहुत ही कम। अतएव यहा खेती लोगों के जीवन का प्राण है, अक्षय तृतीमा के दिन शाम को लोग हवा का रुख देखकर शकुन लेते हैं,।

बाजरा, गेहूँ, चना, तिल, जो आदि सात अन्नो की पूजा कर शीघ्र ही वर्षा होने की कामना की जाती है। कही-कही घरों के द्वारा पर अनाज की बालों आदि के चित्र बनाये जाते है। स्त्रिया मंगलाचार के गीत गाती है और मनो-विनोद की दृष्टि से स्वाग भी छोटे बच्चों के रचाये जाते है। लड़कियां दुल्हा दुल्हन का स्वांग भरती है। यह त्यौहार बैसाख मास की शुक्ला तीज को मनाया जाता है।

जिला नागौर में इस दिन लोग अपने मित्रो और सम्बन्धियों को निमंत्रित करते है और भोज होता है। अपने अतिथियों की अफीम, गुड और अन्य भेटों से मनुहार करते हैं।

सिरोही में इस दिन शकुन लेते है। लोगों का ऐसा विश्वास है कि इस दिन शकुन अच्छे हो जाते है, तो सारा वर्ष आनन्द से बीतता है और इस दिन अपशकुन होने पर कष्ट ही पल्ले पड़ते है। यहा एक रीति यह है कि लोग सुबह ही जंगल में शिकार के लिये जाते है और जब तक शिकार नही हो जाता तब तक लौटते नही।

गणेश चतुर्थी

गणेश चतुर्थी का महत्व इस दृष्टि से सबसे अधिक है कि यह बालको अथवा बच्चों का विशेष त्यौहार हैं।

गणेशजी का यह त्यौहार पाठशालाओं के द्वारा मुख्यतः मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी से दो दिन पूर्व बच्चों का सिंझारा किया जाता है। ये नये वस्त्र धारण करते हैं और उनके लिए घर पर पक्का भोजन भी बनाया जाता है। इस दिन बच्चों का विशेष सम्मान किया जाता है।

लगभग एक मास पूर्व से ही पाठशालाओं में चहल पहल हो जाती है। बच्चे चेहरे बनाते है और प्रत्येक सहपाठी के घर जाते है। ब्राह्मण घरों मे प्रायः गुरूजी नारियल ही ग्रहण करते है। शेष घरों में आमतौर से एक रुपया व नारियल लिया जाता है। शिष्य और गुरू एक दूसरे के तिलक करते है साथ मे बच्चे मनोविनोद के गीत गाते है। सरस्वती सम्बन्धी गीत भी गाये जाते हैं और गणेश जी सम्बन्धी भी। ये चेहरे लयबद्ध उछलते कूदते चलते हैं। इनमें बड़ा उल्लास रहता है। साथ में गणेशजी, सरस्वतीजी की मूर्ति भी रहती हैं।

यह त्यौहार भादवा सुदी चोथ को मनाया जाता है। जैनियों के लिये भी यह पवित्र दिन है। कुछ जैन सम्प्रदाय के लोग इसे पंचमी को भी मनाते है।

रामनवमी

रामनवमी श्री रामचन्द्र जी का जन्म दिवस है। इस दिन मन्दिरों मे भजन होते है और रामायण की कथा पढ़ी जाती है। लोग रोपुं कथा सुनकर घर जाते है। कही कही रामधुन भी गायी जाती है। इस दिन व्यापारी वर्ग कहीं न कहीं अपने बहीखातों को भी बदलते है। इस प्रकार व्यापारियों के लिये भी यह विशेष दिन है।

तुलसी पूजन

कन्यायें एक महीने तक इसकी पूजा करती है । तुलसी पूजन मन्दिर में होता है बालिकाएं 15 दिन घृत का दीपक जलाकर अपने घर से ले जाती है और 15 दिन तेल का । यह कार्तिक मास में सम्पन्न होता है । तुलसी श्री कृष्ण भगवान की पत्नी मानी जाती है । यह कार्य शाम के समय किया जाता है ।

दशहरा

राजस्थान में दशहरे के त्यौहार को बड़े उत्साह से मनाते है । विशेष रूप से भरतपुर मे दशहरे का त्यौहार बड़ी शान शौकत मनाया जाता है । इस अवसर पर सारे राजस्थान में शमीवृक्ष (खेजड़ी की) पूजा की जाती है और लीलटास पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है । इस दिन राजपूत लोग शस्त्रों की पूजा करते है । कई जगह पर मेले लगते है और हाथी घोड़ों के साथ सवारिया निकालती है ।

रक्षाबन्धन

दशहरे की भांति रक्षाबन्धन का त्यौहार भी राजस्थान में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है । इसी दिन बहिने अपने भाइयों के हाथ पर राखी बांधती है । राखी बांधने का अर्थ यह है कि भाई अपनी बहन की रक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेता है । यह पर्व मनुष्य को धर्म एव जाति के बन्धन से ऊपर उठकर अपने कर्त्तव्य पालन करने की प्रेरणा देता है राजस्थान की रानी कर्णवती ने अपने राज्य पर आक्रमण होने पर हुमायूं को राखी भेजकर रक्षा करने का अनुरोध किया था और हुमायूं स्वयं विपत्ती ग्रस्त होते हुए भी उसकी रक्षा के निए दौड़ पड़ा था ।

इस दिन गावों मे ब्राह्मण लोग अपने यजमानों के राखियां बांधते हैं और इस प्रकार उन्हें अपने कर्त्तय बोध का ध्यान दिलाते है ।

उक्त त्यौहारों के अतिरिक्त नाग पन्चमी, करवा चौथ आदि और भी अनेक त्यौहार है, जो राजस्थान के निवासियो द्वारा मनाये जाते हैं ।

जन्माष्टमी—का त्यौहार भगवान कृष्ण की जन्म तिथि के रूप में मनाया जाता है । इस दिन राज्य के प्रमुख मन्दिरों मे कृष्ण लीला की झांकियां दिखाई जाती है और शोभा यात्रा निकाली जाती है । भादो मास की अष्टमी को आने वाले दिन कृष्ण भक्त व्रत रखते हैं और आधी रात को कृष्ण जन्म के उपरान्त ही भोजन ग्रहण करते है ।

(ii) अन्य वर्गों के त्यौहार एवं उत्सव

उक्त सब त्यौहार हिन्दू लोगों के ही हैं पर होली-दीपावली के दिन सभी धर्मों के लोग अपना त्यौहार मानकर ही इसमे शामिल होते हैं इन त्यौहारो पर मुस्लिम लोग भी अपने भाइयों के घर जाते है और गले मिल कर मुबारक

वाद देते हैं। हिन्दू धर्म के अलावा मुस्लिम भी अपने त्यौहार उत्साह से मनाते है। ईदुलजुहा और ईदुल फित्र इनके प्रमुख त्यौहार है जिन्हें वे बड़े जोश और उत्साह से मनाते है और ईदगाह या मस्जिद में जाकर नमाज अदा करते हैं । नमाज के बाद ये सभी मित्रों व रिश्तेदारो को ईद मुबारकबाद देते हैं। मीठी ईद पर सिवईयां खुरमानी, खीर बनाई जाती है वही बकरा ईद पर बकरे का गोश्त पकाया जाता है। हिन्दू भाई भी इस त्यौहार पर अपने मुसलमान भाइयों को गले मिल कर मुबारक बाद देते हैं। मुसलमान रमजान के महिने में व्रत रखते हैं और शाम को अफतार के समय उसे खोलते हैं।

मोहर्रम—भी मुसलमान बड़े जोश से मनाते हैं। मोहर्रम आने के बहुत पहले से ही ताजिया बनाने का काम शुरु हो जाता है। मोहर्रम के दिन ताजियों का जुलुस निकाल कर उन्हे करबला में ले जाकर दफना दिया जाता है।

ईसाई लोग भी बड़ा दिन क्रिसमस डे का त्यौहार पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं। इस दिन वे गिरजाघर में जाकर प्रार्थना करते हैं और नये वस्त्र धारण करते हैं एवं खूब नाचते-गाते हैं।

सिक्ख धर्म के लोग गुरु नानक जयन्ती और गुरु गोविन्दसिंह की जयन्ती उल्लास से मनाते हैं। अप्रेल में बैशाखी का त्यौहार भी बड़े उत्साह से मनाते हैं। गुरू नानक व गुरू गोविन्द जयन्ती पर वे शोभा यात्रा निकालते हैं, गुरू द्वारे में जाकर ग्रन्थ साहिब का पाठ करते हैं। खुशी के अवसरों पर ये भंगड़ा नृत्य भी करते हैं।

धार्मिक त्यौहारों के अलावा देश में दो राष्ट्रीय त्यौहार 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस और 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस के रूप में भी मनाये जाते हैं। ये दोनों राष्ट्रीय त्यौहार देश प्रेम की भावना जगाते हैं। दोनों अवसरों पर प्रभात फेरी निकाली जाती है, परेड़ होती है झांकिया निकाली जाती है और तिरंगा झण्डा फहराया जाता है। लोग अपने घरों व सरकारी इमारतों पर रोशनी करते है।

(ग) प्रमुख मेले

राजस्थान में छोटे-छोटे मेले बड़ी संख्या में लगते हैं पर कई मेलों का अपना महत्व है,जिनमे लाखों लोग भाग लेने आते है।

कैला देवी मेला—यह मेला करौली से 18 मील दूर कैला देवी के मन्दिर पर भरता है। चैत्र माह में कई दिन तक भरने वाले इस मेले मे लाखो लोग देवी मा के दर्शन के लिए आते हैं। उस अवसर पर पशु मेला भी भरता है।

गणेश मेला—यह सवाई माधोपुर के पास रणथम्भोर के ऐतिहासिक किले में गणेशजी के मन्दिर पर मेला भरता है जिसमें भाग लेने लाखों लोग आते हैं।

महावीर जी का मेला—सवाई माधोपुर जिले में ही हिण्डौन के पास महावीर जी में भरता है जहां जैन धर्म के लोगों का प्रमुख तीर्थ है इस मेले में जैन धर्म के अलावा गूजर मीणा आदि जातियों के लोग भी भाग लेने आते हैं।

पुष्कर मेला—कार्तिक पूर्णमासी को भरता है जहां बहुत बड़ी संख्या में देशी विदेशी पर्यटक आते हैं। हिन्दू लोग यहां आकर पुष्कर झील में स्नान करते हैं। और ब्रह्माजी के मन्दिर में जाकर दर्शन करते हैं। इस अवसर पर पशु मेला भी होता है और श्रेष्ठ नस्ल के पशुओं को पुरस्कृत किया जाता है।

रामदेव जी का मेला—भाद्रपद मास में जैसलमेर जिले के पोकरण में लगता है यहां आने वाले यात्री संत रामदेव की पूजा करते हैं यहां पशु मेला भी लगता है।

राणीसती का मेला—झुंझुनू में राणी सती के मन्दिर पर ही लगता है जिसमें शेखावाटी क्षेत्र के हजारों लोग दर्शन करने आते है।

कपिल मुनि का मेला—कार्तिक पूर्णिमा को बीकानेर जिले के कोलायत में कपिल मुनि की याद में लगता है यहा लाखों लोग आकर कोलायत झील में स्नान करते हैं।

ख्वाजा का उर्स—अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर भरता है जहां हजारों लोग बाहर से जियारत करने आते हैं। बाहरी देशों से भी जायरीन यहां चादर चढ़ाने आते हैं।

(घ) राजस्थान के प्रमुख मन्दिर

ब्रह्माजी का मन्दिर—पुष्कर (अजमेर)
श्री नाथजी का मन्दिर—नाथद्वारा (उदयपुर)
द्वारकाधीश मन्दिर—काकरोली (उदयपुर)
केसरियाजी जैन मन्दिर—ऋषभदेव (उदयपुर)
एकलिंगजी मन्दिर—कैलाशपुरी (उदयपुर)
जगदीश मन्दिर—उदयपुर (उदयपुर)
शिलादेवी का मन्दिर—आमेर (जयपुर)
सूर्य मन्दिर—जयपुर
गोविन्द देवजी का मन्दिर—जयपुर
देलवाड़ा जैन मन्दिर—माऊन्ट आबू सिरोही
काली माता व मीराबाई का मन्दिर—चित्तौडगढ़
मदन मोहन जी का मन्दिर—करोली (सवाई माधोपुर)
महावीरजी जैन मन्दिर—श्री महावीरजी (सवाई माधोपुर)
सूर्य मन्दिर, जैन मन्दिर, सचिव माता मन्दिर—ओसियां (जोधपुर)

ऋषभदेव, सम्भवनाथ व अष्टपाद मन्दिर—जैसलमेर
करणी माता का मन्दिर—देशनोक (बीकानेर)
लक्ष्मीनारायण मन्दिर—बीकानेर
राणीसती मन्दिर—झुंझुनूं
नवग्रह मन्दिर—किशनगढ़ (अजमेर)
गणेश मन्दिर—रणथम्भौर(सवाई माधोपुर)
कैलादेवी मन्दिर—कैलादेवी (सवाई माधोपुर)
बालाजी मन्दिर—मेंहन्दीपुर (जयपुर)

(ड.) अन्धविश्वास और जादू-टोना

शिक्षा और विज्ञान के प्रसार के साथ-साथ राजस्थान में भी अन्धविश्वासों पर से शिक्षित लोगों का विश्वास उठ रहा है लेकिन पिछले कुछ वर्षों में राजनीतिज्ञ लोग फिर से ज्योतिषियों और तांत्रिकों पर विश्वास करने लगे हैं। बड़े-बड़े नेता यहां तक कि देश की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी किसी शुभ कार्य करने से पहले धार्मिक स्थानों की यात्रा करती है तथा ज्योतिषियों और तांत्रिकों की सलाह लेती है।

गांवों में अभी भी अन्धविश्वास बरकरार है। छींक आने पर कहीं भी यात्रा प्रारम्भ नहीं करना, बिल्ली के रास्ता काट जाने पर आगे नहीं जाना बुधवार को यात्रा प्रारम्भ नहीं करना, मुहूर्त देखकर शादी ब्याह व अन्य आयोजन करना ये सब अन्धविश्वास आज भी प्रचलित हैं। वैसे शहरी लोग भी काफी हद तक इनसे अछूते नहीं है पर गांवों में यह पूरी तरह माना जाता है। अन्धविश्वासों में आकर ही विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा की जाती है।

अन्धविश्वास के साथ ही जादू-टोना में भी अभी तक बहुत बड़ी संख्या में विशेषकर भील लोग विश्वास करते हैं। ग्रामीणों का अभी भी यह मानना है कि झाड़ा-फूंका करने में किसी भी बीमारी का इलाज किया जा सकता है वहीं जादू-टोना करके अपनी रक्षा के साथ ही आई विपत्ती को दूर किया जा सकता है। जादू टोना करने के लिये लोग शिवजी, भैरुजी, हनुमान, भवानी कंकाली मा तेजाजी, गोगाजी, रामदेवजी आदि की पूजा करते हैं। इन देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिये बलि भी चढ़ाई जाती है पर अब राजस्थान मे इस पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। भूत, प्रेत चुडेल, आदि भगाने में भोपा लोग सिद्धहस्त माने जाते हैं नवरात्रा में व्रत करके भी लोग सिद्धि प्राप्त करते हैं।

राजस्थान में महिलाओं की दशा प्रारम्भ से ही शोचनीय रही है। रूढिवादी विचारो के कारण यहां आज भी स्त्रियों की दशा मे अपेक्षित सुधार नहीं हुआ हैं। एक समय ऐसा भी था जबकि लड़की होना शुभ नहीं समझा जाता था आज प्रगति

शील विचारों के हामी लोगों के भी घर में कन्या पैदा होती है तो ऐसा लगता है जैसे कोई डिग्री आ गई हो भाटी राजपूतों में तो कुछ अर्से पहले तक कन्या को पैदा होते ही मार दिया जाता था। अब कानून बन जाने से इस पर रोक लगी है।

बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह निषेद होने की परम्पराएं समाज में इतनी गहरी पैंठ गई थी की उनके शिकंजे से महिलाओं का निकलना असम्भव था। सती प्रथा पर तो आधुनिक युग में प्रभावी नियन्त्रण लग गया है पर अब भी यदा कदा ऐसे मामले सामने आते ही रहते हैं। विधवा विवाह आज भी बहुत कम संख्या में होते हैं पर इस ओर यह कहा जा सकता है कि उच्च वर्गों में सामाजिक चेतना जागृत हो रही है। नीची जातियों में तो स्त्रियां पति के मरने के बाद किसी के भी नाते बैठ जाती है। कुछ जातियों में स्त्रियां पति के मरने पर देवर के साथ शादी कर लेती है।

बाल विवाह की प्रथा शहरों में कुछ भले ही कम हो गई हो पर गावों में आज भी यह बदस्तूर जारी है हिन्दू ही नहीं मुसलमानों में भी बाल विवाह काफी प्रचलित है आज भी गावों मे हजारों की संख्या में बाल विवाह होते हैं। आखातीज का सावा शादियों के लिए उत्तम माना जाता है। इस दिन हजारों शादिया होती हैं अकेले जयपुर शहर में इस दिन करीब दस हजार शादिया तक हो जाती है।

पर्दा प्रथा शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ कम हो रही है लेकिन अभी भी हिन्दुओं के उच्च वर्गों में यह बहुत हद तक बनी हुई है। मुसलमानों मे भी शिक्षा का प्रसार कम होने के कारण औरतें बुर्का पहिन कर ही घर से बाहर निकलती है।

(च) राजस्थान वेश-भूषा

राजस्थान में कई जातियों और धर्म के लोग रहते है। उनके खान-पान, रहन-सहन और पहनावे में विविधता होती है और अपने क्षेत्र का प्रभाव भी अलग से परिलक्षित होता है पर फिर भी उनमें सामंजस्य नजर आता है। राजपूत लोग सिर पर साफा बाँधते हैं तो दूसरे पगड़ी या टोपी पहिनते हैं। जोधपुरी साफा अलग तरह से बांधा जाता है तो मेवाड़ की पगड़ी बांधने का ढंग दूसरा ही होता है।

राजस्थान में पुरुषों की परम्परागत पोशाक धोती, अंगरखी और साफा या पगड़ी होती है। आज भी गांवों में अधिकाश लोग यही पोशाक पहनते है। यद्यपि धोती पहनने की भी अलग-अलग विधियां प्रचलित है पर अब शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ युवा पीढ़ी कमीज, नैकर, पेन्ट और पाजामा भी पहनने लगी हैं। पहले शहरों में परम्परागत पोशाक अचकन या शेरवानी और धोती या चूड़ीदार पजामा होती थी अब उसमें भी काफी परिवर्तन आ गया। शहरों मे अब आधुनिक फैशन सूटिंग, शर्टिंग, कोट, पेन्ट, कमीज, जर्सी, टी-शर्ट आदि पहने जाने लगे हैं। शहरों

व कस्बों में सिर पर पहनने का रिवाज खतम सा हो गया है। फिर भी महाजन आदि टोपी धारण कर लेते हैं।

शहरों व कस्बों में महिलाएं धोती, ब्लाऊज, पेटीकोट आदि आम तौर पर पहिनती हैं पर स्कूल जाने वाली लड़कियाँ गरारा, पाजामा, चूड़ीदार पाजामा, बैल बॉटम, स्कर्ट, कुर्ता, कमीज, समीज, मिडी, मैक्सी भी धड़ल्ले से पहनती हैं। गांवों के स्कूलों में अभी कुर्ता, पाजामा व दुपट्टा ही चलता है।

गांवों की औरतों का पहनावा कमोबेस एक सा ही होता है। लूगड़ी, कब्जा कांचली और लहंगा यहां की मुख्य पोशाक है। गांवों की औरतें रंगीन व कलात्मक कपड़े पहनती है लेकिन विशेष मौकों शादी-ब्याह, मेलों, त्यौहारों पर गोटा लगी पोशाक पहनना पसन्द करती है। मुसलमान स्त्रियां चूड़ीदार पाजामा और ओढनी पहनती हैं। मुस्लिम महिलाओं में अभी भी बुर्का पहनने का प्रचलन है।

(छ) आभूषण

आभूषण पहिनने का रिवाज भी राजस्थान में बहुत है। ग्रामीण पुरुष कानों में मुर्कियां, कड़े व अंगूठी आम तौर पर पहनते हैं। शहरों में भी गले में जंजीर और हाथ में अंगूठी पहिनने का रिवाज है।

पुरुषों के मुकाबले आभूषण पहनने का शौक़ स्त्रियों में बहुत ज्यादा पाया जाता है। उनके पूरे अंग आभूषण से लदे होते हैं पर अब शहर की महिलाएं अवसर विशेष पर ही आभूषण पहिनती है। आमतौर पर शहरी स्त्रियां पावों मे पायजेब और पैरों की अंगुलियों में बिछिया, नाक में लोंग, कानों में इयरिंग्स या टॉप्स, गले में चैन हाथों में चूड़िया या कड़े पहिनती हैं।

गांवों में आमतौर पर साधारण घरो की महिलाएं चांदी के जेवर पहिनती हैं पर महाजनों व ऊंचे घरो की औरतें सोने के जेवर पसन्द करती है। कुछ परम्परागत स्त्री आभूषण इस प्रकार गिनाये जा सकते हैं—

सिर—शीशफूल।
मस्तक—बारला, टीका, फीणी, मांग टीका, साकली।
नाक—नथ, लोंग।
कान—झुमका, बाली, पत्ती, सुरलिया, टॉप्स, इयरिंग्स।
छाती—हार, कण्ठी, मटरमाला, झालर, जंजीर।
बाजू—बाजूबन्द, ठड्डा, तकया, बट्टा।
कलाई—चूड़ियाँ, चूड़ा, कड़ा, हथफूल, पूचियां, बंगड़ी।
अंगुलियाँ—छल्ला, अंगूठी, मूंदडी।
कटि—तागड़ी, करधनी, कणकती।
पैर—पाजेब, पायल, कडा।
पैरों की अंगुलियां—बिछिया।

(ज) खान-पान

राजस्थान में विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार की जलवायु पाई जाती है और जलवायु के अनुसार ही इन क्षेत्रों में जो पैदावार होती है वहा के लोग वही खाते है। रेगिस्तान के जिलों में बाजरा पैदा होता है यहां के लोगो का मुख्य भोजन यही है। इन क्षेत्रों के लोगों की आजीविका मुख्य रूप से पशुपालन पर निर्भर है इसलिए दूध-दही भी वहां कम नहीं होता। दही की लस्सी पौष्टिक होती है इसी कारण पानी की कमी होते हुए भी वहा के निवासी हृष्ट-पुष्ट होते है।

उदयपुर क्षेत्र में मक्का की फसल बहुत अच्छी होती है और वहा के ग्रामीण लोगों का मुख्य आहार भी यही होता है। बासवाड़ा, डूंगरपुर जिलो के कुछ क्षेत्रों मे चावल की खेती भी होती है वही दलहन की फसल भी यहाँ अच्छी होती है।

हाडोती क्षेत्र के लोगों का मुख्य भोजन ज्वार है और वे इसे ही खाकर आनन्दित होते हैं। जयपुर, भरतपुर, अलवर, सवाई माधोपुर आदि जिलो के लोगों का मुख्य भोजन गेहूं, जौ है। चने के आटे की मिली रोटी यहा के लोग बड़े चाव से खाते हैं।

शहरी क्षेत्रों मे पूरे राजस्थान में ही लोग गेहूं व चावल का उपयोग ज्यादातर करते हैं। रेगिस्तानी क्षेत्रों को छोड़कर हरी सब्जी भी प्रायः सभी जगह उपलब्ध हो जाती है। शहर के लोग बाजरा, मक्का की रोटी शौकिया तौर पर ही गुड, घी या सब्जी के साथ खाते हैं।

राजपूत विशेषकर पश्चिमी राजस्थान मे राजपूतो के साथ ही कुछ अन्य जातियों के लोग अफीम व शराब का सेवन भी करते हैं। राजस्थान में कोटा, झालावाड, चित्तौड़ मे अफीम का खेती होती है। कुछ जातियों के लोग मांसाहारी भी होते हैं वैसे शहरो में सभी जाति के लोग अंडे, माँस, मछली खाने लगे हैं।

भोजन किस प्रकार का हो यह लोगो की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। चाय का प्रचलन आम हो गया है--और दूध गावों के लोग भी कम-पीने लगे हैं। गावों में सवेरे छाछ-रावड़ी का आज भी कलेवा किया जाता है। तम्बाकू, बीड़ी-सिगरेट का प्रचलन भी राजस्थान में आम हो गया है।

(5)-राजस्थानी बोलियां एवं उनके क्षेत्र

Rajasthani Dialects & their regions

राजस्थानी भाषा एक समृद्ध भाषा है जिसमें प्राचीन काल एवं आधुनिक काल में पर्याप्त साहित्य रचना हुई है तथा राजस्थान के माध्यमिक एवं कालेजीय पाठ्यक्रम में भी इसे स्थान दिया जा रहा है। राजस्थानी भाषा के प्रदेश में निम्न भिन्न-भिन्न बोलियां अलग-अलग उनके सामने प्रदर्शित क्षेत्रों में बोली जाती हैं।

बोली का नाम	क्षेत्र जहां बोली जाती है
(1) मारवाड़ी	जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर एवं शेखावाटी।
(2) मेवाड़ी	उदयपुर, भीलवाड़ा व चित्तौड़।
(3) वागड़ी	बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही व उदयपुर जिले का दक्षिणी पश्चिमी भाग।
(4) दूढाडी	जयपुर की स्थानीय भाषा।
(5) हाड़ौती	कोटा, बूंदी व उदयपुर का पूर्वी भाग।
(6) मेवाती	अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली।
(7) मालवी	झालावाड व कोटा।
(8) वृज	देहली व उत्तर प्रदेश की सीमा से मिलने वाला भाग।
(9) सेराडी	बूंदी, शाहपुरा आदि।
(10) पंजाबी	गंगानगर जिला।

हिन्दी सारे राजस्थान में बोली जाती है तथा प्रादेशिक आदान-प्रदान का माध्यम है। अखिल भारतीय सार्वजनिक सेवाओं के कारण तथा अन्य कारणों से सिन्धी, गुजराती, मलयालम, कन्नड, तमिल, तेलगू एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं के बोलने वाले भी राजस्थान मे शहरों में मिल जावेंगे। ऊपर दस जो राजस्थानी बोलियां व उनके क्षेत्र बताये गये हैं वे महत्वपूर्ण है अन्यथा यहां कहावत है कि हर 15 मील की दूरी पर राजस्थान में बोली बदल जाती है।

(6) राजस्थान की कला, साहित्य एवं संस्कृति में विभिन्न जातियों एवं जनजातियों का योगदान

Contribution of various castes & tribes of Rajasthan in the promotion of literature and culture.

राजस्थान विभिन्न जातियो, जनजातियो एवं उपजातियो की विविधता का देश है। प्रत्येक जाति या जन-जाति के अपने खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा परम्परा गत मूल्य है तथा किसी न किसी क्षेत्र मे विभिन्न जातियो ने अपनी कला साहित्य या संस्कृति के क्षेत्र में कोई नई निराली छाप छोड़ी है।

राजस्थान के चारण-भाटो ने जहां वीर रस से सरा बोर डिंगल में काव्य रचना कर अपने स्वामियों का शौर्य वर्धन तथा मनोरंजन किया वहीं राजस्थान के गाडो लिया लुहार आज भी अपने को राणा प्रताप की प्रतिज्ञा से बंधा हुआ मान कर खाना वदोस जीवन बिता रहे है। राजस्थानी जनजातियों के लोक नृत्य और गान अपनी अलग ही मनोहारी तथा मनोरम झांकी प्रस्तुत करते है। उसी प्रकार यहां कलाकारों एव चित्रकारो ने मूर्तिकला, चित्र कला व संगीत कला को आज तक जीवित रखा है।

प्रस्तुत पुस्तक में स्थान-स्थान पर वर्णित विभिन्न साहित्य, कला एवं संस्कृति के परिवेशीय वर्णन इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं।

यहां कुछ जातियां एवं जन-जातियों की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत का वर्णन किया जा रहा है—

अन्य :

(1) राजपूत जाति का योगदान—राजस्थान की राजपूत जाति पुराने राजपूताना राज्य में भिन्न-भिन्न रियासतों पर अलग-अलग राज्य करती थी जिन्होंने अपनी-अपनी रियासतों में कला, साहित्य और संस्कृति के विकास में काफी योगदान दिया जयपुर के कछवाहा राजाओं के महलों में चित्र-कला की जो अनुपम झांकी है उसे कौन नहीं जानता। यहां के राजा जयसिंह ने बिहारी कवि के एक-एक दोहे की रचना के लिए एक-एक अशर्फी दी तथा पांच ज्योतिष यंत्रालयों का निर्माण उनके कला एवं साहित्य प्रेम का ही प्रमाण है। चित्तौड़ का विजय स्तम्भ महाराणा कुम्भा के कला प्रेम की उत्कृष्ट प्रमाण है। इसी प्रकार अन्य राजाओं के संरक्षण में साहित्य कला और संस्कृति को पूर्ण प्रोत्साहन मिला।

(2) जैन सम्प्रदाय का योगदान—दिलवाड़ा के जैन मन्दिर तथा अन्य स्थानों के जैन मन्दिरों की कलात्मकता जैन सम्प्रदाय के कला प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है। जैन कवियों की साहित्य को भी महत्वपूर्ण देन है।

(3) चारण भाटों का योगदान—प्राचीन कालीन चारण भाटों ने भी जहां साहित्य के सृजन द्वारा राजस्थान की सेवा की वहीं अपने आश्रयदाताओं का शौर्य-वर्धन कर राजपूत जाति को एक बार जाति कहलाने का गौरव दिलवाया। इन लोगों ने इतिहास के द्वारा भी राजस्थानी संस्कृति की सुरक्षा की।

(4) भील जाति का योगदान—भीलों की नृत्य कला—राजस्थानी भीलों में निम्न प्रकार के नृत्यों का प्रचलन है :—

(1) युद्ध नृत्य।
(2) विवाह नृत्य।
(3) भगोरिया नृत्य।
(4) होली नृत्य।
(5) लाठी नृत्य।
(6) दिवाली नृत्य।
(7) ढोल नृत्य।
(8) शिकार नृत्य।

भीलों की लोक कथायें—राजस्थान भीलों में निम्न महत्व पूर्ण लोक कथायें प्रचलित हैं—

(1) लूटका चोप।
(2) भीज ने बदला लिया।

(3) दयाल मछली ।
(4) ब्राह्मणी राजकुमार ।
(5) ग्वाला और रजा ।
(6) वारेला की पुकार ।
(7) भील की प्रतिज्ञा ।
(8) आधा मानुष ।
(9) पाँच लड्डू ।
(10) भगवान शंकर की सवारी ।
(11) राजा का न्याय ।

भीलों के शकुन व अपशकुन—भील यात्रा के समय बछड़े को दूध पिलाती हुई गाय को देखना शुभ मानते है । इसी प्रकार बायी ओर देवी चिरौया या कौवे को बोलता देखकर उसे शुभ मानते हैं । और कार्य या यात्रा की सफलता की आशा करते है । घर मे बीमार होने पर भील कौवे की कांव काय सुनना पसंद नहीं करते, उसे वे अपशकुन मानते है और इसी प्रकार के अनेक उदाहरण है ।

भीलों के देवी देवता—भीलो के 40 से अधिक देवी देवता हैं जिनमें से बड़का देव, दुल्हा देव, भैंसासुर, मसान देव, बाबादेव, कालिका आदि मुख्य हैं ।

5) सांसी – सासी लोग विवाह सम्बन्ध के बाहर यौन सम्बन्ध स्थापित करने को बहुत बुरा मानते हैं तथा ऐसा करने वालों को कठोर दण्ड देते हैं । सासी जाती के लोग खाना बदोस जीवन बिताने में ही आनन्द मानते हैं तथा ये लोग नीम, पीपल तथा बरगद के वृक्षों का बहुत आदर करते हैं ।

इसी प्रकार से राजस्थान की अन्य सभी जाति एवं जन-जातियों की अपनी-अपनी सास्कृतिक एवं कलात्मक विरासत हैं ।

भाग "द"

पाठ 1

राजस्थान का प्रशासन एवं विकासमान अधुनातन प्रवृत्तियां।

(Administration & Contemporary Developmental Trends of Rajasthan)

राजस्थान का प्रशासनिक संगठन

(Administrative Organisation of Rajasthan)

भारत की जनतांत्रिक प्रणाली के अनुरूप राजस्थान में भी शासन की बागडोर निर्वाचित सरकार के हाथों में है। राज्यपाल उसका अध्यक्ष है जो मन्त्रि-परिषद् की सलाह पर कार्य करता है। वर्तमान में राज्यपाल श्री ओ.पी. मेंहरा हैं।

जून, 1980 में हुए विधानसभा चुनावों मे कांग्रेस की सरकार बनी और श्री जगन्नाथ पहाड़िया मुख्यमन्त्री चुने गये थे। उनके बाद वर्तमान में श्री शिवचरण माथुर मुख्यमन्त्री हैं।

लोकतांत्रिक पद्धति में सरकार के तीन अंग, कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के रूप में होते है जो प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के साथ ही उसे दिशा-निर्देश भी देते हैं।

छोटी बड़ी रियासतों को मिलाकर राजस्थान का पूर्ण गठन 1 नवम्बर, 1956 को पूरा हुआ था जबकि अजमेर राज्य का भी इसमें विलय हो गया था। अब राजस्थान पांच संभागों व 27 जिलों में बंटा हुआ है। 27 जिलों में 202 तहसील हैं। कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए अब तक पाच पुलिस रेंज सभाग मुख्यालयों जयपुर, कोटा, उदयपुर, जोधपुर और बीकानेर में थी। हाल में इनकी संख्या सात कर दी गई है। अजमेर और भरतपुर में पुलिस रेंज का मुख्यालय हो गया है।

रियासतों के विलीनीकरण के बाद जब 30 मार्च, 1949 को राजस्थान का प्रादुर्भाव हुआ तो यहां राज्यपाल की जगह महाराज प्रमुख और राजप्रमुख की

नियुक्ति की गई। राज्य के सबसे पहले महाराज प्रमुख महाराणा भोपालसिंह थे। राजप्रमुख महाराजा सवाई मानसिंह को बनाया गया था और कोटा के महाराजा भीमसिंह उप राजप्रमुख थे। 1956 में अजमेर राज्य को मिलाने के बाद राजस्थान के गठन की प्रक्रिया पूरी हुई और राजस्थान में 1957 में पहली बार राज्यपाल की नियुक्ति की गई। पहले राज्यपाल गुरुमुख निहालसिंह थे।

राजस्थान में 1957 में विधानसभा के सदस्यों की कुल संख्या 176 थी जो 1967 में बढ़कर 184 और 1977 में दो सौ हो गई। जून, 1980 में हुए विधानसभा चुनावों में भी यह संख्या 200 ही थी। दो सौ विधान क्षेत्रों में से 33 अनुसूचित जाति व 24 अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सुरक्षित हैं पर जून में हुए चुनावों में अनुसूचित जाति के 34 और जनजाति के 26 विधायक चुनकर आये थे। भिनाय के सामान्य क्षेत्र में अनुसूचित जाति की श्रीमती भगवतीदेवी चुनी गई। इसके अलावा सवाई माधोपुर जिले के गंगानगर और भरतपुर जिले के बाड़ी निर्वाचन क्षेत्र से अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवार विजयी रहे। राज्य से लोकसभा के लिए 25 और राज्यसभा के लिए 10 सदस्य चुने जाते हैं।

कार्यपालिका

कार्यपालिका में राज्यपाल व मन्त्रिपरिषद् शामिल है। राज्यपाल प्रदेश का शासक होता है पर वह सारा कार्य मन्त्रिपरिषद् की सलाह से करता है। मन्त्रिपरिषद् का गठन जनता द्वारा निर्वाचित विधायकों में से होता है जो विधानसभा के प्रति उत्तरदायी है।

संविधान में राज्यपाल को जो शक्तियां दी गई हैं। उसके अनुसार वह विधानसभा में बहुमत वाले दल से मन्त्रिमण्डल की नियुक्ति करता है। मन्त्रिमण्डल उसे हर कार्य में सलाह देता है और सारे राज्य में शासन की गतिविधियों से परिचित कराता है। राज्यपाल समय-समय पर अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को देते रहते हैं।

राज्यपाल विधानसभा की बैठक आमन्त्रित करता है। उसे स्थगित या भंग करने का भी अधिकार उसे प्राप्त है। विधानसभा के चुनाव के बाद वह निर्वाचित सदस्यों में से एक को शपथ दिलाकर कार्यवाहक अध्यक्ष नियुक्त करता है जो पहले सत्र के पहले दिन बाकी सदस्यों को शपथ दिलाता है। विधानसभा में जनहित में पारित विधेयक राज्यपाल की स्वीकृति के बाद ही कानून का रूप लेते हैं।

राज्यपाल अपने विशेषाधिकारों का उपयोग करके दण्डित अपराधियों की सजा स्थगित या कम कर सकता है। उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति में भी उसकी सलाह ली जाती है।

राजस्थान के तीनों विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति भी राज्यपाल ही होता है। उप-कुलपतियों की नियुक्ति भी वही करता है।

राजस्थान में अब तक रहे राज्यपालों के नाम इस प्रकार हैं—(1) सरदार गुरुमुख निहालसिंह, (2) सम्पूर्णानन्द, (3) सरदार हुकुमसिंह, (4) सरदार जोगेन्द्रसिंह, (5) रघुकुल तिलक और (6) श्री ओ.पी. मेहरा।

विधानसभा

राजस्थान में विधानसभा में 200 सदस्य होते हैं जो अपने में से ही एक को अध्यक्ष चुनते हैं। अध्यक्ष को सदन की कार्यवाही चलाने में सहयोग देने के लिए एक उपाध्यक्ष एवं सरकारी मुख्य सचेतक होता है। अध्यक्ष का दर्जा मंत्री स्तर का होता है तथा उपाध्यक्ष और मुख्य सचेतक को राज्य मन्त्री की हैसियत की सुविधाएं मिलती हैं। अध्यक्ष हर साल विधायकों में से ही चार सभापति भी मनोनीत करता है जो अध्यक्ष व उपाध्यक्ष की अनुपस्थिति में सदन की कार्यवाही का संचालन करते हैं।

विधानसभा प्रत्येक वर्ष राज्य सरकार का वित्तीय बजट पास कर सरकार को खर्चा चलाने का अधिकार देती है। विधान सभा मन्त्री परिषद् पर नियन्त्रण भी रखती है। पक्ष–विपक्ष के सदस्य सदन की बैठकों में सरकार की उसके गलत कार्यों के लिए आलोचना करते हैं और रचनात्मक सुझाव भी देते हैं। विधानसभा महत्वपूर्ण विषयों पर कानून भी पास करती है।

वर्तमान में विधानसभा के अध्यक्ष पुनमचन्द विश्नोई हैं। अब तक रहे अन्य अध्यक्ष इस प्रकार हैं—(1) नरोत्तमलाल जोशी, (2) रामनिवास मिर्धा, (3) निरंजननाथ आचार्य, (4) रामकिशोर व्यास, (5) महारावल लक्ष्मणसिंह, (6) गोपालसिंह आहोर।

न्यायपालिका

प्रशासन का तीसरा महत्वपूर्ण अंग न्याय पालिका होती है। जिसमें मुख्य न्यायाधीश व अन्य न्यायाधीश होते हैं। उच्च न्यायपालिका का मुख्यालय जोधपुर में है। जनवरी, 1977 में उच्च न्यायपालिका की खण्डपीठ जयपुर में भी स्थापित हो गई। उच्च न्यायालय ही राज्य की न्याय व्यवस्था का संचालन करता है।

उच्च न्यायालय के अधीनस्थ न्यायालय तीन प्रकार के होते हैं–(1) दीवानी, (2) फौजदारी और (3) राजस्व न्यायालय। इनके अलावा रेलवे, आबकारी व नगरपालिका के मामलों का फैसला करने के लिए भी न्यायिक दण्डनायक होते हैं जो जिला एवं सत्र न्यायाधीश के नियन्त्रण में रहकर कार्य करते हैं।
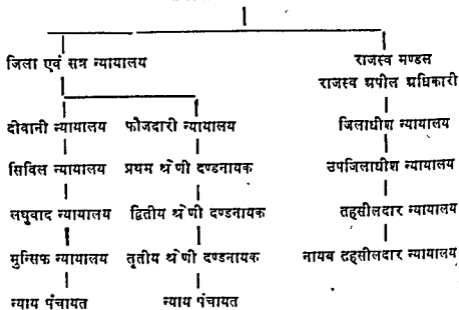
पाठ 2

राजस्थान में (नया) बीस सूत्री कार्यक्रम

(Twenty Point Programme in Rajasthan)

सामाजिक न्याय के पवित्र लक्ष्य से प्रेरित बीस सूत्री कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति के लिए राज्य सरकार ने अनेक ठोस एवं प्रभावी कदम उठाये हैं। राज्य स्तर से लेकर विकास खण्ड स्तर तक समितियां गठित की गई हैं। मुख्य मन्त्री जी की अध्यक्षता में गठित राज्यस्तरीय समिति लक्ष्यों का निर्धारण, क्रियान्वयन के लिए दिशा निर्देश एवं क्रियान्विति का पर्यवेक्षण करती है। इस समिति में सांसदों और विधायकों के अतिरिक्त अनुसूचित जाति, जनजाति, महिला एवं श्रमिक तथा पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधि भी सदस्य है। इस राज्य-स्तरीय समिति के अन्तर्गत चार उप समितियां भी गठित हैं जो कार्यक्रमों के क्रियान्वियन की देख-रेख करती है व आवश्यक हिदायतें देती है। इन उप समितियों की अध्यक्षता मुख्यमन्त्री अथवा प्रभारी मन्त्रीगण करते हैं। जिला स्तर पर जिला

प्रमुख की अध्यक्षता में जिला समिति गठित की गई है जो जिले में कार्यक्रम की क्रियान्विति की समीक्षा करती है। तथा पंचायत समिति स्तर के लिए लक्ष्यों का निर्धारण एवं क्रियान्वयन की परिवीक्षा करती है। पंचायत समिति स्तर पर प्रधान की अध्यक्षता में गठित समिति पंचायत समिति में क्रियान्वयन का परिवीक्षण करती है। सभी समितियों में जन प्रतिनिधियों को शामिल किये जाने से इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन जन आकांक्षाओं के अनुरूप एवं जनता के लिए अधिक लाभप्रद सम्भव हुआ है।

यहाँ आगे के पृष्ठों में जो प्रगति अंकित की गई है, उससे यह स्पष्ट है कि राजस्थान सरकार गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों पर बहुत बल दे रही है। 33 हजार से अधिक गांवों में 1 लाख 83 हजार परिवारों तक पहुँचना असाधारण और कठिन कार्य है। फिर भी सरकार उनके द्वार तक पहुँची और उनसे अपने रोजगार के साधन चुनने के लिए आग्रह किया। इस दिशा में जो कार्य हुआ उसकी सराहना योजना आयोग ने उदारता पूर्वक की है। यह उल्लेखनीय है कि भीषण अकाल के बावजूद लक्ष्यों से अधिक उपलब्धियां अर्जित की गयी। अखिल भारतीय स्तर पर इस सफलता के लिए योजना आयोग द्वारा राजस्थान को समस्त राज्यों में दूसरा स्थान दिया गया किन्तु राजस्थान जैसे पिछड़े प्रदेश में बहुत कुछ करना बाकी है। अतः भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1983–84 के लिए और महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। यद्यपि आर्थिक सीमाओं के बावजूद 1983–84 के लिए निर्धारित लक्ष्यों के प्राप्त करने के लिए पूर्णतः कृतसंकल्प है। वर्ष 1983–84 के लिए निर्धारित लक्ष्यों का विवरण भी आगे के पृष्ठों पर दिया गया है।

राजस्थान में बीस सूत्री कार्यक्रम
1982–83

सूत्र	इकाई	लक्ष्य	उपलब्धियाँ	उपलब्धियों का प्रतिशत
1. अधिक सिंचाई–अधिक उपज				
(अ) राजस्थान नहर	हजार हैक्ट.	35·0	46·0	131·43
(ब) प्रवाही सिंचाई, सिंचाई विभाग द्वारा	,,	28·0	29·97	107·03
(स) कुओं द्वारा	,,	25·0	22·41	89·88

2. दलहन दुगुनी-तिलहन तिगुनी				
(अ) दलहन	लाख टन	22·20	22·97	103·46
(ब) तिलहन	,,	7·15	7·63	107·27
3. पिछड़े को पहले				
(अ) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम से लाभान्वित व्यक्ति	लाख संख्या	1·42	1·83	128·87
(ब) अनुसूचित जाति	,,	0·50	0·73	146·00
(स) अनुसूचित जन जाति	,,	0·28	0·32	114·29
(द) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार	लाख मानव कार्य-दिवस	31·20	48·13	154·26
4. भूमिहीनों को भूमि आवंटन	हजार एकड़	10·00	17·82	178·16
5. कृषि मजदूरी पूरी-पूरी		न्यूनतम वेतन 7 रु० से बढ़ाकर 9 रुपये प्रतिदिन	1/4/82 से	
6. बंधक मुक्ति	संख्या	200	114	57·00
7. हरिजन गिरिजन विकास	संख्या			
(अ) अनुसूचित जाति परिवार	,,	52,500	64,310	122·50
(ब) अनुसूचित जन जाति	,,	22,000	25,629	116·50
8. पीने का पानी	गाँवों की संख्या	2,700	4,060	150·37
9. गरीब को छप्पर				
(अ) भूखण्ड आवंटन	संख्या	50,000	1,15,160	230·32
(ब) भवन निर्माण	,,	30,000	11,093	36·98

सूत्र	इकाई	लक्ष्य	उपलब्धियां	उपलब्धियों का प्रतिशत
10. गन्दी बस्ती सुधार				
(अ) पर्यावरण सुधार लाभान्वित व्यक्ति	लाख संख्या	31,500	48,631	154·38
(ब) आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों को आवासन सुविधा	,,	7,000	1,692 नगरविकास न्यास 6,403 आवासन मण्डल 4,021 जयपुर विकास प्रा.	
			12,116	173·08
11. गावों में उजाला				
(अ) ग्रामीण विद्युतीकरण	संख्या	1,000	1,070	107·00
(ब) कुओं का ऊर्जीकरण	,,	10,000	10,485	104·85
12. जंगल से मंगल				
(अ) वृक्षारोपण	करोड़	3·50	4·32	123·43
(ब) गोबर गैस संयत्र	संख्या	5,000	2,404 संयत्र स्थापित	48·08
			1,400 संयत्र निर्माणाधीन	29·36
13. छोटा परिवार नसबन्दी आपरेशन	लाख	2·15	1·66	77·21
14. सब स्वस्थ्य				
(अ) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का अपग्रेडेशन	संख्या	7	7	100·00
(ब) नये प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	,,	2	2	100·00
(स) नये उप केन्द्र	,,	250	250	100·00
(द) टी.बी. केसेज	,,	14,000	29,461	210.43
(य) कुष्ठ रोग	,,	3,000	2,296	76·53
(र) नेत्र रोग	,,	17,000	33,544	197·31
15. मातृ शिशु कल्याण आई.सी.डी.एस. खण्ड प्रारम्भ करना	,,	13	13	100·00

16. सब साक्षर				
(अ) 6 से 11 वर्ष की आयु के बालकों का नामांकन	लाख	36·00	34·06	94·61
(ब) 11 से 14 वर्ष की आयु के बालकों का नामांकन	,,	9·20	9·35	101·63
(स) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र	संख्या	7,000	6,941	99·15
(द) प्रौढ़ नामांकन	लाभ	2·10	2·50	119·05
17. घर-घर राशन				
(अ) उचित मूल्य की दुकानें शहरी व ग्रामीण क्षेत्रो मे	संख्या	1,950	1,879	96·36
(ब) चल दुकानों	,,	50	42	84·0
18. ग्रामीण उद्योग धन्धे				
(अ) लघु उद्योग इकाइयां	संख्या	5,000	5,513	110·26
(ब) ग्रामीण उद्योग इकाइयां	,,	10,000	12,533	125·53
(स) हाथ करघे	,,	1,900	1,826	96·10
(द) कारीगरो को रोजगार	,,	10,000	14,757	147·57

वर्ष 1983–84 के भौतिक लक्ष्य

सूत्र संख्या	कार्यक्रम	इकाई	भौतिक लक्ष्य 1983–84
1. अधिक सिंचाई			
सिंचाई क्षमता में वृद्धि			
(क) नहरों द्वारा			
(1) राजस्थान नहर		हजार हैक्ट.	100·00
(2) अन्य		,,	54·90
(ख) कुओं द्वारा		,,	25·00

सूत्र संख्या	कार्यक्रम	इकाई	भौतिक लक्ष्य 1983-84
2. दलहन दुगुनी तिलहन तिगुनी			
1. तिलहन :			
(क) क्षेत्रफल			
(1) खरीफ		लाख हैक्ट.	7·31
(2) रबी		,,	7·08
(ख) उपज :			
(क) क्षेत्रफल			
(1) खरीफ		लाख टन	2·81
(2) रबी		,,	5·46
(2) दलहन :			
(क) क्षेत्रफल			
(1) खरीफ		लाख हैक्ट.	20·50
(2) रबी		,,	18·88
(ख) उपज :			
(क) क्षेत्रफल			
(1) खरीफ		लाख टन	4·30
(2) रबी		,,	18·68
3. पिछड़े को पहले			
(क) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम		लाख परिवार	14·16
(ख) राष्ट्रीय ग्रामीण विकास कार्यक्रम		लाख श्रम दिवस	62·40
4. भूमिहीनों को भूमि			
सीलिंग भूमि का आवंटन		हजार एकड़	10·00
5. अनुसूचित जाति एवं जन जाति कल्याण			
(क) अनुसूचित जाति परिवार		लाख परिवार	
(1) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम से		,,	0·50
(2) अन्य		,,	0·62
(ख) अनुसूचित जनजाति परिवार		,,	
(1) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम		,,	0·28
(2) अन्य		,,	0·28

सूत्र संख्या	कार्यक्रम	इकाई	भौतिक लक्ष्य 1983–84
6. पीने का पानी			
ग्राम लाभान्वित		संख्या	2,700
7. गरीब को छप्पर			
भूखण्ड आवंटन एवं आवासीय सहायता			
(क) भू-खण्ड आवंटन		हजार संख्या	50·00
(ख) भवन निर्माण सहायता			
(1) अनुदान		,,	13·33
(2) हुडको सहायता प्राप्त		,,	18·64
8. गन्दी बस्ती सुधार			
(1) गन्दी बस्ती की लाभान्वित जनसंख्या		,,	45·00
(2) आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग को आवासन		,,	12·00
9. गाँवो में उजाला			
(1) विद्युतीकरण ग्राम		हजार संख्या	1,155
(2) ऊर्जीकृत पम्प सेट्स		,,	11,000
10. जंगल से मंगल			
(क) वृक्षारोपण		लाख संख्या	460
(ख) बायोगैस संयन्त्र		,,	3,000
11. छोटा परिवार			
स्टरलाइजेशन		लाख व्यक्ति	2,94
12. सब स्वस्थ			
(1) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का उच्चीकरण		संख्या	7
(2) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना		,,	12
(3) उप केन्द्र		,,	500
13. मातृ शिशु कल्याण			
आई० सी० डी० एस० खण्ड		संख्या	8
14. सब साक्षर			
(क) नामांकन			
(1) 6–11 आयु वर्ग		लाखों में	39·60
(2) 11-14 आयु वर्ग		,,	10·00

(ख) प्रौढ़ शिक्षा		
(1) केन्द्र	संख्या	10,000
(2) लाभान्वित व्यक्ति	लाखों में	1 00
15. घर-घर राशन		
राशन की दुकानें		
(1) ग्रामीण क्षेत्र में	संख्या	430
(2) शहरी क्षेत्रों में	,,	530
(3) चल दुकानें	,,	10
16. ग्रामीण उद्योग-धन्धे		
(1) छोटे उद्योगों का पंजीकरण	संख्या	5,000
(2) ग्रामीण उद्योगों का पंजीकरण	,,	5,000
(3) हाथ करघे	,,	1,600
(4) कारीगरों को रोजगार	,,	10,000

पाठ 3

पंचवर्षीय योजनाओं में राजस्थान की प्रगति

(Progress of Rajasthan in Five Year Plans)

राजस्थान में राजनीतिक स्थायित्व, सरकार एवं जनता की आर्थिक विकास की लालसा तथा मारवाड़ी उद्योगपतियों द्वारा अपने पूर्वजों की भूमि के विकास की चाह एवं सहयोग से योजनाकाल में पर्याप्त प्रगति हुई।

राजस्थान में प्रथम, द्वितीय, तृतीय, तीन वार्षिकी, चतुर्थ, पंचम योजनाओं का वास्तविक व्यय क्रमशः 54·14, 102·72, 212·70, 136·75, 38·79 तथा 611·19 करोड़ रु० था। पांचवीं योजना के अन्त तक कृषि कार्यों पर 112·76 करोड़ रु० सिंचाई एवं शक्ति पर 724·11 करोड़ रु०, सहकारिता एवं सामुदायिक विकास पर 54·71 करोड़ रु० परिवहन एवं संचार पर 97·09 करोड़ रु०, सामाजिक सेवाओं पर 253·63 करोड़ रु० तथा उद्योग एवं खनन पर 41·25 करोड़ रु० के व्यय किये गये। छठी योजना 1980–85 में 2025 करोड़ रुपये का प्रावधान है।

इस प्रकार कृषि, सिंचाई एवं शक्ति, सहकारिता पर कुल व्यय का लगभग 69·14 प्रतिशत व्यय हुआ जबकि खनन एवं औद्योगिक विकास पर केवल 3·2%

परिवहन एवं संचार पर 7·5 प्रतिशत तथा सामाजिक सेवाओं पर लगभग 19·7% राशि व्यय हुई। नियोजन काल मे दिये गये विकास से प्रयत्नों के फलस्वरूप राज्य की अर्थ व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है उसका वर्णन आगे किया जा रहा है।

1. सिंचाई—

सन् 1950–51 में राजस्थान में केवल 11·7 लाख हेक्टर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधायें उपलब्ध थी जो 1975–76 में 28·59 लाख हेक्टर क्षेत्र पर होने लगी। 1980–81 में 36 लाख हेक्टर और 1981–82 मे 30·4 लाख हेक्टर पर हुई।

2. विद्युत उत्पादन—

राज्य मे विद्युत का उत्पादन 1950–51 में केवल 7,500 कि. वा. था जो 1975–76 में 271·5 करोड़ कि. वा. हुआ। 1980–81 में विद्युत की कुल उपलब्धता 4,717 मे वाट थी जो 1981–82 में 5,106·5 मे. वाट थी।

3. खाद्यान्न उत्पादन—

राजस्थान मे खाद्यान्न का उत्पादन सन् 1950–51 में केवल 41·8 लाख टन था जो सन् 1970–71 मे बढ़कर 88 लाख टन हो गया लेकिन 1975–76 मे घटकर 72·27 लाख टन था। 1980–81 में खाद्यान्न का उत्पादन 65·02 लाख टन रहा जो 1981–82 में 66·3 लाख का था।

4. यातायात—

योजनाकाल में राजस्थान में सड़कों के निर्माण में विशेष प्रगति हुई। सन् 1950–51 में पक्की सड़क की लम्बाई केवल 18·8 हजार किलोमीटर थी जो बढ़कर सन् 1978–79 में 29·11 हजार किलोमीटर तथा 1979–80 मे 29·83 हजार कि० मी० हो गयी। 1980–81 मे राज्य में 313507 कि० मी० पक्की सड़कें तथा 9,837 कि० मी० लम्बी कच्ची सड़कें थी राज्य में रेल मार्गों की कुल लम्बाई केवल 5475 कि० मी० है जो प्रति हजार वर्ग कि० मी० है जो प्रति हजार वर्ग कि० मी० क्षेत्रफल पीछे मात्र 17 ही है।

5. सार्वजनिक सेवायें—

1978–79 में राजस्थान मे सामाजिक सेवाओं पर कुल सार्वजनिक व्यय का लगभग 39·19 प्रतिशत व्यय किया गया अर्थात 215·11 करोड़ रुपये व्यय किये गये। 1961–62 में 6 से 11 वर्ष तक की आयु वर्ग में स्कूल जाने वाले बच्चों का प्रतिशत 16·6 था जो 1978–79 में बढ कर 69·6 प्रतिशत हो गया। इसी वर्ष मे 9,000 प्रौढ शिक्षा केन्द्र स्थापित करके 2 लाख प्रौढ़ो को शिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया था। इसी तरह राज्य में चिकित्सा तथा पीने के पानी आदि की सुविधाओं में भी वृद्धि हुई है। अनुसूचित जाति व जन-जाति के सामाजिक शैक्षणिक एवं आर्थिक स्तर को उन्नत करने के लिए विशेष प्रयास किये जा रहे हैं।

6. औद्योगिक विकास—

योजनाकाल में औद्योगिक क्षेत्र में भी प्रगति हुई है। सार्वजनिक क्षेत्र में हिन्दुस्तान कापर लि०, हिन्दुस्तान जिंक लि०, इन्स्ट्रूमेण्टेशन लि०, मशीन टूल्स कार्पोरेशन, सांभर साल्टस लि०, राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स बीकानेर एण्ड चूरू ऊनी मिल आदि हैं। निजी क्षेत्र में जे० के० सिंथेटिक्स, श्री राम खाद, श्री राम रेयन, कमानी टावर्स, नेशनल इन्जीनियरिंग आदि मुख्य है। राज्य में अनेक क्षेत्रों में औद्योगिक बस्तियाँ निर्मित की गई है। राज्य का कोटा क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से काफी अधिक विकसित हो चुका है। राज्य वित्त निगम ने भी उद्योगों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

नियोजित आर्थिक विकास के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप राज्य की आय 1970–71 के मूल्यों के आधार पर 1977–78 में 1857 करोड़ रु० थी जो 1978–79 में 1945 करोड़ रु० हो गयी। लेकिन प्रति व्यक्ति आय इसी अवधि में 608 रु० से बढ़कर 623 रु० ही हुई है। 1979–80 में राज्य की आय 1671·77 करोड़ रु० तथा 1980–81 में 1798·15 करोड़ रु० थी। इन वर्षों में प्रति व्यक्ति आय क्रमश: 5246 तथा 553 रु० थे।

अन्त्योदय

पिछले तीन दशकों में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद नियोजित विकास के प्रयत्नों के प्रयत्नों के फलस्वरूप देश का पर्याप्त आर्थिक विकास हुआ है. किन्तु इस विकास का अधिकांश लाभ समाज के अत्यन्त निर्धन वर्ग को न मिलकर समाज के समृद्ध वर्ग को मिला है। देश में आर्थिक विषमतायें घटने के स्थान पर बढ़ी है। देश का धनी वर्ग अधिक धनी तथा निर्धन वर्ग अधिक धनी तथा निर्धन वर्ग अधिक निर्धन हुआ है। नियोजनकाल में ग्रामीण क्षेत्र के विशिष्ट वर्ग के निर्धन लोगों की सहायता करने के लिए अनेक कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये परन्तु उनका लाभ गांव के सभी निर्धनों को प्राप्त नहीं हुआ। इस कमी को पूरा करने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा 2 अक्टूबर, 197 से अन्त्योदय कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। अन्त्योदय का शाब्दिक अर्थ है पंक्ति के सबसे अन्तिम व्यक्ति का उत्थान। इस कार्यक्रम का उद्देश्य, राजस्थान के प्रत्येक गांव में निर्धन परिवारों में से सबसे निर्धन परिवारों का आर्थिक उत्थान करना था। यह अनुमान किया गया है कि राजस्थान की कुल 2·12 करोड़ की ग्रामीण जन-संख्या में लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी से नीचे का जीवन जीती है। इसमें से जो सबसे अधिक निर्धन है उन लोगों का आर्थिक उत्थान करना ही अन्त्योदय कार्यक्रम का उद्देश्य था। अब इस कार्यक्रम के स्थान पर नया बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम गरीबोत्थान का कार्यक्रम है।

राजस्थान की छठी पंचवर्षीय योजना (1980–85)

राजस्थान का भौगोलिक क्षेत्रफल 3·42 लाख वर्ग किलोमीटर है। यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। 1981 की जनगणना के अनुसार यहां की

जनसंख्या 3·41 करोड़ थी 1·77 करोड़ पुरुष तथा 1·64 करोड़ महिलायें हैं जिसमें 82 प्रतिशत गांवों मे निवास करते हैं तथा 70 प्रतिशत से अधिक कृषि से करते हैं।

राजस्थान के द्रुत गति से आर्थिक विकास के लिये नियोजन की जो प्रक्रिया अपनायी गयी है। उसी के अन्तर्गत राजस्थान की छठी पंचवर्षीय योजना 1980-85 बनायी गयी है। इस योजना के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन यहाँ किया जा रहा है—

उद्देश्य—

राजस्थान की छठी पंचवर्षीय योजना के निम्न उद्देश्य है—

1. अर्थव्यवस्था की विकास दर में महत्वपूर्ण वृद्धि करना, राष्ट्रीय योजना में प्रतिवर्ष 5 प्रतिशत वृद्धि की आशा की गई है। राजस्थान में विकास की दर 7% के लगभग होनी चाहिए जिससे निकट भविष्य में राष्ट्रीय औसत पर पहुँचा जा सकें।
2. तीव्र वृद्धि के लिए अभी तक जो क्षमता पैदा की गई है उसका अधिकतम प्रयोग करना तथा रोजगार उत्पन्न करने वाले कार्यक्रमों को ऊँची प्राथमिकता ... क्षेत्र, ... ादि

... ग्रामीण दस्तकार,

...

... महत्व देना। ये कार्यक्रम प्रारम्भिक शिक्षा, ... ग्रामीण पेयजल, ग्रामीण विद्युतीकरण, ग्रामीण आवास, शहरी गंदी बस्तियों में पर्यावरण सुधार तथा पोषकता सुधार से सम्बन्धित है।
5. छोटे परिवार के सिद्धान्त के प्रचार तथा परिवार कल्याण कार्यक्रमों की स्वैच्छिक स्वीकृति के आधार पर जनसंख्या वृद्धि की दर में निरन्तर कमी करना।
6. विशिष्ट समस्या ग्रस्त क्षेत्र जैसे रेगिस्तानी जिलों तथा आदिवासी उपक्षेत्रों ...
7. ... बढ़ना।
8. ... के मध्य उपस्थित खाई को कम करना।

परिव्यय :

छठी पंचवर्षीय योजना में सरकार द्वारा 2,905 करोड़ रु० व्यय करने की व्यवस्था की गई है जिसे नीचे की तालिका से देखा जा सकता है।

छठी पंचवर्षीय योजना परिव्यय करोड़ रुपये

क्षेत्र	1980 परिव्यय	प्रतिशत
1. कृषि तथा सम्बन्ध क्षेत्र	323·96	16
2. सहकारिता	24·38	1·20
3. सिंचाई एवं शक्ति	1061·22	52·41
4. उद्योग एवं खनिज	83·59	4·13
5. परिवहन एवं संचार	136·50	6·74
6. सामाजिक सेवायें	386·13	19·06
7. विविध	9·22	0·46
योग	2,025	1·10

उपरोक्त तालिका में राज्य की अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के लिए व्यय की जाने वाली राशि 1980–85 की अवधि के लिए दिखायी गयी है। पांच वर्ष की अवधि में 2,025 करोड़ रु० व्यय करने का लक्ष्य है, जिसका 25·41 प्रतिशत अर्थात् 1,061·22 करोड़ रु० जल एवं शक्ति के विकास पर व्यय किया जायेगा। इसके बाद सामाजिक सेवाओं पर 386·13 करोड़ रु० अर्थात् 19·06 प्रतिशत व्यय किया जायेगा। कृषि तथा सम्बन्ध क्रियाओं पर 323·96 करोड़ रु० अर्थात् 16% व्यय किया जायेगा। परिवहन एवं संचार पर 136·5 करोड़ रु० अर्थात् 6·74 व्यय करने का लक्ष्य है।

विभिन्न क्षेत्रों के विकास लक्ष्य एवं शैली :—

राज्य की छठी पंचवर्षीय योजना में विकास के लक्ष्य तथा शैली विभिन्न क्षेत्रों के लिए निम्न प्रकार निर्धारित की गयी है :—

1. कृषि तथा सम्बन्ध क्रियाएं :—

राज्य में खाद्यान्न, तिलहन तथा कपास के उत्पादन में वर्तमान वृद्धि पर क्रमशः 3·7 प्रतिशत, 1·2 प्रतिशत, तथा 4·4 प्रतिशत हैं जिसे बढ़ाकर क्रमशः 7·9 प्रतिशत, 15·8 प्रतिशत तथा 13·6 प्रतिशत करना है। इसके लिए सिंचित क्षेत्र तथा गैर सिंचित क्षेत्र दोनों में ही उत्पादकता बढ़ाने के लिए कार्य किया जायेगा।

कुछ प्रमुख फसलों का 1980–81 व 1981–82 का उत्पादन तथा 1980–85 का लक्ष्य निम्न प्रकार है :—

लाख टन व लाख गाठें

मद	1980–81	1980–85	1981–82
1. खाद्यान्न	65·02	113·00	66·30
2. तिलहन	3·89	10·00	5·60
3. गन्ना	11·61	20·00	19·00
4. कपास	3·88	8·50	5·00

2. सिचाई :—

सिचाई के क्षेत्र में चालू परियोजनाओं को पूरा करने को सर्वाधिक महत्त्व दिया जायेगा। इस योजना में 9·83 लाख हेक्टर में अतिरिक्त सिचाई सुविधाएं उपलब्ध की जायेगी।

3. विद्युत :—

राज्य में विद्युत की माग को पूरा करने के लिए प्रयत्न किये जायेगें। इसके लिए निर्माणाधीन जल तथा ताप विद्युत गृहों को पूरा किया जायेगा तथा नवीन तापविद्युत गृह स्थापित किये जायेगे। योजना के अन्तिम वर्ष 1984–85 तक 21,592 गावो को तथा 2·84 लाख कुओ को विद्युत मिलने लगेगी।

4. उद्योग :—

रोजगार वृद्धि के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूंजी प्रधान उद्योगो के स्थान पर श्रम प्रधान उद्योगो में विकास को अधिक महत्त्व दिया जायेगा। विद्युत तथा अन्य आवश्यक सामान की मांग की पर्याप्त पूर्ति पर ही उद्योगो का विकास निर्भर करता है। इसलिए इनकी निरन्तर पूर्ति को आवश्यक माना गया है। खादी व ग्रामीण उद्योगो के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

5. खनिज :—

खनिजों का गहन सर्वेक्षण, छोटे खनिजों को ऋण तथा खानों तक सामाजिक ऊपरी पूंजी की व्यवस्था की जायेगी। राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम अपनी क्रियाओं में वृद्धि करेगा।

6. सड़कें :—

सड़क विकास का यह लक्ष्य है कि 1,500 से अधिक आबादी वाले सभी गवों तथा 1,000 से 1,500 आबादी वाले आधे गावो को सड़कों से जोड़ दिया जायेगा। योजनावधि में 9926 किलोमीटर लम्बी नई सड़के बनायी जायेगी।

7. सामाजिक सेवाएं :—

प्रारम्भिक शिक्षा के विस्तार, पयजल की पूर्ति अधिक गांवों को करने तथा आवास सुविधाओं में वृद्धि के कार्य किये जायेंगे।

इस प्रकार छठी पंचवर्षीय योजना राज्य के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। परन्तु 1981–82 तथा 1982–83 में राज्य के आधे भाग में बाढ़ों के कारण हुई बर्बादी तथा आधे भाग में सूखे की स्थिति उत्पादन होने के कारण सम्पूर्ण व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी है। फिर भी उज्जवल भविष्य की कामनायें लेकर राज्य के प्रत्येक नागरिक को राज्य के आर्थिक विकास के प्रयास करने चाहिए।

पाठ 4

4. राजस्थान में राज्य स्तरीय खेलकूद
State Level Games & sports in Rajasthan

राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद—संगठन

(1) श्री गणेश सिंह — अध्यक्ष
(2) श्री जे० सी० पालीवाल — उपाध्यक्ष
(3) श्रीमती रीना मुखर्जी — कोषाध्यक्ष

सदस्य गण—

(1) आपजी कल्याण सिंह
(2) श्री गोपाल सैनी
(3) श्री खुशीराम
(4) श्री कमल किशोर बैंद
(5) श्री एम० सी० चौहान
(6) श्री एन० एल० कछारा
(7) श्री सुनील विश्नोई (विधायक)
(8) श्री के० एल० सैनी

(9) श्री अजीजुल्ला खान
(10) श्री आर० सी० माथुर
(11) श्री मानसिंह (विधायक)
(12) श्री भंवरसिंह (विधायक)

पदेन सदस्य—

(1) शिक्षा सचिव
(2) महानिरीक्षक आरक्षी
(3) निदेशक कालेज शिक्षा
(4) निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा
(5) वित्त सचिव
(6) निदेशक विकास विभाग

राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद

एक परिचय

राजस्थान सरकार द्वारा प्रदेश की खेलकूद गतिविधियों को रचनात्मक एवं सुचारु रूप से प्रगतिशील पथ पर अग्रसर करने के लिए सर्वप्रथम इस संस्था का उदय फरवरी, सन् 1957 में हुआ।

परिचय—

परिषद् के निर्माण से पूर्व भी राजस्थान में खेल प्रतियोगिताएँ होती थी, खिलाड़ी थे, खेल संगठन भी थे तथा राजस्थान की टीमें कुछ प्रतियोगिताओं में भाग भी लेती थी, किन्तु सबसे बड़ी कमी यह थी कि सम्पूर्ण संगठन अपने आप में बिखरा हुआ था तथा परस्पर उनमे कोई तालमेल भी नहीं था। इन्हें नियमित रूप से अनुदान एवं खिलाड़ियों को प्रशिक्षण व तकनीकी सलाह मशविरा प्राप्त नही होता था। इन्ही कमियों को दूर करने के उद्देश्य से केन्द्रीय सरकार की सलाह पर राज्य सरकार ने राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद का गठन किया ताकि विश्रृंखलित राजस्थान खेल जगत को संगठित कर एक सूत्र में पिरोया जा सके, राज्य में श्रेष्ठतम खिलाडी हो, खेलकूद प्रतियोगिताएँ नियमित रूप से आयोजित हों तथा राजस्थान के खिलाड़ी राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लें, खेल संगठनों को यथासम्भव आर्थिक सहायता एवं अनुदान तथा आधुनिकतम तकनीकी जानकारी प्राप्त हो एवं खिलाडी, खेल संगठन, खेल पदाधिकारियों में आपसी सामंजस्य हो।

इन्ही उद्देश्यो की पूर्ति हेतु राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद का गठन किया गया। परिषद के सदस्य हर तीसरे वर्ष मनोनीत किए जाते हैं, राज्य के कुछ वरिष्ठ अधिकारी परिषद के पदेन सदस्य होते हैं। परिषद ने इन योग्य एवं अनुभवी पदाधिकारियों तथा सदस्यों के कार्यों व सलाह मशविरो से आशातीत उपलब्धियां अर्जित की हैं।

उद्देश्य एवं लक्ष्य—

परिषद का मुख्य कार्य खिलाड़ियों एवं खेलकूद संघों को अपने सीमित साधनों को मद्दे नजर रखते हुए हर क्षेत्र में यथासम्भव सहायता प्रदान करना है। परिषद मुख्य रूप से निम्न कार्य करती है—

(1) खेलकूद प्रतियोगिताओं, टूर्नामेंटों और चैम्पियनशिप में आर्थिक सहायता प्रदान करना।

(2) प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना।

(3) किसी भी खेल में राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित करने अथवा राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान राज्य की टीम को भेजने के लिए अनुदान उपलब्ध कराना।

(4) उदीयमान, अल्पायु एवं होनहार खिलाड़ियों पर हर प्रकार से ध्यान केन्द्रीत कर उन्हें प्रोत्साहित करना।

(5) खेलकूद के मैदानों का उचित प्रबन्ध एवं जहाँ तक सम्भव हो टीमों एवं खिलाड़ियों को मैदान उपलब्ध कराना।

(6) खिलाड़ियों एवं टीमों को सीमित साधनों के अनुसार विभिन्न खेलकूदों का सामान देना।

(7) राजस्थान के खेलकूद संघों एवं खिलाड़ियों में परस्पर परिचय एवं घनिष्ठता और एकता की भावना को प्रोत्साहित करना।

(8) अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को आर्थिक सहायता देना।

(9) खिलाड़ियों को स्वर्णपदक, पारितोषिक, प्रमाणपत्र इत्यादि प्रदान कर प्रोत्साहित करना।

(10) आर्थिक दृष्टि से अभावग्रस्त अच्छे खिलाड़ियों को खुराक भत्ता प्रदान करना।

(11) राज्य एवं राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कीतिमान स्थापित करने वाले खिलाड़ियों को खेल छात्रवृत्ति प्रदान करना।

(12) खेलों को लोकप्रिय एवं आम जनता तक पहुंचाने के लिये प्रयत्नशील रहना।

(13) ग्रामीण खेलकूद विकास के लिये भरपूर प्रयास करना।

(14) प्रशिक्षण कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये प्रशिक्षकों की नियुक्ति, प्रबन्ध आदि करना।

(15) राजस्थान में खेलकूद को प्रोत्साहित करने के लिये अन्य समयानुकूल प्रयत्न।

प्रशिक्षण—

आज राजस्थान में खेलकूद की प्रगति का कारण आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण माना गया है। अतः प्रशिक्षण की सुविधा हेतु सम्पूर्ण राजस्थान को निम्नलिखित क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्रों में विभाजित किया गया है—

(1) जयपुर (2) जोधपुर (3) उदयपुर (4) बीकानेर (5) कोटा (6) अजमेर एवं (7) श्री गंगानगर

नेताजी सुभाष राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान, पटियाला से परिषद को उपलब्ध प्रशिक्षण एवं राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा नियुक्त प्रशिक्षक इन केन्द्रों पर लगातार निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

इन प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण तो प्रदान किया ही जाता है साथ ही समय एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुये खिलकूद का सामान इत्यादि भी प्रदान किया जाता है। इस दौरान प्रशिक्षक सदैव खेलकूद में नवीन प्रतिभाओं की खोज करते रहते हैं। तथा इन चुने हुये खिलाड़ियों को वार्षिक केन्द्रीय प्रशिक्षण शिविर हेतु आमन्त्रित किया जाता है। समय, सुविधा एवं माग को दृष्टिगत रखते हुये प्रशिक्षकों को एक से दूसरे प्रशिक्षण केन्द्र पर स्थानांतरित किया जाता है। इस प्रकार क्षेत्रीय प्रशिक्षण में सम्पूर्ण वर्ष प्रशिक्षण कार्य चलता रहता है।

भारत सरकार की राष्ट्रीय प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत पटियाला संस्थान के सहयोग से जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई हैं।

खेल प्रशिक्षण शिविर आबू पर्वत—

राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा देश में सर्वप्रथम युवा और मेधावी खिलाड़ियों के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सन् 1959 में किया गया जिसकी सम्पूर्ण राष्ट्र ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की, तब से यह कार्यक्रम परिषद का एक अभिन्न अंग सा हो गया है। इस वर्ष भी आबू पर्वत पर चौबीसवें केन्द्रीय वार्षिक खेल ... ही क्षेत्रीय

... पटियाला

से प्रतिनियुक्ति पर तथा राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के पूर्ण एवं अल्पकालिक, विभिन्न खेलों में कुल 80 प्रशिक्षक उपलब्ध हैं। इनमें महिला प्रशिक्षिकाएं भी हैं।

राज्य स्तरीय खेल संगठन—

अखिल भारतीय स्तर पर प्रत्येक खेल को अलग-अलग विकसित, प्रोत्साहित करने तथा प्रति वर्ष इन खेलों की नियमित प्रतियोगिताए आयोजित करने के लिये भिन्न-भिन्न संगठन है। परिषद ने अपने निर्माण के पश्चात् इस शैली में राजस्थान में भी विभिन्न राज्यस्तरीय खेल संगठनो, के निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया। सर्व प्रथम विभिन्न मुख्य तथा राजस्थान में लोकप्रिय 14 खेलों के संगठनों का निर्माण हुआ। तथा अखिल भारतीय स्तर के संघो से इन्हें परिषद द्वारा

मान्यता दिलाई गई। अब स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद से विभिन्न खेलों के करीब 30 राज्य स्तरीय खेल संगठन मान्यता प्राप्त एवं सम्बद्ध हैं।

इन राज्य स्तरीय खेल सगठनों की इकाइयां प्रत्येक जिले में कार्यशील है। तथा ये जिला इकाइयां राज्य स्तरीय संगठन से मान्यता प्राप्त एवं समबद्ध है।

जिस प्रकार अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न खेल संगठनों के आपसी तालमेल एवं नीति निर्धारण हेतु केन्द्रीय सरकार द्वारा भारतीय ओलम्पिक संघ का गठन किया गया हैं, उसी प्रकार राजस्थान में भी इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये राजस्थान ओलम्पिक संघ भी अपने राष्ट्रीय संगठन से मान्यता प्राप्त है। राजस्थान के विभिन्न राज्य स्तरीय खेल सगठनों को भी राजस्थान ओलम्पिक सघ से मान्यता प्राप्त करनी होती है।

स्टेडियम :—

राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद राज्य के प्रायः सभी बड़े शहरों में स्टेडियम का निर्माण करने के लिये प्रयत्नशील है। इसके लिये परिषद के समक्ष सबसे बडी धनाभाव की समस्या है। परिषद येन केन प्रकारेण स्टेडियम बन वाने के लिये प्रयत्नशील है। इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण कदम जयपुर का सवाई मानसिंह स्टेडियम है। इस स्टेडियम के निर्माण के लिये जयपुर के भूतपूर्व महाराजा स्वर्गीय सवाई मानसिंह जी ने लगभग 90 एकड भूमि प्रदान की है। पूरे निर्माण के बाद भारत के सर्वश्रेष्ठ स्टेडियमों में से एक होगा। इसमें लगभग 30 हजार दर्शकों के बैठने की व्यवस्था होगी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू नें इसका शिलान्यास किया था। यद्यपि अभी यह अपूर्ण है तो भी इसके विशाल मैदान में सदैव भाँति भाँति की प्रतियोगितायें व कार्यक्रम सम्पन्न होते रहते है। अब परिषद का स्थायी कार्यालय स्टेडियम में ही स्थानान्तरित हो गया है। जयपुर के अलावा अन्य नगरों जैसे अजमेर, जोधपुर, कोटा, बीकानेर, उदयपुर में भी स्टेडियम बनवाने के प्रयास हो रहे है तथा कहीं कहीं पर निर्माण कार्य भी चल रहा है। इस सम्बन्ध में अखिल भारतीय क्रीडा परिषद (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) से भी विभिन्न स्थानों पर स्टेडियम बनवाने के लिये अनुदान प्राप्त हुये हैं व अन्य के लिये अनुदान प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

खेल छात्रवृत्ति एवं खुराक भत्ता :—

परिषद द्वारा राज्य के उदीयमान तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करने वाले एथलीट व खिलाड़ियों को खेलवृत्ति व खुराक भत्ता प्रदान किया जाता है इसी प्रकार मुख्यमन्त्री अवार्ड योजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय

व राज्य स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करने वाले एथलीट को क्रमशः 1000/-रु० व 500/-रु० की राशि से पुरस्कृत किया जाता है। अन्य मेलों में भी अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी को खेल वृत्ति प्रदान की जाती है। साथ ही पुराने खिलाड़ियों तथा खेलकूद को प्रोत्साहित करने वाले कतिपय प्रमुख व्यक्तियों को भी आर्थिक सहायता के रूप में कुछ मासिक राशि प्रदान की जाती है। नेताजी सुभाष राष्ट्रीय क्रीडा संस्थान, पटियाला में प्रशिक्षकों के पाठ्यक्रम हेतु प्रशिक्षणार्थियों को परिषद छात्रवृत्ति प्रदान करती है।

राष्ट्रीय स्तर पर वरिष्ठ विजेता को पांच सौ रु०, उप विजेता को एक सौ पचास रु० व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को सौ रु० के पुरस्कार का प्रावधान है तथा राष्ट्रीय कनिष्ठ विजेता को तीन सौ रु., उप विजेता को सौ रु. व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को पचास रुपये पुरस्कार का प्रावधान है।-

जिला क्रीडा परिषदें—

राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद को अपने गठन के पश्चात सरकार द्वारा विशाल राजस्थान प्रान्त में खेलकूद प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने का कार्य सौंपा गया। अभी तक परिषद संगठन एवं आर्थिक स्थिति में इतनी सम्पन्न नहीं हो पाई है कि समस्त 27 जिलों में अपनी स्वतन्त्र इकाई स्थापित कर सके। अतः यह निर्णय लिया गया कि परिषद की खेल नीतियों का नियन्त्रण एवं संचालन जिला स्तर पर अधिकारिक रूप से जिला क्रीडा परिषद द्वारा किया जाव।

सारे राज्य में खेल कूद को लोकप्रिय बनाने एवं परिषद के कार्यक्रमों को व्यापक स्वरूप प्रदान करने के लिए परिषद की जिला इकाइयों के रूप में राजस्थान के समस्त 27 जिलों में जिला क्रीडा परिषद का गठन किया गया है। जिलाधीश इस परिषद के पदेन अध्यक्ष होते हैं। इसके अलावा खेलकूद में रूचि रखने वाले अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों को भी मनोनीत किया जाता है। महिलाओं में भी खेल भावना जाग्रत हो, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जिला क्रीडा परिषद के गठन में महिलाओं को स्थान दिया जाता है। समस्त जिले के खेल कूद संघों क्लबों आदि के साथ क्रीडा परिषद यद्यपि अपने श्रेष्ठतम रूप में कार्यशील नहीं हो पाई है। तथापि इस क्षेत्र में उनका कार्य सन्तोषजनक है और राज्य क्रीडा परिषद को जिला क्रीडा परिषदों से विभिन्न कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने में पर्याप्त सहायता प्राप्त हो रही है। अभी लिए एक निर्णय के अनुसार अब इन जिला क्रीडा परिषदों को नये स्वरूप में शीघ्र ही पुनर्गठित किया जायेगा।

परिषद को इस बात का गौरव प्राप्त है कि राजस्थान सम्पूर्ण राष्ट्र में छात्र प्रशिक्षण शिविर एवं ग्रामीण खेलकूद योजना का सर्वप्रथम मासिक रूप में प्रयोग करने वाला पहला राज्य है।

ग्रामीण खेलकूद योजना :—

सर्व प्रथम राजस्थान ने ही 1965 मे देश में ग्रामीण क्षेत्रों मे खेलकूद को प्रोत्साहन देने की योजना का सूत्रपात किया एवं जयपुर के निकट गोनेर में एक ग्रामीण खेल महोत्सव सम्पन्न हुआ ।

अपनी इस ग्रामीण खेल योजना को परिषद जिला परिषदों के माध्यम से प्रभावशाली रूप में ठोस आधार पर कार्यन्वित करती है । तथा जिला परिषदों के सहयोग से पंचायत समिति एवं जिला स्तर पर ग्रामीण प्रतियोगिताएं समय-समय पर होती रहती है । परिषद ग्रामीण खेल प्रतियोगिता हेतु अनुदान उपलब्ध करती है, खेल कूद का सामान प्रदान करती है तथा समय-समय पर अपने प्रशिक्षकों को योजना को प्रगति देने हेतु प्रतिनियुक्त करती हैं ।

राजस्थान ग्रामीण खेलों के विकास में नेहरू युवक केन्द्रों से भी पर्याप्त सहयोग प्राप्त हो रहा है । राज्य की 236 पंचायत समितियों में से 140 में ग्रामीण खेल कूद केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं । जन जाति मेला को भी बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है ।

अभी राज्य के श्रेष्ठ खिलाड़ियों को "प्रताप पुरस्कार" प्रदान करने, व्यापक खेल नीति तय करने, जिला स्तर पर खेल गतिविधियों को संगठित रूप से सजाने-सवारने, खेल सूचना केन्द्र स्पोर्टस मेडिकल तथा खेल डेटा जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं को अन्तिम रूप दिया गया है । आशा है, इसके बाद राजस्थान में खेलों का स्वरूप और निखरेगा ।

खेल उपलब्धियां

वर्ष-1982

राजस्थान सरकार द्वारा परिषद का आगामी तीन वर्षों के लिए श्रीगणेश सिंह की अध्यक्षता में पुनर्गठन गत दिसम्बर में किया गया था । अब तक की इस करीब एक वर्ष की अवधि में परिषद ने खेलकूद को प्रोत्साहित करने वाले अनेक नये कार्यक्रम प्रारम्भ कर आशातीत उपलब्धियां प्राप्त की हैं ।

प्रशिक्षण—

नवीन यो

इन शिविरों में पन्द्रह वर्ष तक की आयु के करीब डेढ हजार खिलाड़ियों को प्रशिक्षित किया गया । गत जनवरी माह में तेरह स्थानों पर पुनः प्रतिभा खोज फालोअप शिविरो मे करीब पांच सौ खिलाड़ियो को प्रशिक्षण दिया गया ।

माउंट आबू मे वार्षिक केन्द्रीय खेल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ तथा हाराकी शिविर जयपुर में आयोजित किया गया ।

दिल्ली

माउन्ट आबू में दो अखिल भारतीय क्रिकेट प्रशिक्षण शिविर भी लगाये गये तथा जयपुर मे मध्य क्षेत्र के क्रिकेट प्रशिक्षक श्री आईबरा द्वारा शिविर आयोजित किया गया।

उदयपुर में अखिल भारतीय बैडमिन्टन शिविर आयोजित किया गया।

जयपुर मे अखिल भारतीय महिला क्रिकेट तथा महिला हाकी प्रशिक्षण शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। इन शिविरों के संचालन की नेताजी सुभाष राष्ट्रीय क्रीडा संस्थान पटियाला द्वारा भी सराहना की गई।

प्रदेश के खेल इतिहास में पहली बार इस वर्ष पटियाला संस्थान व शिक्षा विभाग के सहयोग से खेल प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम जयपुर मे सम्पन्न हुआ। शारीरिक शिक्षकों का योग प्रशिक्षण शिविर भी जयपुर में लगाया गया।

परिषद द्वारा भरतपुर व अलवर में प्रशिक्षण केन्द्र प्रारम्भ किये गये तथा प्रदेश के अन्य स्थानों पर खेलों की लोकप्रियता एव गति प्रतियोगिताओ में परिणाम देख प्रशिक्षकों की प्रतिनियुक्तियां की गई।

ग्रामीण खेल एवं जनजाति क्षेत्र.

परिषद ने ग्रामीण खेल केन्द्रों पर भी सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर तथा उसके बाद तीन दिवसीय पंचायत समिति स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन की नई योजना शुरू की है। परिषद द्वारा आदिवासी जनजाति क्षेत्र में भी करीब तीस खेल केन्द्र संचालित किए जा रहे हैं।

इस वर्ष जन जाति क्षेत्र के करीब सौ खिलाड़ियों का विभिन्न प्रमुख खेलों मे करीब तीन सप्ताह का अलग से एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की योजना है।

इस वर्ष कोटा व जयपुर मे राज्य स्तरीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा गत दिनों अलवर में राज्य स्तरीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

महिला खेल

महिलाओं में खेलकूद के प्रति अभिरुचि जागृत करने के उद्देश्य से परिषद द्वारा पहले जिला स्तरीय और फिर जयपुर मे राज्य स्तरीय महिला खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस टूर्नामेन्ट मे चुनी राजस्थान की सात खेलों बास्केटबाल, जिमनास्टिक, हाकी, वालीबाल, टेबिल-टेनिस और खोखो की टीमों ने दिल्ली मे सम्पन्न अखिल भारतीय महिला खेल प्रतियोगिता में भाग लिया।

एशियाड

दिल्ली में राजस्थान की सुमित्रा भण्डारी तथा शान्ता न महिला हाकी में स्वर्ण पदक जीता। घुड़सवारी टीम स्पर्धा में रघुवीरसिंह, जी० एस० मान०

विशाल सिंह ने चैम्पियनशिप प्राप्त की तथा व्यक्तिगत मुकाबलों में रघुवीरसिंह ने स्वर्ण जी० एम० खान ने रजत व प्रहलादसिंह ने कांस्य पदक प्राप्त किया। गोल्फ में, चैम्पियनशिप जीतने वाले भारतीय टीम में लक्ष्मणसिंह थे और व्यक्तिगत स्वर्ण पदक भी लक्ष्मणसिंह ने प्राप्त किया।

इनके अलावा एथलेटिक्स में गोपाल सैनी, हमीदा बानो तथा निशानेबाजी मे डा० कर्णीसिंह ने रजत एवं एथलीट में राजकुमार तथा घुड़सवार प्रहलादसिंह ने कांस्य पदक प्राप्त किया।

साथ ही अजमेर सिंह ने बास्केटबाल, अमरसिंह ने साइकिलिंग, खान मोहम्मद खान ने घुड़सवारी, प्रभाकर राज एवं रमा पांडे ने वालीबाल एवं मानसिंह ने निशानेबाजी में भारत का प्रतिनिधित्व किया। बास्केटबाल में अजमेरसिंह ने सर्वाधिक अंक अर्जित करने का श्रेय प्राप्त किया।

प्रदर्शन खेल कबड्डी में गिरिराज एवं साधना भारतीय टीमों की ओर से खेले।

1. एथलेटिक्स—

सर्वोच्च राष्ट्रीय खेल सम्मान "अर्जुन पुरस्कार" से गत वर्ष श्री गोपाल सैनी (एथलीट) को सम्मानित किया गया। कोट्टायम में सम्पन्न राष्ट्रीय अन्तर राज्य एथलेटिक्स प्रतियोगिता में राजस्थान के एथलीटों ने 5 स्वर्ण, 4 रजत, 3 कांस्य पदक इस तरह कुल 12 पदक जीतें।

बीजिंग (चीन) में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में उदीयमान राजकुमार ने 5 हजार मी० की दौड़ में स्वर्ण जीता। सर्व श्री गोपाल सैनी, राजकुमार, हमीदा बानो को पश्चिम जर्मनी में विशेष प्रशिक्षण के लिए चुना गया था। ब्रिस्बेन के राष्ट्र मण्डलीय खेलों में राजकुमार ने 5 हजार मी० की दौड़ में 13·46·4 सेकं का राष्ट्रीय रिकार्ड स्थापित किया। अखिल भारतीय क्रास-कन्ट्री मद्रास में शर्मिला (भीलवाडा) ने 16 साल तक की लडकियों में कांस्य पदक जीता।

बम्बई में सम्पन्न पंच देशीय एथलेटिक्स स्पर्धा में राजस्थान की हमीदा बानो ने 400 मी० दौड़ व 400 मी० बाधा दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त किये। 5 हजार मी० की दौड़ में गोपाल सैनी ने कांस्य पदक जीता।

परीक्षण खेलों में राजस्थान ने 2 स्वर्ण, 4 रजत एवं 3 कांस्य पदक जीते।

2. बास्केटबाल—

राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान टीम उप विजेता रही। राजस्थान ने पश्चिम क्षेत्र खिताब जीता तथा अन्तर क्षेत्र मुकाबलों में दूसरा स्थान प्राप्त किया। गत दिनांक सियोल गई भारतीय बास्केटबाल टीम का उप कप्तान अजमेरसिंह

(कोटा) को बनाया गया। गोहाटी में राष्ट्रीय स्कूल खेलों में छात्रा टीम ने कांस्य पदक जीता।

3. मुक्केबाजी—

श्री लंका गई भारतीय मुक्के बाजी के एम० एल० सैनी (जयपुर) को बेस्ट लूजर ट्राफी प्रदान की गई।

4. साईकिल पोलो—

राष्ट्रीय सीनियर व जूनियर दोनों प्रतियोगिताओं मे राजस्थान टीम विजेता व राष्ट्रीय सब जूनियर मे उप विजेता रही।

5. साईकिलिंग—

राष्ट्रीय जूनियर साइकिलिंग मे राजस्थान के साइकिलिस्टों ने 5 स्वर्ण 8 रजत, 5 कास्य पदक जीते। दिल्ली मे सम्पन्न अखिल भारतीय महिला साईकिलिंग मे राजस्थान ने 2 कांस्य पदक प्राप्त किए। दिल्ली में परीक्षण खेलों में अमरसिंह ने 185 किमी० रोड रेस में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

6. हाकी—

रूस के दौरे पर गई भारतीय महिला हाकी टीम का नेतृत्व वर्षा सोनी ने किया। गंगोत्री भण्डारी भी इस टीम मे थी।

7. तैराकी—

अंजली न्याति ने राष्ट्रीय जूनियर तैराकी में कास्य पदक जीता। अमरावती मे सम्पन्न अन्तर विश्व विद्यालय तैराकी-प्रतियोगिता में राजस्थान के महिपालसिंह को गोता खोरी में स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

8. स्कैवश—

हनीशर्मन राष्ट्रीय महिला स्कैवश प्रतियोगिता मे उप विजेता रही। भुवनेश्वरी (अलवर) ने बम्बई मे अखिल भारतीय स्कवेश प्रतियोगिता का खिताब जीता।

9. वालीबाल—

राजस्थान टीम ने गत वर्ष राष्ट्रीय चैम्पियनशिप जीता। जापान, कोरिया गई भारतीय टीम में आर० के० पुरोहित को सम्मिलित किया गया। श्रीलंका गई भारतीय महिला टीम में रमा पांडे को लिया गया। राष्ट्रीय जूनियर मे राजस्थान उप विजेता रही।

10. कुश्ती—

राष्ट्रीय दंगल मे राजस्थान के पहलवानों ने 4 रजत पदक जीते। भारतीय पहलवानों के साथ राजेन्द्र प्रशिक्षण के लिये सोवियत संघ गये।

11. भारोतोलन—

दिल्ली में सम्पन्न राष्ट्रीय भारोतोलन प्रतियोगिता में अर्नेस्ट बैरी ने रजत पदक जीता।

12. निशानेबाजी—

ब्रिस्बेन में सम्पन्न राष्ट्रमन्डलीय खेलों की निशानेबाजी प्रतियोगिता में मेजर श्रापजी कल्याणसिंह (कोटा) ने अधिकारी के रूप में भाग लिया।

ग्रामीण खेल—

अखिल भारतीय स्तर पर गत वर्ष राजस्थान कबड्डी टीम विजेता रही एवं पहलवानों ने भी दो रजत पदक जीते। बालीबाल में लड़कों की टीम उप-विजेता एवं लड़कियों की टीम का तृतीय स्थान रहा। शिमोगा (कर्नाटक) में सम्पन्न अखिल भारतीय ग्रामीण खेलों में कोटा की भारतीसिंह ने एथलेटिक्स में रजत पदक जीता। बास्केटबाल टीम का चौथा स्थान रहा।

एशियाड—

रामगढ़ बन्धे पर आयोजित एशियाई खेलों की नौकायन प्रतियोगिता के लिए गठित यातायात उप समिति में परिषद के अध्यक्ष को राज्य सरकार द्वारा अध्यक्ष मनोनीत किया गया। परिषद के अध्यक्ष समन्वयक समिति के भी सदस्य मनोनीत किये गये थे।

नये खेल—

राज्य में खेल, गतिविधियां निरन्तर बढ़ रही है— नये खेल महिला फुटबाल, गोल्फ, बाल बेडमिन्टन, पावर लिफ्टिंग, मुक्केबाजी, जूडो शूटिंगबाल, रस्सा कस्सी, पर्वतारोहण, नौकायन तलवार-बाजी, थ्रो बाल आदि का शनैः शनैः विकास हो रहा है।

वित्त—

वर्ष 82–83 के लिए राज्य सरकार द्वारा परिषद को करीब बत्तीस लाख रुपये का अनुदान दिया गया है। हर्ष का विषय है कि राज्य सरकार ने खिलाड़ी कल्याण कोष की योजना हेतु अलग से एक लाख रुपये का प्रावधान किया है।

परिषद ने अर्जुन पुरस्कार विजेता एथलीट श्री गोपाल सैनी को पांच सौ रुपये मासिक, 500 मी० की दौड़ में राष्ट्रीय रिकार्ड स्थापित करने वाले राजकुमार को चार सौ रु० प्रतिमाह तथा प्रदेश के अन्य प्रतिभाशाली अठारह खिलाड़ियों को दो सौ रुपये मासिक सहायता के साथ कुछ बुजुर्ग विभिन्न खिलाड़ियों को भी छः सौ रु० वार्षिक सहायता दी है। एक वेटर्न एथलीट के साथ पर्वतारोहियों को भी पुरस्कार दिये गये।

परिषद राष्ट्रीय सीनियर विजेता को पाच सौ, उप-विजेता को डेड सौ व तृतीय स्थान प्राप्तकर्ता को सौ तथा जूनियर में क्रमशः तीन सौ, सौ व पचास रु०

का पुरस्कार देती है। राष्ट्रीय कीर्तिमान बनाने पर एक हजार व राज्य रिकार्ड स्थापित करने पर पांच सौ रु० का पुरस्कार दिया जाता है।

प्रदेश में अनेक महत्वपूर्ण खेल आयोजन भी हुए हैं कोटा में पश्चिम क्षेत्र बास्केटबाल, जयपुर में उत्तर क्षेत्र कबड्डी, अजमेर में उत्तर क्षेत्र टेबिल टेनिस, कोटा में अखिल भारतीय साहनी बास्केटबाल, जयपुर में अडवानी बास्केटबाल, उदयपुर में कुमार मंगलम् तथा जोधपुर में जयनारायण व्यास फुटबाल जयपुर में ए० के० जी० कबड्डी आदि इनमें प्रमुख हैं। जोधपुर में अखिल भारतीय स्कवेश प्रतियोगिता तथा लक्ष्मणगढ़ सीकर में वालीबाल प्रतियोगिता खेली गई। इसके अलावा जोधपुर में पश्चिम क्षेत्र व अखिल भारतीय अन्तर क्षेत्र वालीबाल तथा उदयपुर में दक्षिण क्षेत्र महिला वालीबाल प्रतियोगिता खेली गई। साथ ही जयपुर

गये।

विश्वास है 1983 के वर्ष में प्रदेश के खिलाड़ी व टीमें राष्ट्रीय के साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यश और कीर्ति अर्जित करेंगे।

राज्य में खेल मन्त्रालय की स्थापना

केन्द्रीय सरकार में खेल मन्त्रालय की स्थापना एवं निर्देशों से उत्साह पाकर राज्य में सरकार द्वारा खेल मंत्रालय की स्थापना की गई है। इसका राज्य के बजट में अपना खेलों के लिए बजट है तथा आशा है इससे खेलकूद कार्यक्रमों में आशातीत सफलता मिलेगी।

सर्वोच्च राज्य खेल सम्मान

'महाराणा प्रताप पुरस्कार' 1982-83

प्रतिवर्ष प्रदेश के प्रमुख खेलों के श्रेष्ठ खिलाडियों को राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद ने "महाराणा प्रताप" पुरस्कार से विभूषित करने का निर्णय लिया है। परिषद की रजत जयन्ती के उपलक्ष में इसी वर्ष से प्रारम्भ की जा रही इस महत्वपूर्ण योजना के अन्तर्गत प्रथम वर्ष 1982-83 के महाराणा प्रताप पुरस्कार गत वर्ष सम्पन्न एशियाड के पदक विजेता राजस्थान के ग्यारह खिलाडियों को दिये गये हैं।

प्रदेश के इस पुरस्कार के विजेता खिलाड़ी को परिषद वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की कांस्य प्रतिमा, प्रशस्ति पत्र एवं एक हजार रुपये की राशि से सम्मानित करती है यह पुरस्कार हर वर्ष प्रताप जयन्ती के पुनीत अवसर पर दिया जाता रहेगा।

सर्वोच्च राष्ट्रीय खेल सम्मान अर्जुन पुरस्कार की भांति इस पुरस्कार योजना से निश्चय ही खिलाडियों का मनोबल बढेगा। इस साल 13 जून 1983 को प्रताप जयन्ती के अवसर पर ये पुरस्कार निम्न प्रकार दिये गये—

विजेता खिलाड़ी, महाराणा प्रताप पुरस्कार

एथलेटिक्स— (1) श्री गोपाल सैनी
(2) सुश्री हमीदा बानू
(3) श्री राजकुमार अहलावत
घुडसवारी (4) कैप्टन गुलाम मोहम्मद खान
(5) श्री प्रहलाद सिंह
(6) श्री रघुवीर सिंह
(7) श्री विशाल सिंह
गोल्फ (8) श्री लक्ष्मण सिंह
महिला हाकी (9) सुश्री गंगोत्री भण्डारी
(10) सुश्री वर्षा सोनी
निशाने बाजी (11) डा. कर्णीसिंह

नवम एशियाई खेल दिल्ली में पदक विजेता राजस्थानी खिलाडी

श्री लक्ष्मण सिंह—श्री लक्ष्मण सिंह ने गोल्फ में स्वर्ण पदक जीता था। इनका जन्म 16 अक्टूबर 1951 को हुआ है। आप स्व० राव राजा हनुत सिंह जी के पौत्र एवं राव राजा विजय सिंह जी के पुत्र हैं। आपने 1972 व 73 में श्री लंका में शौकिया गोल्फ चैम्पियन शिप जीती तथा 1973 में सम्पन्न एशियाई शौकिया गोल्फ, चैंपियन शिप में विजेता भारतीय टीम के सदस्य थे। अर्जुन पुरस्कार

दफेदार रघुवीर सिंह—एशियाड़ में घुडसवारी के लिए स्वर्ण पदक विजेता श्री रघुवीर सिंह का जन्म 8 मई 1951 मे पटौदा जिला झुन्झनूं मे हुआ। आप वर्तमान में भारतीय सेना मे सेवारत हैं। इसी वर्ष आपको पद्म श्री से अलंकृत किया गया है। अर्जुन पुरस्कार

कैप्टेन गुलाम मोहम्मद खान—एशियाड़ में घुडसवारी टीम के स्वर्ण पदक विजेता खान का जन्म 11 जुलाई 1946 को सयाना, जिला नागौर मे हुआ है। आप वर्तमान में भारतीय सेना मे सेवारत है।

रिसाल दार विशाल सिंह—एशियाड़ में स्वर्ण पदक विजेता (घुड़ सवारी टीम) श्री सिंह का जन्म 3 जनवरी 1943 को सनया लोढ़ा, जिला सीकर में हुआ। आप भारतीय सेना में सेवारत हैं आपने मास्को ओलम्पिक में भी भाग लिया था।

सुश्री वर्षा सोनी--एशियाड में स्वर्ण पदक विजेता (महिला हाकी टीम) सुश्री वर्षा सोनी का जन्म 12 मार्च, 1957 को जयपुर में हुआ। आप पश्चिमी रेलवे में सेवारत हैं। आपने मास्को ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। सुश्री सोनी को 23 अक्टूबर 1983 को राजस्थान युवा रत्न पुरस्कार भी खेलों के लिए दिया गया है। अर्जुन पुरस्कार

सुश्री गंगोत्री भण्डारी—एशियाड में स्वर्ण पदक विजेता (महिला हाकी टीम) सुश्री गंगोत्री भण्डारी का जन्म 13 अगस्त 1956 को जयपुर में हुआ। आप पश्चिमी रेलवे में सेवारत हैं तथा आपने ओलम्पिक 1980 में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

श्री गोपाल सैनी—एशियाड में रजत पदक विजेता श्री गोपाल सैनी का जन्म 18 अप्रेल 1954 में जयपुर में हुआ। आप स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर में अधिकारी हैं, आपको अर्जुन पुरस्कार मिल चुका है, तथा वर्तमान में आप राजस्थान खेल परिषद के सदस्य हैं। आपने मास्को ओलम्पिक (1980) में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

सुश्री हमीदा बानो—एशियाड में रजत पदक विजेता सुश्री बानो का जन्म 28 अगस्त 1958 में उदयपुर में हुआ। आप पश्चिमी रेलवे मे सेवारत हैं।

डॉ० कर्णी सिंह—एशियाड में रजत पदक विजेता (ट्रेप शूटिंग टीम) डा० कर्णीसिंह का जन्म 27 अप्रेल 1924 को बीकानेर में हुआ। आप अर्जुन पुरस्कार विजेता हैं तथा भूतपूर्व बीकानेर नरेश एवं सांसद हैं।

श्री राजकमार अहलावत—एशियाड़ में कांस्य पदक विजेता (पांच हजार मीटर दौड़) श्री अहलावत का जन्म 2 मार्च 1962 को जयपुर में हुआ। आप पश्चिमी रेलवे में सेवारत हैं।

दफेदार प्रहलाद सिंह—एशियाड़ में कांस्य पदक विजेता (घुड़ सवारी) श्री सिंह का जन्म 23 नवम्बर 1943 को हुकुमपुरा जिला झुन्झुनू में हुआ। आप भारतीय सेना में सेवारत हैं।

राजस्थान की अर्जुन पुरस्कार विजेता महिला खिलाडी

(1) रोमा दत्त—तैराकी
(2) मंजरी भार्गव—तैराकी
(3) सुनीता पुरी—हाकी
(4) भुवनेश्वरी कुमारी—निशाने बाजी स्क्वैश
(5) राज्य श्री कुमारी—निशाने बाजी

छठे राष्ट्रीय महिला खेलकूद समारोह में सम्मिलित खेल- आयोजन जयपुर में।

(1) ऐथलेटिक्स
(2) बेडमिन्टन
(3) बास्केट बाल
(4) जिमनास्टिक
(5) हाकी
(6) कबड्डी
(7) खो-खो
(8) लॉन टैनिस
(9) टेबिल-टेनिस
(10) वॉली बाल।

राजस्थान में महिला खेल

अन्तर्राष्ट्रीय

(1) लंका महिला हाकी प्रदर्शन मैच, जयपुर	1960–61
(2) उबेर कप (महिला) बैडमिन्टन, जयपुर	1962–63
(3) न्यूजीलैण्ड महिला बैडमिन्टन, जोधपुर	1962–63
(4) युगान्डा महिला हाकी मैच, जयपुर	1970–71
(5) थाईलैण्ड महिला फुटबाल मैच, कोटा	1973–74
(6) भारत-रूस महिला हाकी मैच, जयपुर	1980–81

राष्ट्रीय

(1) राष्ट्रीय महिला हाकी, जयपुर	1962–63
(2) राष्ट्रीय महिला हाकी, जयपुर	1974–75
(3) राष्ट्रीय महिला खेल, जयपुर	1980–81

राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय महिला खिलाडी

(1) वर्षा सोनी—हाकी
(2) गंगोत्री भण्डारी—हाकी
(3) रमा पान्डे—वालीबाल (अर्जुन पुरस्कार)

गुलाबी नगर जयपुर का सवाईमानसिंह स्टेडियम

1957 में राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के निर्माण के साथ ही राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर में एक आधुनिक स्टेडियम की आवश्यकता महसूस की जा रही थी, जिसके लिए एक विस्तृत भू-भाग उचित स्थल पर आवश्यक था।

जयपुर के महाराजा तथा प्रख्यात पोलो खिलाड़ी स्वर्गीय मान सिंह जी ने इस मांग का औचित्य स्वीकार कर रामबाग पैलेस के सामने 90 एकड़ भूमि स्टेडियम के लिए परिषद को प्रदान की। उस समय भूमि काफी ऊबड़-खाबड़ थी, उसे समतल करने में काफी समय तथा श्रम लगा। तत्पश्चात् भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने नवम्बर 4, 1963 को सवाई मान सिंह स्टेडियम का शिला न्यास किया। तब से अब तक सवाई मानसिंह स्टेडियम जयपुर के नागरिकों के लिए ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के आयोजन के लिए भी सुलभ श्रेष्ठ क्रीडा स्थल हो गया है।

सवाई मानसिंह स्टेडियम पर हुई अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय प्रतियोगितायें

(1) आस्ट्रेलिया तथा मध्य क्षेत्र क्रिकेट मैच	1969
(2) श्री लंका तथा जयपुर जिला हाकी संघ प्रदर्शन मैच	1971
(3) श्री लंका तथा जयपुर जिला हाकी संघ प्रदर्शन मैच	1972
(4) आस्ट्रेलिया ओल्ड कालेजियन व राजस्थान एकादश मैच	1974
(5) पाकिस्तान तथा मध्य क्षेत्र क्रिकेट मैच	1979
(6) भारत तथा रूस महिला हाकी मैच	1980
(7) भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच	1983
(8) वेस्ट इन्डीज—मध्य क्षेत्र क्रिकेट मैच	1983

राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं

(1) द्वितीय अखिल भारतीय ग्रामीण क्रीडा प्रतियोगिता	1971
(2) राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता	1973
(3) राष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता	1974
(4) राष्ट्रीय टेबिल-टेनिस प्रतियोगिता	1975
(5) राष्ट्रीय बास्केटबाल प्रतियोगिता	1979
(6) राष्ट्रीय महिला खेल-कूद समारोह	1980

1982 के अर्जुन पुरस्कार विजेता राजस्थान के खिलाड़ी

(1) अजमेर सिंह—बास्केटबाल

(2) रघुवीर सिंह—घुड़ सवारी (पद्मश्री)

(3) लक्ष्मण सिंह—गोल्फ

(4) भुवनेश्वरी कुमारी—स्क्वेश

(5) वर्षा सोनी—महिला हाकी

राज्य की शिक्षण संस्थाओं में खेल कूद

राजस्थान राज्य में शिक्षण संस्थाओं में खेलकूद निम्न इकाइयों के माध्यम से सम्पादित होते हैं—

(1) प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के निदेशालय के अन्तर्गत खेलकूद।

(2) कालेज शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत खेल कूद।

(3) विश्व विद्यालय के अन्तर्गत खेलकूद।

(4) ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के अन्तर्गत खेलकूद।

(1) प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के निदेशालय के अन्तर्गत खेल कूद— राज्य के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत प्राथमिक (शहरी), उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एव उच्च माध्यमिक शालाओं के शाला स्तर पर, जोन स्तर पर, जिला स्तर पर, सभाग स्तर पर तथा राज्य स्तर पर छात्राओं एवं छात्रों के इस निदेशालय के पंचांग द्वारा निर्धारित तिथिक्रम के अनुसार खेलकूदों का आयोजन होता है। इसमें सामान्यत: वे सभी खेल होते हैं जो राज्य में प्रचलित हैं।

(2) कालेज शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत खेल कूद—इस निदेशालय के अन्तर्गत अन्तर-कालेज, सभाग स्तर तथा राज्य स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के खेलों का आयोजन किया जाता है।

(3) विश्व विद्यालय के अन्तर्गत खेलकूद—विश्व विद्यालयों द्वारा राजस्थान में अपने अधीन सस्थाओं का तथा अन्तर विश्वविद्यालय स्तर की खेल कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

(4) ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के अन्तर्गत खेलकूद—राज्य की प्राथमिक शिक्षा (नगरीय क्षेत्रों को छोड़कर) ग्रामीण विकास एव पंचायती राज विभाग के अन्तर्गत है। इन शालाओं की पंचायत समिति के जोन्स पर, पंचायत समिति स्तर पर, जिला परिषद स्तर पर तथा राज्य स्तर पर प्रतियोगितायें होती है।

इस प्रकार शिक्षा की विभिन्न इकाइया राज्य में खेलकूदों के विकास के लिए पूर्ण जागरुक एवं तत्पर हैं।

5

राजस्थान तब और अब

(Rajasthan Then & Now)

यहाँ नीचे की सारणी में हमें उन तथ्यों का ज्ञान होता है जिनमें हमने प्रथम पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ से लेकर अब तक कितनी महत्वपूर्ण प्रगति की है—

राजस्थान : तब और अब

मद	इकाई	1950–51 के अन्त में स्थिति	वर्तमान (82–83)
1	2	3	4
कृषि—			
खाद्यान्न उत्पादन	लाख टन	29.46	73.46
तिलहन	,,	0.83	7.67
कपास	लाख गांठें	0.70	5.36
अधिक उपज देने वाली फसलों का क्षेत्रफल	लाख हैक्टर	—	24.25
गेहूं	लाख हैक्टर	—	30.29
सिंचाई—			
कुल सिंचित क्षेत्र	लाख हैक्टर	11.71	40.84
विद्युत—			
उपलब्ध विद्युत क्षमता	मेगावाट	8	1,240.34
बस्तियों का विद्युतीकरण	संख्या	92	16,862
कुओं पर बिजली	,,	—	2,38,725
उद्योग—			
लघु उद्योग इकाइयां	,,	—	82,600
औद्योगिक क्षेत्र	,,	—	145
राजस्थान वित्त निगम द्वारा	,,	—	
ऋण वितरित	करोड़ रुपये	—	138.19

1	2	3	4
सड़क—			
सड़कों की लम्बाई	किलोमीटर	18,749	44,691
पशुपालन—			
पशु चिकित्सालय एवं औषधालय	संख्या	145	687
सहकारिता—			
सहकारी समितियां	संख्या	3,590	18,275
सदस्य संख्या	लाखों में	1.45	50.78
अल्प एवं मध्यकालीन ऋण	करोड़ रु.	0.14	134.00
दीर्घकालीन ऋण	,,	—	21.3
स्वास्थ्य—			
एलोपैथिक चिकित्सालय, औषधालय एवं एडपोस्ट	संख्या	390	1,318
चल चिकित्सालय	,,	—	—
एलोपैथिक रोगी शैयाएं	,,	5,720	19,001
आयुर्वेदिक यूनानी चिकित्सालय एवं औषधालय	,,	350	2,601
होम्योपैथिक औषधालय	,,	—	63
प्राकृतिक चिकित्सालय	,,	—	2
आयुर्वेदिक रोगी शैयाएं	,,	100	825
पेयजल—			
नगरीय योजनायें	संख्या	5	समस्त 201 नगरों में
ग्रामीण योजनायें	,,	—	14,550
शिक्षा—			
प्राथमिक विद्यालय	संख्या	4,494	23,125
उच्च प्राथमिक विद्यालय	,,	834	5,597
माध्यमिक विद्यालय	,,	209	2,517
उच्च माध्यमिक विद्यालय	,,	—	508
महाविद्यालय	,,	51	148
विश्वविद्यालय	,,	1	3
साक्षरता	प्रतिशत	1951	24.05

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों की प्रगति के आंकड़े

राजस्थान में जनसंख्या की स्थिति

वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)	दसवर्षीय वृद्धि पर %
1941	1·39	18·0
1951	1·60	15·2
1961	2·02	26·2
1981	3·41	32·4

1981 में श्रम शक्ति का व्यावसायिक वितरण

श्रेणी	लाखों मे	कुल का %	
(1) कृषक	64·36	62·2	69·6
(2) खेतिहर मजदूर	7·63	7·4	
(3) घरेलू उद्योगों मे लगे श्रमिक	3·77	3·6	
(4) अन्य श्रमिक पशुधन, वन, खनन, विनिर्माण, व्यापार, परिवहन आदि	27·74	26·8	
कुल	103·50	100·00	

राजस्थान में भूमि का उपयोग

वर्गीकरण	(लाख हेक्टेयर मे) 1951–52	रिपोर्टिंग क्षेत्र का प्रतिशत	(लाख हेक्टेयर में) 1979–80	रिपोर्टिंग क्षेत्र का प्रतिशत
(1) रिपोर्टिंग क्षेत्रफल	342·8	100·0	342·3	100.0
(2) वन	11·6	3·4	20·7	6·0
(3) कृषि के लिए अप्राप्य	89·8	26·2	62·9	18·4
(4) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि	90·0	26·3	64·0	18·7
(5) परती भूमि	58·3	17·0	52·6	15·4
(6) शुद्ध कृषित भूमि	93·1	27·1	142·1	41·5
(7) एक से अधिक बार जोता गया क्षेत्र	4·4	1·3	21·6	6·3
(8) सकल कृषित क्षेत्र	97·5	28·4	163·7	47·8

राजस्थान में विभिन्न साधनों द्वारा सिंचाई (लाख हेक्टेयर में)

वर्ष	नहरें	तालाब	कुएं व अन्य साधन	योग
1951–52	2·24	0·82	7·01	10·07
1979–80	9·81	2·14	21·12	33·07

1974–75 से 1983–84 तक राजस्थान में खाद्यान्नों का उत्पादन

वर्ष	(लाख टनों में)
1974–75	49·8
1975–76	77·4
1976–77	74·9
1977–78	71·6
1978–79	78·2
1979–80	52·4
1980–81	65·0
1981–82	71·5
1982–83	73·5
1983–84 (लक्ष्य)	89·1

राजस्थान में कृषिगत उत्पादन के सूचनांक (1967–68 से 1969–70 = 100)

वर्ष	खाद्य फसलें	अखाद्य फसलें	सभी फसलें
1970–71	177	212	181
1980–81	138	176	143
1981–82	154	260	167·5

राज्य में कृषिगत उत्पादन में वृद्धि की दर

(प्रति हेक्टेयर उपज कि० ग्राम में)

फसल	1950–51	1978–79
(1) चावल	455	1,112
(2) ज्वार	215	401
(3) बाजरा	161	25[illegible]
(4) गेहूँ	546	1,[illegible]
(5) तिल	61	[illegible]
(6) कपास	123	[illegible]
(7) गन्ना	24,382	[illegible]

राजस्थान का भारत की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में स्थान

वर्ष	कुल पंजीकृत फैक्टरियों का %	लगाई गई पूंजी का %	रोजगार का %	विनिर्माण द्वारा जोड़े गये मूल्य का %
1951	1·4	1·8	1·1	0·5
1978–79	2·6	3·2	2·2	2·6

राजस्थान में उद्योगों की प्रकृति के अनुसार फैक्ट्रियों का प्रतिशत विवरण

(1) साधन आधारित उद्योग (कृषि-पदार्थ, पशुधन, वन व खनिज पदार्थ आधारित)	45·7
(2) उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योग	20·1
(3) उत्पादक वस्तुओं के उद्योग	6·1
(4) सामान्य इन्जीनियरी उद्योग	12·7
(5) रसायन, छपाई, प्रकाशन, विद्युत रोशनी, शक्ति, वाटर वर्क्स व सप्लाई	15·4
कुल	100·0

राजस्थान में औद्योगिक उत्पादन की प्रगति

प्रमुख उद्योगों के उत्पादन में वृद्धि

वस्तु का नाम	इकाई	1971	1981	1982
(1) सीमेंट	(लाख टन)	14·0	21·5	22·2
(2) चीनी (जुलाई-जून)	(हजार टन)	11·0	13·0	23·0
(3) यूरिया	(लाख टन)	2·6	2·7	3·2
(4) सुपर फास्फेट	(हजार टन)	45	36	38
(5) बाल बीयरिंग	(लाखों में)	73	98	91
(6) बिजली के मोटर	(लाखों में)	4·9	1·8	2·4
(7) नमक	(लाख टन)	5·5	9·4	7·4

राजस्थान का पंचवर्षीय योजनाओं में औद्योगिक विकास

योजना	सार्वजनिक क्षेत्र में कुल वास्तविक परिव्यय (करोड़ रुपये)	उद्योग व खनन पर परिव्यय (करोड़ रुपये)	उद्योगों व खनन पर कुल परिव्यय का प्रतिशत
I	54	0·46	0·8
II	103	3·38	3·3
III	213	3·32	1·4
तीन वार्षिक योजनायें (1966–69)	137	2·07	1·5
IV (1969–74)	309	8·55	2·8
V (1974–79)	858	34·53	4·0
1979–80	290	11·9	4·1
1980–81	340	13·2	4·0
1981–82	360	13·5	3·7
1982–83	340	16·1	4·7
1983–84 (प्रस्तावित)	416	18·6	4·5

राजस्थान में कुटीर एवं लघु उद्योगों पर पंचवर्षीय योजनाओं में व्यय

(लाख रुपयों में)

I योजना	32·4
II योजना	325·3
III योजना	198·2
तीन वार्षिक योजनायें (1966–1969)	31·4
IV योजना	8[illegible]
V योजना	

नियोजित विकास के 32 वर्ष
राजस्थान में विभिन्न योजनाओं में व्यय

(करोड़ रुपयों में)

	प्रस्तावित व्यय की राशि	वास्तविक व्यय की राशि
प्रथम योजना	64·5	54·1
द्वितीय योजना	105·3	102·7
तृतीय योजना	236·0	212·7
वार्षिक योजनायें (1966–69)	132·7	136·8
चतुर्थ योजना	306·2	308·8
पंचम योजना (1974–79)	847·2	857·6
1979–80	275·0	290·2
1980–85	2025	(योजना जारी)
(छठी योजना)		
1980–81	325	309
1981–82	360	352
1982–83	340	354
1983–84	416	(जारी)

राजस्थान की 1983–84 की वार्षिक योजना

मदें	(करोड़ रु०)	कुल का %
(1) कृषि व सम्बद्ध सेवायें	69·8	16·8
(2) सहकारिता	5·5	1·3
(3) सिंचाई व विद्युत	216·4	52·0
(4) उद्योग व खनिज	18·6	4·5
(5) परिवहन व संचार	19·0	4·6
(6) सामाजिक व सामुदायिक सेवायें	85·1	20·3
(7) अन्य	2·3	0·5
कुल	416·7	100·0

योजनाओं में सार्वजनिक व्यय की स्थिति

(वास्तविक व्यय में %)

विकास का शीर्षक	प्रथम योजना	द्वितीय योजना	तृतीय योजना	तीन वार्षिक योजनायें	चतुर्थ योजना	पंचम योजना	1979–80	छठी योजना 1980–85	1883–84
(1) कृषि कार्यक्रम	6·6	11·0	11·3	14·6	8 2	9·3	17 6	16·0	16·8
(2) सहकारिता व सामुदायिक विकास	6·0	14·0	8 0	3·7	2·7	1·8	1 6	1·2	1·3
(3) सिंचाई व शक्ति	58·3	37·2	54·4	60·6	58·4	57·2	54·8	52·4	52·0
(4) उद्योग व खनन	0·8	3·3	1·4	1·5	2·6	4·0	4·1	4·2	4·5
(5) परिवहन, संचार व पर्यटन	10·3	9·8	4·7	3·2	3·2	9·8	7·8	6 7	4·6
(6) सामाजिक सेवायें	16·9	23·6	19·7	15·5	24·0	17·4	13·7	19·0	20·3
(7) विविध	1·1	1·1	0·5	0.9	0·9	0·5	0·4	0·5	0·5
कुल	100·0	100·0	100·0	100.0	100·0	100·0	100·0	100·0	100·0
वास्तविक व्यय करोड़ रुपयों में	54·1	102·7	212·7	136·8	308·8	857·6	290·2	2025·0	416·0

राजस्थान में योजनाकाल के 32 वर्षों (1951 से 83 में आर्थिक प्रगति

राजस्थान में योजनाकाल में आर्थिक प्रगति हुई है, फिर भी यह राज्य भारत मे सबसे ज्यादा निर्धन व पिछड़े हुए राज्यों में गिना जाता है। हम नीचे संक्षेप में 1951 से 1983 तक की अवधि में हुई आर्थिक प्रगति पर प्रकाश डालेंगे। जिससे पता चलेगा कि राजस्थान ने 32 वर्षों में राज्य की आमदनी, कृषिगत उत्पादन, सिचाई, शक्ति औद्योगिक विकास, सड़क, शिक्षा, चिकित्सा, जल सप्लाई आदि क्षेत्रों में प्रगति की है, लेकिन अभी तक बहुत कुछ करना बाकी है।

1. राज्य की आय में परिवर्तन—योजनाकाल के प्रथम दो दशकों में राज्य की आय लगभग दुगुनी हो गई थी। आजकल राज्य की आय के आकड़े 1970-71 की कीमतों पर उपलब्ध हैं। इनके अनुसार राज्य की आय 1970-71 में 1579 करोड़ रुपयों से बढ़कर 1980-81 में 1866 करोड़ रुपये (स्थिर कीमतों पर) हो गई है लेकिन प्रति व्यक्ति आय 620 रुपये से घटकर 555 रुपये हो गई है। *1981-82 में राज्य की कुल आय 2023 करोड़ रुपये व प्रति व्यक्ति आय* 585 रुपये आंकी गई है जो पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ी है। राजस्थान में 1970-71 से 1980-81 की अवधि में विकास की वार्षिक दर 1.7 प्रतिशत रही है जबकि समस्त भारत के लिए लगभग 3.5 प्रतिशत रही है। इस प्रकार राजस्थान मे विकास की वार्षिक दर भारत मे विकास की औसत दर से लगभग आधी रही है। लेकिन 1970-71 से 1980-81 की अवधि मे प्रति व्यक्ति वास्तविक आय घटी है। इसका अर्थ यह है कि राज्य मे विकास की वार्षिक दर जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर से कम रही है जो एक चिन्ता का विषय है।

राज्य में कृषिगत उत्पादन में भारी उतार-चढ़ाव आने से आमदनी भी प्रभावित होती है। राज्य की अर्थव्यवस्था बहुत अस्थिर किस्म की है।

2. कृषि उत्पादन व सिचाई—राज्य मे खाद्यान्नों का उत्पादन 1950-51 मे 29.5 लाख टन हुआ था जो 1981-82 में बढ़कर 71.5 लाख टन हो गया। 1982-83 के लिए सम्भावित उत्पादन 73.5 लाख टन आंका गया है। राज्यों में सिंचित क्षेत्रफल 1950-51 मे दस लाख हेक्टेयर से बढ़कर 1981-82 मे 39.25 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है इस प्रकार सिंचित क्षेत्र लगभग चार गुना हो गया. फिर भी राज्य का 76 प्रतिशत सकल कृषित क्षेत्रफल मानसून पर आश्रित रहता है राज्य में प्रति वर्ष खाद्यान्नों के उत्पादन में भारी उतार-चढ़ाव आते रहते है। जिन्हे सिचाई का विस्तार करके ही कम किया जा सकता है। राज्य मे सिचाई की अन्तिम सम्भाव्यता 51.5 लाख हेक्टेयर है जिसमें 27.5 लाख हेक्टेयर में वृहद व मध्यम साधनों से तथा 24 लाख हेक्टेयर मे लघु साधनों से है। राज्य मे अधिक उपज देने वाली किस्मों का उपयोग बढ़ रहा है। 1968-69 में

ये किस्में 5.24 लाख हेक्टेयर में बोई गई जो 1982-83 में 23.6 लाख हेक्टेयर में फैला दी गई। सुधरे हुए बीजों का वितरण किया गया है। रासायनिक खाद का उपभोग 1951-52 में केवल 324 टन हुआ था जो बढ़कर 1982-83 में 1.72 लाख टन पर पहुंच गया है। कपास का उत्पादन 1982-83 में 5.4 लाख गांठें (प्रति गांठ = 170 किलोग्राम) हुआ है। राज्य में सिंचाई के साधनों के विस्तार से खाद्यान्नों के अतिरिक्त उत्पादन की क्षमता बढ़ी है। जैसा कि पहले बताया गया है, राज्य में सकल कृषित क्षेत्रफल 1951-52 में रिपोर्टिंग क्षेत्रफल के 28 प्रतिशत से बढ़कर 1979-80 में 48 प्रतिशत हो गया है जिससे विस्तृत खेती की प्रगति का परिचय मिलता है। लेकिन राज्य प्रायः अकालों का शिकार होता रहता है।

3. **विद्युत शक्ति की प्रगति**—राज्य में 1950-51 में शक्ति की प्रस्तावित क्षमता 8 मेगावाट थी। यह नवम्बर 1982 में बढ़कर 1240.34 मेगावाट हो गई जिसमें जल विद्युत का अंश 660.67 मेगावाट था। इस प्रकार शक्ति का उत्पादन काफी बढ़ा है। राज्य में बिजली प्राप्त स्थानों की संख्या 42 से बढ़कर 1982-83 में 17,700 गांवों में एवं शक्ति चालित कुओं की संख्या 1038 से बढ़कर 2,43,538 हो गई है, राज्य में मध्य प्रदेश की सतपुड़ा स्कीम से पावर उपलब्ध होने, कोटा थर्मल पावर संयन्त्र को शीघ्र चालू करने एवं हिमाचल प्रदेश की पार्वती व कोल परियोजनाओं में हिस्सा लेने से पावर की स्थिति में काफी सुधार होगा।

4. **औद्योगिक विकास**—योजना की अवधि में राज्य में कई नये कारखाने खोले गये हैं जिससे पंजीकृत फैक्ट्रियां 1949 में 207 से बढकर 1981-82 के अन्त में 7001 हो गई है। राज्य में सीमेंट का उत्पादन 1951 में 2.58 लाख टन से बढकर 1982 में 22.2 लाख टन (लगभग नौ गुना) हो गया। चीनी का उत्पादन 1951 में 1.5 हजार टन से बढकर 1982 में 23 हजार टन हो गया। सूती वस्त्र और सूत का उत्पादन बढ़ा है। राज्य में बाल बियरिंग व बिजली के मीटर बनने लगे हैं। जिनकी संख्या 1982 में क्रमशः 91 लाख व 240 हजार थी। राज्य में नमक का उत्पादन भी पहले से बढ़ा है। 1982 में नमक का उत्पादन 7.4 लाख टन हुआ, जबकि 1971 में यह 5.5 लाख टन हुआ था।

5. **सड़कों का विकास**—राज्य में 1950-51 के अन्त में सड़कों की लम्बाई 17,339 किलोमीटर थी जो बढ़कर 1982-83 में 45,291 किलोमीटर हो गयी है। इस प्रकार सड़कों की लम्बाई 2½ गुनी से अधिक हो गई है।

6. **शिक्षा की प्रगति**—3,000 व ऊपर की जनसंख्या वाले सभी गांवों में प्राथमिक स्कूल खोल दिये गये हैं। सभी पंचायत समितियों में एक या अधिक माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक स्कूल खोले गये हैं। राज्य के सभी जिलों में

कालेज स्तरीय शिक्षा की व्यवस्था कर दी गई है। 6–11 वर्षों के आयु-समूह में स्कूल जाने वालों की संख्या 1982-83 में 36 लाख तक पहुंच गई हैं। राज्य मे बिड़ला इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स व टेक्नोलोजी (पिलानी) और मालवीय रीजनल इन्जीनियरिंग कालेज (जयपुर) के स्थापित हो जाने से टैक्नीकल शिक्षा की सुविधाएं बढ गई हैं। राज्य में पोलीटैकनीक संस्थाएं भी स्थापित की गयी हैं। 1981-82 के अन्त में राज्य में 23125 प्राथमिक स्कूल, 5444 उच्च प्राथमिक स्कूल तथा 2517 सैकण्डरी/हायर सैकण्डरी स्कूल हो गये थे। कॉलेजों की संख्या 125 से अधिक हो गई थी। राज्य मे साक्षरता का अनुपात 1961 मे 15·2 प्रतिशत से बढकर 1981 में 24 प्रतिशत हो गया है।

7. चिकित्सा व जल पूर्ति के क्षेत्र में प्रगति—राज्य में मलेरिया व चेचक आदि पर काफी मात्रा में नियन्त्रण स्थापित किया गया है। राज्य को 1977 में चेचक से मुक्त घोषित कर दिया गया था। रोगियों के लिए बिस्तरों की संख्या बढायी गई है और चिकित्सा की सुविधा भी कुछ सीमा तक बढ़ी है। सभी पचायत समितियों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित कर दिये गये हैं।

राज्य मे नगरों व गाँवों में जल सप्लाई की व्यवस्था मे सुधार किया गया है।

सारांश—32 वर्षों की आर्थिक प्रगति से राज्य में आधार-ढांचा सुदृढ हुआ है। सिंचाई की सुविधाएं बढी हैं, विद्युत की फर्म उपलब्धि बढ़ी है और राज्य औद्योगिक विकास के नये कार्यक्रम अपनाने की स्थिति मे आ गया है। रीको ने संयुक्त क्षेत्र मे कई इकाइयां स्थापित की हैं। राजस्थान वित्त निगम लघु व मध्यम उद्योगों को काफी मात्रा में दीर्घकालीन कर्ज देने लगा है।

हम नीचे राजस्थान के विकास मे प्रमुख बाधक तत्वों का उल्लेख करके भावी विकास के लिए आवश्यक व व्यावहारिक सुझाव देंगे जिससे राजस्थान की अर्थ व्यवस्था अधिक तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर हो सकेगी।

राजस्थान के आर्थिक विकास में प्रमुख बाधक तत्व

नियोजन के प्रारम्भ मे राजस्थान का "एक पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था में एक पिछड़ा हुआ प्रदेश" कहा जाता था उस समय यह राज्य आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व अन्य दृष्टियों से देश के अन्य भागों की तुलना मे काफी पिछड़ा हुआ था। पिछले 32 वर्षों मे कई क्षेत्रों में प्रगति होने से राज्य के सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन में कमी हुई है। लेकिन अभी तक इस दिशा में बहुत कार्य करना शेष है। राज्य की प्रगति में निम्न तत्व विशेष रूप से बाधक माने जाते हैं—

(1) वर्षा की अनिश्चितता, सूखा, अकाल आदि।

(2) पीने के पानी का अभाव।

(3) भूमि का कटाव।

(4) सिंचाई के साधनों का अभाव।
(5) विद्युत शक्ति का अभाव।
(6) यातायात के साधनों का अभाव।
(7) लौह खनिज व ईंधन का अभाव।
(8) उपभोग के मुख्य केन्द्र राजस्थान के बाहर।
(9) सरकार के पास वित्तीय साधनों का अभाव।
(10) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, बेरोजगारी व अल्प रोजगार।
(11) गांवों का सामाजिक पिछड़ापन।
(12) शिक्षा का अभाव।
(13) कुशल व ईमानदार प्रशासन का अभाव।
(14) जनसहयोग की कमी।
(15) जाति प्रथा व ऊंच नीच का भेदभाव।

आर्थिक नियोजन को सफल बनाने के लिए सुझाव--
(1) आर्थिक सर्वेक्षण।
(2) सिंचाई के साधनों का विकास।
(3) भूमरक्षण व जल व्यवस्था।
(4) पीने के पानी की सुविधा।
(5) राजस्थान नहर परियोजना के अन्तर्गत क्षेत्रीय विकास।
(6) आधुनिक किस्म के लघु उद्योगों का विकास।
(7) प्रवासी उद्यमकर्ताओं को आकर्षित करना।
(8) वित्तीय साधनों में वृद्धि।
(9) शिक्षा प्रसार।
(10) प्रशासन में कुशलता।

आठवां वित्त आयोग व राज्य की वित्तीय स्थिति

17 व 18 मई, 1983 को आठवें वित्त आयोग ने अपने राजस्थान के दौरे में राज्य की वित्तीय स्थिति पर सचिवालय में राज्य सरकार के प्रतिनिधियों से विस्तृत रूप से विचार-विमर्श किया था। मुख्य मन्त्री श्री शिवचरण माथुर ने राज्य का पक्ष आयोग के समक्ष काफी प्रबल रूप में प्रस्तुत किया।

राज्य सरकार की तरफ से जो दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया उसकी मुख्य बातें इस प्रकार है—

(1) राजस्थान में अकाल एक निरन्तर प्रक्रिया मानी गई है। इसलिए अकाल राहत राशि सरकार को गैर-योजना सहायता के रूप मे उपलब्ध कराई जानी चाहिए। अकाल की स्थिति का जायजा लेने वाली अध्ययन टोली में राज्य सरकार का भी प्रतिनिधि होना चाहिए।

1972–73 से 1981–82 तक केंद्रीय सरकार ने राज्य को अकाल का सामना करने के लिए लगभग 175 करोड़ रु० की सहायता दी जिसमें से 107.4 करोड़ रु० कर्ज के रूप में दिये गये। राजस्थान के कांग्रेसी सासदों ने आयोग को अपने ज्ञापन में कहा है कि यह राशि अनुदान में बदल देनी चाहिए ताकि राज्य पर इतना कर्ज का बोझा कम हो जाय।

(2) आय-कर पर सरचार्ज की राशि मूल आय कर में शामिल कर देनी चाहिए ताकि राज्यों को इसमें भी हिस्सा मिल सके।

(3) बिक्री-कर की समाप्ति पर त्रिपाठी समिति की सिफारिशें लागू नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि सीमेन्ट, दवाइयां, आदि पर बिक्री-कर समाप्त करके अतिरिक्त शुल्क लगाने से राज्यों की आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ेगा जैसा कि पहले चीनी, कपड़े व तम्बाकू पर बिक्री-कर समाप्त करने से पड़ा था।

(4) राजस्थान पर जो कर्ज-भार है उसका 95% अर्द्ध-उत्पादक कार्यों पर खर्च हुआ है तथा शेष 5% अनुत्पादक कार्यों पर हुआ है। अतः अनुत्पादक कर्ज को तो पूरा माफ कर देना चाहिए तथा अर्द्ध-उत्पादक कार्यों में लगे कर्जों को 30 साल में वसूल करने की नई व्यवस्था लागू की जानी चाहिए।

(5) विकास-योजना के लिए सहायता देते समय क्षेत्रफल को भी एक आधार माना जाना चाहिए।

(6) वित्त आयोग को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि राज्य सरकार बिजली व परिवहन निगम से लाभ कमायेगी, क्योंकि भौगोलिक कारणों से राज्य ऐसा करने मे समर्थ नहीं हो सकता। दूर-दराज के इलाको मे बिजली पहुँचाने प्रसारण-लाइनें खींचने आदि में बहुत व्यय करना होता है और मार्ग में बिजली का नुकसान भी होता है। परिवहन का कार्य भी सामाजिक सेवा से सम्बद्ध होने के कारण आसानी से अधिक लाभ में नहीं चलाया जा सकता। सिंचाई की दर बढाना भी राजनीतिक करणों से संभव नही हो पाता है।

(7) वित्त आयोग एक स्थाई संस्था होनी चाहिए जो हर साल वित्तीय स्थिति का जायजा लेकर अपनी सिफारिशों में संशोधन कर सके।

(8) राज्य मे भत्ते व वेतन-संशोधन के कारण सरकार को 1983–84 से 1988–89 तक लगभग 550 करोड़ रु० की अतिरिक्त धनराशि अपने कर्मचारियों पर व्यय करनी होगी जिसे वित्त आयोग द्वारा दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार सभी क्षेत्रों से राज्य सरकार को केन्द्र की तरफ से अधिक धनराशि दिये जाने की मांग की गई है। वित्त आयोग के अध्यक्ष श्री यशवन्तराव चव्हाण ने विभिन्न मुद्दों पर विचार करने का आश्वासन दिया है। लेकिन राज्य सरकार को भी यथासंभव प्रयास करके अनावश्यक सरकारी व्यय मे कटौती करनी चाहिए और कार्यकुशलता बढ़ा कर तथा लागत पर नियंत्रण करके सार्वजनिक

उपक्रमों से लाभार्जन भी नहीं तो कम से कम अत्यधिक घाटा समाप्त करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए क्योंकि इनसे सदैव घाटा रहने की बात समझ में नहीं आती ।

राजस्थान का बजट

1982–83 के लिए संशोधित तथा 1983–84 के लिए बजट अनुमान

(करोड़ रुपयों में)

	संशोधित अनुमान 1982–83	बजट अनुमान 1983–84
(1) समग्र प्राप्तियां		
(अ) राजस्व प्राप्तियां	1003·74	1088·29
(आ) पूंजीगत प्राप्तिया	705 82	364·07
योग	1709·56	1452·36
(2) समग्र व्यय		
(अ) राजस्व व्यय	973.92	1074·21
(आ) पूंजीगत व्यय	473·14	419·99
योग	1447·06	1494·20
शुद्ध वचत (+)	+262·50	
या घाटा (–)		(–) 41·84
प्रारम्भिक घाटा (–)	283·46	
अन्तिम घाटा (–)	20·96	

6

राजस्थान "व्यक्ति परिचय"

Rajasthan "Who's Who"

हीरालाल शास्त्री—हीरालाल शास्त्री वृहत्तर राजस्थान के 1949 से 1951 तक पहले मुख्यमन्त्री थे। उसके बाद वे लोकसभा के सदस्य भी रहे। शास्त्री ने अपनी पुत्री की स्मृति मे 'वनस्थली विद्यापीठ' खोला था जो आज भी देश में बालिकाओं की शिक्षा का अग्रणी संस्थान है। उन्होंने अपना जीवन इस सस्था की सेवा मे ही लगाया।

जयनारायण व्यास—लोक नायक जयनारायण व्यास दो बार राजस्थान के मुख्यमन्त्री रहे। पहली बार अप्रेल 1951 से फरवरी 1952 तक रहे उसके बाद वे आम चुनाव में हार गये। उसी साल किशनगढ से उप-चुनाव में जीते और नवम्बर 1952 से जनवरी 1954 तक मुख्यमन्त्री रहे। व्यास ने स्वाधीनता संग्राम में भी हिस्सा लिया था और जेल गये थे। वे गांधीवादी विचारधारा के समर्थक थे।

मोहनलाल सुखाडिया—जयनारायण व्यास के बाद सुखाड़िया राजस्थान के मुख्यमन्त्री बने और अब तक सर्वाधिक समय 17 साल तक राज्य करने का उनका ही रिकार्ड है। 1972 से 77 तक सुखाड़िया कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु के राज्यपाल रहे। 1980 में वे उदयपुर से लोकसभा के सदस्य बने। उनके निधन से राजस्थान को अपूरणीय क्षति हुई है।

बरकतुल्ला खां—सुखाडिया के बाद जुलाई 1971 में बरकतुल्ला खां राजस्थान के मुख्यमन्त्री बने थे। उन्होंने प्रशासन को बहुत अच्छी तरह चलाया। वे सुखाड़िया मन्त्रिमण्डल मे मन्त्री भी रहे थे। कृषि भूमि की सीलिंग उन्होंने अपने शासनकाल मे ही 30 एकड़ से कम करके 22 एकड़ निर्धारित की। नवम्बर 1973 मे उनका देहान्त हो गया।

हरिदेव जोशी—बरकतुल्ला खां के निधन के बाद हरिदेव जोशी राजस्थान के नये मुख्यमन्त्री बने और मई 1977 में विधान सभा भंग होने तक शासन करते रहे। जोशी उन विधायकों में से हैं, जो 1952 से अब तक विधान सभा के सभी चुनावों में विजयी रहे हैं।

भैरोंसिंह शेखावत—जनता पार्टी की सरकार के भैरोंसिंह शेखावत पहले व एकमात्र मुख्यमन्त्री रहे हैं। शेखावत भी 1972 को छोड़कर विधान सभा के

अब तक हुए सभी चुनावों में जीते हैं। शेखावत ने ही अपने शासनकाल में गरीबों की दशा सुधारने के लिए 'अन्त्योदय' योजना लागू की थी जिसे बाद में दूसरे राज्यों ने अपनाया। वर्तमान में वे विधान सभा में विपक्ष के नेता है।

जगन्नाथ पहाड़िया—15 वर्षों तक लोकसभा के सदस्य रहे। जगन्नाथ पहाड़िया राजस्थान मे पिछड़े वर्ग के पहले मुख्यमन्त्री बने थे। केन्द्र मे ये 10 वर्षों तक उपमन्त्री और छः महीने वित्त राज्य मन्त्री रहे।

इन मुख्यमन्त्रियों के अलावा टीकाराम पालीवाल भी कुछ महीनों के लिए राजस्थान के मुख्यमन्त्री रहे है। राज्य के कुछ अन्य राजनीतिक नेता इस प्रकार रहे हैं।

राजबहादुर--वयोवृद्ध कांग्रेस के पुराने नेता राजबहादुर लम्बे अर्से तक केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के सदस्य रहे। स्वतन्त्रता संग्राम मे भी उनका योगदान रहा है। 1980 में पहली बार विधान सभा के सदस्य बने। राजबहादुर नेपाल मे भारत के राजदूत भी रह चुके हैं।

दामोदरलाल व्यास—व्यास लम्बे अर्से तक सुखाडिया मन्त्रिमण्डल के सदस्य रहे। उन्हें राजस्थान के लौह पुरुष के रूप मे भी जाना जाता है।

महारावल लक्ष्मणसिंह—राजस्थान में स्वतन्त्र पार्टी के उदय के साथ ही महारावल लक्ष्मणसिंह भी राजनीति मे आये। 15 वर्षों तक विधान सभा मे विपक्ष के नेता और 1977 मे विधान सभा के अध्यक्ष बने। इस पद पर वे दो साल रहे।

श्रीमती गायत्री देवी—जयपुर के महाराजा स्व० सवाई मानसिंह की पत्नी श्रीमती गायत्री देवी राजस्थान में स्वतन्त्र पार्टी की नेता रही है। वे 15 साल तक लोकसभा मे जयपुर का प्रतिनिधित्व करती रही। आपातकाल मे उन्हें भी गिरफ्तार किया गया था। जनता पार्टी के शासन में वे राजस्थान पर्यटन विकास निगम की अध्यक्ष रहीं।

सवाई मानसिंह – वे जयपुर राज्य के शासक थे। 27 वर्षों तक महाराजा रहने के बाद ये 1949 से 1956 तक वृहत्तर राजस्थान के राज प्रमुख रहे। स्पेन मे भारत के राजदूत के रूप में भी उन्होंने कार्य किया। जून 1970 में इंगलैंड मे पोलो खेलते हुए उनका निधन हो गया।

भवानीसिंह—सवाई मानसिंह के पुत्र भवानीसिंह सेना मे लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर रहे हैं। 1971 के भारत-पाक युद्ध में इन्होंने अपनी पैराशूट टुकड़ी को दुश्मन के क्षेत्र में उतार कर विजय प्राप्त की थी। इन्हे भी आपातकाल में गिरफ्तार किया गया था।

श्रीराम गोटेवाला—राजस्थान मे डेयरी पशु पालन राज मन्त्री श्री श्रीराम गोटेवाला जयपुर नगर के लोकप्रिय कांग्रेसी नेता हैं। आप प्रारम्भिक जीवन में

ही कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता व श्रीमती इन्दिरा गांधी की नीतियों के समर्थक रहे हैं। आपने अभी हाल ही में श्री राजीव गांधी (महामन्त्री, अ० भा० का०) के दिशा निर्देश (कांग्रेस जन को एक ही पद पर रहना चाहिए) पर जयपुर नगर कांग्रेस "आई" के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दिया है। आप भारत रूस मैत्री संघ के प्रदेश मन्त्री व अन्य कई सगठनों का नेतृत्व कर रहे हैं।

बिशन सिंह शेखावत—सीकर जिले के खाचरियावास गांव में जन्मे श्री शेखावत राजस्थान में कर्मचारी नेता एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त व्यक्ति है। पिछले दिनों आपको कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

डॉ. नगेन्द्रसिंह—महारावल लक्ष्मणसिंह के भाई डॉ नगेन्द्रसिंह आई. सी. एस. अधिकारी रहे हैं। अपनी योग्यता के बल पर वे इस समय हेग में विश्व न्यायालय के न्यायाधीश हैं।

अमीनुद्दीन अहमद—अहमद कई वर्षों तक सुखाड़िया मन्त्रिमण्डल के सदस्य रहे। वे हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल भी रहे हैं। उन्हें लुहारू नवाब के रूप में भी जाना जाता है। कुछ दिनों पूर्व उनका निधन हो गया है।

डॉ. के. एल. श्रीमाली—डॉ. कालूलाल श्रीमाली बहुत बड़े शिक्षा शास्त्री हैं। उन्हें सरकार ने पद्म विभूषण से अलंकृत किया है। डॉ. श्रीमाली केन्द्र में शिक्षा मन्त्री और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके हैं।

प्रो. एम. वी. माथुर—माथुर राजस्थान के प्रमुख अर्थशास्त्री रहे हैं। वे राजस्थान विश्वविद्यालय के उप कुलपति रहे हैं। नेशनल कौंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनोमिक रिसर्च के महानिर्देशक रहे हैं।

नवलकिशोर शर्मा—जयपुर जिले के दौसा कस्बे में जन्मे श्री नवलकिशोर शर्मा वर्तमान में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (ई) के अध्यक्ष हैं। श्री शर्मा ने श्रीराम करण जोशी के दिशा निर्देश में राजनीति में प्रवेश किया तथा आज कांग्रेस के प्रदेश स्तर के कर्मठ नेता व कार्यकर्ता माने जाते हैं। श्री शर्मा के "बाबूजी" व "नवल जी" लोकप्रिय नाम हैं।

शिवचरण माथुर—राजस्थान के वर्तमान मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर श्री सुखाडिया, श्री बरकतउल्ला व श्री हरिदेव जोशी के मुख्यमन्त्री काल में लम्बे अर्से तक राज्य के मन्त्री रहे हैं तथा कांग्रेस के विभाजन के समय प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के समर्थन करने वाले महत्वपूर्ण नेता हैं। आपके धैर्य व सहनशीलता की विरोधी भी प्रशसा किये बिना नहीं रह सकते।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों की प्रगति की एक समग्र झाकी

(A Total Eye view of the progress in all fields of Rajasthan)

पंचायती राज—वर्ष 1981 में प्रारम्भ किये गये बीस सकल्प कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य में सभी प्रतिनिधि संस्थाओं के चुनाव कराये जाना पहला कार्यक्रम था।

चूंकि विकास कार्यों के क्रियान्वयन का केन्द्र विन्दु ग्राम ही हैं, राज्य में पंचायती राज जैसी प्रतिनिधि संस्थाओं का सुदृढ़ीकरण किया जाना आवश्यक है। यद्यपि प्रशासन के विकेन्द्रीकरण का कार्य 2 अक्टूबर 1959 को राज्य मे पंचायती राज की स्थापना के साथ प्रारम्भ कर दिया गया था तथापि बीच मे एक ऐसा अन्तराल आया जब इस व्यवस्था में शैथिल्य आ गया जिसे दूर करने के लिए राज्य सरकार ने पंचायती राज अधिनियम मे आवश्यक सशोधन कर ग्राम पंचायतों का कार्यकाल पाच वर्ष से घटाकर तीन वर्ष कर दिया और पंचायती राज के समूचे तन्त्र को फिर से चुस्त और कारगर बनाने एव इसमें पुन. प्राण प्रतिष्ठित करने के संकल्प के साथ 1981–82 मे राज्य की 7292 पचायतों, 236 पंचायत समितियों तथा सभी जिला परिषदों के चुनाव सम्पन्न कराये। लोगों ने इन चुनावों का स्वागत ही नहीं किया बल्कि राज्य सरकार की नीतियो के पक्ष में अपना भारी जन समर्थन भी व्यक्त किया। पहली वार पचायत समिति और जिला परिषदों के चुनाव दलीय आधार पर हुए।

राजस्थान में पंचायती राज की कड़ी में पचायत समिति सबसे महत्वपूर्ण संस्था है, अत: प्रशासन में जनता की भागीदारी के उद्देश्य से एकीकृत ग्राम विकास कार्यक्रम, ट्राईसम राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, ग्रामीण हाटों का निर्माण, कृषि आदानों पर राजकीय अनुदान, ग्रामीण पशु औषधालय, चारा विकास योजनायें, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम, हैल्थ गाइड एवं दाइयों की प्रशिक्षण योजनाएं पंचायत समितियों को स्थानान्तरित कर दी गई हैं। वन विभाग की विभिन्न योजनाएं, दो लाख रुपये की लागत तक के सभी निर्माण कार्य, 50 एकड से कम सिचाई वाले तालाबों और एनीकट्स की मरम्मत, ग्रामीण दस्तकार एव लघु उद्योगों को लाभ पहुंचाने वाले कार्यक्रम तथा समाज कल्याण के अनेक कार्यक्रम भी इन सस्थाओं को स्थानान्तरित कर दिये गये है। ग्रामीण विकास से सम्बन्धित बुनियादी संरचना तथा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम की समीक्षा करने का अधिकार भी पंचायत समितियों को दिया गया है। क्रियान्वयन में कमियां पाई जाने

पर उनकी समीक्षा करने और उनमें अपने स्तर पर आवश्यक सुधार करने के अधिकार भी पंचायत समितियों को दे दिये गये है।

पचायत समितियो को सुदृढ़ बनाने के लिए पशुपालन प्रसार अधिकारियों, सहकारिता प्रसार अधिकारियों, प्रगति प्रसार अधिकारियों, कनिष्ठ अभियन्ताओं, कृषि प्रसार अधिकारियों, उद्योग प्रसार अधिकारियों, खादी पर्यवेक्षकों एवं पंचायत प्रसार अधिकारियों की नियुक्तियां पचायत समितियों मे की गई है। जन प्रतिनिधियो एव सभी श्रेणी के कर्मचारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गई है जिससे कार्यक्रम को दक्षता से क्रियान्वित किया जा सके।

पचायतों को ग्रामीण हाट व्यवस्था करने, स्वास्थ्य मार्ग दर्शकों का प्रारम्भिक चयन करने, ग्रामीण क्षेत्र में वृक्षों की अवैध कटाई को रोकने, हैण्ड पम्पों व परम्परागत पेयजल साधनों का सधारण एव परिचालन करने तथा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम के क्रियान्वयन के अधिकार दिये गये है।

प्रशासन का सुदृढ़ीकरण—राज्य मे राजस्व प्रशासन के सुदृढ़ीकरण करने के [illegible] साथ ही चोमू (जयपुर), [illegible] गढ़), नवलढ (झुंझुनू), [illegible] गों को अपने प्रशासनिक [illegible] लिए अधिक दूर नहीं [illegible] तहसीलें भी खोली गई।

सस्ता और सुलभ न्याय दिलाने की राज्य की नीति के अन्तर्गत सहायक कलेक्टर के 9 न्यायालय जिले के भीतरी अचलों मे स्थापित किये गये। 19 जिलों मे गिरदावर और पटवार सर्किलों की सख्या बढाई गई। अन्य जिलो मे भी ऐसा किया जा रहा है। राज्य मे एक ओर जहा पचायती राज द्वारा विकास प्रशासन में लोगों की भागीदारी पर बल दिया गया है वहीं जिला स्तरीय और मण्डलीय अधिकारियो को निर्देश दिये गये है कि वे पचायती राज सस्थाओं की बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेवे और जन प्रतिनिधियों व सामान्य लोगों से मिलकर लोगो की समस्याओ का मौके पर ही निराकरण करें। सचिवालय स्तर पर भी विभिन्न विभागों के लिए विभागीय सलाहकार समितियों का गठन किया गया है जिसके फलस्वरूप कार्यक्रमों के क्रियान्वयन मे अब ये प्रतिनिधि मात्र समीक्षा मे ही सम्मिलित नहीं होते है अपितु कार्यक्रम के क्रियान्वयन एव मूल्याकन दोनों से ही सीधे जुट जाते है। सामान्य जन एव जन प्रतिनिधियों की यह भागीदारी राज्य के प्रशासन को विकासोन्मुख बनाने मे सफल रही है।

प्रशासन गांवो की ओर—पिछले अभियानों से हटकर समाज के कमजोर तबके के लोगो का कल्याण करने के लिए राज्य सरकार द्वारा डेढ माह की अवधि

का एक व्यापक अभियान समस्त राज्य में एक जनवरी, 83 से प्रारम्भ किया गया जो पिछले अभियानों से हट कर था। इस अभियान में न केवल राजस्व अभिलेखों को अद्यतन संशोधित किया गया, अपितु विकास के अन्य बिन्दुओं को भी हाथ में लिया गया। इस अभियान के प्रमुख अंग निम्न प्रकार रहे—

(1) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत परिवारों का चयन एवं उन्हें लाभान्वित करना।

(2) अभाव अभियोगों का निपटारा।

(3) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम एवं सहकारिता कार्यक्रम के अन्तर्गत लोगों से प्रार्थना पत्र लेकर मौके पर ही ऋण मंजूर करना और उनका भुगतान करना।

(4) उचित मूल्य की दुकानों पर आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाना।

(5) ग्रामीण विद्यालयों के बालकों की शाला छोड़ देने की प्रवृत्ति का पता लगाना तथा उसको दूर करना।

एक जनवरी से 15 फरवरी, 83 तक प्रत्येक जिले का सम्पूर्ण प्रशासन ग्रामीणों की समस्याओं को हल करने के लिए कचहरी से हटकर काश्तकार की चौखट पर पहुंच गया।

इस बार इन शिविरों का मूल उद्देश्य आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के लोगों को लाभान्वित करने का था। इन शिविरों में करीब 1 लाख से अधिक आवंटियों को खातेदारी अधिकार दिये गये और लगभग 4·78 लाख व्यक्तियों के नामान्तरण तस्दीक किये गये। कुल मिलाकर 1,47,843 एकड़ भूमि 83,348 व्यक्तियों को आवंटित की गई जिनमें 15,944 अनुसूचित जाति एवं 21,179 व्यक्ति अनुसूचित जनजाति के थे। लगभग 1.90 लाख अतिक्रमण के मामले निपटाये गये और अनुमानतः 48,740 भू आवंटियों को सहकारी समितियों का सदस्य बनाया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में करीब 28,000 आवासीय भू खण्ड आवंटित किये गये, 4,238 ग्रामीण कारीगरों को 59 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत करने के साथ ही सहकारिता के क्षेत्र में लघु, मध्यम और दीर्घ अवधि के ऋण क्रमशः 459.33 लाख रु., 272·88 लाख एवं 164·30 लाख रुपये करीब 27,821 व्यक्तियों को स्वीकृत किये गये। एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत करीब 1,52,700 नये परिवारों को चिन्हित किया गया और 15,508 मामलों में उत्पादक सामान और साधन दिलवाये गये 22,000 प्रार्थना पत्र तैयार करवाये गये और करीब साढ़े तीन करोड़ रुपये का बैंक ऋण वितरित किया गया। विद्यालयों, पंचायत घरों एवं औषधालयों जैसी सार्वजनिक संस्थाओं के लिए भूमि का मौके पर आवंटन किया गया।

सरकार ने अभियान को चुनौती के रूप में स्वीकार किया और इस चुनौती का उत्तर आंकड़ों से नहीं वरन् झोंपड़ी के रहने वाले उस ग्रामीण की सन्तुष्टि से

देने का प्रयास किया गया जिससे इन कार्यों के लिए तहसील, पंचायत समिति, उप खण्ड एव जिला मुख्यालय तक कई बार जाना पड़ता था।

इस अभियान से जहां वर्षों पुराने राजस्व सम्बन्धी विवादों का निपटारा हुआ वही जन सामान्य की दृष्टि मे प्रशासन की एक नई साख पैदा हुई है।

वित्तीय अनुशासन—निरन्तर पड़ने वाले अकाल, प्राकृतिक विपदाए और राज्य कर्मचारियों के बढ़ते हुए महगाई भत्तों के भुगतान के कारण राज्य की वित्तीय स्थिति एक नाजुक दौर से गुजर रही थी।

राज्य की इस दुर्बल अर्थ व्यवस्था के निवारण के लिए वित्तीय अनुशासन की पहली आवश्यकता थी जिसे सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय नीतियों को अधिक व्यावहारिक बनाने और प्रशासनिक तथा अन्य खर्चों पर नियन्त्रण रखने का गुणात्मक कार्यक्रम अपनाया गया। वर्ष 1982-83 में इस हेतु करारोपण करना पड़ा, जिसमें मद्य निषेध को समाप्त कर आबकारी से आय बढ़ाने, सिंचाई और बिजली की दरें बढ़ाने और परिवहन कर तथा शुल्क की परिवर्तित दरें लागू करने के साहसिक वित्तीय निर्णय लिये गये। अकाल की विभीषिका और विषम आर्थिक स्थिति के रहते भी आवश्यक सामाजिक सेवाओं के प्रसार एव अन्य विकास कार्यों की गति बनाये रखने की आवश्यकताओं की दृष्टि से यह जरूरी था।

इस आर्थिक अनुशासन में पूर्ण क्षमता से आय के स्रोतों का दोहन करके संसाधन जुटाये गये। कृषि भूमि के रूपान्तरण सम्बन्धी राज्य सरकार के नीतिगत निर्णय से 33 करोड़ रुपये की आमदनी हुई। छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान अतिरिक्त आर्थिक ससाधन जुटाने का लक्ष्य 750 करोड़ रुपये रखा गया था। अब तक किये गये प्रयत्नों से 687 करोड़ रुपये उपलब्ध हो सकेंगे।

इसके बावजूद राज्य सरकार कठिन वित्तीय परिस्थितियों में भी अपनी मार्गोपाय सीमाओं में कार्य करते हुए कारगर वित्तीय अनुशासन और मितव्ययिता से अब अतिरिक्त आर्थिक संसाधन जुटाकर राज्य मे विकास की गति अनवरत रूप से द्रुतगामी बनाये रखने के लिए कृत संकल्प है।

यद्यपि वित्तीय ससाधनों की कमी के कारण 1981-82 की 340 करोड़ रुपये की वार्षिक योजना की तुलना में 1982-83 की वार्षिक योजना मे कोई वृद्धि करना सम्भव नही हो पाया तथापि राज्य सरकार संसाधनों की स्थिति सुधारने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रही है। फलस्वरूप वर्तमान वित्तीय वर्ष के लिए 416 करोड़ रुपये की वार्षिक योजना को योजना आयोग ने अनुमोदित कर दिया है। इसमें से लगभग 292 करोड़ रुपये विद्युत, सिंचाई, कृषि तथा सम्बन्धित क्षेत्रों के लिए आवंटित किये गये हैं तथा 70 प्रतिशत भाग बीस सूत्री कार्यक्रम से सम्बन्धित योजना पर व्यय किया जाना प्रस्तावित है।

औद्योगिक विकास—राजस्थान के औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए गत दो वर्षों मे अनेक प्रभावी कदम उठाये गये हैं। गत दो वर्षों मे राजस्थान

वित्त निगम ने करीब 100 करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत किए जो अब तक स्वीकृत किए गये कुल 250.66 करोड़ रुपये के ऋण की तुलना में 40 प्रतिशत है। इन दो वर्षों में अलवर में अशोक ली लेंड तथा बनास (सिरोही) में स्ट्रा प्रोडेक्ट्स नामक दो बड़े उद्योग लगाये गये जिनसे लगभग 4,000 लोगों को रोजगार मिलेगा।

सवाई माधोपुर के निकट निभेरा गांव में खाद संयंत्र कायम करने की अनुमति मिल चुकी है। भीलवाड़ा, बूंदी और चित्तौड़गढ़ जिलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध चूना पत्थर के भण्डारों का दोहन कर सीमेंट उत्पादन करने के लिए 7 बड़े कारखाने स्थापित होंगे, जिनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 35 लाख 45 हजार टन होगी। भारत सरकार ने सीकर में खाद का बड़ा कारखाना लगाने का निर्णय लिया है। राज्य में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित उद्योगों के विकास में सरकार गहरी दिलचस्पी ले रही है तथा भारत सरकार भी पूरी उदारता प्रदर्शित कर रही है। गत दो वर्षों में 69 आशय पत्र केन्द्र से प्राप्त हुए हैं।

राज्य सरकार ने हाल ही में निर्णय लिया है कि 3 लाख से कम आबादी वाले स्थानों पर उद्योग लगाने के लिए उद्यमियों को 22 जनवरी, 83 से 15 प्रतिशत अनुदान दिया जायेगा।

ग्रामीण उद्योगों में 325 करोड़ 59 लाख रुपये की पूंजी विनियोजित है जिनसे लगभग 3 लाख 75 हजार लोगों को रोजगार के साधन सुलभ हो रहे हैं। इस वर्ष राज्य में 10 हजार लघु एवं ग्रामीण औद्योगिक इकाइयों के स्थायी पंजीजन करने का लक्ष्य रखा गया है। जिसके फलस्वरूप लगभग 29 हजार लोगों को रोजगार मिल सकेगा।

राज्य में इस वर्ष उद्योगों को अपेक्षाकृत अधिक बिजली दी जा सकेगी, फिर भी कमी रहने की स्थिति में लघु उद्योगों को अपने डीजल जनरेटिंग सेट्स लगाने के लिए 50 प्रतिशत तक अनुदान दिये जाने का निर्णय गत दो वर्षों में लिया गया था। जिसके फलस्वरूप 171 उद्योगों को 1 करोड़ 20 लाख का अनुदान दिया जा चुका है।

राज्य में उद्योगों के विकास और विस्तार कार्यक्रम में वित्त निगम के साथ राजस्थान औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम (रीको) भी अहम् भूमिका निभा रहा है। रीको ने वर्ष 1981–82 और 1982–83 में 24.97 करोड़ रु. का शुद्ध पुनर्वित्त प्राप्त कर देश के उत्तरी संभाग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस अवधि में रीको ने 40 करोड़ 33 लाख रुपयों की सहायता औद्योगिक इकाइयों को दी जो रीको की स्थापना के बाद से मार्च 1983 तक की अवधि में दी गई 76 करोड़ 17 लाख रुपये की कुल सहायता का 52 प्रतिशत से भी अधिक

है। रीको राज्य में इलैक्ट्रोनिक उद्योगों के विकास को विशेष प्रोत्साहन दे रहा है।

राजस्थान हाथ करघा मण्डल ने वर्ष 82–83 में 1 करोड़ 23 लाख रुपये मूल्य के हाथ करघा वस्त्र का विक्रय किया। मण्डल ने हाथ करघा पर पोलिएस्टर वस्त्र का उत्पादन भी प्रारम्भ कर दिया है।

खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रम के तहत गत दो वर्षों में 18 हजार 294 लघु उद्योगों को सहायता सुलभ कराई गई और इन उद्योगों ने 43.26 करोड़ रुपये मूल्य का उत्पादन किया। इस वर्ष 10 हजार इकाइयों को सहायता सुलभ कराई जायेगी जिसका लक्ष्य 52.50 करोड़ रु. मूल्य का उत्पादन करना तथा 1.5 लाख परिवारों को रोजगार सुलभ कराना है।

राज्य के औद्योगिक विकास में पंचायती राज संस्थाएं भी अपना भरपूर सहयोग दे रही हैं। विकेन्द्रीकरण योजना के अन्तर्गत खादी और ग्रामोद्योग इकाइयों और अन्य औद्योगिक इकाइयों को क्रमशः रुपया 5 हजार और रुपया 2 हजार तक के ऋण स्वीकृत करने के अधिकार अब पंचायत समितियों को दे दिये गये हैं। अब पंचायत समितियां बिजली के लिए 1 हजार रुपये तक का अनुदान स्वीकृत करने के लिए सक्षम कर दी गयी है।

औद्योगिक विकास के लिए भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला अनुदान अब तक राज्य के औद्योगिक विकास की दृष्टि से पिछड़े 6 जिलों और 1 लाख से कम आबादी वाले शहरों में ही दिया जाता था, परन्तु राज्य सरकार ने अपनी ओर से ऐसा अनुदान अब राज्य के अन्य सभी जिलों में तथा 3 लाख तक की जनसंख्या वाले सभी नगरों में भी दिये जाने का निर्णय लिया है।

खनिज सम्पदा के दोहन—राजस्थान धरती के अन्दर छिपी हुई विपुल खनिज सम्पदा का धनी प्रदेश है जिसका दोहन करने से खनिज आधारित उद्योगों की स्थापना एवं राज्य के उत्तरोत्तर आर्थिक विकास की प्रबल सम्भावनायें है। इस दृष्टि से वर्तमान सरकार ने खनिज सम्पदा का अधिकतम दोहन करने के लिए ठोस कदम उठाये हैं।

राज्य में 1980–81 में 107 करोड़ 51 लाख रुपये के खनिजों का उत्पादन हुआ था जो 1982–83 में बढ़कर 133 करोड़ रुपये मूल्य का हो गया। यह वृद्धि 23.7 प्रतिशत रही है।

खनिज उत्पादनों की बिक्री से प्राप्त हुई रायल्टी एवं राजस्व के फलस्वरूप राज्य की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ हुई है। वर्ष 1980–81 में जहां रायल्टी से मात्र 10.25 करोड़ रु. की आय हुई थी वह वर्ष 82–83 में बढ़कर 14.56 करोड़ रु. तक पहुंच गयी। इस प्रकार गत दो वर्षों में 42.05 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। राक फास्फेट की बिक्री से भी राज्य सरकार को उल्लेखनीय आय हुई है।

वर्ष 80-81 में 17·55 करोड रुपये की आय हुई थी जबकि वर्ष 1982-83 में यह आय बढकर 23 करोड रुपये की हुई।

इन दो वर्षों में प्रमुख खनिजो के पट्टों का आवंटन भी अधिक संख्या में किया गया है। वर्ष 1981 मे 1317 पट्टे आवटित किये गये थे जो वर्ष 1982-83 में बढ़कर 1602 तक पहुंच गये है। लघु खनिजो के पट्टों के आवंटन की संख्या 2 वर्ष पहले 4,035 थी जो अब बढकर 5,065 हो गयी है।

खनन पट्टो के आवंटन की संख्या मे इस वृद्धि से अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोगों को लाभान्वित किया गया है। गत दो वर्षों में अनुसूचित जाति के लोगो को दिये गये खनन पट्टो तथा किराया रायल्टी पर दिये गये खनन पट्टों की सख्या 697 से बढ़कर 950 हो गई है। इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति के लोगों को दिये गये ऐसे पट्टों की सख्या 5,323 से बढकर 5,858 हो गई। इसके अतिरिक्त अनुसूचित जाति कम्पोनेंट प्लान के अन्तर्गत इन दो वर्षों मे 187 लोगो को 2·84 लाख रुपयों का कर्ज भी दिया गया।

इन दो वर्षों में राज्य मे लिग्नाइट के भण्डारों का पता लगाने के कार्य को उच्च स्तर की प्राथमिकता और महत्व दिया गया है ताकि राज्य मे बिजली की कमी को शीघ्र दूर किया जावे। किये गये प्रयत्नों के फलस्वरूप बाड़मेर जिले के कपुरडी गांव के पास 1·71 करोड़ टन तथा मेड़ता रोड के पास 2·10 करोड़ टन लिग्नाइट भण्डारों का पता लगा है, बीकानेर मे पलाना के पास लिग्नाइट के अतिरिक्त भण्डारों का पता लगाने का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया गया है।

गत दो वर्षों मे राज्य में खनिज आधारित उद्योगों की स्थापना के आसार बहुत अच्छे बन गये है। वर्ष 1982-83 में सिरोही जिले में नया कारखाना लग जाने से राज्य में सीमेंट का उत्पादन 29·81 लाख टन बढ़ गया है। 12 लाख टन सीमेंट सालाना उत्पादन क्षमता का एक नया कारखाना ब्यावर में लग रहा है जिससे राज्य में सीमेंट उत्पादन और अधिक बढ जायेगा।

नगरीय विकास—जयपुर विकास प्राधिकरण की स्थापना वर्तमान शासन का बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय है। प्राधिकरण जयपुर शहर की आवासीय समस्या के निराकरण हेतु विद्याधर नगर, मुरलीपुरा, वैशाली, त्रिवेणी और अयोध्या आदि आवासीय योजनाओं के निर्माण पर कार्य कर रही है और वृहद वैशाली आवासीय योजना पर कार्य प्रस्तावित है। परिणाम यह निकला है कि जयपुर शहर में जमीनो की बढती कीमतो पर काफी हद तक अंकुश लगा है।

राज्य में गत दो वर्षों में 88,299 ऐसे आवासीय भू-खण्डो का नियमन कर दिया गया है जिस पर 1 जनवरी, 81 को लोग काबिज थे। राज्य सरकार के एक महत्वपूर्ण निर्णय के अनुसार अब चार सौ वर्ग गज तक के ही आवासीय भूखण्ड

दी
आवंटित/किये जावेंगे। इस निर्णय के परिणामस्वरूप राज्य के नगरीय क्षेत्रों में आवासीय भूखण्डों की बढ़ती हुई कीमतों में पर्याप्त गिरावट आई है।

इसी उद्देश्य से कृषि भूमि को आबादी एवं व्यावसायिक भूमि में परिवर्तन के लिए व्यापक कदम उठाये गये। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अनाधिकृत निर्माण कार्यों का नियमन किया जा रहा है। कृषि भूमि के रूपान्तरण के निर्णय की सभी वर्गों ने मुक्त कण्ठ से सराहना की है। इस कार्य के सरलीकरण हेतु सभी जिलों में अतिरिक्त जिलाधीश (भूमि रूपान्तरण) नियुक्त किये गये और लगभग 23 करोड़ रुपये का रूपान्तरण शुल्क जमा हुआ।

पर्यावरण सुधार योजना के अन्तर्गत राज्य के 37·59 लाख जनसंख्या के 15 नगरों को चुना गया। राज्य सरकार ने गत दो वर्षों में गन्दी बस्तियों में रहने वाले 61 हजार लोगों को नागरिक सुविधायें सुलभ कराई और पर्यावरण सुधार योजना के अन्तर्गत इन क्षेत्रों में सड़कें, पानी निकास नालियाँ, हैण्ड पम्प, पानी के सार्वजनिक नल लगाये और बिजली पहुंचाई। वर्ष 83-84 में 47,000 और लोगों को इस योजना के अन्तर्गत लाभ पहुंचाया जायेगा। प्रधान मंत्री के 20 सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लोगों को बने बनाये मकान दिये जा रहे हैं गत दो वर्षों में 12,116 मकान दिये गये और वर्ष 83-84 में भी इतने ही लोगों को मकान दे दिये जाएगे।

राहत कार्य—राजस्थान एक ऐसा राज्य है जो अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि से एक साथ ग्रसित रहता है। राज्य पांचवें वर्ष फिर अकाल की चपेट में है।

जुलाई, 1981 में बाढ़ से जो अभूतपूर्व क्षति हुई, उससे 10 जिलों में 1576 गांव, 84,794 परिवार और 7,88 लाख लोग प्रभावित हुये। इसके अतिरिक्त 2·48 लाख हैक्टेयर भूमि में फसल नष्ट हो गई है और लगभग 1·37 लाख हेक्टेयर भूमि में उपजाऊ मिट्टी बहकर चली गई। राज्य सरकार ने इस चुनौती को बड़ी हिम्मत और हौसले के साथ स्वीकार किया। बड़े पैमाने पर राहत कार्य आरम्भ किये गये और अस्तव्यस्त जनजीवन को सामान्य बनाने के बहुमुखी एवं कारगर प्रयत्न किये।

राज्य के सभी जिलों में फिर अनावृष्टि के कारण 23,246 गांव सूखे की चपेट में आ गये, जिससे 276·12 लाख पशु एवं 2 करोड़ से अधिक जनसंख्या प्रभावित हुई। इस विभीषिका से निपटने में सरकार ने बड़ी तत्परता से काम लिया।

इस वर्ष भी 27 में से 26 जिलों में पुनः अनावृष्टि के कारण फसलें खराब हो गई। राज्य के 22 हजार 606 गांव पुनः अकाल की चपेट मे आ गये हैं जिन्हे अभाव ग्रस्त घोषित कर राहत कार्य प्रारम्भ किये जा चुके है। इन गांवों में

1 करोड़ 71 लाख 10 हजार जनसंख्या तथा 2 करोड़ 60 लाख 95 हजार पशु प्रभावित हुए हैं।

राहत कार्यों को निरन्तर एवं तत्परतापूर्वक संचालित करने तथा प्राकृतिक विपदा के कठिन समय को गुजारने के लिए राज्य सरकार हर सम्भव प्रयास कर रही है।

केन्द्रीय अध्ययन दल भी राज्य में अकाल की स्थिति का जायजा ले चुका है तथा 69.71 करोड़ रुपये की तदर्थ सहायता केन्द्र सरकार ने प्रदान कर दी है।

अकाल राहत कार्यों को सुचारु ढंग से संचालित करने के लिए जिला स्तर पर अकाल राहत परामर्शदात्री समितियां बनी हुई हैं। जिले के जन प्रतिनिधि इन समितियों के सदस्य हैं। इन सदस्यों के परामर्शानुसार राहत कार्य खोलने के प्रस्ताव राज्य सरकार को प्रेषित किये जाते हैं।

प्रभावग्रस्त क्षेत्रों में एक ओर रोजगार एवं भोजन तथा चारे की समस्या विकराल रूप धारण कर सामने आती है तो दूसरी ओर पेयजल की समस्या भी अधिक विकट हो जाती है राज्य सरकार ने अकालग्रस्त क्षेत्रों में पेयजल की व्यवस्था करने के लिए जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग को 21.04 करोड़ रुपये स्वीकृत किये हैं। 226 नए कुए खोदने, 784 कुओं को गहरा करने और 640 सामुदायिक टांकों के निर्माण के लिए स्वीकृति जारी की गई है जल पहुँचाने के लिए राहत विभाग ने पानी के 215 टैंकरों की सेवायें उपलब्ध कराई हैं जो 589 गावों में पानी पहुंचाने के काम मे लाये गये है। जिन कुओं मे 150 फीट या इससे अधिक गहरा पानी है, ऐसे 475 गाँवों में पिवाई की समुचित व्यवस्था की गई है। ब्यावर कस्बे में जहाँ पानी की बहुत समस्या थी, पर्याप्त धनराशि उपलब्ध कराई गई और पानी पहुंचाने के लिये किराये के टैंकरों की व्यवस्था की गई।

पशुधन की सुरक्षा के लिए भी राज्य सरकार द्वारा समुचित व्यवस्था की गई है 2 लाख 80 हजार पशुओं के लिए पशु पोषाहार केन्द्र स्वीकृत किए गये हैं। राजस्थान राज्य सहकारी डेयरी फैडरेशन इन केन्द्रों को पशु आहार उपलब्ध करा रही है जिस पर राज्य सरकार द्वारा 1.50 रुपये प्रति पशु अनुदान दिया जा रहा है।

वन विभाग द्वारा संग्रह किये गये चारे को अनुदानित दरों पर पंचायतों के माध्यम से पशु पालकों को वितरित किया जाता है। पश्चिमी राजस्थान के 6 जिलों में पंचायत समितियों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को चारे की व्यवस्था एवं वितरण हेतु 19·50 लाख रु. का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया गया है। राज्य से चारे की निकासी पर रोक लगाकर तथा चारा उगाने एवं सांडों के पोषण के लिए भी अनुदान स्वीकृत कर पशुधन की रक्षा करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

ग्रामीण युवाओं को रोजगार के लिये प्रशिक्षण (ट्राइसम) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम का ही अंग है जिसके अन्तर्गत अब तक 47 हजार युवकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है और इनमें से 30 हजार युवकों को काम धन्धे सुलभ हो चुके हैं। वर्ष 83-84 में इस कार्यक्रम के तहत 1.42 लाख परिवारों को 18.88 करोड़ रुपयों का अंशदान दिया जाकर लाभान्वित किया जायेगा। आशा की जाती है कि लगभग 50 हजार अनुसूचित जाति तथा 28 हजार अनुसूचित जनजाति के लोगों को लाभान्वित किया जायेगा।

आदिवासी क्षेत्र विकास—आदिवासी क्षेत्रीय कार्यक्रमों और योजनाओं के निर्माण के लिए राज्य सरकार ने फरवरी 82 में एक परामर्श समिति का गठन किया। इस कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए एक समन्वय और निर्देशन समिति पहिले से ही कार्यरत है। साथ ही आदिवासी क्षेत्रों में औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए सरकार ने एक टास्क फोर्स का गठन भी किया है। टास्क फोर्स ने अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार को प्रस्तुत कर दी है। जिसका अध्ययन किया जा रहा है। आदिवासी क्षेत्र विकास कार्यक्रमों को राज्य में पहली बार इस तरह क्रियान्वित किया जा रहा है कि इनसे आदिवासी लोगों को व्यक्तिगत स्तर पर लाभ मिल सके। वर्ष 82-83 में 22 हजार आदिवासी परिवारों को लाभ पहुँचाने के लक्ष्य की तुलना में 26 हजार 280 परिवारों को लाभान्वित किया गया। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से 25.25 लाख रुपये लागत की एक सेमीकल्चर परियोजना उदयपुर जिले में लागू की गई है। यह भी निर्णय लिया गया है कि आदिवासी क्षेत्रों में मछली पालन का कार्यक्रम सहकारिता के अन्तर्गत चलाया जाये जिसका सीधा लाभ आदिवासी क्षेत्रों में गठित सहकारी समितियों को मिले। आदिवासी युवकों को कम्पाउन्डरी, नर्सिंग, औद्योगिक सम्बन्धी कार्य का प्रशिक्षण देने के प्रबन्ध किए जा रहे हैं। आधारभूत विकास के लिए राज्य में निर्धारित मानदण्डों में आदिवासी क्षेत्रों के लिए रियायत और छूट भी दी गई है।

गोबर गैस संयन्त्र—ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत के रूप में राज्य में गोबर गैस संयन्त्र विकसित किये जा रहे हैं। इन संयन्त्रों की स्थापना से न केवल जलाने के काम आने वाले परम्परागत साधनों की ही बचत होती है बल्कि इनसे खाद भी पैदा होती है और पर्यावरण भी शुद्ध बनता है। राज्य में 1981-82 में 1 हजार 222 गोबर गैस संयन्त्र स्थापित किये गये जबकि वर्ष 1982-83 में 2 हजार 783 संयन्त्र लगाये गये। इस वर्ष 5000 संयन्त्र स्थापित करने के लिए 17 लाख रुपये का राज्य योजना से प्रावधान किया गया है।

इन संयन्त्रों से अधिकाधिक लोगों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से सामुदायिक गोबर गैस संयन्त्र लगाने के भी प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य में ऐसे तीन

सामुदायिक गोबर गैस संयन्त्र निर्माणाधीन हैं। अन्य वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर आधारित परियोजनाएं भी बनाई जा रही हैं।

सीलिंग की अतिरिक्त भूमि के आवंटियों की सहायता—यह योजना देहाती क्षेत्रों में उन गरीब भूमिहीन परिवारों को सहायता देने के लिए शुरू की गई है जिन्हें सीलिंग से अवाप्त भूमि आवंटित की गई है। आवंटित भूमि का सुधार करने हेतु आवश्यक उपकरण, बीज आदि उपादान इस कार्यक्रम के अन्तर्गत उपलब्ध कराये जाते हैं। वर्ष 1981–82 में 10.46 लाख रुपये खर्च कर इस योजना से 1924 परिवारों को लाभान्वित किया गया। वर्ष 1982–83 के दौरान इस कार्यक्रम पर विशेष जोर दिया गया और 28.85 लाख रुपये खर्च कर 3677 परिवारों को लाभान्वित किया गया। वर्ष 1983–84 में 30 लाख रुपये खर्च कर 3000 परिवारों को लाभान्वित किया जायेगा।

ग्रामीण रोजगार को कार्यक्रम—ग्रामीण अचलों में स्थायी सम्पदा निर्माण तथा रोजगार के अवसर सुलभ कराने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम अक्टूबर 1980 में आरम्भ किया गया था। वर्ष 1981–82 में 15 75 करोड़ रुपये व्यय कर 105.95 लाख मानव दिवस कार्य जुटाया गया। स्कूल, भवन, कुए, तालाब, डिस्पेंसरियां आदि सुविधाओं के रूप में 6 हजार 780 निर्माण कार्य हुये। वर्ष 1982–83 में करीब 8.54 लाख रुपये खर्च हुये तथा 48.16 लाख मानव दिवस कार्य जुटाये गये और 2 हजार 953 निर्माण कार्यों के रूप में स्थायी सम्पदा बनी।

वर्ष 1982–83 में इस कार्यक्रम की विशेष उपलब्धि विभिन्न पौधशालाओं में 1.90 करोड़ पौधों का उगाना रहा है जिन्हें फार्म फोरेस्टरी योजना के अन्तर्गत देहाती क्षेत्रों में वितरित किया जायेगा। इसी प्रकार विभिन्न पंचायतों को 500 हैक्टेयर भूमि में पौधे उगाने का कार्य हाथ में लिया गया है। वर्ष 83–84 में 9.36 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है, जिससे 4364 कार्य पूरे कर लिए जायेंगे। आशा की जाती है कि 92.40 लाख मानव दिवस कार्य जुटाया जा सकेगा।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य—ग्रामीण अंचलों में बसे लोगों में पर्याप्त चिकित्सा सुविधा सुलभ कराने के लिए राज्य सरकार पूरी तरह जागरुक और सचेष्ट है। मातृ एवं शिशु के स्वास्थ्य रक्षण को केन्द्र विन्दु मानकर राज्य सरकार के क्रिया कलाप केन्द्रित हैं। स्वास्थ्य सेवक और प्रशिक्षित दाइयां इस दिशा में बहुत उपयोगी कार्य कर रही है। राज्य में [illegible]
है और जबकि देहाती क्षेत्र [illegible]
सम्बन्धी प्रारम्भिक कार्यों [illegible]
दिया गया है।

राज्य में सभी लोगों को संस्थागत चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिले, राज्य सरकार इस अहम नीति के क्रियान्वयन के उद्देश्य से 5,000 की जनसंख्या पर एक उप केन्द्र स्थापित है जिनमें एक पुरुष और एक महिला बहुउद्देश्यीय कार्यकर्ता काम कर रहे है। इन केन्द्रों में रोगों के उपचार सम्बन्धी सेवाओं के साथ अब लोगों को उनके स्वास्थ्य के प्रोत्साहन वर्धक विषयों और रोग निवारक बातों की जानकारी और परामर्श भी दिया जाता है।

एक लाख की आबादी के क्षेत्र के लिए स्थापित प्रा० चि० केन्द्रों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवाएं उपलब्ध कराकर एवं उनमें रोगी शैयाओं की संख्या में वृद्धि कर और अधिक सुदृढ़ बना दिया गया है। यू० एन० एफ० पी० ए० योजना के तहत राज्य के प्रत्येक चार प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों में से ऐसे एक केन्द्र को क्रमोन्नत कर उनमें स्त्री रोग चिकित्सक तथा तथा शिशु रोग चिकित्सक की सेवायें उपलब्ध कराई जायेंगी। साथ ही न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रसूति सेवाओं का सुदृढ़ बनाया जा रहा है।

परिवार कल्याण कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए भी सरकार सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। गत दो वर्षों में मिनी लेप्रोस्कोपी नसबन्दी लोकप्रिय हुई। अतः राज्य सरकार ने यह सेवाएं सभी जिलों में मुहैया कर दी है। भारत सरकार द्वारा 1981–82 के लिए नसबन्दी के जो लक्ष्य निर्धारित किये गये थे, राज्य सरकार ने उनसे कही अधिक कार्य किया है तथा 82–83 वर्ष में 77 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर लिये है। वर्ष 83–84 के लिए 2.94 लाख नसबन्दी का जो ऊंचा लक्ष्य रखा गया है उसकी प्राप्ति के लिए राज्य सरकार गम्भीर रूप से सक्रिय है।

राज्य मे 250 उप केन्द्र और 25 उप सहायक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित हैं। 7 प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों और 11 अस्पतालों को क्रमोन्नत किया गया है। रोगी शैयाएँ और बढ़ा दी गई है।

चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के लाभ दूर दराज के क्षेत्रों मे सभी लोगों को बराबर मिलते रहने की दृष्टि से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के प्रशासनिक तंत्र का विकेन्द्रीकरण किया गया है। उप निदेशक के 5 क्षेत्रीय कार्यालय खोले गये हैं। जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल के बढ़ते हुए भार को कम करने के लिए जयपुर में कई उप नगरीय अस्पताल खोलने का निर्णय लिया गया है। सवाई मानसिंह अस्पताल जयपुर की रोगी शैयाए 942 से बढ़ाकर 1150 की गई और केन्सर रोग के उपचार हेतु जयपुर और उदयपुर में 2 [illegible] स्वीकृत की गयी।

वर्ष 83–84 के दौरान 500 नये उप केन्द्र, 12 नये प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र और नये उप सहायक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने का प्रस्ताव है। साथ ही न्यूनतम

आवश्यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत 25 ग्रामीण डिस्पेंसरियां और पांच प्रसूति एवं शिशु कल्याण केन्द्रों को क्रमोन्नत किया जाना भी प्रस्तावित है । ग्रामीण क्षेत्रों में उपरोक्त सेवाओं की वृद्धि और विस्तार पर राज्य सरकार का ध्यान पुरी तरह केन्द्रित है । जयपुर स्थित सवाई मानसिंह अस्पताल में ओपन हार्ट शल्य चिकित्सा और एन्डो युरोलोजी के नये विभाग खोले [illegible] रकार न [illegible] स्वीकृत [illegible] कर [illegible] में 50 रोगी शैयाएं और बढ़ाई जा रही हैं ।

राज्य में भारतीय चिकित्सा पद्धति के विस्तार और सुदृढीकरण के लिए भी राज्य सरकार ने महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं । 200 नये आयुर्वेदिक औषधालय स्वीकृत किये गये जिनमें से 20 आदिवासी क्षेत्रों के लिए हैं । आयुर्वेद चिकित्सा की एक चल इकाई भी स्थापित गई है ।

सिंचाई—राजस्थान में कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल 264.18 लाख हैक्टेयर है जिसमें 154.71 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में कृषि कार्य होते हैं मार्च, 81 तक इसमें से केवल 18.1 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में ही नहरी सिंचित क्षेत्र था । अतः कृषि उत्पादन कार्यों में सिंचाई की उपयोगिता और महत्व को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त धनराशि योजना मद में उपलब्ध कराई । वर्ष 1981-82 और वर्ष 1982-83 में सिंचाई कार्यों पर 159.52 करोड़ रुपये व्यय किए गए । वर्ष 1979-80 में केवल 39.30 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधायें उपलब्ध थी । इसलिये राज्य में चल रही सिंचाई परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने की महती आवश्यकता समझी गई और इसको [illegible]

[illegible]

[illegible] आवश्यक था । अतः राज्य सरकार ने इसकी मरम्मत के लिए 87.50 करोड़ रुपये स्वीकृत किए हैं । राजस्थान नहर को गंग नहर से जोड़ने वाली एक

नहर के [illegible] भाग की [illegible] कराने के [illegible] की सरकार से [illegible] जा रहा है ।

लिक नहर को साधू वाली तक बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा हाल ही में लिए गये निर्णय का क्रियान्वयन भी शुरू कर दिया गया है।

राजस्थान नहर मे उपलब्ध पानी को उपयोग मे लाने के लिए नहर को बाड़मेर जिले के गडरा रोड तक बढ़ाने और साथ ही चूरू, बीकानेर, जोधपुर व जैसलमेर जिलों मे सिचाई सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से लिफ्ट सिचाई योजनाओं पर काम शुरू करने का फैसला राज्य सरकार ने लिया है। समुचित आर्थिक प्रावधान और सीमेंट तथा कोयले की पर्याप्त उपलब्धि के अभाव मे राजस्थान नहर का निर्माण कार्य धीमी गति से चल रहा था, जिसे अब परिवर्तित कार्यक्रम के अनुसार पूरा कर लिया जायेगा। केन्द्रीय सरकार ने राजस्थान नहर परियोजना को शीघ्र पूरा करने के उद्देश्य से 40 करोड़ रुपये का अतिरिक्त प्रावधान उपलब्ध किया है।

माही बजाज सागर परियोजना के लिए भी गत वर्ष अतिरिक्त धनराशि राज्य सरकार ने उपलब्ध कराई ताकि आदिवासी क्षेत्र मे 1983 की रबी फसलों के लिए पानी उपलब्ध हो सके। इसी प्रकार हरिश्चन्द्र सागर और बागन डाइवर्सन परियोजनाओं को 1983–84 मे पूरा करने के लिए भी विशेष कदम उठाये गये हैं। सोमकागदर और कोठारी परियोजनाओं को भी 1985–86 मे पूरा कर लिया जाने के लिए भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। सचिवालय स्तर पर और स्वयं मुख्य मंत्री जी के स्तर पर इसके लिए मोनीटरिंग किया जा रहा है।

राज्य मे नहरी पानी के बहुत कम और सीमित स्रोत होने के कारण सिचाई की आवश्यकताओं के लिए राज्य को अन्तर्राज्यीय समझौतों के अन्तर्गत प्राप्त हो रहे पानी पर निर्भर रहना पड़ता है और अन्य राज्यों से प्राप्त होने वाला यह पानी भी निरन्तरता से उपलब्ध नहीं होता। अतः इस प्रकार की समस्या के सन्दर्भ मे दिसम्बर, 81 मे राज्य सरकार द्वारा जो रावी व्यास जल समझौता किया गया वह राजस्थान के सिचाई इतिहास का शीर्ष अध्याय है। इस समझौते से राजस्थान

सरकार ने उचित स्तर और क्षेत्रों में उठाया है। फलस्वरूप भारत सरकार ने दोनों राज्यों के सिचाई मन्त्रियों की बैठक बुलाई है जिसमें राजस्थान अपना मत बहुत दृढ़ता से प्रस्तुत करने जा रहा है।

सिचाई पानी के उपयोग हेतु किए जा रहे निर्माण कार्यों को जल्दी पूरा करने के लिए विदेशी पूंजी व विनियोजन के लिए भी राज्य सरकार ने कदम उठाया है। लघु सिचाई परियोजना के कार्यों के लिए राज्य सरकार ने परियोजना

जर्मनी ने हाल ही में एक समझौता किया है जिसके तहत राज्य को 6 करोड़ का आर्थिक सहयोग प्राप्त होगा। राज्य सरकार ने वर्ष 1983-84 के लिए सिंचाई कार्यों के लिए 98 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पहले ही हरीशचन्द्र सागर और वागन परियोजनाओं के अलावा 52 लघु सिंचाई परियोजनाएं भी पूरी कर ली जावेंगी और अनुमान है कि वर्ष 1983-84 में 154,900 हैक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र को सिंचाई सुविधायें उपलब्ध हो जावेंगी।

विद्युत:-उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप विद्युत क्षमता एवं मांग के बीच अन्तर को समाप्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा सतत् प्रयास किया जा रहा है। एक ओर कोटा ताप विद्युत परियोजना की स्टेज I की दोनों इकाइयों को एवं माही पन विद्युत परियोजना के अन्तर्गत प्रथम पावर हाऊस को छठी पंचवर्षीय योजना अवधि तक किये जाने का प्रयास जारी है, तो दूसरी ओर की बिजली पूर्ति के लिए अन्य राज्यों तथा केन्द्रीय इकाइयों से बिजली प्राप्त करने का प्रयत्न भी जारी है। कोटा ताप परियोजना स्टेज I की प्रथम इकाई को चालू किया जा चुका है एवं दूसरी इकाई भी शीघ्र उत्पादन शुरू कर देगी। आशा है इस परियोजना की दोनों ही इकाइयों में इसी वर्ष व्यावसायिक उत्पादन प्रारम्भ हो सकेगा। कोटा ताप परियोजना स्टेज II पर भी कार्य तीव्र गति से किया जा रहा है। माही बजाज सागर परियोजना के अन्तर्गत प्रथम पावर हाऊस की पहली 25 मेगावाट इकाई से भी वर्ष 1984 के अन्त तक बिजली उत्पादन प्रारम्भ होने की सम्भावना है।

राज्य सरकार अन्य स्रोतों से भी विद्युत प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है। हिमाचल प्रदेश की संजय विद्युत परियोजना तथा कोल परियोजना में हिस्सेदारी करके बिजली प्राप्त करने का एक अनुबन्ध सितम्बर, 1982 में किया गया था। बीकानेर जिले के पलाना क्षेत्र में लिग्नाइट के भण्डारों पर आधारित 60-60 मेगावाट के दो विद्युत संयंत्र लगाये जाने के लिये राज्य सरकार प्रयत्न कर रही है। इस सन्दर्भ में कुछ प्राथमिक व्यवस्थायें पूर्ण कर ली गई है केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण द्वारा भी इस परियोजना का अनुमोदन कर दिया गया है लेकिन योजना आयोग से वित्तीय स्वीकृति प्राप्त होना शेष है।

राज्य के बाड़मेर व नागौर जिलों में लिग्नाइट के विशाल भण्डारों का पता चला है। राज्य सरकार के भू-सर्वेक्षण विभाग, मिनरल कारपोरेशन आफ इन्डिया तथा कोल इंडिया से द्रुत सर्वेक्षण हेतु सहयोग प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं। वार्षिक योजना 1983-84 के अन्तर्गत प्रारम्भिक कार्य करने हेतु एक करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है जिससे लिग्नाइट के विशाल भण्डारों के दोहन के विषय में विस्तृत विवरण प्राप्त हो सकें। इसके आधार पर राजस्थान में एक सुपर थर्मल प्लांट लगाने की सम्भावना बढ़ेगी।

राज्य सरकार कुछ छोटी पन बिजली परियोजनायें स्थापित करने की दिशा मे भी प्रयत्नशील है। अनूपगढ हाइडल परियोजना पर कार्य प्रगति पर है और आशा की जाती है कि छठी पचवर्षीय योजना अवधि के अन्त तक इसकी पहली इकाई से 1·5 मेगावट बिजली प्राप्त हो सकेगी। चम्बल के दाई ओर मुख्य नहर एव राजस्थान नहर पर सूरतगढ हाइडल की परियोजनाओ को केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण से तकनीकी एव आर्थिक स्वीकृति प्रदान करायी जा चुकी है व इनकी विनियोजना स्वीकृति योजना आयोग से प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

छठी पचवर्षीय योजना के अन्त तक विद्युत उत्पादन क्षमता 1785·5 मेगावाट हो सकेगी। यह उल्लेखनीय है कि छठी पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में जहा कोटा ताप बिजली घर की प्रथम इकाई को विशेष प्रयासो के फलस्वरूप चालू करना सम्भव हो सका है, वही 3,904 गांवों का विद्युतीकरण एवं 61,781 कुओं को ऊर्जाकृत करना सम्भव हो पाया है। 1983-84 के लिए 1100 गांवों को विद्युतीकृत एव 11,000 कुओं को ऊर्जाकृत करने का लक्ष्य रखा गया है।

राज्य मे गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष अधिक बिजली सुलभ होने की आशा है इस वर्ष के पहले कुछ महीने बेहतर गुजरे हैं। प्रथम तिमाही मे विद्युत कटौतिया भी कम की गई है। गत वर्ष अप्रेल मे 339.40 मिलियन यूनिट बिजली सुलभ हुई जिसमे सुधार होकर इस वर्ष अप्रेल मे 386.7 मिलियन यूनिट बिजली सुलभ हुई जबकि गत वर्ष मई में 329·70 मिलियन यूनिट बिजली की अपेक्षा इस वर्ष मई मे 389.27 मिलियन यूनिट सुलभ हो गयी।

राज्य सरकार बिजली के मामले मे आत्मनिर्भरता के लिए सतत प्रयत्नशील है फिर भी राज्य की भावी विद्युत आवश्यकताओ को दृष्टि मे रखते हुए यह आवश्यक है कि राज्य मे स्वय के विद्युत उत्पादन स्रोतो का शीघ्रातिशीघ्र विकास किया जाये। इसके लिए केन्द्र सरकार द्वारा उदारतापूर्वक अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध कराने पर ही यह सम्भव हो सकता है। इसके अतिरिक्त दूसरे राज्यों से अधिक मूल्य पर विद्युत प्राप्त कर सस्ती दरो पर उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराने तथा बिजली लाने के लिए विद्युत लाइनों के निर्माण पर होने वाले अधिक व्यय भार और ट्रान्समिशन लोसेज को घटाकर राज्य विद्युत मण्डल के वित्तीय ससाधनों को भी सुदृढ करने की आवश्यकता है जिसके लिए अधिक धनराशि उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है।

कृषि उत्पादन—भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहा मौसम कृषि उत्पादन के लिए कई बार अनुकूल नहो रहा। समय पर अनुकूल वर्षा का अभाव और आवश्यकता के विपरीत अतिवृष्टि, ओलावृष्टि एवं बे मौसम के तूफानों की मार ने ही राजस्थान के जुझारु किसान को अनेक थपेड़े लगाये हैं। सन् 1979 से निरन्तर पड़ रहे सूखे से न केवल कृषि उत्पादन पर विपरीत असर पड़ा

है अपितु पेयजल की भी जटिल समस्या उत्पन्न कर दी है। गत दो वर्षों में राज्य सरकार ने दोनों समस्याओं के निराकरण के लिए जो उपाय लागू किये हैं उनसे राज्य का भविष्य उज्जवल माना जा सकता है।

विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रभावशाली क्रियान्वयन और कृषि विस्तार कार्यक्रम के प्रसार से राज्य के कृषि उत्पादन में ठोस प्रगति हुई है। दो वर्ष पहले राज्य में खाद्यान्न का उत्पादन 64·96 लाख टन से बढ़कर वर्ष 82–83 में 80·98 लाख टन पहुंच गया है। वर्ष 1983-84 के लिए खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य 91·9 लाख टन रखा गया है गत तीन वर्षों में खाद्यान्न, तिलहन और अन्य जिन्सों में हुए उत्पादन को दृष्टिगत रखते हुए यह भली भांति स्पष्ट हो जाता है कि राज्य में कृषि उत्पादन की प्रगति उत्साहवर्द्धक रही है।

राज्य में अधिक उत्पादन देने वाली फसलों का क्षेत्र जहां वर्ष 80–1981 में 19·07 लाख हैक्टेयर था वह वर्ष 1982–83 में 24·43 लाख हैक्टेयर हो गया। वर्ष 83–84 के लिए 27·75 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में अधिक उत्पादन देने वाली फसलें बोने का लक्ष्य है। कृषि योग्य भूमि के विस्तार को देखते हुए अधिक उत्पादन देने वाले उन्नत किस्म के बीजों की मांग भी राज्य में प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। वर्ष 1981–82 में जहां 1·44 लाख क्विंटल बीज की खपत हुई वह 1982–83 में बढ़कर 1·81 लाख क्विंटल हो गई।

कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए उर्वरक का उपयोग भी अब राज्य में अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। वर्ष 1981–82 में 1 38 लाख टन उर्वरक वितरित किया गया था। वर्ष 1982–83 में 1·66 लाख टन उर्वरक उपयोग में लिया गया। चालू वर्ष में 2·25 लाख टन उर्वरक वितरण का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 1981–82 में 45.62 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में पौध संरक्षण कार्य किया गया था, जबकि वर्ष 1982-83 में 56 46 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में यह कार्य सम्पन्न किया गया। खरीफ 1982 में जहां 17·43 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में दलहन और 6·50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में तिलहन का उत्पादन हुआ वहीं रबी 1982-83 में 15·20 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में दालों का उत्पादन किया गया जिसमें 14·50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में केवल चने का उत्पादन किया गया।

कृषि [illegible] धिक गतिशील बनाने के उद्देश्य से जून, 83 में [illegible] आयोजित किया गया जिसके अन्तर्गत सरकारी [illegible] तथा अभिकरणों ने मिलजुल कर किसानों को [illegible] आदान सुलभ कराये।

[illegible] आर्थिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत वर्ष 81-82 [illegible] और सहकारी वर्ष 1982-83 में लगभग [illegible] मध्यकालीन और दीर्घकालीन

राज्य सरकार कुछ छोटी पन बिजली परियोजनायें स्थापित करने की दिशा मे भी प्रयत्नशील है। अनूपगढ़ हाइडल परियोजना पर कार्य प्रगति पर है और आशा की जाती है कि छठी पंचवर्षीय योजना अवधि के अन्त तक इसकी पहली इकाई से 1·5 मेगावट बिजली प्राप्त हो सकेगी। चम्बल के दाईं ओर मुख्य नहर

छठी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक विद्युत उत्पादन क्षमता 1785·5 मेगावाट हो सकेगी। यह उल्लेखनीय है कि छठी पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों मे जहा कोटा ताप बिजली घर की प्रथम इकाई को विशेष प्रयासों के फलस्वरूप चालू करना सम्भव हो सका है, वहीं 3,904 गांवों का विद्युतीकरण एवं 61,781 कुओं को ऊर्जाकृत करना सम्भव हो पाया है। 1983-84 के लिए 1100 गांवों को विद्युतीकृत एव 11,000 कुओं को ऊर्जाकृत करने का लक्ष्य रखा गया है।

राज्य मे गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष अधिक बिजली सुलभ होने की आशा है इस वर्ष के पहले कुछ महीने बेहतर गुजरे हैं। प्रथम तिमाही मे विद्युत कटौतिया भी कम की गई है। गत वर्ष अप्रेल मे 339 40 मिलियन यूनिट बिजली सुलभ हुई जिसमें सुधार होकर इस वर्ष अप्रेल मे 386.7 मिलियन यूनिट बिजली सुलभ हुई जबकि गत वर्ष मई मे 329·70 मिलियन यूनिट बिजली की अपेक्षा इस वर्ष मई मे 389.27 मिलियन यूनिट सुलभ हो गयी।

राज्य सरकार बिजली के मामले मे आत्मनिर्भरता के लिए सतत प्रयत्न-

[illegible]

तथा बिजली लाने के लिए विद्युत लाइनों के निर्माण पर होने वाले अधिक व्यय

मण्डल के वित्तीय ससाधनों

क धनराशि उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है।

कृषि उत्पादन---भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहां मौसम कृषि उत्पादन के लिए कई बार अनुकूल नहीं रहा। समय पर अनुकूल वर्षा का अभाव और आवश्यकता के विपरीत अतिवृष्टि, ओलावृष्टि एवं बे मौसम के तूफानों की मार ने ही राजस्थान के जुझारु किसान को अनेक थपेड़े लगाये हैं। सन् 1979 से निरन्तर पड रहे सूखे से न केवल कृषि उत्पादन पर विपरीत असर पड़ा

है अपितु पेयजल की भी जटिल समस्या उत्पन्न कर दी है। गत दो वर्षों में राज्य सरकार ने दोनों समस्याओं के निराकरण के लिए जो उपाय लागू किये हैं उनसे राज्य का भविष्य उज्ज्वल माना जा सकता है।

विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रभावशाली क्रियान्वयन और कृषि विस्तार कार्यक्रम के प्रसार से राज्य के कृषि उत्पादन में ठोस प्रगति हुई है। दो वर्ष पहले राज्य में खाद्यान्न का उत्पादन 64·96 लाख टन से बढ़कर वर्ष 82–83 में 80·98 लाख टन पहुंच गया है। वर्ष 1983-84 के लिए खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य 91·9 लाख टन रखा गया है गत तीन वर्षों में खाद्यान्न, तिलहन और अन्य जिन्सों में हुए उत्पादन को दृष्टिगत रखते हुए यह भली भांति स्पष्ट हो जाता है कि राज्य में कृषि उत्पादन की प्रगति उत्साहवर्द्धक रही है।

राज्य में अधिक उत्पादन देने वाली फसलों का क्षेत्र जहां वर्ष 80–1981 में 19·07 लाख हैक्टेयर था वह वर्ष 1982–83 में 24·43 लाख हैक्टेयर हो गया। वर्ष 83–84 के लिए 27·75 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में अधिक उत्पादन देने वाली फसलें बोने का लक्ष्य है। कृषि योग्य भूमि के विस्तार को देखते हुए अधिक उत्पादन देने वाले उन्नत किस्म के बीजों की मांग भी राज्य में प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। वर्ष 1981–82 में जहां 1·44 लाख क्विंटल बीज की खपत हुई वह 1982–83 में बढ़कर 1·81 लाख क्विंटल हो गई।

कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए उर्वरक का उपयोग भी अब राज्य में अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। वर्ष 1981–82 में 1·38 लाख टन उर्वरक वितरित किया गया था। वर्ष 1982–83 में 1·66 लाख टन उर्वरक उपयोग में लिया गया। चालू वर्ष में 2 25 लाख टन उर्वरक वितरण का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 1981–82 में 45.62 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में पौध संरक्षण कार्य किया गया था, जबकि वर्ष 1982-83 में 56 46 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में यह कार्य सम्पन्न किया गया। खरीफ 1982 में जहां 17·43 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में दलहन और 6·50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में तिलहन का उत्पादन हुआ वहीं रबी 1982-83 में 15·20 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में दालों का उत्पादन किया गया जिसमें 14·50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में केवल चने का उत्पादन किया गया।

कृषि उत्पादन कार्य को अधिक गतिशील बनाने के उद्देश्य से जून, 83 में कृषि आदान पखवाड़ा विशेष रूप से आयोजित किया गया जिसके अन्तर्गत सरकारी विभागों और गैर सरकारी संस्थाओं तथा अभिकरणों ने मिलजुल कर किसानों को समय पर प्रचुर मात्रा में उन्नत कृषि आदान सुलभ कराये।

सहकारिता—सहकारी क्षेत्र के आर्थिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत वर्ष 81-82 82 में 121·56 करोड़ रुपयों के और सहकारी वर्ष 1982-83 में लगभग 133.95 करोड़ रुपयों के अल्पकालीन, मध्यकालीन और दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध

कराये गये। इसी प्रकार वर्ष 1983-84 के लिए 173 करोड़ रुपये के ऋण उपलब्ध कराने का लक्ष्य है।

सहकारिता की कृषि सेवाओं के अन्तर्गत पिछले दो वर्षों में राज्य में 1120 अतिरिक्त उर्वरक वितरण केन्द्र कायम किये गये। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उपज के सुरक्षित भण्डार के लिए 1 लाख 22 हजार मैट्रिक टन क्षमता वाले 1313 नये गोदामों का निर्माण किया गया। 639 अन्य गोदाम निर्माणाधीन हैं। गत दो वर्षों में 14.53 करोड़ रुपये मूल्य की कृषि उपज का सहकारिता के माध्यम से विक्रय किया गया। राज्य में सहकारिता क्षेत्र में 7 चावल, 5 दाल, मिलें, 3 तेल व सात काटन जीनिंग एवं प्रेसिंग इकाइयां कार्यरत हैं, अगले पांच वर्षों में 10 और स्पिनिंग मिलें स्थापित करने की योजना हाथ में ली गई है। जिसमें 100 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। कोटा के सोयाबीन प्लान्ट तथा बीकानेर, सादुल शहर और भीलवाड़ा में काटन सीड प्लान्ट लगाने की योजना विचाराधीन है।

आवासीय सुविधा हेतु अब तक 25 हजार 915 मकानों के लिए 1369 लाख रुपये के ऋण वितरित किये गये हैं। अनुसूचित जाति एवं जन जाति के लोगों के लिए 13 हजार 730 मकान तैयार हो चुके हैं और 12 हजार 185 मकान निर्माणाधीन है।

वन संवर्धन तथा वन्य जीव संरक्षण — राज्य में पर्यावरण सन्तुलन तथा वन और वन्य जीवों की रक्षा के लिए पिछले दो वर्षों में प्रयास और तीव्र हुए है। राष्ट्रीय वन नीति के अनुरूप प्रदेश में वृक्षारोपण और वन संवर्धन कार्यक्रमों को तेजी से क्रियान्वित किया जा रहा है। प्रदेश में वनों का प्रतिशतांक केवल 9 है। अधिकांश क्षेत्र परिभाषित वन, बजर भूमि तथा खुली पहाड़ियों के रूप में है।

वृक्षारोपण कार्यक्रम को प्राथमिकता देते हुए राज्य में विभिन्न योजनायें क्रियान्वित की जा रही है, जिसमें पौध वितरण योजना, अनुसूचित व जन जाति [illegible]

[illegible]

समापन तक राज्य में 4 करोड़ 32 लाख पौधे लगाये जा चुके हैं। इस वर्ष 4 करोड़ 50 लाख पेड़ लगाने का लक्ष्य है।

कृषि वानिकी हेतु राज्य में इस समय 600 पौधशालाएं कार्यरत हैं। गत वर्ष राज्य में 435 लाख पौधे रोपित किये गये। वर्ष 1983 में करीब 500 लाख

पौधे रोपित किये जाने का लक्ष्य है।

राष्ट्रीय उद्यानों तथा अभ्यारण्यों का विकास द्रुत गति से हुआ है। गत दो वर्षों में 3 नये अभ्यारण्य तथा 7 नये शाखेट क्षेत्र घोषित किये है ताकि राज्य में वन्य जीवों तथा वन सम्पदा को पर्याप्त सरक्षण प्राप्त हो सके। अब राजस्थान देश के उन प्रमुख एक दो राज्यों में है। जहा पर भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय महत्व के वन उद्यान तथा अभ्यारण्य स्थित हैं। इस अवधि में वन्य जीवों के शिकार पर प्रायः पूर्ण प्रतिबन्ध रहा है। इन कार्यक्रमों के फलस्वरूप गत वर्षों में राज्य में वन्य जीवों की सख्या मे भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

डेयरी विकास एवं पशु पालन—राज्य में वर्ष 73 से प्रारम्भ किये गये डेयरी विकास कार्यक्रम को गत दो वर्षों मे अभूतपूर्व सफलताएं मिली हैं। ग्राम स्तरीय दुग्ध उत्पादन सहकारी समितियों के गठन और सहकारी आंदोलन को प्रोत्साहन देने के कारण ही ऐसा हुआ। 1 मार्च 83 तक राज्य में ऐसी समितियों की सख्या 3,250 तथा इनकी सदस्य सख्या 1 लाख 72 हजार थी।

वर्ष 1977-78 मे 757 दुग्ध सग्रह केन्द्रों पर 2·08 लाख लीटर दूध प्रतिदिन एकत्रित किया जा रहा था। यह वर्ष 1982-83 मे बढकर 1041 केन्द्रों पर 285 लाख लीटर प्रतिदिन हो गया है। गत 3 वर्षों से निरन्तर पड़ रहे सूखे की स्थिति के बावजूद दुग्ध संग्रह की यह औसत 2 45 लाख लीटर प्रतिदिन रही है। राज्य सरकार द्वारा इस दिशा मे किये गये सफल प्रयत्नों का ही यह परिणाम है कि फरवरी, 83 के माह मे तो 3·70 लाख लीटर प्रतिदिन रिकार्ड दुग्ध संग्रह किया गया। ५-८-३- पर में साढे ४ लाख लीटर दूध का संग्रह.

दुग्ध उत्पादकों को दूध की कीमत मे गत दो वर्षों मे 65 पैसे प्रति लीटर की वृद्धि हो गई। पिछले दो वर्षों मे 3676 लाख रुपये दुग्ध उत्पादकों को उनके दूध के मूल्य के रूप में दिया गया। यह भी एक रिकार्ड है।

गत दो वर्षों की अवधि मे जयपुर मे 1·50 लाख लीटर दूध प्रतिदिन की क्षमता का एक डेयरी सयन्त्र चालू किया गया। बीकानेर, जोधपुर और अजमेर के डेयरी सयन्त्रों की क्षमता 2·30 लाख लीटर प्रतिदिन से बढाकर 4 लाख लीटर प्रतिदिन कर दी गई है तथा भीलवाड़ा मे 1 लाख लीटर दूध प्रतिदिन और उदयपुर में 25 हजार लीटर दूध क्षमता के डेयरी संयंत्र स्थापित कर दिये गये है। कोटा में 25 हजार लीटर और हनुमानगढ़ मे 1 लाख लीटर दूध प्रतिदिन की क्षमता के डेयरी संयंत्र की स्थापना का काम चल रहा है। इन सबके शुरू हो जाने पर राज्य मे 9·50 लाख लीटर दूध प्रतिदिन की क्षमता हो जायेगी। गत दो वर्षों मे राज्य में नागौर, बाडमेर, गंगापुर सिटी, ब्यावर और विजय नगर मे पाच नये अवशीतन केन्द्र स्थापित किये जा चुके हैं। बांसवाड़ा और डूंगरपुर के अव-

शीतन केन्द्र भी एक माह में ही बनकर तैयार हो जायेंगे और इस प्रकार राज्य में कुल 19 अवशीतन केन्द्र कार्यरत होंगे।

राज्य में हुई श्वेत क्रांति के फलस्वरूप अब राजस्थान और दिल्ली के बाजारों में सरस ट्रेड मार्क पनीर, मक्खन, देशी घी, पाउडर, आदि दुग्ध खाद्य पदार्थ की बिक्री बहुत लोकप्रिय हो गई है। चीज, दही और बेबी फूड भी निकट भविष्य में बाजारों में बिक्री के लिए उपलब्ध हो जायेगा। फ्लड II आपरेशन कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य में डेयरी विकास की एक महत्वाकांक्षी योजना निकट भविष्य में लागू की जा रही है। योजना के क्रियान्वयन पर लगभग 30 करोड रुपये व्यय होंगे।

पशुओं को सन्तुलित आहार उपलब्ध कराने के लिए 440 टन पशु आहार उत्पादन क्षमता के 5 पशु आहार संयत्र तबीजी (अजमेर), नदबई (भरतपुर), जोधपुर, जयपुर और बीकानेर में स्थापित किये जा चुके है।

पेयजल—राज्य सरकार सभी गाँवों में पेयजल सुलभ कराने के जोरदार प्रयास कर रही है। 1981-82 में 3890 गावों को पेयजल उपलब्ध कराया गया जबकि 1982-83 मे 4060 गावो को पेयजल सुविधा प्रदान कराई गई है। मई, 1983 तक राज्य के कुल 15 हजार 844 गावों में पेयजल सुविधा सुलभ कराई जा चुकी है।

वर्ष 1983-84 में पेयजल सुविधाओं का विस्तार करने हेतु 40 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे हैं जबकि वर्ष 1980 से 1983 तक की अवधि मे 126 करोड़ रुपये व्यय किये गये थे।

राज्य सरकार ने रेगिस्तानी और पहाड़ी क्षेत्रों में पेयजल संकट की गम्भीरता से केन्द्र सरकार को अवगत कराया है तथा ऐसे क्षेत्रों में पेयजल सुलभ कराने के लिए ए.आर.पी. कार्यक्रम के तहत 41 करोड़ रुपये व्यय किये हैं।

इन दो वर्षों में राज्य सरकार ने पेयजल के लिए पिछले पांच वर्षों में किये गये समस्त व्यय की सम्मिलित राशि से अधिक राशि का प्रावधान किया है। परिणामस्वरूप 8950 गांवो मे पेयजल पहुंचाने में सफलता प्राप्त की गई जो निर्धारित लक्ष्यों से कहीं अधिक है।

भूतल जल—गत दो वर्षों में भूमिगत जल के विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत कुओं को बोरिंग द्वारा गहरा करने तथा नये नल कूप लगाने में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। गत दो वर्षों में यह कार्य 3742 कुओं पर हुआ जबकि इससे पूर्व के दो वर्षों मे केवल 1043 कुओं पर ही ऐसा कार्य हुआ था। अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन जाति के व्यक्तियों को गरीबी की रेखा से ऊपर उठाने की दृष्टि से 3047 कुओं को गहरा व नये कुओं का निर्माण कराया गया।

भूमिगत जल एवं सतह के जल के विकास की दृष्टि से राजस्थान नल कूप निगम के गठन का भी निर्णय लिया गया है जो लगभग 2500 नल कूपो का निर्माण करेगा। उक्त निगम का मुख्य उद्देश्य भूमिगत व सतही जल को बिजली के पम्प, डीजल पम्प, पन चक्की, बायोगैस, सोलर इनर्जी आदि माध्यमो द्वारा किसानो को सुनिश्चित सिंचाई की सुविधा प्रदान करना व उनकी माली हालत सुधारना है। ये नल कूप सामुदायिक सिंचाई योजना को ध्यान मे रखते हुए एक या एक से अधिक कृषको के लिए बनाये जावेंगे तथा उनके संचालन व रखरखाव की जिम्मेदारी उन्हीं की रहेगी। निगम उन्हें बैंको से ऋण की सुविधा दिलाने में सहायता करेगा तथा नलकूप का निर्माण करके उन्ही को सौंप देगा।

शिक्षा, कला एवं संस्कृति—राज्य मे वित्तीय संकोच की स्थिति के बावजूद पिछले दो वर्षों में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रो मे न केवल सख्यात्मक बल्कि गुणात्मक विकास की उपलब्धियां हासिल हुई हैं। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा प्रसार के तहत वर्ष 81-82 और 82-83 मे 577 नये प्राथमिक विद्यालय, 634 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 212 उच्च माध्यमिक विद्यालय खोले गये जबकि 4 हजार 200 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रो को स्वीकृति दी गई। 328 माध्यमिक एव उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नये विषय वर्ग खोले गये। 3 हजार नये प्रौढ शिक्षा केन्द्र भी इसी अवधि में स्वीकृत किये गये। राज्य में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी को अध्युयुन अध्यापन सम्बन्धी वाछित हर सम्भव सुविधायें मुहया की जा रही है। निर्धनतम और अनुसूचित जाति व जन जाति के छात्रा हेतु विशेप शिक्षण व्यवस्था छात्रावास और छात्रवृत्ति आदि की सुविधाओं का प्रावधान है।

प्रावैधिक शिक्षा के अन्तर्गत वर्ष 1981-82 मे कोटा में एक नया इन्जीनियरिंग कालेज खोला गया और जयपुर व जोधपुर के इन्जीनियरिंग कालेजों मे प्रवेश के लिए क्रमशः 60-60 स्थान और बढ़ाये गये। आबूरोड तथा गुलाबपुरा में औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान व जयपुर में महिला पौलीटेकनीक कालेज आरम्भ किये गये।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी राज्य आगे बढा है। पिछले दो वर्षों में राज्य के विभिन्न महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर के 49 नये विपय खोले गये तथा स्नातक स्तर के 47 नये विपयो का अध्यापन आरम्भ किया गया। राज्य के पाठ्य पुस्तक मण्डल द्वारा 130 पुस्तकों की 76 लाख 48 हजार 268 प्रतियाँ प्रकाशित कर विभिन्न कक्षाओं के 45 लाख छात्र-छात्राओ को लाभान्वित किया गया। इस अवधि मे मण्डल द्वारा करीब दो करोड़ 35 लाख रुपये के नियन्त्रित मूल्य की अभ्यास पुस्तिकाओ की बिक्री भी की गई।

राज्य में कला एवं संस्कृति विभाग के साथ-साथ अलग से खेल मन्त्रालय भी

कायम किया गया। इसी प्रकार राजस्थानी भाषा के विकास के लिए राजस्थानी साहित्य अकादमी का भी गठन किया गया है।

संस्कृत शिक्षा के विकास के लिए राज्य में दो सौ से अधिक शिक्षण संस्थायें कार्यरत हैं जहां संस्कृत की प्राथमिक व माध्यमिक के अलावा उच्च स्तर की शिक्षण व्यवस्था सुलभ है वर्णित अवधि में करीब 1 लाख 8 हजार छात्र-छात्राओं ने विभिन्न स्तरों पर संस्कृत शिक्षा के लिए इन संस्थाओं में अध्ययन किया। राज्य में संस्कृत शिक्षा के अध्ययनरत छात्रों को प्रोत्साहन देने के लिए छात्रवृत्तियां भी दी जाती हैं।

पर्यटन विकास :—राजस्थान पिछले दो वर्षों में पर्यटन विकास की अपनी नई उपलब्धियों के साथ उभर कर आया हैं। राज्य में पर्यटन विकास संस्कृति के माध्यम से हो रहा है। पर्यटन विकास निगम द्वारा भारतीय रेल विभाग के सहयोग से वर्ष 1982 के गणतन्त्र दिवस से पहियों पर राजमहल (पैलेस आन व्हील) नामक शाही रेलगाडी चलाई जा रही है जो विदेशी मुद्रा अर्जित करने में कारगर सिद्ध हुई है। पर्यटकों के लिए स्तरानुकूल वांछित आवास और परिवहन आदि की व्यापक सुविधायें सुलभ कराई जा रही हैं।

वर्ष 1981-82 में 5 नये पर्यटक सूचना केन्द्र जैसलमेर, कोटा, अलवर एवं बीकानेर में तथा एक राज्य से बाहर मद्रास में खोले गए। वर्ष 82-83 में सवाई माधोपुर बाघ परियोजना क्षेत्र में एक नया पर्यटक सूचना केन्द्र खोला गया। इस तरह अब राज्य में 22 पर्यटक सूचना केन्द्र कार्यरत है, जिनमे दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, अहमदाबाद और आगरा स्थित राजस्थान पर्यटक सूचना केन्द्र भी शामिल है राज्य पर्यटक विभाग द्वारा पर्यटकों को वांछित जानकारी सुलभ कराने हेतु भारी मात्रा में आवश्यक प्रचार साहित्य का प्रकाशन एवं वितरण किया जाता है। राज्य की विपुल पर्यटक सम्पदाओं और भावी सम्भावनाओं के प्रचार [illegible] किया, कार्यक्रम एवं फोटोग्राफी प्रतियोगिताओं

उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राज्य के पर्यटन विभाग को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन संस्था द्वारा लगातार तीसरी बार पाटा अवार्ड देकर शीर्ष स्थान दिया गया है।

सार्वजनिक निर्माण कार्य :—राज्य सरकार ने कठिन आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद राज्य में सड़कों और भवनों के निर्माण को उचित महत्व दिया है। योजना कार्यों के अन्तर्गत 1218 कि० मी० लम्बी सड़कों के निर्माण पर गत दो वर्षों में 25.35 करोड़ रुपया खर्च किया गया। 450 गांव अब सड़कों से जुड़ गये। वर्ष 83-84 मे 220 गांवों को जोडने वाली 480. कि० मी० लम्बी सडकें बनाई जायेंगी जिस पर 12.50 करोड़ रुपये व्यय होगा।

राष्ट्रीय राजमार्गों के रख रखाव और सुधार, सीमित क्षेत्र की सड़कों, खानों को जाने वाली सड़कों दूध संकलन के लिए सड़कों आदि के निर्माण कार्यों पर गत दो वर्षों में 29 करोड़ रुपया व्यय किया गया। वर्ष 1983-84 में इस कार्य के लिए 17.89 करोड़ रुपयों का प्रावधान रखा गया है।

सड़कों के सुधार और मरम्मत कार्यों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। वर्ष 1981-82 मे इन पर 18 करोड़ रुपये व्यय हुआ। जिसे वर्ष 1983-84 में बढाकर 30 करोड़ रुपया कर दिया गया है। वर्ष 1981-82 में राज्य में आई भीषण बाढ़ से क्षतिग्रस्त सडको की मरम्मत पर 10 करोड रुपया अलग से व्यय किया गया।

भवन निर्माण कार्यों पर गत दो वर्षों में 20 करोड़ रुपये व्यय किया गया है। दो वर्षों में गम्भीरी नदी पर 200 लाख रुपयों की लागत से दो पुल बनाये जाकर यातायात के लिए खोल दिये गये। कोटा में चम्बल नदी, बासवाड़ा में माही नदी, कोटा सवाई माधोपुर मार्ग पर बनास नदी, जयपुर आगरा मार्ग पर ढूंढ और बाणगंगा नदियों तथा भीलवाड़ा छतरपुर मार्ग पर आहू नदी पर ऊंचे पुलो का निर्माण कार्य प्रगति पर है। अकाल राहत कार्यों के अन्तर्गत किये गये सड़क निर्माण कार्यों पर संवत् 2038 मे 61.60 करोड़ रुपये व्यय किया जाकर 652 लाख मानव दिवस का रोजगार उपलब्ध कराया गया। सवत् 2039 मे ऐसे कार्यों पर 25 करोड़ रुपया व्यय किया जा रहा है जिससे 310 लाख मानव दिवस का अतिरिक्त रोजगार उपलब्ध होगा।

राज्य का पुल एवं निर्माण निगम अपने गठन के बाद से ही लाभ अर्जित करता आ रहा है। 1982-83 में लगभग 40 लाख रुपये का सकल लाभ निगम को हुआ है। निगम ने 16.50 करोड़ की लागत के 30 भवनों और 25.50 करोड़ की लागत के 40 पुलों का निर्माण कार्य हाथ मे लिया जिसमें से क्रमश: 14 भवनों और 17 पुलों का निर्माण कार्य कर लिया गया है।

समाज कल्याण—गत दो वर्षों में राजस्थान में अनुसूचित जाति के लोगों के उत्थान के लिये कई महत्वपूर्ण कार्य किये गये हैं और समाज कल्याण विभाग ने इन जातियों के सर्वाङ्गीण विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण योजनायें प्रारम्भ की है।

विशेष कम्पोनेंट प्लान के तहत वर्ष 1981-82 तथा वर्ष 1982-83 में 76 करोड़ 69 लाख रुपये दिए जाकर अनुसूचित जाति के 2 लाख 30 हजार 261 परिवारों को लाभान्वित किया गया।

राज्य मे छठी पचवर्षीय योजना अवधि मे पाँच लाख अनुसूचित जाति के परिवारो को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए 227 करोड़

36 लाख रुपये का प्रावधान किया गया है। योजना के प्रथम तीन वर्षों में 2 लाख 83 हजार 105 अनुसूचित जाति के परिवारो को लाभान्वित किया गया है जिस पर 104.67 करोड़ रुपये व्यय हुये हैं।

इसके अतिरिक्त केन्द्र सरकार ने गत दो वर्षों मे अनुसूचित जाति के परिवारों के जीवन-स्तर को ऊचा उठाने के लिए 11 करोड़ 74 लाख रुपये की विशेष केन्द्रीय सहायता प्रदान की है। 1979–80 व 1980–81 मे केवल 5 करोड़ 16 लाख रुपये की सहायता प्रदान की गई थी।

अनुसूचित जाति निगम—अनुसूचित जाति के लोगों की स्थिति मे तीव्र गति से विकास करने के लिए अनुसूचित जाति, सहकारी विकास निगम की स्थापना की गई है। यह निगम न केवल अनुसूचित जाति के लोगो को उद्योग लगाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। बल्कि मांग के अनुसार इनकी प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करता है।

निगम ने गत दो वर्षों मे अनुसूचित जाति के 1 लाख 39 हजार 793 परिवारो को ग्रामीण क्षेत्रो मे विभिन्न उद्योग धन्धे और व्यवसाय लगाने के लिए 10.40 करोड रुपये का अनुदान दिया है।

शहरी क्षेत्रों मे 3 हजार 948 लोगों के लिये स्व रोजगार कार्यक्रम के अन्तर्गत 21 लाख 79 हजार रुपये व्यय किये गये हैं। इस राशि का उपयोग युवकों को रोजगार उपलब्ध कराने तथा आवश्यक प्रशिक्षण और औजार उपलब्ध कराने पर किया गया।

इसी प्रकार गत दो वर्षों में राज्य के शहरी क्षेत्रों में उद्योग लगाने तथा व्यापार करने के लिए 4 हजार 667 परिवारों को 32 लाख 26 हजार रुपये का अनुदान सुलभ कराया गया।

निगम इस वर्ष अनुसूचित जाति के 200 प्रशिक्षित ड्राईवरो को आटो रिक्शा खरीदने के लिए बैंकों से ऋण व निगम से अनुदान भी देगा। इसके अलावा अनुसूचित जाति के लोगों को इस वर्ष 2000 दुकानें तथा केबिनें उपलब्ध कराई जावेगी।

अनुसूचित जाति बस्तियां—राजस्थान में अनुसूचित जातियो की बस्तियों में मूलभूत सुविधायें उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है। इसी का परिणाम है कि गत दो वर्षों मे 2062 बस्तियों का विद्युतीकरण किया गया है तथा 6014 बस्तियों मे पेय जल सुविधा उपलब्ध कराई गई है इन बस्तियों मे हैण्ड पम्प लगाये गए हैं।

समाज कल्याण विभाग अनुसूचित जाति के किसानों को कृषि कार्यों के लिए बैंकों से ऋण दिलाने के भी प्रयास कर रहा है। बैंकों द्वारा इन जातियों के 7513 लोगों को ऋण देने पर विभाग ने 13 लाख 6 हजार रुपये का ब्याज चुकाया है।

इसी प्रकार ग्रामों में व्यापार के लिए 7513 लोगों को 2 लाख 57 हजार रुपये का अनुदान दिया गया है साथ ही राज्य में 543 लोगों को मकान बनाने के लिए 4 लाख 71 हजार रुपये का अनुदान दिया गया है।

कानून एवं व्यवस्था—गत दो वर्षों में राज्य में अपराधिक स्थिति न केवल सन्तोषजनक रही अपितु पूर्ण नियन्त्रण में भी रही। यह सही है कि वर्ष 1980 की अपेक्षा वर्ष 1981 मे अपराधः में 10.20 प्रतिशत की वृद्धि हुई, परन्तु राज्य सरकार ने अपराधों की रोकथाम के जो कारगर एवं कठोर कदम उठाये उनके फलस्वरूप वर्ष 1982 में अपराधों की यह बढोतरी घटकर 9.73 प्रतिशत रह गई। डकैती, लूट, हत्या और नकबजनी जैसे जघन्य अपराधों में तो काफी गिरावट आई है।

गत वर्षों में डकैती उन्मूलन कार्यों में राज्य की उल्लेखनीय उपलब्धि रही है। जुलाई 81 से मई, 83 तक दौरान 35 डाकू मुटभेडों में मारे गये, 533 डाकू गिरफ्तार किये गये और दो डाकुओं ने आत्म समर्पण किया। डाकुओं से हुई मुठभेड़ों में पुलिस ने 170 हथियार बरामद किये। अब राज्य में कोई अन्तर्राज्यीय संगठित डाकू दल सक्रिय नहीं है। डकैती की जो भी वारदातें राज्य में होती है, वे राजस्थान के पूर्वी और दक्षिणी सीमा से लगे उत्तर और मध्य प्रदेश के कुछ डाकू दलों द्वारा की जाती है। राज्य सरकार ने उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सरकारों के साथ मिलकर और समन्वय स्थापित कर डकैती उन्मूलन संयुक्त अभियान चलाये हुए हैं जिनके अच्छे परिणाम निकले हैं। इस वर्ष के प्रथम पांच महीनो में पुलिस की डाकुओं से हुई 12 मुटभेड़ों में तीन डाकू मार गिराये गये 32 हथियार बरामद किये जा चुके है।

राज्य सरकार का यह तत्पर प्रयत्न रहा है कि हरिजनों पर होने वाले अत्याचार को प्रभावी ढंग से समाप्त किया जावें ताकि यह लोग अपनी जमीन को निर्बाध रूप से जोतकर शांतिपूर्वक जीवन निर्वाह कर सके। राज्य सरकार ने इन लोगों पर होने वाले अत्याचारों एवं इन सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाने के लिए विभिन्न स्तरों पर विशेष प्रकोष्ठ स्थापित किये हैं।

प्रशासन शहरों की ओर—राज्य सरकार ने प्रशासन शहरों की ओर अभियान के अन्तर्गत शहरों की विभिन्न समस्याओं का निराकरण करने का बीड़ा उठाया है तथा सितम्बर 1983 में यह कार्यक्रम चालू कर दिया है।

राज्य में विकास की यह यात्रा गाथा हमें भविष्य की ऐसी मंजिल पर पहुँचने को निर्देशित करती है जहाँ राज्य का गरीब जन सामान्य खुशहाली का जीवन व्यतीत करने लगे। ऐसा संभव हो पाना ही सरकार के प्रयत्नों की सफलता का

मापदण्ड है । यहा ये लोग हैं जो प्रशासन तन्त्र को अधिक कठिन परिश्रम कर एक खुशहाल समाज की संरचना के लिये प्रोत्साहित करते हैं । मुख्य मत्री श्री शिवचरण माथुर ने ठीक ही कहा है कि विकास की परिणित लोगों को उन्नति और जन कल्याण मे ही नही वलिक लोगो की गरीवी और भय से मुक्ति मे निहित है और वह तभी संभव है जब लोग सामाजिक और आर्थिक रूप से जागरूक हो ।